शंकराचार्य

राष्ट्रीय जीवनचरित

शंकराचार्य

टी. एम. पी. महादेवन

अनुवाद
सुमंगल प्रकाश

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

विषय सूची

प्रस्तावना

आदिकाल से ही इस देश में, जीवन के हर क्षेत्र में, असाधारण व्यक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है। हमारा इतिहास ऐसे महान लोगों के नामों से भरा पड़ा है, जिनकी कला, साहित्य, राजनीति, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण देन रही है। कितनों के नाम तो घर घर लोगों की जबान पर हैं। इनमें से बहुत-से व्यक्ति ऐसे हैं जिनका सिर्फ नाम ही लोग जानते हैं; उनके जीवनवृत्त और कार्य के बारे में उनको बहुत कम ज्ञान है। कुछ ऐसे भी हुए हैं जिनकी उपलब्धियां तो असाधारण हैं, लेकिन उनके विषय की लोगों की जानकारी नगण्य है।

किसी देश का इतिहास, बहुत अंश तक, उसके इन महान नर-नारियों का इतिहास है। उन्हेंने ही उसको गढ़ा, संवारा और उसका विकास किया। जन-साधारण के लिए यह आवश्यक है कि इन विभूतियों के बारे में कुछ जाने, ताकि वह समझ सकें कि अपने विकास की दिशा में देश किन चरणों से हो कर गुजरा है।

इस देश में जन्म लेने वाले असाधारण व्यक्तियों में शंकराचार्य का स्थान बहुत ऊंचा है। बौद्धिक और शारीरिक दोनों ही दृष्टियों से उनके जीवन की उपलब्धियां इतनी विलक्षण थीं कि उन पर सहसा विश्वास नहीं होता। एक प्रकार से उन्हें चमत्कारपूर्ण ही कहा जा सकता है। उनकी गणना उन विभूतियों में की जाती है जिन्होंने अति अल्प काल में इतिहास और संस्कृति की धारा ही पलट दी। शंकराचार्य ने अपने अल्पकालीन किंतु ज्वलंत जीवन द्वारा इतिहास को जैसा मोड़ दिया वैसा शायद ही किसी दूसरे व्यक्ति ने दिया हो। उनकी प्रखर प्रतिभा उनके बाल्यकाल में ही चमक उठी थी और संसार को जो संदेश वे देने आए थे उनका आरंभ तभी से हो गया था। उन्हें विजय पर विजय मिलती ही चली गई और हिंदू धर्म के ढांचे की तो उन्होंने काया पलट ही कर दी। दार्शनिक विचारधारा के विकास में अद्वैत दर्शन की उनकी देन बहुत बड़ी थी। कोई भी कसौटी हम सामने रखें, उनकी गणना संसार के अधिक-से-अधिक असाधारण और विशिष्ट व्यक्तियों में करनी होगी।

इस पुस्तक के लेखक डा. टी. एम. पी. महादेवन शंकराचार्य पर न केवल प्रमाण हैं, बल्कि अपनी प्रकृति और साधना के नाते स्वयं भी अद्वैतानुयायी हैं। दर्शन पर उन्होंने कई उत्कृष्ट पुस्तकें लिखी हैं और भारतीय धर्म और दर्शन को प्रतिष्ठित करने

की दिशा में उन्होंने बहुत कुछ किया है। डा. महादेवन ने इस पुस्तक में शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन को सुबोध और आकर्षक रूप में पाठकों के सामने रखा है।

नई दिल्ली
8 मार्च, 1968

बालकृष्ण केसकर

1. आविर्भाव और प्रारंभिक जीवन

शंकर का आविर्भाव जिस युग में हुआ था वह हमारे आज के युग से भिन्न नहीं था। वह भी धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक मतभेदों और कलह का युग था। ब्रह्मसूत्र के अपने भाष्य में, शंकर ने, देश की अत्यंत अव्यवस्थित दशा का वर्णन इन शब्दों में किया है–"जो यह समझता है कि प्राचीन काल के लोग भी आज के लोगों की ही भांति देवताओं से वार्तालाप करने में असमर्थ थे, वह चाहे तो यह भी समझ ले सकता है कि चूंकि आज कोई भी सार्वभौम राजा नहीं है, इसलिए प्राचीन काल में भी सार्वभौम राजा थे ही नहीं, अथवा वह यह भी तर्क कर सकता है कि प्राचीन काल में भी वर्णाश्रम धर्म का पालन उतना ही अव्यवस्थित था जितना कि आज है।"[1] शंकर के काल का भारत राजनैतिक दृष्टि से विच्छिन्न और सामाजिक दृष्टि से अस्त-व्यस्त था। छोटे छोटे कितने ही राज्य थे, जिनके बीच किसी बात में समानता नहीं थी और जो एक दूसरे को पछाड़ कर ऊपर आने के लिए झगड़ते रहते थे। एक घृणा दूसरी घृणा को जन्म देती जा रही थी और स्वार्थपरता तथा लोभ की वेदी पर शांति की बलि हो रही थी। एक ओर बाल की खाल निकालने वाले कट्टर कर्मकांडी थे जो शास्त्रों के अंतर्निहित भावों की उपेक्षा कर एक एक शब्द पर सिर फोड़ने के लिए तैयार रहते थे। दूसरी ओर शून्यवादी, नास्तिक और रूढ़िभंजक लोग थे जो उन सब को जड़-मूल से उखाड़ फेंकने के लिए कमर कसे हुए थे जो भी पूज्य, पवित्र अथवा प्राचीन था। दार्शनिक मत-मतांतरों के बीच प्रचंड संघर्ष छिड़ा हुआ था, और विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के बीच शत्रुता विद्यमान थी। विद्वानों और जनसाधारण, सभी ने यह आधारभूत वैदिक शिक्षा मानो भुला ही दी थी कि सत्य एक है। विभिन्न मतों के नेताओं और अनुयायियों–सभी के द्वारा धर्म का प्रयोग जीवन में शांति पाने के साधन के रूप में नहीं, दूसरों पर प्रचार करने के हथियार के रूप में किया जा रहा था।

संकट और उलझन के एक ऐसे ही युग में शंकर का जन्म हुआ था। अपना अत्यंत अल्पकालीन जीवन उन्होंने लोगों के दिल और दिमाग के घावों पर मलहम लगाने और उन्हें आध्यात्मिक शांति और स्वस्थता का मार्ग दिखाने में ही बिताया। समाज की प्राण-शक्ति का ह्रास करने वाली उस व्याधि का निदान उन्होंने यही किया कि उसका

मूल पृथकत्व के बोध में है, और उसका एक ही सच्चा और कल्याणकारी उपचार बताया—एकत्व का बोध, जिसे उपनिषदों में अद्वैत दर्शन कहा गया है। यह उपचार यों तो सभी कालों के लिए अमोध औषध के रूप में था, किंतु शंकर के काल में उसकी सार्थकता विशेष रूप में थी, जैसी कि आज भी है।

ऐसा जान पड़ता है मानो भगवान शिव (शाब्दिक अर्थ : परमानंद) ने अपने आविर्भाव के लिए स्वयं ही उचित स्थान, वंश और काल का निर्णय किया हो। कालडि[2] (केरल में) चूर्णा (जिसे पूर्णा या आलुवाय या पेरियारु भी कहा जाता है) नदी के तट पर, आलुवाय नगर[3] से लगभग छह मील दूर बसा हुआ एक मामूली-सा गांव है। आनंदगिरि-लिखित 'शंकर-विजय' की बनारस के तारक मठ पुस्तकालय वाली प्राचीन हस्तलिखित प्रति में कालडि को बड़ा सुंदर गांव अथवा केरल का आभूषण बताया गया है। इस गांव में एक नम्बूदिरि दंपति रहते थे–शिवगुरु[4] और आर्याम्बा। हाल के वर्षों तक, केरल के नम्बूदिरियों ने ही वैदिक संस्कृति को सबसे अधिक कायम रखा था। प्रायः सभी नम्बूदिरि बालकों को वेद-पाठ और वेदाध्ययन की पूरी शिक्षा दी जाती थी। जो बच्चे आधुनिक शिक्षा-संस्थाओं में भी भेजे जाते थे उन्हें भी उसके पहले यह शिक्षा तो लेनी ही पड़ती थी। यह तो कहने की आवश्यकता ही नहीं कि जिस युग में शंकर का आविर्भाव हुआ उसमें केरल के ब्राह्मण ही वैदिक ज्ञान और धर्मपरायणता में सबसे ऊंचे थे। शंकर के भावी पिता और, माता, शिवगुरु और आर्याम्बा, नम्बूदिरि वंशों के ही थे, जो समृद्ध होने पर भी अत्यंत धार्मिक थे। शिवगुरु के पिता का नाम विद्याधिराज[5] था और आर्याम्बा के पिता का नाम माधपंडित। शिवगुरु को ठीक समय पर गुरुकुल में पढ़ने के लिए भेजा गया था। विद्याध्ययन पूरा करने के बाद विवाह और पारिवारिक जीवन के प्रति उनके अंदर अरुचि दिखाई दी; बल्कि और भी अधिक गंभीरता के साथ वे विद्याध्ययन और आध्यात्मिक जीवन की ओर बढ़ना चाहते थे। पर उनके घर लौटने पर उनके माता पिता ने उन्हें विवाह के लिए समझा-बुझा कर राजी कर लिया। वधू के रूप में आयाम्बा पसंद की गई। विवाह हो जाने के बाद वह निष्ठावान दंपति आदर्श गृहस्थ के रूप में शास्त्र-विहित धर्म-मार्ग पर चलते रहे और जिन्हें भी सहायता की आवश्यकता पड़ी उन्हें प्रदान करते रहे।

शिवगुरु और आर्याम्बा को जीवन में जो कुछ भी काम्य हो सकता है सभी प्राप्त था–सद्गुण और संपत्ति, विद्या और नम्रता, हृदय की विशालता और उदारता। किंतु वर्ष पर वर्ष बीतते चले गए, उन्हें पुत्र लाभ नहीं हुआ। एक दिन शिवगुरु आर्याम्बा के सामने इसी बात पर शोक प्रकट कर रहे थे। उस साध्वी ने अपने पति को सांत्वना दी और बोली–"हमें भगवान शिव की शरण लेनी चाहिए, वही सारे विश्व के कल्पवृक्ष है।" दोनों के दोनों भजन करने के लिए निकट के शिव-क्षेत्र में पहुंचे, जो अब त्रिचुर कहलाता है। जो लोग त्रिचुर के मंदिर में भजन करने के लिए जाते हैं वे वहां कुछ

दिनों तक नहीं, कभी कभी तो महीनों तक रहते हैं, नित्य वहां की पुण्य-सलिला नदी में स्नान करते हैं और मंदिर में जाकर अपनी धर्म-सम्मत कामनाओं की पूर्ति के लिए भगवान शिव की पूजा करते हैं । मंदिर नगर के बीचोंबीच एक टीले पर बना हुआ है जिसका नाम वृषाचल है—शिव के वाहन वृष का पर्वत । नगर का अधिक प्रचलित नाम 'तिरु-शिव-पेरुर'. है, जिसका अर्थ है–'शिव का मंगलकारी महास्थान ।' 'त्रिचुर' इसी का बिगड़ा हुआ नाम है । शिवगुरु और आर्याम्बा ने इसी स्थान की शरण ली और वहां दीर्घकाल तक भजन करते रहे ।

शिवगुरु और आर्याम्बा की भक्ति और तपस्या से प्रसन्न होकर एक रोज रात को भगवान शिव ने एक वृद्ध पुरुष के रूप में उन्हें स्वप्न में दर्शन दिया और पूछा कि उन्हें कई मूर्ख पुत्र चाहिए जिनकी आयु लंबी हो, या अल्पकाल तक ही जीवित रहने वाला एक, किंतु मेधावी बालक ! पति-पत्नी दोनों कुछ भी ठीक निश्चय नहीं कर सके, और उन्होंने इसका निर्णय भगवान् पर ही छोड़ दिया । तब भगवान ने कहा कि वे स्वयं ही उनके पुत्र के रूप में जन्म लेंगे, और उन दोनों को कालडि लौट जाने के लिए कहा । वे दोनों बड़े ही प्रसन्न हो अपने घर लौट कर आए । शिवगुरु ने गरीबों को दान दिया और अपने टोले के सभी धार्मिक लोगों को खिलाया-पिलाया, और अनेक उपहार दिए । उस धर्मपरायण दंपति ने तभी अन्न-जल ग्रहण किया जब सब अतिथि खा पी चुके । कहा जाता है कि ब्राह्मण भोजन कराने के बाद प्रसाद रूप में जो अन्न उन्होंने ग्रहण किया उसी में होकर भगवान शिव की दिव्य ज्योति ने आर्याम्बा की कोख में प्रवेश किया । समय आने पर आर्याम्बा गर्भवती हुई और एक नई ही आभा से उनका चेहरा देदीप्यमान हो उठा—क्योंकि स्वयं प्रकाशपुंज भगवान ने ही उन्हें अपनी माता के रूप में ग्रहण किया था ।

भगवान के आविर्भाव के लिए बड़ा ही शुभ मुहूर्त्त चुना गया था—पुनर्वसु नक्षत्र में वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी का मध्याह्न काल । "शंकर-विजय" नामक ग्रंथों में शंकर के जन्मकाल का बड़ा ही भव्य वर्णन किया गया है—किस प्रकार सारी प्रकृति ने ही उस समय शांत और मनोहर रूप धारण किया था । वृक्ष और लताएं कुसुमित होकर मुसकराने लगी थीं । आकाश निर्मल और निष्कलंक हो गया था । यहां तक कि जो पशु स्वभाव से ही परस्पर वैरी थे उनमें भी पारस्परिक सौहार्द उमड़ पड़ा था ।

शंकर के जन्मकाल को सुनिश्चित रूप से निर्धारित करना, भारतीय संस्कृति के इतिहास के प्रायः अन्य सभी कालों के निर्धारण की ही भांति, कठिन है । जनश्रुति की परंपरा से हमें इतना ही मालूम होता है कि उनके जन्म का वर्ष 'नंदन' था, मास 'बैशाख' और दिन 'शुक्ल पंचमी ।' किंतु वह 'नंदन' वर्ष कौन-सा था ? द्वारका, पुरी, और कांची के मठों के अभिलेखों के अनुसार यह 'नंदन' वह था जिसका योग ई.पू. 509 वर्ष में पड़ा (कलियुग का 2593)। चूंकि इस बात पर प्रामाणिक क्षेत्रों में पूरा मतैक्य है कि शंकर केवल बत्तीस वर्ष तक ही जीवित रहे, इसलिए इस हिसाब से उनका

जीवन काल ई. पू. 509 से 447 तक रहा। एक जैन ग्रंथ 'जिन-विजय' से इस काल की अप्रत्यक्ष रूप से इस तरह पुष्टि होती है कि उसमें कुमारिल भट्ट का जन्मकाल ई. पू. 577, कुमारिल से शंकर की भेंट का वर्ष ई. पू. 494, और शंकर के तिरोभाव का वर्ष ई. पू. 477 बताया गया है।[6] शृंगेरी की एक परंपरागत मान्यता के अनुसार कलि 3058 (ई. पू. 44) शंकर के जन्म का वर्ष है। कुछ अन्य विद्वानों का मत यह है कि शंकर का काल, कुछ पहले नहीं तो 700 ई. माना जाना चाहिए, क्योंकि 'ब्रह्म-सूत्र-भाष्य' (4-2-5) में पाटलिपुत्र नगर का उल्लेख हुआ है; और 750 ई. के आसपास चूंकि नदियों की बाढ़ों से वह नगर नष्ट हो गया था इसलिए उसके बाद का यह उल्लेख हो नहीं सकता। इसके अतिरिक्त 'भाष्य' (2-1-18) में किसी पूर्णवर्मन का उल्लेख है, जो संभवतः मगध का वही बौद्ध राजा है जिसका शासनकाल ह्वुएन-त्सियांग ने 590 ईस्वी के आसपास बताया है। एक हस्तलिखित संस्कृत ग्रंथ में सुरक्षित एक तिथिबंध में शंकर के जन्म और मृत्यु के वर्ष क्रमशः कलि—3889 और 3921 बताए गए हैं जो 788 और 820 ईस्वी बनते हैं। यही जन्मकाल, कलि—3889, 'शंकर-मन्दार-सौरभ' नाम के एक ग्रंथ में दिया गया है। इस काल की पुष्टि में कई युक्तियां दी गई हैं– (1) कम्बोदिया के एक अभिलेख में किसी शिवसोम का उल्लेख है जिसने अपने को 'भगवान शंकर' का शिष्य बताया है। यह शिवसोम इन्द्रवर्मन का, जिसका काल 878 और 887 ईस्वी के बीच माना गया है, शिक्षक था। (2) 'सौन्दर्य लहरी' के पचहत्तरवें छंद में शंकर ने 'द्रविडशिशु' का उल्लेख किया है जो पार्वती के दिए गए दूध को पीकर एक विख्यात कवि बन गया। यह उल्लेख किसी किसी के मत में 'तिरुज्ञान संबंध' की ओर संकेत करता है जिनके बारे में माना जाता है कि वह ईस्वी सातवीं सदी में रहे। (3) 'शंकर-विजय' नामक ग्रंथों में कुमारिल भट्ट से शंकर की भेंट का उल्लेख है जो पूर्व मीमांसा के भट्ट-वाद के प्रवर्त्तक थे। एक बहुत बड़े प्राच्यवेत्ता के शब्दों में, कुमारिल का काल 'ईसवी 700 से पहले नहीं हो सकता"[7] जो विद्वान 788 से 820 ईस्वी तक के काल को शंकर का काल मानने के विरोधी हैं और उन्हें उससे पहले के काल का मानते है उनकी युक्ति यह है–(1) कि यह काल वस्तुतः बाद वाले एक शंकर का है—कामकोटि पीठ के अड़तीसवें आचार्य का—जिनके बारे में ही शायद कम्बोदियाई अभिलेख का भी संकेत है, (2) कि इसकी पूरी संभावना है कि 'सौन्दर्य लहरी' के उपर्युक्त छंद में जिस 'द्रविडशिशु' का उल्लेख है वह स्वयं उसका रचयिता ही है, अर्थात शंकर, (3) कि यह बात निर्विवाद रूप में सिद्ध नहीं हुई है कि कुमारिल का काल ईस्वी आठवीं सदी ही था।

इस प्रकार के तर्क-वितर्कों और मतभेदों के कारण शंकर के काल का निर्धारण करना बड़ा ही कठिन हो गया है। अधिक-से-अधिक निश्चितता के साथ जो बात कही जा सकती है वह यही कि वह कालिदास और कुमारिल के बाद ही हुए, और वाचस्पति

मिश्र से पहले । कुमारिल के विचारों से शंकर न केवल परिचित थे, बल्कि उन्होंने उनकी आलोचना भी की थी इसलिए निश्चय ही कुमारिल या तो उनके समकालीन, किंतु उम्र में बड़े रहे होंगे, अथवा उनसे पहले की पीढ़ी के । कुमारिल ने कालिदास के 'शाकुन्तलम्' से उद्धरण दिया है, इसलिए शंकर का काल कालिदास के बाद रहा होगा । वाचस्पतिमिश्र ने शंकर के 'ब्रह्मसूत्र-भाष्य' पर 'भामती' टीका लिखी है । पहले यह समझा जाता था कि वाचस्पति का काल 841 ईस्वी रहा होगा, पर अब उनका काल 876 ईस्वी निर्णीत हो चुका है । इसलिए इस सारी उपलब्ध जानकारी के आधार पर इतना ही कहा जा सकता है कि शंकर कालिदास और कुमारिल के बाद, और वाचस्पति से पहले, हुए ।

शंकर के जीवन से संबंधित जितनी भी जनश्रुतियों की परंपरा हमें मिली है उन सभी में एक बात समान-रूप से कही गई है, कि शंकर शिव के एक अवतार थे । एक मजेदार बात यह है कि 'श्री-रुद्र' में, जो कि भगवान शिव का एक स्तव है; उनके अनेक नामों में दो नाम 'कपर्दी' और 'व्युप्तकेश' भी गिनाए गए हैं । इनमें से पहले का अर्थ है 'जटाजूटधारी', जो कि भगवान शिव के स्वरूप का अत्यंत सुपरिचित वर्णन है । किंतु दूसरे नाम का अर्थ है "जिसका सिर मुंड़ा हुआ है ।" शिव के किसी भी स्वरूप में उनका मुंड़ा हुआ मस्तक देखने में नहीं आया । इसलिए 'श्री-रुद्र' के टीकाकार ने इसका अर्थ करते हुए लिखा है कि इसका आशय शंकर से है जो शिव के अवतार थे और संन्यासी के रूप में जो सिर मुंड़ाए रहते थे । भविष्य काल का प्रयोग कर के 'शिव-रहस्य' में लिखा गया है कि नीलकंठ शंकर भगवान अनेक अवतार लेंगे और श्रुति-स्मृतियों में व्यक्त सत्य को प्रतिष्ठित कर लोगों का कल्याण-साधन करेंगे । 'वायु-पुराण' में कहा गया है कि शंकर अपने चार शिष्यों के साथ जन्म लेंगे । इन शिष्यों को इसमें तनिक भी संदेह नहीं था कि उनके गुरुदेव भगवान शिव के ही अवतार हैं । तोटकाचार्य अपने गुरुदेव को संबोधन करके कहते हैं—"इस परम विश्वास ने मेरे हृदय को आनंद से भर दिया है कि तू स्वयं भव (शिव) ही है ।" एक दूसरे शिष्य पद्मपादाचार्य ने अपने गुरु का वर्णन 'अपूर्व शंकर' कह कर किया है । एक से अधिक 'शंकर-विजय' नामक ग्रंथों में पाए जाने वाले एक श्लोक में यह कहा गया है कि दक्षिणामूर्ति (दक्षिण की ओर मुंह करके बैठे हुए शिव) पवित्र वट वृक्ष के नीचे स्थित अपने आसन से उठ कर खड़े हो गए और अपना मौन भंग कर वह शंकर के रूप में सारे संसार में भ्रमण कर रहे हैं, ताकि लोगों को आत्म-ज्ञान का उपदेश देकर वह उन्हें अविद्या और संसार के ताप से छुटकारा दिलाएं ।

आनन्दगिरि का कहना है कि कालडि के लोगों ने शिवगुरु के घर में नवजात शिशु को देखा और उनकी धारणा हुई कि साक्षात शंभु (शिव) ही अवतार लेकर आए हैं । परंपरा के अनुसार जन्म–कुंडली बनाने के निमित्त जिन ज्योतिषियों को बुलाया

गया उन्होंने बतलाया कि बच्चा हर दृष्टि से पूर्ण है (शिशुः एष पूर्णः) । ग्यारहवें दिन बच्चे का नामकरण संस्कार हुआ और उसका नाम 'शंकर' रखा गया । इसके अक्षर बच्चे के जन्म की तिथि, पक्ष और मास को इंगित करने वाले हैं । गणना की एक विधि है—'कटपयादि-संख्या' । संस्कृत वर्णमाला के 'क' से शुरू होने वाले नौ अक्षर एक से नो तक की क्रम संख्या का बोध कराते हैं; उसी प्रकार 'ट' से शुरू होने वाले नौ अक्षर; और फिर 'य' से शुरू होने वाले पांच अक्षर । शंकर का जन्म वैशाख मास में, जो दूसरा मास है (2=र), शुक्ल पक्ष में, जो पहला (1=क) पक्ष है, और पंचमी तिथि को (5=श) हुआ था । इन्हें उलटी ओर से लेने पर 'श (शं)+क+र' बन जाता है । शिवगुरु ने यह नाम इसका अर्थ बिना विचारे ही रखा था, किंतु शंकर तो भगवान शिव के अवतार ही थे और जगत का अधिक-से-अधिक कल्याण करने के लिए ही आए थे, इसलिए बिना अर्थ की ओर ध्यान दिए रखा गया वह नाम भी अर्थपूर्ण सिद्ध हुआ ।

शंकर के जीवन की विशिष्ट घटनाओं का उल्लेख एक संस्कृत श्लोक में इस प्रकार किया गया है—"आठ वर्ष की अवस्था में उन्होंने चारों वेदों का अध्ययन कर लिया था, बारह वर्ष की अवस्था में वह सभी शास्त्रों में पारंगत हो गए थे, सोलह वर्ष की अवस्था में उन्होंने अपना 'भाष्य' लिखकर पूरा कर दिया था, और बत्तीस वर्ष की अवस्था में इस संसार से विदा हो गए थे ।"

शंकर एक अद्भुत बालक थे और बिलकुल प्रारंभिक वर्षों में ही उनके अंदर विलक्षण बौद्धिक प्रतिभा और हृदय की विशालता प्रकट हो गई थी । आनन्दगिरि कहते हैं कि प्राकृत, मागधी और संस्कृत भाषाओं की जानकारी शंकर को अपने शैशवकाल में ही हो गई थी । 'माधवीय शंकर-विजय' के अनुसार, उन्होंने अपने शैशव के प्रथम वर्ष में ही संस्कृत वर्णमाला और अपनी मातृभाषा सीख ली थी, और दो वर्ष की उम्र में वह पढ़ने लग गए थे; तीन वर्ष की अवस्था में वह काव्यों और पुराणों का अध्ययन करने लगे और उनके कितने ही स्थलों के अर्थ दिव्य-ज्ञान द्वारा उनके हृदय में स्वतः ही स्पष्ट हो गए । शंकर का उपनयन संस्कार होने के पहले ही शिवगुरु का देहांत हो गया ।[8] आर्याम्बा को सांत्वना देने का काम शंकर को ही करना पड़ा । अब उन्हें अपने पुत्र के हित में ही जीवित रहना था । पांच वर्ष की अवस्था में शंकर का उपनयन संस्कार हुआ । वेदाध्ययन के लिए उन्हें एक गुरुकुल में भेजा गया । वेदों, षड् वेदांगों और अन्य शास्त्रों का बहुत ही थोड़े समय में उन्होंने अध्ययन कर डाला । एक विशुद्ध ब्रह्मचारी की भांति वह सब नियमों का पालन करते हुए भिक्षा-वृत्ति से रहते थे, और गुरु की सेवा करते थे ।

शंकर के अध्ययन काल के समय के एक चमत्कार की कथा जो लोक परंपरा के रूप में चली आई है, उल्लेखनीय है । ब्रह्मचारी के रूप में शंकर एक दिन भिक्षा

के लिए किसी दरिद्र ब्राह्मण के द्वार पर जा पहुंचे । ब्राह्मण उस दिन के आहार की खोज में बाहर निकला हुआ था । शंकर को देखते ही ब्राह्मण-पत्नी बाहर निकल आई, और बड़ी दुखी हुई कि भिक्षा में देने के लिए अन्न का एक दाना भी घर में नहीं बचा रह गया था । घर का कोना कोना उसने छान डाला, और अंत में उसे एक आमलक फल (आंवला) मिला । उसने वही लाकर शंकर की भिक्षा की झोली में डाल दिया, और उसके अतिरिक्त और कुछ भी न दे सकने की अपनी असमर्थता प्रकट की। करुणामय शंकर उस देवी की भक्ति देख गद्गद हो उठे—भगवान शिव का एक नाम 'आशुतोष' है, अर्थात शीघ्र ही तृप्त हो जाने वाले—और उन्होंने धन–संपदा की देवी लक्ष्मी की स्तुति शुरू कर दी कि वह उस ब्राह्मण–दंपति पर कृपा करें । शंकर द्वारा रचित यही सर्वप्रथम स्तव था जो 'कनकधारा स्तव' (स्वर्ण-वर्षा का स्तव) के नाम से प्रसिद्ध है । शंकर की स्तुति के प्रताप से तभी स्वर्ण-आमलकों की वर्षा हो गई ।[9] वह धर्मपरायणा स्त्री, और तब ही लौटकर आया हुआ उसका पति भी, यह देख चकित रह गए, और उन्होंने उस दिव्य बालक की पूजा की। इस प्रकार शंकर ने धर्म-सेवा का जो पहला कार्य किया वह दरिद्रता से छुटकारा दिलाने का था ।

शंकर ने आठ वर्ष की अवस्था पूरी होने से पहले ही अपनी शास्त्रीय शिक्षा पूरी कर ली । 'माधवीय शंकर-विजय' का एक छंद है—"वह तर्क में पारंगत हो गए, सांख्य दर्शन पर उनका पूरा अधिकार हो गया, पातंजल योग का उनका ज्ञान विलक्षण था, भट्ट मीमांसा के जटिल सिद्धांत उन्होंने सीख लिए थे; यह भी कहना ही पड़ेगा कि ज्ञान-लाभ की इस कठिन परीक्षा में से निकलने पर उन्हें जिस आनंद की प्राप्ति हुई थी वह अद्वैत-विद्या के आनंद में समा गई थी । किसी जल-कूप से प्राप्त होने वाली तृप्ति क्या महासागर से मिलने वाली तृप्ति से बढ़-चढ़ कर हो सकती है?" (4-20)। "विद्या उन्हीं का भूषण बनती है जो उसकी साधना करते हैं, किंतु वे तो विद्या के ही भूषण बन गए थे।" (4-34) ।

विद्याध्ययन समाप्त करने के बाद शंकर गुरुकुल से लौट कर फिर अपनी माता के साथ रहने लगे । एक दिन आर्याम्बा अशक्त और अस्वस्थ हो गईं, फिर भी, सदा की भांति, स्नान के लिए वह नदी तक चलकर गईं जो घर से कुछ दूरी पर थी । लौटते समय रास्ते में वह अचेत हो गईं । शंकर ने जब सुना, वह दौड़ते हुए वहां पहुंचे और अपनी मां को घर लाए। दुबारा ऐसा न होने पाए—इस दृष्टि से उन्होंने प्रार्थना की कि चूर्णा नदी अपनी दिशा बदलकर उनके घर के पास से होकर बहने लगे । दूसरे दिन सूर्योदय होने से पहले यह चमत्कार घट चुका था । इस घटना से शंकर के व्यक्तित्व के अत्यंत मानवीय पक्ष पर प्रकाश पड़ता है । बाद के अपने लेखन में भी उन्होंने मातृत्व के प्रति अपनी गहरी भक्ति के संकेत दिए हैं । उदाहरण-स्वरूप, बृहदारण्यक उपनिषद् के अपने भाष्य में उन्होंने माता को अपने पुत्र की गुरु-स्वरूपा बताया है (पुत्रस्य सम्यगनुशास्त्री, अनुशासनकर्त्री) ।[10]

शंकर का आठवां वर्ष पूरा होने को ही था कि कुछ साधुओं की एक टोली उनके घर आई । शंकर और उनकी माता ने बड़े भक्तिभाव से अतिथियों का आदर-सत्कार किया । उस आतिथ्य से, और उस बालक में दिखाई देने वाली दैवी प्रतिभा से उन साधुओं को बड़ा ही आनंद हुआ । उन्होंने आर्याम्बा के सामने उन परिस्थितियों का स्पष्टीकरण किया जिनमें शंकर का जन्म हुआ था, और कहा कि यद्यपि मूल योजना के अनुसार उन्हें इस संसार में आठ वर्ष तक ही रहना था, पर अब यह अवधि दूनी कर दी जाएगी । उन दोनों को आशीर्वाद देने के बाद वे साधु चले गए । आर्याम्बा यह जान कर बड़े शोक में पड़ गई कि उनके पुत्र की आयु अल्प ही रहेगी । किंतु शंकर ने उनके शोक का कारण दूर करने की दृष्टि से इस लौकिक जीवन के मिथ्या स्वरूप की बात समझाने की कोशिश की । उन्होंने दिखाया कि माता-पुत्र जैसे सभी संबंध वैसे ही हैं जैसे कि दो पथिक राह में कुछ समय के लिए इकट्ठे हो जाएं ।

अपने पुत्र की वैराग्य-प्रवृत्ति देख आर्याम्बा ने उसके चित्त को पारिवारिक कामकाज और जिम्मेदारियों की ओर मोड़ने की कोशिश की । वह उनका एकमात्र पुत्र था; उसे वह किसी तरह भी गंवाने के लिए तैयार नहीं थीं । इसलिए वह अब जल्द ही उसका विवाह कर देने की तैयारी में लग गईं, किंतु उस बालक का सांसारिक विषयों के प्रति कोई आकर्षण नहीं था । वह तो आया ही था जीवन का एक ऐसा महान व्रत लेकर जिससे बड़ा कुछ और हो ही नहीं सकता—अपने जीवन के संपूर्ण अनुभव को उन्मुक्त रूप से सारे जगत की सेवा में समर्पित कर मनुष्य जाति को चरम शांति की ओर ले जाने का मार्ग दिखाने के लिए । इसलिए उसने पारिवारिक जीवन का त्याग करना चाहा, और सो भी ऐसी उम्र में जबकि दूसरे बच्चों का खिलौनों के साथ खेलना भी नहीं छूट पाता । पर माता इसकी अनुमति देने को तैयार नहीं थी । कौन मां अपने बेटे को खुशी खुशी गंवाने को तैयार होगी ! इसलिए, कोई चमत्कार हो तो काम बने !

एक दिन शंकर अपने घर के पास ही बहने वाली नदी में स्नान करने के लिए घुसे । एक मगर ने उनकी टांग पकड़ ली और उन्हें खींचकर गहरे पानी की ओर ले चला । वह अपनी मां का नाम ले कर चिल्ला उठे । आवाज सुनकर वह बुरी तरह घबड़ा गई, और आकर देखा कि उनका बेटा नदी में अपने प्राण बचाने के लिए जूझ रहा है ।[11] शंकर ने उन्हें बताया कि बात क्या थी । वह मगर उन्हें छोड़ ही नहीं रहा था । उन्होंने अपनी मां से अनुरोध किया कि वह उन्हें संन्यास आश्रम में प्रवेश करने की अनुमति दे दें । जीवन पर जब भारी प्राणान्तक संकट आया हुआ हो तब औपचारिक रूप में संन्यास ग्रहण कर लेने की प्रथा (आपत्-संन्यास) पुरानी है । बालक शंकर के इस अनुरोध को टाला नहीं जा सकता था । माता ने अनुमति दे दी । संन्यास एक नया जन्म माना जाता है, और इसलिए शंकर के प्राण लिए बिना वह संकट टल सकता था । आंखों में आंसू भरे आर्याम्बा ने अपने बेटे से कहा कि

वह यही चाहती हैं कि वह जीवित रहे; यदि संन्यास लेने से उसके प्राण बच जाएं तो इससे अधिक आनंद उन्हें और क्या होगा ! ज्यों ही शंकर को मां की अनुमति मिली, उन्होंने मन-ही-मन संन्यास ग्रहण कर लिया। मगर ने भी उसी क्षण उन्हें मुक्त कर दिया, और वह स्वयं भी उस शाप से छुटकारा पा गया जिसके फलस्वरूप उसे वह दैत्याकार देह मिली थी। बालक अक्षत अवस्था में नदी से बाहर निकल आया, और उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि एक परिव्राजक के रूप में ही वह अपना सारा जीवन बिता देगा।

मगर के जबड़ों से छुटकारा पाकर बच निकले अपने बेटे को देख आर्याम्बा यह भूल ही गई कि उनकी अनुमति से ही वह अब संन्यासी हो चुका था। उन्होंने समझा कि शंकर अब भी उनका वही बेटा है। किंतु शंकर ने उन्हें याद दिलाया कि अब से तो उसे भिक्षा देने वाली सभी स्त्रियां उसकी माताएं होंगी, उसे ज्ञान देने वाले सभी गुरु उसके पिता होंगे, और उससे दीक्षा लेने वाले सभी शिष्य उसके पुत्र होंगे। इस प्रकार, अब से कालडि वाला यह घर नहीं, सारा संसार ही उसका घर होगा। अपने उस पैतृक गांव को छोड़, संन्यास में दीक्षा देने वाले सुयोग्य गुरु की खोज में बाहर निकल जाने की शंकर ने अब अपनी मां से अनुमति मांगी। किंतु गृहत्याग के पूर्व उसने आर्याम्बा के संबंधियों के साथ बात करके उनके भरण-पोषण और उनकी रक्षा की व्यवस्था कर दी। उसने आर्याम्बा को यह आश्वासन भी दिया कि जब भी उसकी उपस्थिति आवश्यक होगी वह आ पहुंचेगा, और उनकी मृत्यु के बाद उनका अंतिम संस्कार वह स्वयं ही करेगा। पुत्र-प्राणा माता के पास इसके सिवा कोई चारा नहीं रह गया कि वह शंकर को कालडि छोड़ कर जाने दें। उन्हें प्रणाम कर शंकर अपना व्रत पूरा करने के लिए निकल पड़ा।

---

1. ब्रह्म-सूत्र-भाष्य, 1-3-33
2. 'शिवरहस्य' में गांव का नाम 'शशल' दिया गया है।
3. पेरियारु नदी, पेरियारु प्रायोजना के निर्माण के बाद से पूर्वी मदुरै क्षेत्र के अंचल को सींचने लगी है जो प्राचीन तमिल साहित्य में आलुवाय के नाम से प्रसिद्ध है।
4. 'शिवगुरु', विशेषतः केरल में एक असामान्य-सा नाम था। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि चूंकि शंकराचार्य भगवान शिव के एक अवतार माने जाने लगे थे, इसलिए शंकर के आविर्भाव के कारण उनके पिता को मृत्यु के बाद शिवगुरु कहा जाने लगा। पर इस संबंध में एक और भी विचारणीय बात है जिससे इस नाम के लिए दूसरा ही कारण दिखाई पड़ता है। शिवगुरु या शिव-गुरुनाथ नाम का प्रचलन केवल कुंभकोणम के ही

आसपास मिलता है, देश के अन्य किसी भी भाग में नहीं । साधारणतः बच्चों के नाम पास के ही किसी मंदिर के देवता के, या अपने वंश के ही इष्टदेव के, नाम पर रखे जाने की प्रथा तो प्रचलित है ही । केरल में, जिसका एक नाम परशुराम-क्षेत्र भी है, यह जनश्रुति है कि भारत के पश्चिमी तट के एक भूखंड का समुद्र से उद्धार करके परशुराम ने पूर्वी तट से लाए गए ब्राह्मणों को उस पर बसाया, और इस प्रकार केरल की स्थापना हुई । इंग्लैंड से अमरीका जाकर बस जाने वाले 'पिलग्रिम फादर्स (औपनिवेशक पादरियों) ने जिस प्रकार वहां के अपने नए गांवों के नाम मूल देश के अपने गांवों के आधार पर रखे, ठीक उसी तरह केरल के भी कितने ही स्थानों के नाम पूर्वी तटवर्ती जिलों के अनेक स्थानों के नामों पर ही रखे गए हैं । उदाहरण के लिए, आलुवाय का ही नाम लिया जा सकता है । त्रिचुर का नाम, इसी प्रकार, नम्बूदिरि परंपरा के अनुसार तिरु-शिव-पुरम हो गया ।"शंकर-विजय" नामक ग्रंथों में यह भी कहा गया है कि पुत्र-लाभ की कामना से शिवगुरु ने त्रिचुर के शिव-मंदिर में तपस्या की थी । पूर्वी तट पर कुंभकोणम के निकट 'तिरु-शिव-पुरम' नाम का एक शिवमंदिर है; पिछली सहस्राब्दी में सुप्रसिद्ध शैव उपासकों या 'नायनमारों' ने उसकी स्तुति में कितने ही स्तवों की रचना की है । इस मंदिर के देवता का नाम शिव-गुरुनाथ है, जिसके कारण कुंभकोणम और उसके आसपास के अंचल में 'शिवगुरु' या 'शिव-गुरुनाथ' एक काफी प्रचलित नाम है । संभवतः त्रिपुर का मंदिर शिवपुरम की ही प्रतिकृति है, और शंकर के पिता का 'शिवगुरु' नाम कुंभकोणम के निकट शिव-गुरुनाथ के उस मंदिर के आधार पर ही रखा गया हो, जो संभवतः उनके वंश के इष्टदेवता रह आए हों ।

5. इस नम्बूदिरि घर का नाम, केरल की एक परंपरा के अनुसार, कैप्पल्लि हल्लम है ।
6. 'शिव-रहस्य' और 'भविष्योत्तर पुराण' में कहा गया है कि शंकर का जन्म कलियुग के दो सहस्र वर्ष बीतने पर होगा ।
7. ए.बी. कीथ : 'कर्म मीमांसा' पृ. 11
8. 'चिद्विलास' और 'गुरुरत्नमालिका' के अनुसार शिवगुरु तब तक जीवित थे और उन्होंने स्वयं ही यह संस्कार किया ।
9. वह नम्बूदिरि घर तब से 'स्वर्णत्तमना' (स्वर्ण-गृह) कहलाने लगा । आज भी कालडि के निकट यह घर मौजूद है और इसी नाम से प्रसिद्ध है ।
10. बृहदारण्यक उपनिषद् पर भाष्य, 4-1-2 ।

11. कोचीन में प्रसिद्ध एक जनश्रुति के अनुसार, शंकर एक दिन संध्या समय, कुछ कुछ अंधेरा हो जाने पर, किसी शुद्धि स्नान के लिए नदी पर गए, जबकि उनकी मां साथ थीं और उन्हें दीये से रोशनी दिखाती चल रही थीं।

2. कालडि से काशी

आठ वर्ष की उम्र में कालडि छोड़ने के बाद बालक शंकर गुरु की खोज में उत्तर की ओर चल पड़ा। अद्वैत के अनुसार, गुरु-शिष्य, पिता-पुत्र आदि संबंधों के बीच दिखाई देने वाला सत्य एक ही है—ब्रह्म-आत्म ज्ञानी इस सत्य को पहचानते हैं, अज्ञानी नहीं पहचान पाते। शंकर तो स्वयं ही इस संसार में अद्वैत के सत्य का उद्घाटन करने आए थे, किंतु परंपरानुसार वह गुरु की खोज में दूसरों के सामने यही आदर्श उपस्थित करने की दृष्टि से निकल पड़े कि ज्ञान की दीक्षा उसी से ली जा सकती है जो उसे देने का अधिकारी हो। कालडि से चलकर दिव्य मार्ग के इस पथिक का रास्ता जंगलों और पहाड़ों में, नगरों और गांवों में से होकर था। लंबी यात्रा के बाद शंकर नर्मदा नदी के तट पर पहुंचे जहां[1] अंत में उन्हें अपने गुरु मिल गए। गौड़पाद के शिष्य गोविन्द भागवतपाद एक गुफा में रहते थे, और बड़े विद्वान और ज्ञानी पुरुष उनके शिष्यों के रूप में सेवा में लगे हुए थे।

गोविन्द समाधि में मग्न बैठे थे जब शंकर गुफा के द्वार पर आ खड़े हुए, उन्होंने अपने आने की सूचना दी और शिष्य बना लिए जाने की प्रार्थना की। समाधि से उठने पर गोविन्द ने उनसे प्रश्न किया, "कौन हो तुम?" उत्तर में शंकर ने, 'दशश्लोकी' नाम से प्रसिद्ध दस श्लोकों में, ब्रह्म का स्वरूप बताया, जो यथार्थ 'मैं' है। 'परिशेष्य न्याय' के आधार पर शंकर ने इन दस श्लोकों में यही दिखाया है कि संसार के सारे प्रपंचों का लय हो जाने पर जो सत्ता बच रहती (परिशेष) है वह अद्वैत आत्मतत्व है। जाग्रत अवस्था में जो विषय-जगत दिखाई देता है वह स्वप्नावस्था में विलीन हो जाता है, भाव-कल्पित स्वप्न-जगत का गहरी निद्रा में लोप हो जाता है। किंतु, विषयगत और आत्मगत, इन दोनों ही जगतों के अभाव में भी आत्मा शुद्ध चित् रूप में भासमान रहती है। निद्रा शून्य की स्थिति नहीं है, क्योंकि शून्य का बोध होना स्वयं शून्य होना नहीं है। आत्मा का किसी भी काल में किसी के भी द्वारा खंडन (बाध) नहीं होता। जब कुछ भी नहीं रह जाता तब भी वह बनी रहती है। जब देश (स्थान) और काल दोनों का ही अस्तित्व नहीं रहता, तब भी आत्मा की कोई क्षति नहीं होती। यह नित्य (सदा रहने वाला), अविकृत, सत् (सत्ता) है, जिसे उपनिषदों में आत्मा और ब्रह्म के नामों से अभिहित किया गया है। आत्मा शिव है, परम पुरुषार्थ-स्वरूप; वह ज्ञानघन, अखंड अद्वितीय है। सुचारु रूप से विचार करने पर यह प्रतीत हो जाना चाहिए कि ब्रह्म ही आत्मा है—"मैं" (अहम्) का आधार। इस प्रकार 'दशश्लोकी' में शंकर ने

पारमार्थिक एकत्व के उस परम सत्य को ऐसी भाषा में प्रकट किया है जिसमें जिज्ञासुओं को अज्ञान-निद्रा से झकझोर कर जगा देने की विलक्षण क्षमता है ।[2]

शंकर के मुंह से अद्वैत की इतनी उत्कृष्ट व्याख्या सुन गोविन्द मुग्ध हो गए ।[3] उन्होंने इसके लिए उनकी सराहना की, और कहा कि उन्हें पता है महादेव शिव ही शंकर का रूप रख कर वेदांत का ज्ञान देने के लिए पृथ्वी पर अवतीर्ण हुए हैं । विधि-पूर्वक शंकर को परमहंस-संन्यास की दीक्षा दे दी गई और अद्वैत के सत्य की शिक्षा देने वाले 'महावाक्यों' (उपनिषदों की प्रमुख वाणियों) का आशय बतला कर उन्हें उपदेश दिया गया ।

गोविन्द भागवतपाद के आश्रम में शंकर के रहते समय एक चमत्कार घटा । नर्मदा नदी में बाढ़ आई हुई थी और तटवर्ती गांवों में पानी चढ़ आया था । झोपड़ियों पर भारी संकट था और लोग आतंकित हो उठे थे । करुणामय शंकर ने 'जलाकर्षण मंत्र' के पाठ द्वारा और अपना कमंडल धरती पर रख कर, नदी की बाढ़ को रोक दिया । पानी घटने लग गया, और इस प्रकार पड़ौस की ही झोपड़ियां नहीं, उनके गुरु का आश्रम भी डूबने से बच गए । व्यास मुनि की भविष्यवाणी थी कि नर्मदा की बाढ़ को रोक सकने में जो समर्थ होगा और इस प्रकार जो उस अंचल को विध्वंस से बचा लेगा वही 'ब्रह्म-सूत्र' पर भाष्य लिखने का अधिकारी होगा । गुरु गोविन्द यह जानते थे, और अन्य दृष्टियों से भी वह शंकर की महत्ता को मान चुके थे । इसलिए उन्होंने उन्हें काशी जा कर 'ब्रह्मसूत्र' का ही नहीं, अन्य दो 'प्रस्थानों'—'उपनिषदों और भगवद्गीता' के भी भाष्य लिखने की आज्ञा दी ।

शंकर काशी गए, जो वाराणसी के नाम से भी प्रसिद्ध था । यह नगर भारतीय इतिहास में सदा ही पांडित्य और आध्यात्मिक ज्ञान के लिए विख्यात रहा है । काशी में ही शंकर ने अपने प्रथम शिष्य को दीक्षा दी । उनकी कृपा प्राप्त करने वाला यह नवयुवक विष्णु शर्मा था, जो कुछ ही समय पहले चोल देश से आया था । शंकर ने उसे संन्यास का नया नाम दिया–सनन्दन । शीघ्र ही शिष्यों की संख्या बढ़ने लगी । सनन्दन के प्रति उन्हें ईर्ष्या हुई, और लगा कि शंकर की उसके प्रति विशेष कृपा है जिसका वह अधिकारी नहीं है । आचार्य शंकर ने तब यह निश्चय किया कि इन्हें सनन्दन की श्रेष्ठता का अनुभव करा दिया जाए । एक दिन जब वे अपने इन शिष्यों के साथ गंगा स्नान कर रहे थे, उन्होंने दूसरे तट पर सनन्दन को जाते देखा, जो स्नान करने के बाद पहने जाने वाले कपड़े लिए हुए था । शंकर ने उसे पुकार कर इधर आने को कहा । सनन्दन, बिना कुछ सोचे-विचारे, उसी तरह पैदल चलता हुआ नदी पार करने लगा, और उसका एक एक पांव पानी पर जहां जहां पड़ता वहीं एक एक कमल उसके पांव को सम्हालने के लिए निकल आता । इसी से उसका नाम पद्मपाद पड़ गया ।

शंकर के दो और शिष्यों का यहां उल्लेख किया जा सकता है । प्रभाकर नाम का कोई व्यक्ति शंकर के पास अपने गूंगे बेटे को लेकर आया, ताकि आचार्य की कृपा से उसके मुंह में वाणी फूट निकले ।[4] आचार्य ने जब लड़के से पूछा—"तू कौन है?" तब लड़का उसी क्षण बोल उठा कि वह आत्मा है जिसका शरीर और मन की रचना करने वाले तत्वों के साथ संबंध बिठाने का यत्न करना भ्रमपूर्ण है । यह बात उसने कुछ श्लोकों में कही, और हर श्लोक में उसने यह बात दोहराई : "मैं वही आत्मा हूं जो नित्यज्ञान स्वरूप है" (स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्म)। आचार्य परम प्रसन्न हुए और संन्यास में उसे दीक्षित कर उसका नाम रखा—'हस्तामलक', अर्थात, जिसका ज्ञान वैसा ही स्पष्ट है जैसा हाथ पर रखे आंवले का । हस्तामलक की इस कृति को यह असाधारण गौरव प्राप्त हुआ कि शंकर ने स्वयं 'हस्तामलकीय भाष्यम्' के नाम से उसका भाष्य किया ।

इसी समय के आसपास शंकर ने कलानाथ नामक एक और शिष्य को दीक्षा दी थी । शंकर के पास पहुंच कर उसने शिष्य बनने की इच्छा प्रकट की और उनकी स्तुति में कठिन तोटक छंद में एक स्तोत्र रचा ।[5] शंकर ने उसे संन्यास में दीक्षित कर उसका नाम तोटकाचार्य रखा । गुरु शंकर ही उसके सर्वस्व हैं, क्योंकि इस हृदयग्राही स्तोत्र में कहा गया है कि गुरु ही अज्ञानांधकार को दूर करने वाले हैं । इसका एक एक शब्द शिष्य की गुरु-भक्ति से ओतप्रोत है : हे गुरु शंकर, मुझे शरण दीजिए (भव शंकर देशिक मे शरणम्) ।

शंकर के काशी-प्रवास काल की एक घटना उल्लेख योग्य है । एक दिन वाराणसी में अपने शिष्यों को साथ लिए वह गंगा जी की ओर चले जा रहे थे । कुछ दूर पर एक अस्पृश्य उन्हें अपनी ओर आता दिखाई दिया, जिसके पीछे पीछे चार खूंखार कुत्ते थे । उस अस्पृश्य से शंकर ने कहा—भाग जा, भाग जा ! उत्तर में अस्पृश्य बोला—"क्या भाग जाए, और कहां से ? जिसे भाग जाने के लिए कहा, वह शरीर है, या आत्मा? यदि शरीर से अभिप्राय है, तो सभी शरीरों की रचना एक ही प्रकार के उपादानों से हुई है; और फिर, एक शरीर दूसरे शरीर से दूर क्यों भाग जाए ? यदि आत्मा से अभिप्राय है, तो वह जा कैसे सकता है, और किसके पास से ? वह तो अद्वैत है ! क्या अन्न-निर्मित एक शरीर, अन्न-निर्मित दूसरे शरीर से दूर चला जाए ? या एक चेतन-स्वरूप दूसरे-चेतन स्वरूप से दूर चला जाए ? हे संन्यासियों में सर्वश्रेष्ठ, आपने जब कहा कि 'भाग जा, भाग जा', तब आपका अभिप्राय किसके भाग जाने से था, मुझे बताने की कृपा करें ।"

न भौतिक दृष्टि से ही कुछ भिन्न है, न आत्म-दृष्टि से ही । सभी भूत-जगत एक है, आत्मा एक है । भेद तभी उत्पन्न होते हैं और तभी उनकी कुछ संगति हो सकती है जब दो, एक-दूसरे पर, अध्यारोपित हों, या जब भ्रमवश एक का लक्षण दूसरे

में देखा जाए । ज्ञानी लोग विवेक द्वारा इन दोनों का अंतर समझते हैं, और जानते हैं कि जो भूत-जगत दिखाई देता है वह सत्य नहीं है, और यह कि एकमात्र आत्मा ही सत्य है ।

आत्मा के पारमार्थिक एकत्व के संबंध में वह अस्पृश्य स्पष्टीकरण करता ही चला गया—

"आत्म-सत्ता के अंदर, जो सहज आनन्द और ज्ञान का तरंगहीन महासागर है, भिन्नता की यह कैसी घोर भ्रांति—कि 'यह ब्राह्मण है', और 'वह कुत्ते के मांस का भक्षण करने वाला ?' गंगा की धारा या चांडालों की बस्ती की गलियों में जमा गंदे पानी में प्रतिबिंबित होने वाले सूर्य के बीच क्या कोई अंतर है; अथवा स्वर्ण-पात्र और मिट्टी के पात्रों में स्थित आकाश में ?"

आत्मा सत्-चित्-आनंद स्वरूप है । उसमें न विकृति है और न वैचित्र्य—एक ऐसा महासागर, जिसमें लहरें न उठती हैं न उठ सकती हैं । उसका सच्चा स्वरूप सच्चिदानंद के सूत्र में दर्शाया गया है । सत्, चित् और आनंद में से किसी एक को, शेष दो से पृथक, आत्मा का लक्षण नहीं माना जा सकता । आत्मा या ब्रह्म की सत्, आदि लक्षणों से पहचान नहीं की जा सकती । आत्मा तो है ही सत्-चित्-आनंद; सत् ही चित् है, चित् ही आनंद है । आत्मा में, और आत्मा के लिए, भिन्नता रंचमात्र भी नहीं है । न आत्मा के समान ही कुछ है और न आत्मा से भिन्न ही कुछ है, ओर न यह कुछ अवयवों (अंगों) को मिला कर कोई एक (पूर्ण) सत्ता बनी है । वह एकरूप हे, सर्वत्र और सदा ही एक-समान । आत्मा अद्वैत है, न उसकी कोई सीमा है और न बंधन । आत्मा एक ऐसे तटहीन महासागर की भांति है जिसमें रंचमात्र भी हलचल नहीं होती । तब उसके लिए भेद कैसे संभव है—जन्म से उच्च और नीच जैसा भेद? ब्रह्म में, जो सर्वत्र है ओर एक अभेद सत्ता के रूप में है, भेद की सूक्ष्मातिसूक्ष्म सभावना भी कैसे हो सकती हे ? भेद तो शरीर, आदि उपाधियों के कारण ही जान पड़ते हैं । किंतु ये भेद आत्मा का स्पर्श नहीं करते ।

शंकर ने ज्ञान देने वाली यह वाणी सुनी और वह उसी क्षण समझ गए कि चांडाल के वेश में यह तो साक्षात भगवान शिव ही हैं । सच पूछा जाए तो यह किसी एकपात्रीय नाटक जेसी घटना थी—एक ही सत्ता गुरु-शिष्य के दो रूपों में खेल कर रही थी । इस संबंध में शंकर ने स्वयं जो कहा है उसे हम एक रूपक में 'दक्षिणामूर्ति स्तोत्र' में पाते हैं : "शिष्य और गुरु पुत्र, और पिता के रूपों में एक ही सत्य प्रकट होता हे ।" वह चांडाल और शंकर, दोनों ही परम शिव की अभिव्यक्ति थे । और यह नाटक इसलिए रचा गया जिससे कि शंकर 'मनीषा-पंचकम्' के पांच जगमगाते हुए छंदों के माध्यम से एकत्व के ज्ञान का अमृत-सार उंड़ेल सकें ।

अंत में वह छद्मवेश दूर हुआ । चांडाल के स्थान पर अब वहां साक्षात विश्वनाथ

शिव खड़े थे, और उन कुत्तों ने चार वेदों का अपना प्रकृत स्वरूप धारण कर लिया था। शंकर ने भगवान के सामने मस्तक नवाया और परम सत्य का द्योतक यह उद्गार प्रकट किया—"शारीरिक दृष्टि से तो, हे शिव, मैं आपका दास हूं, जीवात्मा की दृष्टि से, हे त्रिनेत्र, मैं आपका ही एक अंग हूं, और हे सर्वात्मन्, आत्मा की दृष्टि से मैं साक्षात वही हूं जो आप हैं। यही मेरा सर्वशास्त्रसम्मत निश्चित निष्कर्ष है।"

परम प्रसन्न हो भगवान शिव ने आध्यात्मिक एकत्व की पुनः स्थापना के शंकर के महान व्रत की सिद्धि के लिए उन्हें असंख्य आशीर्वाद दिए और फिर उसी निराकार में समा गए जहां से उन्होंने आकार ग्रहण किया था।[6]

चांडाल के छद्मवेष में प्रकट होने वाले भगवान के आदेशानुसार शंकर हिमालय-स्थित बदरिकाश्रम चले गए, और वहां व्यास मुनि का साक्षात्कार प्राप्त कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। यहीं उन्होंने अपने परम गुरु (गुरु के गुरु) गौड़पाद के दर्शन किए और उनका भी आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद वह काशी लौट आए और भाष्यों की ही रचना नहीं की बल्कि अपने स्वतंत्र प्रकरण ग्रंथ भी लिखे। कहा जाता है कि यह कार्य उन्होंने मणिकर्णिका घाट[7] पर मुक्तिमंडप में बैठकर किया, और वहीं अपने शिष्यों के सम्मुख अपनी कृतियों की व्याख्या की।

एक जनश्रुति यह है कि शंकर ने पहले 'विष्णुसहस्रनाम' पर अपनी टीका लिखी, और उसके बाद उपनिषदों, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र की 'प्रस्थानत्रयी', 'वेदांत के तीन प्रामाणिक आधार' पर अपने 'भाष्य' लिखे। एक बार जब कि वह 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' का स्पष्टीकरण कर रहे थे, एक वृद्ध पुरुष के रूप में व्यास का आविर्भाव हुआ और उन्होंने शंकर से कहा कि वह अद्वैत के अपने पक्ष के समर्थन में जो कहना हो, कहें। दोनों के बीच वह शास्त्रार्थ चार दिन तक चलता रहा। पद्मपाद अंत में समझ गया था कि यह 'ब्रह्मसूत्र' के निर्माता स्वयं व्यास मुनि ही हैं जो छद्मवेष रचे हुए हैं। उसने शंकर और उस वृद्ध पुरुष दोनों से ही प्रार्थना की कि वे अपना वाद-विवाद बंद करें, क्योंकि यदि भगवान शिव के अवतार शंकर और भगवान विष्णु के अवतार व्यास मुनि ही आपस में झगड़ते रहे तो फिर शांति कहां रहेगी? इस तरह पहचान लिए जाने पर व्यास ने शंकर को आशीर्वाद दिया और उनके भाष्य की प्रशंसा कर शंकर की आयु की अवधि सोलह से बढ़ाकर बत्तीस कर दी। उन्होंने यह भी इच्छा प्रकट की कि शंकर सारे देश में भ्रमण कर लोगों के बीच वेदांत की शिक्षा का प्रसार करें।

शंकर के काशी-प्रवास काल की एक घटना 'भज गोविन्दम्' के लोकप्रिय स्तोत्र की रचना के संबंध में है। एक बार शंकर अपने शिष्यों के साथ किसी सड़क पर चले जा रहे थे। एक वयोवृद्ध विद्वान व्याकरण के नियमों की जोर जोर से आवृत्ति कर रहे थे। शंकर के कानों में यह आवाज गई। उस वैयाकरण पर उन्हें दया आई। उसके पास जा कर उन्होंने उसे सलाह दी कि वह अपना अमूल्य समय व्याकरण पर

नष्ट न कर भगवान की पूजा और भक्ति में लगाए । इसी अवसर पर 'भज गोविन्दम्' रचा गया । 'भज गोविन्दम्' से आरंभ होने वाली टेक के अतिरिक्त इस गीत में शंकर ने बारह छंद रचे; यही कारण है कि इस स्तोत्र का नाम 'द्वादश-मंजरिकास्तोत्र' पड़ा । कहा जाता है कि शंकर के साथ जो चौदह शिष्य वहां मौजूद थे उनमें से प्रत्येक ने एक एक छंद इसमें जोड़ा । शंकर का 'भज गोविन्दम्' गोविन्द की स्तुति में (गोविन्द शंकर के गुरु का भी नाम था) रचा गया विशुद्ध स्तोत्र नहीं है; अद्वैत वेदांत की यह एक प्रकरण-पुस्तिका भी है । इसमें शंकर ने उस संपूर्ण ज्ञान का समावेश कर दिया है जो किसी शिष्य को अद्वैत का सत्य समझाने के लिए आवश्यक है —नाशवान वस्तुओं की इच्छा का त्याग करना चाहिए; जीवन, संपत्ति, परिवार, संतति आदि की क्षण भंगुरता पर विचार करना चाहिए; लोभ और अभिमान जैसे दुर्गुणों पर विजय पानी चाहिए; संतोष, धैर्य और श्रद्धा जैसे गुणों का अर्जन करना चाहिए; और इसका अनुभव करना चाहिए कि यह जगत माया का दिखावटी जादू ही है; और केवल आत्मा ही सत्य है । उस वैयाकरण को संबोधित करते हुए शंकर कहते हैं—"भगवान की उपासना करो ! जो नाशवान है उसके प्रति आसक्ति रखने से मुक्ति नहीं मिल सकती; जो अविनाशी है उसके प्रति भक्ति रखना ही एकमात्र साधन है । यह सोचना कोरा धोखा है कि जो टिक नहीं सकता उसके भोग से तृप्ति मिलेगी । ऐसा सोचने वाला बहुत बड़े भ्रम में रहता है और वह मूढ़-मति है । यह सोचना भी अपने को भ्रम में रखना है कि ईश्वर की चिंता जीवन के अंतिम दिनों के लिए छोड़ रखनी चाहिए । मृत्यु आ खड़ी होने पर कोई भी ईश्वर की ओर अपना चित नहीं ले जा सकता, यदि निरंतर भक्ति और उपासना द्वारा उसके लिए पहले से तैयारी न की गई हो । मोक्ष के मार्ग की रूपरेखा बताते हुए शंकर कहते हैं—"सत्संग से वैराग्य उत्पन्न होता है; वैराग्य से भ्रम का नाश होता है; भ्रम का नाश होने से स्थिरता पैदा होती है; स्थिरता से जीवन्मुक्ति मिलती है ।"[8]

---

1. आनन्दगिरि के अनुसार, उस स्थान का नाम व्याघ्रपुर है । कुछ दूसरे विवरणों के अनुसार, शंकर को अपने गुरु बदरिकाश्रम में मिले ।
2. देखिए–श्री शंकराचार्य के 'दशश्लोकी' का टी. एम. पी. महादेवन और एन. वीजिनाथन द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद–"वेदांत इन टेन वर्सेज" (शंकर विहार, मद्रास-12, 1965) ।
3. चिद्विलास के अनुसार, जिन्होंने यह आश्रम हिमालय में माना है, गोविन्द के पूछने पर शंकर ने अपना परिचय यह कहकर दिया कि वह शिवगुरु के पुत्र हैं, और उन्होंने उन्हें सारी कहानी सुनाई, कि किस तरह उन्हें कालडि छोड़ना ही पड़ा, जिसमें मगर वाली यह घटना भी शामिल थी ।

यह सब सुनाकर उन्होंने उनका शिष्य होने की इच्छा प्रकट की ।

4. 'माधवीय शंकर विजय' के अनुसार, यह घटना 'श्री बलिपुरम' में घटी । बालक की अवस्था उस समय तेरह वर्ष की थी ।
5. देखिए, टी. एम. पी. महादेवन का "होमेज टु शंकर"(गणेश एंड कंपनी, मद्रास-17, 1959), पृ. 29-43 ।
6. देखिए,टी. एम. पी. महादेवन लिखित 'दि विस्डम ऑव यूनिटी' (मनीषापंचकम्) ऑव श्री शंकराचार्य (गणेश एंड कंपनी, मद्रास-17, 1967) ।
7. "माधवीय शंकर विजय" के अनुसार शंकर ने अपने भाष्यों की रचना बदरिकाश्रम में की थी ।
8. देखिए—टी. एम. पी. महादेवन का 'शंकर्स भज गोविन्दम' (गणेश एंड कंपनी, मद्रास-17, 1962) ।

3. दिग्विजय

शंकर के लिए अब दिग्विजय हेतु निकल पड़ने का समय आ गया था । जिन शक्तियों के विरुद्ध उन्हें मैदान में उतरना था वे हिंदुत्व के गढ़ के अंदर भी थीं और बाहर भी । किंतु यह युद्ध ऐसा था जिसमें पराजित पक्ष को खोना कुछ भी नहीं था, उलटे पाना-ही-पाना था । आस्तिक और तथाकथित नास्तिक दोनों ही प्रकार के दर्शनों की शक्ति में शंकर के कारण वृद्धि ही हुई, जब उनके अनुयायियों को यह दिखा दिया गया कि उनके अपने अपने दर्शनों में और उनके पृथक पृथक आचारों में क्या क्या दोष हैं और उन्हें दूर करना कितना आवश्यक है ।

उस समय का सबसे अधिक शक्तिशाली और व्यापक आस्तिक दर्शन 'पूर्व-मीमांसा' का था । इस दर्शन के अनुसार, संपूर्ण वेद का तात्पर्य कर्मकांड अथवा धर्म-कृत्य मात्र है, न कि अद्वैत आत्मा या ब्रह्म । पहले तो 'मीमांसकों' की वेद संबंधी इस उलटी दृष्टि को ही शंकर को ठीक करना पड़ा । इस दर्शन के एक बहुत बड़े प्रतिपादक कुमारिल भट्ट थे जो प्रयाग में रहते थे । सनातनियों की एक परंपरागत मान्यता के अनुसार कुमारिल भगवान सुब्रह्मण्यम के ही अवतार थे, जो शिव-पार्वती के कनिष्ठ पुत्र (कुमार) थे । यह अवतार इसीलिए हुआ बताया जाता था कि बौद्ध सिद्धांतों का खंडन करके वैदिक धर्म की पुनः प्रतिष्ठा की जा सके । अपने यौवन काल में कुमारिल ने छलपूर्वक बौद्ध बनकर एक बौद्ध विहार में अध्ययन किया था । वह उस मत का प्रत्यक्ष अध्ययन करना चाहते थे जिससे कि आगे चलकर वह उसका प्रभावशाली ढंग से खंडन कर सकें । शास्त्रार्थ में बौद्ध विद्वानों को पराजित करके उन्होंने वेदों की, और उनमें निर्दिष्ट आचार-शास्त्र की, प्रतिष्ठा फिर से स्थापित की थी । वेदों को स्वतः-प्रमाण रूप और परम स्वतंत्र सिद्ध करने की दृष्टि से उन्हें यह भी प्रतिपादित करना पड़ गया था कि किसी सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर को मानना आवश्यक नहीं है ।

काशी छोड़कर शंकर प्रयाग गए,[1] जहां गंगा, यमुना और अंतःसलिला सरस्वती का संगम है । वहां जाने में उनका उद्देश्य यही था कि कुमारिल भट्ट से मिलें और वेदांत में उनकी निष्ठा उत्पन्न कर, संभव हो तो 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' पर उनसे एक वार्त्तिक (पद्य-टीका) लिखाएं । किंतु प्रयाग पहुंचने पर शंकर को बताया गया कि मीमांसा के

प्रचंड समर्थक कुमारिल तो तुषाग्नि (धान की भूसी की धीरे धीरे सुलगने वाली आग) में दग्ध.होकर अपने प्राण ही देने जा रहे हैं । यह कठोर प्रायश्चित्त करने का निश्चय कुमारिल ने अपने दो पाप-कृत्यों के लिए किया था—एक तो अपने बौद्ध गुरुओं को धोखा देना, और दूसरा, मीमांसक के रूप में, ईश्वर की सत्ता का अस्वीकार । शंकर तेजी से घटनास्थल पर पहुंचे । कुमारिल के शरीर का जलना शुरू हो चुका था, पर उनका चित पूर्ण रूप से सजग और शांत था । उन्होंने शंकर को बताया कि प्रायश्चित की क्रिया शुरू हो चुकने के बाद अब वह उससे विरत नहीं हो सकते थे । किंतु फिर भी उन्हें प्रसन्नता थी कि उनका अंतिम काल शंकर के सत्संग में बीतेगा । उन्होंने बताया कि वेदांत के सत्य के संबंध में अब उनके अंदर कोई संदेह नहीं रह गया है । पूर्व मीमांसा की अपर्याप्तता को प्रमाणित करने की दृष्टि से कुमारिल ने शंकर के सामने यह सुझाव रखा कि माहिष्मती जाकर वह कट्टर मीमांसक मण्डन मिश्र के साथ शास्त्रार्थ करें जिनका वेदों पर भी अच्छा अधिकार है और जो शास्त्रार्थ की कला में भी प्रवीण हैं ।

अपने शिष्यों को लिए हुए शंकर, मण्डन के नगर माहिष्मती[2] के लिए चल दिए । 'माधवीय विजय' में दो संकेत इस बात के दिए गए हैं कि मण्डन वेदों के उद्‌भव विद्वान और कर्मकांड का प्रतिपादन करने वाले मीमांसा के मत के प्रबल अनुयायी थे । मण्डन के घर के द्वार पर पिंजड़ों में जो शुकांगनाएं (मैना) थीं वह निरंतर इस प्रकार के वाक्यों को दुहराती रहती थीं—"ज्ञान स्वतः-प्रमाण है, या परतः-प्रमाण ? फलदाता कर्म स्वतः है या ईश्वर ? संसार नित्य है, अथवा क्षणभंगुर ?"[3] शंकर जब घर पहुंचे, उसका दरवाजा अंदर से बंद था, क्योंकि मण्डन श्राद्ध के अनुष्ठान में लगे हुए थे । कहा जाता है कि शंकर अपने योग–बल से घर के अंदर जा पहुंचे । मण्डन, जो विश्वरूप के नाम से प्रसिद्ध थे, एक संन्यासी को अपने सामने देख आगबबूला हो गए और उन्हें भद्दी-से-भद्दी गालियां देते हुए बोले कि पितरों की सद्‌गति के लिए किए जाने वाले उस पावन धर्मानुष्ठान के समय उनका वहां क्या प्रयोजन ? संन्यासी की जब कर्मकांड में आस्था ही नहीं, तब ऐसे धार्मिक अनुष्ठान के समय किसी घर में वह क्यों आया ? मण्डन मिश्र अच्छी तरह जानते थे कि धर्मशास्त्रों के अनुसार, श्राद्ध करने वाले के लिए क्रोध करना निषिद्ध है, किंतु वेदांत और संन्यास आश्रम के प्रति उनकी घृणा ने उन्हें अंधा कर दिया था । व्यास और जैमिनी[4] उस अवसर पर वहीं उपस्थित थे और उन्होंने मण्डन मिश्र से अपना क्रोध शांत करने के लिए कहा, और शंकर से उस श्राद्ध के अवसर पर आतिथ्य ग्रहण करने का अनुरोध किया । मण्डन ने अपनी भूल समझी और श्राद्ध-भोज में सम्मिलित होने का उन्हें न्यौता दिया । शंकर ने उत्तर दिया कि वह भोजन के लिए नहीं, मण्डन के साथ शास्त्रार्थ करने आए हैं । मण्डन ने शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार कर ली और अगला दिन उसके लिए निश्चित हुआ । बाजी यह

लगाई गई कि यदि मण्डन पराजित हों तो वह संन्यास लें और वेदान्त के अनुयायी हो जाएं और अगर हार शंकर की हो तो उचित प्रायश्चित्त करके वह श्वेत वस्त्र धारण करें और कर्मकांडी बन जाएं । इस महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ में मध्यस्थता करने का काम मण्डन की विख्यात विदुषी स्त्री सरसवाणी[5] के सुपुर्द हुआ । दूसरे दिन, जब शास्त्रार्थ आरंभ हुआ, सरसवाणी ने दोनों ही प्रतिद्वंदियों को अपने अपने गले में धारण करने के लिए एक एक माला दी और कहा कि जिसकी माला पहले मुरझाने लगेगी वह पराजित माना जाएगा । इतना कह कर वह अपने घर के कामकाज में जुट गईं । 'शास्त्रार्थ का केंद्रीय विषय यह था कि वेद का अभिप्राय क्या है । मण्डन मीमांसा वाली व्याख्या का प्रतिपादन करते रहे और शंकर अद्वैत वेदांत की मान्यता का ।

मण्डन और शंकर के बीच कई दिन तक शास्त्रार्थ चलता रहा । हर रोज जब सरसवाणी भोजन के लिए उन्हें बुलाने आती तो अपने पति से तो वह यह कहती थीं कि "कृपा उठिए और भोजन कीजिए", पर आचार्य शंकर से कहती थीं—"कृपा कर भिक्षा ग्रहण कीजिए ।" शास्त्रार्थ के दिन जैसे जैसे बीतते जा रहे थे यह स्पष्ट होता जा रहा था कि मण्डन के नीचे से धरती खिसकती जा रही है । अंत में एक दिन उनके गले की माला भी कुम्हलाई दिखाई पड़ी । सरसवाणी की दृष्टि से यह छिपा नहीं रह सका कि उनके पति को पराजय स्वीकार करनी पड़ेगी और जो बाजी लगाई गई थी उसके अनुसार संन्यास लेना पड़ेगा । इसलिए उस दिन उन्होंने उसी हिसाब से उन दोनों को, एक साथ ही, यह कहकर भोजन के लिए बुलाया—"कृपा कर चलें, और भिक्षा ग्रहण करें ।"[6]

मण्डन मिश्र ने पराजय स्वीकार की और अद्वैत के सत्य की अकाट्यता के अनुयायी हो, शंकर से प्रार्थना की कि वह उन्हें अपना शिष्य बना संन्यास की दीक्षा दें । शंकर ने उन्हें दीक्षित करते हुए उनका नया नाम सुरेश्वर रखा । बाद को सुरेश्वर 'वार्तिककार' के नाम से प्रसिद्ध हुए, क्योंकि उन्होंने आचार्य के भाष्यों, विशेषतः बृहदारण्यक और तैत्तिरीय उपनिषदों के भाष्यों पर वार्तिक लिखे । सरसवाणी ने भी अपने पति के मार्ग का अनुसरण किया और शंकर की शिष्य-मंडली में शामिल हो गई ।

शंकर को पता चल गया कि उनकी माता का अंत निकट है । अपने दिए हुए वचन का स्मरण कर वह कालडि[7] पहुंचे । अपने बेटे को फिर आया देख माता खिल उठी । वह उनके भी गुरु हो गए और अध्यात्म का उपदेश दे उन्हें अपना अंत स्वीकार करने के लिए तैयार कर दिया, जिससे उनकी मृत्यु शांति और आत्मविश्वास के साथ हुई । शंकर के आत्मीय स्वजनों ने मां के अंतिम संस्कार करने से उन्हें रोकना चाहा । संन्यासी द्वारा दाह-क्रिया की बात का समर्थन भला वह कैसे कर सकते थे ? उन्होंने पूरा असहयोग किया । शंकर ने अपनी मां के घर के बगीचे के एक कोने में केले के वृक्षों की उनकी चिता सजाई, और कोई भी सहायक न होने के कारण, शव के

टुकड़े टुकड़े करके उन्हें चिता पर रखने के लिए ले गए । और फिर, योगबल से चिता में अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी । कहा जाता है कि उनके नम्बूदिरि आत्मीय-स्वजन तभी से शापग्रस्त चले आ रहे हैं जिसके फलस्वरूप अभी हाल तक वे लोग अपने शवों को कुछ क्षत–विक्षत करके, अपने घर के बगीचों में, जलाते आए हैं ।

अब शंकर के दिग्विजय के घनघोर अभियानों का ब्यौरा लीजिए । उन्होंने सारे भारत का एकाधिक बार भ्रमण किया—शायद तीन बार । जहां भी वह गए उन्होंने लोगों में प्राण फूंक दिए । विरोध का भी अवश्य सामना करना पड़ा । पर यह उन्होंने मधुर वाणी में और युक्तियों के आधार पर किया, और सबसे अधिक अपने अनुभव की समग्रता के बल पर । एक ऐसे काल में जब कि कितने ही झूठे मतों के चक्कर में पड़ी हुई भोली-भाली जनता गुमराह हो रही थी, और सनातनी लोगों के पास असनातनियों के नास्तिकतावाद के जवाब में सड़े-गले और बेमतलब के कर्मकांड से बढ़कर कोई दूसरा अच्छा मार्ग नहीं था, शंकर उपनिषदों के दर्शन की विस्मृतप्राय ऊंचाइयों तक फिर से जा चढ़े थे और वहां से लोक-कल्याण के लिए अमृत की पुनीत धारा बहाकर लाए थे ।

शंकर तोड़ने-फोड़ने के लिए नहीं, रिक्तता को भरने के लिए आए थे, परिपूर्णता देने; और उन्होंने अद्वैत के जिस दर्शन की शिक्षा दी उसे अन्य दार्शनिक मतों का प्रतिद्वंदी नहीं मानना चाहिए । शंकर के गुरु के भी गुरुदेव गौड़पाद पहले ही यह शिक्षा दे गए थे कि अद्वैत ओर द्वैतवादी मतों के बीच कोई विरोध हो ही नहीं सकता था । जिस प्रकार कोई अपने ही हाथ-पांव से लड़ाई नहीं करता, उसी प्रकार अद्वैत की भी अन्य दार्शनिक मतों के साथ कोई लड़ाई नहीं हो सकती । शंकर ने एकत्व और संपूर्णता की भावना को फिर से उपलब्ध किया था और उथल-पुथल तथा संघर्ष के उस युग में उसे लोगों के सामने ला रखा था; उनका उद्देश्य यही था कि विभिन्न मतवादों के बीच की खाई को पाटा जाए और विभिन्न अवयवों को संपूर्ण के कलेवर में यथास्थान बिठा दिया जाए । उनका लक्ष्य केवल ब्रह्म की अद्वैतता (ब्रह्माद्वैत) की स्थापना करना ही नहीं बल्कि दर्शनों की भी चरम अद्वैतता (दर्शनाद्वैत) की स्थापना करना था । इस संबंध में उन्होंने वेदों की ही मूल मान्यता का अनुसरण किया था, जो इस परम सत्य की घोषणा करके कि "सत्य एक है", तुरंत बाद ही, समन्वय की दृष्टि से, इतना और जोड़ देते हैं—"जो उसे जानते हैं वे विभिन्न प्रकारों से उसका प्रकाश करते हैं ।"

शंकर ने दूसरे सिद्धांतों ओर मतों की जो आलोचना की वह विध्वंसात्मक नहीं थी और उससे सनातनी मतों को जितना लाभ मिला उतना ही असनातनी मतों को भी । मीमांसकों और बौद्धों के बीच यों तो जन्मजात शत्रुता थी, पर नास्तिकतावादी सिद्धांतों के प्रतिपादन द्वारा उनके बीच अजीब ढंग का मैल बैठ गया था । शंकर को इन दोनों की ही एकांगिता को दूर करना था । किंतु शंकर की आलोचना उनके लिए

हानिकर नहीं सिद्ध हुई । कर्मकांड को ज्ञान मार्ग के प्रारंभिक सोपान के रूप में उसका उचित स्थान मात्र दे दिया गया । अहिंसा के जिस उच्च सिद्धांत पर बुद्ध ने इतना जोर दिया था, और जो वेदों के लिए अज्ञात नहीं था, उसे हिंदू आचार-दर्शन का एक आवश्यक अंग बना दिया गया और स्वयं बुद्ध ही विष्णु के एक अवतार मान लिए गए ।

दर्शन की ही भांति धर्म के क्षेत्र में भी शंकर की शिक्षाओं का लाभदायक परिणाम प्रकट हुआ । विभिन्न धार्मिक संप्रदायों और उनकी संस्थाओं में जो बुराइयां घर कर गई थीं उन्हें तो उन्होंने अवश्य दूर करना चाहा, और ऐसा करते हुए कई बार उनके प्राणों पर संकट भी आए, किंतु ईश्वर प्राप्ति के मार्ग के विभिन्न साधनों के रूप में उन्हें, उनके निर्मल रूपों में, उन्होंने कायम रहने दिया । ईश्वर के साकार रूप की धारणा, शंकर के मतानुसार, उच्चतम धारणा नहीं है । किंतु उनके लिए ईश्वर 'न तो अनावश्यक ही है और न ही आम लोगों को बहलाने भर का साधन ।' ईश्वर-भक्ति अद्वैत की अनुभूति के मार्ग का एक आवश्यक सोपान है । इसलिए, इस दृष्टि से, ईश्वर को दिया जाने वाला नाम नहीं, यह बात महत्वपूर्ण है कि उसकी उपासना कितनी सच्चाई और लगन के साथ की जाती है । 'हरि-स्तुतिः' में शंकर कहते हैं—"संसार-अंधकार के विनाशक हरि का गुणगान कर, जो एकमात्र सत्य है, और बुद्धि-भेद के कारण ही जिसे विविध संज्ञाएं दे दी गई हैं, यथा, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, अग्नि, सूर्य, चंद्र, इंद्र, वायु और यज्ञ ।" धर्म का बखान भले ही विविध प्रकार से किया जाय, पर उसका सार एक ही है । शंकर ने सच्ची आध्यात्मिक सार्वभौमिकता का ही प्रतिपादन किया और स्वयं उसे अपने आचरण में उतारा । बिना किसी भेदभाव के उन्होंने अपने स्तोत्रों में ईश्वर के विभिन्न स्वरूपों की स्तुति की है । हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदायों का संस्कार करके शंकर ने उनको दृढ़ता प्रदान की ।

देवताओं की आंखों को जुड़ाने वाला था वह लुभावना दृश्य—कुमारावस्था के उस परिव्राजक का, अपने शिष्यों और अनुयायियों की एक खासी भीड़ को साथ लिए ऐक्य और शांति का मंत्र फूंकते हुए, जगह जगह घूमते फिरना । विभिन्न 'शंकर-विजय' नामक ग्रंथों में शंकर के इन भ्रमण–स्थानों के जो वर्णन दिए गए हैं उनमें काफी अंतर है । पर इस बात पर इन विवरणों में कोई मतभेद नहीं है कि शंकर ने सभी महत्व के तीर्थस्थानों की, विभिन्न धार्मिक पंथों के सभी बड़े बड़े गढ़ों की और विद्याध्ययन के सभी केंद्रों की यात्रा की थी । कहा जाता है कि देश भर में कम-से-कम बहत्तर धार्मिक पंथ और संप्रदाय मौजूद थे जो दलबंदी की दलदल में फंसे हुए थे और अपने जघन्य आचार–आचरण द्वारा निम्नकोटि की वासनाओं और भावनाओं को बढ़ावा दे रहे थे ।

आनन्दगिरि ने अपने 'शंकर-विजय'[8] में बड़े विस्तार से इस बात का ब्यौरा प्रस्तुत

किया है कि दिग्विजय की अपनी यात्रा में शंकर कहां कहां गए, विभिन्न धार्मिक मतों, विभिन्न आचार मानने वाले पंथों और संप्रदायों, और विभिन्न दार्शनिक मतवादों के अनुयायियों के साथ उनका क्या शास्त्रार्थ हुआ, जिसके फलस्वरूप उन अनुयायियों की वेद और वेदांत के प्रति किस तरह आस्था हुई। यहां हम उनमें से कुछ मुठभेड़ों का ही उल्लेख करेंगे। रामेश्वरम जैसे स्थानों में शैव मत के प्रतिनिधि शंकर से शास्त्रार्थ में भिड़ने आए। शैव-मत में भी कई संप्रदाय हैं — शैव, रौद्र, उग्र, भट्ट, जंगम और पाशुपत। सभी की मान्यता है कि रुद्र--शिव ही परमेश्वर हैं और उनकी पूजा-भक्ति द्वारा और शरीर पर शैव मतों के सूचक चिह्नों को धारण करने से ही मुक्ति मिलती है। उज्जयिनि में कापालिकों के साथ टक्कर हुई। जटाजूट बांधे, स्फटिक के मोतियों की माला पहने, और बाल-चन्द्र की रेखा का प्रतीक धारण किए वे लोग शंकर के पास आए और उनके सम्मुख उन्होंने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया कि भैरव ही सब जीवों के स्वामी हैं, और अखिल विश्व के संहारकर्ता होने के नाते एकमात्र वही सृष्टि के विधाता और पालनकर्ता हो सकते हैं। अनंतशयनम में विभिन्न वैष्णव संप्रदायों के अनुयायियों ने शंकर को शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया। मूल वैष्णव संप्रदाय के अतिरिक्त इनमें पांचरात्र, वैखानस, कर्महीन वैष्णव और अन्य शाखा-प्रशाखाओं के अनुयायी भी थे। उन्होंने यह प्रतिपादित करना चाहा कि अपने किसी-न-किसी रूप में विष्णु ही प्रमुख ईश्वर हैं, और वैष्णव आगमों का ही विशेष महत्व है और वे ही प्रामाणिक हैं। सुब्रह्मण्यस्थल में हिरण्यगर्भ पंथ के अनुयायियों ने अपने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया कि सूक्ष्म जगत की आत्मा, हिरण्यगर्भ, ही मूल देवता है। कुछ अलग अलग स्थानों में कई देवी-संप्रदाय भी मौजूद थे। तुलजाभवानीपुरम नाम के एक स्थान में प्रकृति के रूप में शक्ति की पूजा करने वालों का दावा था कि एकमात्र शक्ति ने ही सर्वथा स्वतंत्र रूप से सारी सृष्टि रची है, उसी ने सृष्टिकर्ता ब्रह्मा और अन्य देवताओं को जन्म दिया है, और भवानी के रूप में उन्हीं की पूजा करने से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। इसी प्रकार, कुवलयपुरम नाम के नगर में महालक्ष्मी को मानने वाले संप्रदाय का कहना यह था कि धन-संपत्ति की वह देवी ही समस्त जीवों की जननी है। फिर, विद्या की देवी शारदा में आस्था रखने वाले भी थे। उनके अनुसार, शारदा की पूजा से मोक्ष की प्राप्ति सुनिश्चित थी।

पुरंगवरम में गणपति संप्रदाय के समर्थक शंकर से शास्त्रार्थ करने आए। इस संप्रदाय की भी छह शाखाएं थीं, जिनमें से प्रत्येक गणेश के छह रूपों में से किसी एक की भक्त थी—महागणपति, हरिद्रा-गणपति, उच्छिष्ट-गणपति, नवनीत-गणपति, स्वर्ण-गणपति और संतान-गणपति। इन सभी उपसंप्रदायों के प्रधान देवता गणपति हैं जो सभी बाधाओं का नाश करने वाले और परम मंगलदायक हैं। एक दूसरा संप्रदाय और था, जो सूर्य का उपासक था।

शंकर के अनुसार, इनमें से प्रत्येक संप्रदाय और मतवाद का एक ही जवाब है—अद्वैत। प्रत्येक सांप्रदायिक देवी-देवता, ईश्वर का ही एक रूप है—उसी में वे सब देवी-देवता अपने परमोत्कर्ष को प्राप्त करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति के रूप में ईश्वर ही ब्रह्मांड का संपूर्ण और एकमात्र कारण है। इनमें से किसी भी एक रूप की, या ईश्वरत्व के किसी निम्नतर स्वरूप की भी उपासना अंत में उपासक को उसके लक्ष्य के कुछ और निकट ही ले जाएगी। निःस्वार्थ सेवा, ईश्वर की किसी भी अभिव्यक्ति के प्रति भक्तिभाव, और मन का निग्रह करने वाले योग की साधना से श्रवण, मनन और निदिध्यासन युक्त ज्ञान-मार्ग का अनुसरण करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है जिसका फल ब्रह्मानुभूति है, जो मोक्ष ही है। शंकर ने विभिन्न संप्रदायवादियों को यही समझाया कि वे अपनी संकीर्णता और कट्टरपन का परित्याग कर दें, विभिन्न पंथों और संप्रदायों के सूचक चिह्नों से अपने शरीर को दागना छोड़ दें, और उपासना तथा रहन-सहन की उच्चतर पद्धतियों को अपनाएं।

शिवोपासना से संबंधित तीन तीर्थस्थान ऐसे हैं जहां का स्थलवृक्ष अर्जुन का वृक्ष है—तिरुप्पुडैमरुदुर, जिसे पूतार्जुन भी कहते हैं (तिरुनलवेलि जिले में), तिरुविडैमरुदुर, जिसे संस्कृत में मध्यार्जुन कहते हैं (तंजवुर जिले में), और मल्लिकार्जुन, जो श्री-शैलम (आंध्र प्रदेश) में है। इन तीर्थस्थानों में से द्वितीय, अर्थात तिरुविडैमरुदुर में, शंकर के पहुंचने पर एक चमत्कार घटा। आचार्य कहते थे कि वहां के महामंदिर का महालिंग स्वयं अद्वैत के पक्ष का समर्थन करे। शंकर की प्रार्थना पर उस महालिंग से भगवान शिव का आविर्भाव हुआ, और उन्होंने अपना दाहिना हाथ उठा कर घोषणा की—"सत्यम् अद्वैतम्, सत्यम् अद्वैतम, सत्यम् अद्वैतम्।" जिन्होंने भगवान के इस रूप के दर्शन किए वे अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने शंकर को अपना आचार्य मान लिया।

मल्लिकार्जुन (श्री-शैलम) में एक दूसरे ही प्रकार का चमत्कार घटा। उन दिनों श्री-शैलम कापालिक संप्रदाय का गढ़ था। इस संप्रदाय के अनुयायियों ने जब देखा कि शास्त्रार्थ में शंकर को हराना आसान नहीं है तब उन्होंने उनकी हत्या करने का षड्यंत्र रचा। जब वह अकेले थे तब उनके पास उन लोगों का एक प्रतिनिधि पहुंचा। वह कापालिक शंकर से बोला—"आपका तो जीवन में एक ही व्रत है—दूसरों की सहायता करना। मैंने दीर्घकाल तक शिवोपासना की है। उन्हें प्रसन्न करने हेतु मुझे बलि चढ़ाने के लिए या तो किसी सर्वज्ञ साधु का या किसी सम्राट का सिर चाहिए। किसी सम्राट तक तो मेरी पहुंच नहीं। आप पक्के साधु हैं। क्या मुझे आपका सिर मिल सकता है?" शंकर ने मुसकराते हुए जवाब दिया—"आपकी इच्छा पूर्ण करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं पर आप ऐसे समय आइए जब मैं गहरी समाधि में रहूं, और मेरा कोई शिष्य मेरे निकट न हो।" कापालिक ने वैसा ही किया। पर वह अपना जघन्य कार्य करने को उद्यत ही हुआ था कि नृसिंह के रूप में किसी ने आकर उसी का वध कर

दिया । यह कोई और नहीं, स्वयं पद्मपाद था—शंकर का प्रथम शिष्य । पद्मपाद स्नान करने गया हुआ था, पर उसे कापालिक के उस षड्‌यंत्र का पूर्व-बोध हो गया । उसने अपने इष्टदेव नृसिंह का ध्यान किया । साक्षात नृसिंह भगवान ही मानो उसकी काया में प्रविष्ट कर गए और ठीक समय पर वहां पहुंचकर उन्होंने उस दारुण विपत्ति का निवारण किया । शंकर ने तो केवल कापालिक को मरा पड़ा देखा, और निकट ही नृसिंह-रूप को भी । कुछ क्षण बाद उस रूप के स्थान पर श्रद्धावनत पद्मपाद दिखाई पड़ा, जिसे कुछ पता ही नहीं था कि क्या से क्या हो गया ।

अपने छुटपन में पद्मपाद नृसिंह का परम भक्त था । किसी ने नृसिंह-मंत्र से दीक्षित कर उसे उनकी उपासना में लगा दिया था । पद्मपाद, जिसका उस समय का नाम विष्णु शर्मा था, एक पहाड़ी के नीचे के जंगल में चला गया और उस मंत्र का जाप करते हुए घोर तपस्या में लीन हो गया । एक शिकारी कई दिन से यह देख रहा था । एक दिन उसने उससे पूछा, "वह क्या कर रहा है ?" पद्मपाद ने यह कहकर उसे टाल देना चाहा, कि "इस तरह के जंगलों में नृसिंह का अड्डा रहता है; मैं उसे देखने आया हूं ।" पर शिकारी का कुतूहल और भी बढ़ गया । उसने जानना चाहा कि नृसिंह कैसा होता है; वह किस तरह का सिंह है ? पद्मपाद ने बताया—"नृसिंह की देह का निचला भाग तो मनुष्य का होता है और उपरला भाग सिंह का ।" शिकारी नृसिंह की खोज में निकल पड़ा और वादा कर गया कि अगला दिन बीतने से पूर्व वह उसे ले आएगा । निरंतर नृसिंह की ही भावना में लीन उस शिकारी ने जंगल का कोना कोना छान डाला, पर वह उसे कहीं नहीं मिला । दूसरा दिन बस अब बीतने को ही था । शिकारी ने अपने प्राण दे देने का निश्चय कर लिया । उसी समय नृसिंह का आविर्भाव हुआ । शिकारी ने फटकारा कि उसने इतनी देर क्यों की; और एक जंगली बेल से उसे बांधकर घसीटता हुआ, पद्मपाद के पास लाकर बड़े उत्साह से चिल्लाकर बोला—"यह देखो, पकड़ लाया नृसिंह को ।" पर पद्मपाद को कुछ नहीं दिखाई पड़ा, सिर्फ नृसिंह की आवाज सुनाई दी—"शिकारी को मेरा स्वरूप इसलिए दिखाई दिया कि उसने बड़ी एकाग्रता से मेरा ध्यान किया । पर तुम मेरी आवाज ही सुन सकते हो । अब तुम्हें जब भी आवश्यकता होगी, मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा ।" इसी घटना के बाद चोल देश का वह नवयुवक विष्णु शर्मा काशी पहुंचा और शंकर का शिष्य हो गया । और अब, श्री-शैलम में, पद्मपाद, नृसिंह की कृपा से अपने गुरु के प्राण बचाने में समर्थ हो सका ।

शंकर की कश्मीर-यात्रा का विवरण देकर ही हम इस अध्याय को समाप्त करेंगे । चीनी यात्री ह्युत्सान-त्सांग ने, जो 631 ईसवी में कश्मीर गया था और दो साल वहां रह कर "सूत्रों और शास्त्रों" का अध्ययन करता रहा था, वहां के पांडित्य की भारी प्रशंसा करते हुए लिखा है—"प्राचीन काल से ही यह देश पांडित्य के लिए प्रसिद्धि प्राप्त

कर चुका है और यहां के पंडितों में से सब-के-सब न केवल अत्यंत धार्मिक और सदाचारी बल्कि बड़े ही प्रतिभाशाली, और सिद्धांतों का स्पष्ट प्रतिपादन करने वाले हैं, संस्कृत के अपने पांडित्य और संस्कृति के ज्ञान के लिए कश्मीरी पंडितों का बड़ा ही सम्मान था। यह स्थान काशी के समान ही पवित्र माना जाता था। बाद के एक पर्यटक अबुल फजल ने, जो अकबर का दोस्त, सलाहकार और रहनुमा था, स्पष्ट ही कश्मीर घाटी की प्राकृतिक शोभा और वहां के पवित्र वातावरण से मुग्ध होकर वहां की तारीफ में लिखा था, —"इस देश के लिए यह कम तारीफ की बात नहीं है कि एक ओर तो दुनियादार लोगों को यह रिझा लेता है और दूसरी ओर संसार-त्यागी एकांत-प्रेमी साधु-संन्यासी भी इसकी शरण लेते हैं।" कश्मीर में हिंदू धर्म, अपने शैव और शाक्त, दोनों रूपों में तो फैला ही हुआ था, साथ ही बौद्ध धर्म भी वहां व्यापक रूप से प्रचलित था। ह्युत्सान-त्सांग के हिसाब से, उस समय, कश्मीर घाटी में 100 से अधिक बौद्ध विहार और 5000 से अधिक बौद्ध मतावलंबी थे। प्रमुख हिंदू संप्रदायों के मंदिरों, मठों आदि की संख्या तो बहुत ही अधिक थी। कश्मीर की भूमि आस्तिक और नास्तिक दोनों ही प्रकार के धर्मों और दार्शनिक मतवादों की वृद्धि के लिए अत्यंत उर्वर और उदार थी।

शैव मत का कश्मीरी रूप, जो 'प्रत्यभिज्ञा', अथवा 'त्रिका' के नाम से ज्ञात है, एकत्ववाद या अद्वैत का ही एक प्रकार है, क्योंकि उसके अनुसार, परम सत्य स्वरूप शिव ही सभी जीवों की आत्मा है, और उनसे पृथक कोई दूसरा सत्य नहीं है। शिव को 'अनुत्तर' कहा गया है—वह सत्य जिसके परे कुछ नहीं है। और वही शुद्ध चेतन, स्वरूप, परम अनुभूति स्वरूप, परमात्मा है। उन्हीं से संसार एक भासमान सत्ता या प्रतिबिंब के रूप में उत्पन्न होता है। किंतु यह भासमान सत्ता, कश्मीरी शैव मत के अनुसार, वास्तविक सत्ता है, जबकि अद्वैत वेदांत के अनुसार संसार-प्रपंच मिथ्या है। मजे की बात यह है कि शंकर ने अपने 'दक्षिणामूर्ति स्तोत्र' में, अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए कश्मीरी शैव मत में व्यवहृत मूल शब्दों में से भी कुछ का उसी तरह प्रयोग कर लिया जिस प्रकार उनके परमगुरु (गुरु के गुरु) गौड़पाद ने अपनी 'माण्डूक्य कारिका' में, उसी दृष्टि से, बौद्ध शब्दावली का प्रयोग किया है। 'दक्षिणामूर्त्ति स्तोत्र' में संसार की तुलना, मानो जादू के जोर से दर्पण में पड़ने वाले किसी नगर के प्रतिबिंब के साथ की गई है; किसी जादूगर या किसी महायोगी द्वारा दिखाई जाने वाली भ्रांति की ही भांति उसे मिथ्या या माया, बताया गया है; प्रकृति और देह तथा मन की रचना करने वाले विभिन्न उपादानों समेत सभी भौतिक तत्व माया के ही खेल हैं; अविद्या के भ्रम में पड़कर आत्मा संसार की धारा में बह जाती है, पर जब वह जाग उठती है और अपने सच्चे, अद्वैत, आत्म-स्वरूप को पहचान लेती है (प्रत्यभिज्ञायते) तब वह पुनर्जन्म की यातनाओं से छुटकारा पा जाती है; दक्षिणामुख जगद्गुरु के रूप

में शिव भी, अपनी चिन्मुद्रा द्वारा, एक भी शब्द का उच्चारण किए बिना ही, अद्वैत के ही सत्य का उपदेश दे रहे हैं। इस प्रकार, इस छोटे से स्तोत्र में शंकर ने, कश्मीरी शैव मत की भाषा में, अद्वैत वेदान्त की विशेषताओं की व्याख्या की है।

शाक्त मत भी कश्मीरी शैव मत की भांति अद्वैत का ही एक रूप है, किंतु अंतर यह है कि इसमें साधना के लिए परम सत्ता के शक्ति-रूप पर जोर दिया गया है। इस मत के अनुयायियों के लिए कश्मीर एक महत्वपूर्ण तांत्रिक केंद्र है। आर्यावर्त को, जो कि भारत ही है, श्री–चक्र का बिंदुत्रिकोण कहा जाता है, जिसके तीन कोने कश्मीर, नेपाल और कन्याकुमारी हैं, और केंद्र-बिंदु काशी। इस मान्यता के अनुसार, कश्मीर को भगवान कामेश्वर की पत्नी कामेश्वरी का देश माना गया है। कल्हण ने अपनी 'राज-तरंगिणी' में (जो 1148-49 ईस्वी में रची गई) कश्मीर में देवी शारदा के एक मंदिर का उल्लेख किया है जहां ललितादित्य के राज्यकाल में गौड़ (बंगाल के) लोग दर्शनार्थ आया करते थे। (एक विवरण के अनुसार शंकर गौड़ देश की अपनी यात्रा के बाद कश्मीर गए थे।) एम. ए. स्टीन ने, जिन्होंने 'राज-तरंगिणी' का अंग्रेजी में अनुवाद किया है, कृष्णगंगा की उपरली घाटी के शारदी नाम के स्थान पर इस मंदिर का होना बताया है। इस तीर्थ की लोकप्रियता के बारे में अलबरूनी ने लिखा है कि "कश्मीर के अंदरूनी हिस्से में, राजधानी से बोलोर पर्वत की ओर की दो-तीन दिन की यात्रा पर, 'शारदा' नाम की एक काष्ठ प्रतिमा मिलती है जिसका बड़ा महात्म्य है और जिसका दर्शन करने के लिए बराबर तीर्थयात्री आते रहते हैं।" स्टीन के अनुसार, बाद को, भक्तों की सुविधा के विचार से, उस प्राचीन मंदिर की ही देखादेखी एक दूसरा मंदिर श्रीनगर के निकट ही बना दिया गया।

कश्मीर के शारदा-मंदिर तक शंकर के पहुंचने की कथा 'माधवीय शंकर विजय' के अंतिम अध्याय में दी गई है। एक दिन प्रातःकाल जब शंकर अपने शिष्यों के साथ गंगा के तट पर पड़ाव डाले हुए थे, उन्हें कश्मीर की बड़ी प्रशंसा सुनने को मिली और पता चला कि वहां विद्या की देवी शारदा का एक मंदिर है। उस मंदिर में, जो चार द्वारवाले एक मंडप के रूप में बनाया गया था, 'सर्वज्ञपीठ' नाम का देवी का एक आसन था। उस ऊंचे आसन तक उसी की पहुंच हो सकती थी जो स्वयं सर्वज्ञ हो। उत्तर, पूर्व और पश्चिम से आने वाले कितने ही पंडित अब तक उस मंदिर में प्रवेश करने का प्रयत्न कर चुके थे, पर दक्षिण से अभी तक किसी ने यह प्रयास नहीं किया था। शंकर दक्षिण के ही रहने वाले थे, और उन्होंने जब यह बात सुनी तो वहां जाकर अद्वैत की सर्वव्यापकता और सर्वश्रेष्ठता को सिद्ध करने की उनकी इच्छा हुई। कश्मीर पहुंचने पर जब वह उस मंदिर के दक्षिणी द्वार पर जा खड़े हुए तब विभिन्न संप्रदायों के पंडितों ने उन्हें रोका और उनके, या अद्वैत के, सर्वज्ञता के दावे को चुनौती दी। वैशेषिक परमाणुवादी, नैयायिक तार्किक, सांख्य द्वैतवादी, बौद्ध और जैन, एक एक कर सभी शंकर

के साथ शास्त्रार्थ में भिड़े । शंकर ने केवल इसी बात का प्रमाण नहीं दिया कि उन सभी मतों के दर्शन का उन्हें अंतरंग ज्ञान है, बल्कि अपने विरोधियों को उन्होंने अद्वैत की श्रेष्ठता का भी पूरी तरह से कायल कर दिया । शास्त्रार्थ करने के लिए सबसे आखिर में आने वाले पूर्व-मीमांसक थे जिन्होंने यह सिद्ध करना चाहा कि वेदों का अभिप्राय कर्मकांड से ही है । उनकी युक्तियों का खंडन करते हुए शंकर ने दिखा दिया कि शास्त्रों का वेदांत के साथ ही पूरा मेल बैठता है, और इस प्रकार वेदांत के दावे को प्रमाणित कर दिया । शारदा-मंदिर का द्वार खुल गया । शारदा ने स्वयं अंतिम परीक्षा ली और पंडित-मंडली के समक्ष सिद्ध कर दिया कि अपने पांडित्य और चरित्र दोनों के ही बल पर शंकर सर्वज्ञ पीठ तक पहुंचने के अधिकारी हैं । शंकर ने इस गौरव को अपना व्यक्तिगत गौरव नहीं माना । जैसा कि 'माधवीय शंकर विजय' के रचयिता ने एक प्रारंभिक अध्याय में कहा है, शंकर ने विभिन्न कोटि के विरोधियों को अपने व्यक्तिगत लाभ या सम्मान के लिए नहीं पराजित किया था, क्योंकि अहंभाव तो उनमें नाममात्र को भी नहीं था, बल्कि वेदांत के निंदकों और उसकी तोड़-मरोड़ करने वालों से उसके पुरातन सत्य का उद्धार करने के लिए किया था ।

शंकर की कश्मीर-यात्रा से संबंधित कितनी ही किंवदंतियां प्रचलित हैं । एक यह है कि कश्मीर में शंकर की मुठभेड़ अभिनवगुप्त नाम के एक शाक्त से हुई । शाक्त मत के उस नेता ने पराजित हो जाने पर अपने तंत्र-बल से शंकर के शरीर में एक घातक रोग पैदा कर दिया । पर अपने शिष्यों की अत्यंत भक्तिपूर्ण सेवा से वह बच गए । एक दूसरी किंवदंती यह है कि किसी ब्राह्मणी की पुत्र-वधू ने शाक्त मत पर उनके साथ शास्त्रार्थ किया, और उस मत के दर्शन में उस युवती का परम पांडित्य देख शंकर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने उसे 'तरंग' नाम का एक विशिष्ट शिरोवस्त्र पहनने के लिए दिया, जिसे आज भी कश्मीर की ब्राह्मणियां पहनती हैं । एक जनश्रुति के अनुसार शंकर ने कश्मीर में "सौन्दर्य-लहरी" की रचना की । शंकर द्वारा रचित माने गए विभिन्न स्तोत्रों में इस स्तोत्र का सबसे ऊंचा स्थान है एक सौ छंदों के इस समूचे स्तुतिकाव्य में श्री-चक्र के तांत्रिक मत की प्रामाणिकता व्याख्या के साथ साथ सौंदर्य की प्रतिभा-स्वरूपा देवी के रूप का हृदयग्राही वर्णन है । 'समय-आचार' शाक्त-साधना की वैदिक विधि है, और उसकी रूपरेखा स्पष्ट करते हुए शंकर ने साधक को यह बताया है कि शक्ति की उपासना का चरम लक्ष्य अद्वैत की उपलब्धि है ।

शंकर की कश्मीर-यात्रा और उनकी आध्यात्मिक विजय के स्मारक के रूप में वहां की एक पहाड़ी के ऊपर एक मंदिर है, और उस पहाड़ी और मंदिर दोनों के ही नाम उन्हीं के पुनीत नाम पर रखे गए हैं । शंकराचार्य मंदिर शंकराचार्य पर्वत पर है, जिसे तख्त-ए-सुलेमान की पहाड़ी भी कहा जाता है । श्रीनगर के शहर से मिली-जुली ही 1000 फुट ऊंची पहाड़ी की चोटी पर खड़ा यह मंदिर बड़ा ही भव्य दिखाई देता

है । यह मंदिर कब बना, इस संबंध में कई अनुमान लगाए गए हैं । स्थानीय जनश्रुति के आधार पर जनरल कनिंघम ने जलौक को इसका निर्माता बताया है, जो अशोक का पुत्र था (लगभग 220 ईसा पूर्व) । किंतु मंदिर की स्थापत्य कला के आधार पर फर्गुसन इस मत को स्वीकार नहीं करते । सभी विभिन्न मतों की परीक्षा करने के बाद रामचन्द्र काक इस निर्णय पर पहुंचे हैं कि शंकराचार्य मंदिर 700 ईस्वी पूर्व के आसपास ही कभी बना होगा ।

कश्मीर घाटी के निवासियों पर कश्मीर की शंकर-यात्रा का कितना गहरा प्रभाव पड़ा और उसके फलस्वरूप उनका दृष्टिकोण कितना व्यापक बन गया तथा उनके अंदर कितनी आध्यात्मिक गहराई आ गई, इसे स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण देना आवश्यक है । राज-तरंगिणी के रचयिता कल्हण जन्म से शैव थे, पर उन्होंने सभी धर्मों और संप्रदायों का समान आदर किया ।, अपने पिता और भाई के बाद कश्मीर की राजगद्दी पर बैठने वाले जैन-उल-अबीदीन (1421-1472 ईस्वी) ने उनके द्वारा वहां के हिंदुओं पर किए गए अत्याचारों का प्रायश्चित करने की भरपूर कोशिश की । हिंदुओं को अशक्त बनाने के लिए उन पर जो प्रतिबंध लगा दिए गए थे उन्हें उसने दूर किया, जो देश छोड़ कर भाग गए थे उन्हें फिर वापस बुलाया और उनकी भूमि और संपत्ति उन्हें लौटा दी, और नाना प्रकार से हिंदू धर्म के प्रति अपना अनुराग प्रकट किया । उसने संस्कृत सीखी और हिंदुओं के धर्मग्रंथों का श्रद्धापूर्वक अध्ययन किया । अपने बेटों के आपसी झगड़ों के कारण उसके जीवन के अंतिम वर्ष बड़े ही दुख में बीते थे, पर योगवशिष्ठ में प्रतिपादित अद्वैत दर्शन से उसने शांति प्राप्त की थी । अबुल फ़जल ने, जिसका उल्लेख पहले हो चुका है, कश्मीर के ब्राह्मणों की बड़ी प्रशंसा की है और उन्हें आध्यात्मिकता से ओतप्रोत बताया है । "इस देश का सबसे प्रतिष्ठित वर्ग ब्राह्मणों का है", वह लिखता है, "और दकियानूसी परंपराओं और रस्म-रिवाजों में बंधे होने पर भी वे ईश्वर के पक्के भक्त हैं । ये लोग अपने धर्म से भिन्न धर्म वालों की निंदा नहीं करते फिरते, और न भीख मांगते या दीन हो गिड़गिड़ाते हैं ।" पिछले एक हजार वर्षों की अवधि में, भारत की ही भांति, कश्मीर भी अगर नाना बाधाओं के बीच अपनी संस्कृति को सुरक्षित रख पाया है तो इसका श्रेय शंकर को कम नहीं है, जिन्होंने अद्वैत की पक्की नींव पर हिंदू धर्म को संघटित करने में ही अपना सारा जीवन खपा दिया

---

1. 'चिदविलास' के अनुसार यह स्थान 'रुद्र' है, जहां उस समय किसी भद्रसेन का राज था । आनन्दगिरि के अनुसार यह स्थान 'रुद्रपुर' है ।
2. मण्डन के निवासस्थान के बारे में कई मत हैं । 'माधवीय शंकर विजय' के अनुसार, वह विदर्भ देश में रहते थे ; 'चिद्विलासीय' के अनुसार, कश्मीर

में; और 'व्यासाचलीय' के अनुसार, मगध में । आनन्दगिरी के अनुसार वह हस्तिनापुर के निकट 'विद्यालय' में रहते थे, जिसे स्थानीय रूप में 'बिजिलाबिंदु' कहा जाता था ।

3. आनन्दगिरि के 'शंकर-विजय' में शुकांगनाओं द्वारा उच्चारित इस प्रकार के और भी कितने ही वाक्य दिए गए हैं ।
4. आनन्दगिरि ने श्राद्ध के उस अवसर पर उपस्थित अतिथियों में केवल व्यास का ही उल्लेख किया है ।
5. जनश्रुति की परंपरा के अनुसार, सरसवाणी सरस्वती की ही अवतार थीं । उनके जो अन्य नाम दिए गए हैं वे हैं: भारती, उभयभारती, द्वय-भारती, और शारदा ।
6. शंकर के चरित-लेखकों ने यहां एक अप्रासंगिक क्षेपक घुसा दिया है जिसके अनुसार सरसवाणी ने शंकर के साथ शास्त्रार्थ करना चाहा और शंकर ने कामशास्त्र की शिक्षा लेने के लिए मृत राजा अमरुक के शव में प्रवेश किया ।
7. 'माधवीय शंकर विजय' के अनुसार, शंकर को दिव्यदृष्टि से पता चल गया कि उनकी माता का अंत निकट है । वह तब शृंगेरी में थे और वहीं से कालडि की ओर छूट चले । व्यासाचल के अनुसार, यह घटना काशी में व्यास के साथ हुए शंकर के शास्त्रार्थ के बाद घटी । 'चिद्‌विलास' के अनुसार शंकर के काशी छोड़ते ही यह बात हुई ।
8. अध्याय 4-51 । आनन्दगिरि के अनुसार यह यात्रा व्यास के साथ हुए उनके मिलन के पहले हुई थी, जिन्होंने एक वृद्ध का वेष धारण कर उनके साथ इस वास्तविक उद्देश्य से शास्त्रार्थ किया था कि उनके 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' की कड़ी आलोचना कर उनकी परीक्षा ली जाय ।

4. लक्ष्य की सिद्धि

बदरीनाथ और केदार से रामेश्वरम और कन्याकुमारी तक शंकर ने सारे देश का कई बार भ्रमण किया। उन्होंने सनातनधर्म की पुनः प्रतिष्ठा की, उसकी आत्मा को फिर से जाग्रत किया और कालांतर में उसके अंदर जो विकार आ गए थे उन्हें दूर किया।

शंकर को सबसे पहले जो पग उठाने थे उनमें एक था हिंदुओं के बीच धार्मिक सामंजस्य की स्थापना। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, इसका प्रयत्न उन्होंने एकत्व के सिद्धांत के आधार पर किया, जिसका नाम ही अद्वैत है। हिंदू धर्म में अनेकानेक मत और संप्रदाय रहें, पर उनके बीच झगड़ा होने की क्या बात है ? और उनमें से कोई एक ही क्यों यह दावा करे कि वह अकेला ही पूर्णतया सत्य और सबसे अधिक पावन है ? छह प्रमुख हिंदू मतों का शुद्धीकरण और समन्वय करने का प्रयत्न करने के कारण ही उन्हें 'षण्मतस्थापकाचार्य' (शैव, वैष्णव, शाक्त, सौर, गाणपत्य और कौमार—इन छह मतों के स्थापक) की संज्ञा दी गई थी। विभिन्न मतों के बीच सामंजस्य की भावना की वृद्धि करने के लिए शंकर ने जो ठोस कदम उठाए थे उनमें से एक था उपासना की 'पंचायतन' पद्धति का प्रचार। इस पद्धति के अनुसार, आदित्य, अम्बिका, विष्णु, गणनाथ और महेश्वर—इन पांच देवताओं की पूजा संयुक्त रूप से की जाती है, और इन पांच में प्रधान स्थान उस देवता को दिया जाता है जो उपासक का इष्टदेव होता है। 'मार्कण्डेय संहिता' के अनुसार, शंकर ने अपने शिष्यों से कहा था कि अद्वैत के अनुयायियों को पंचायतन उपासना करनी चाहिए।

हिंदुओं के धार्मिक जीवन में मंदिरों और तीर्थों का बहुत बड़ा स्थान है। शंकर ने इनमें से अधिकांश की तीर्थयात्रा की थी और जहां भी आवश्यक जान पड़ा उन्होंने पूजा की अशुद्ध पद्धति को शुद्ध किया, जीवों की बलि पर रोक लगाई, देवताओं के क्रुद्ध, रौद्र रूप को दयालु रूप में परिणत किया, और इसी प्रकार की अन्य पद्धतियां अपनाईं। आज भी कितनी ही जनश्रुतियां प्रचलित हैं जिनसे इस बात के ब्यौरे मिलते हैं कि शंकराचार्य ने हिमालय से ले कर कन्याकुमारी तक, कश्मीर से नेपाल और असम तक, द्वारका से पुरी तक, देश के विभिन्न भागों में देव-मंदिरों को पावन रूप देने के लिए क्या क्या किया।

एक जन-परंपरा के अनुसार शंकर कैलाश से पांच स्फटिक लिंग लाए और उन्हें पांच तीर्थस्थानों में स्थापित किया—मोक्ष-लिंग को चिदम्बरम के मंदिर में, मुक्ति-लिंग को केदार में, वर-लिंग को नेपाल के नीलकंठ में, योग-लिंग को कामकोटि कांची में, और भोग-लिंग को शृंगेरी के शारदापीठ में ।

शंकर वैष्णव, शैव, शाक्त आदि सभी प्रकार के मंदिरों में गए । कालडि में जो चूर्णा नदी थी उसके संबंध की उस जनश्रुति का उल्लेख पहले हो चुका है जिसके अनुसार शंकर ने उसके प्रवाह को बदल दिया था और वह उनके पैतृक घर के पास से बहने लगी थी । उस नदी के मूल-तट पर एक कृष्ण-मंदिर था । नदी का प्रवाह बदल जाने से जब वह टूट गया तो शंकर ने उसका जीर्णोद्धार करा के फिर से उसकी प्रतिष्ठा कराई । इस प्रकार, कालडि छोड़ने से पहले ही वह एक मंदिर की पुनर्प्रतिष्ठा करा चुके थे जहां आज तक कृष्ण के रूप में विष्णु की उपासना होती है । अपनी दिग्विजय के दौरान शंकर अनाथशयनम (त्रिवेंद्रम) जैसे कई विख्यात विष्णु-मंदिरों में गए । हिमालय से ले कर कन्याकुमारी तक हमारे देश में अनेकानेक विख्यात विष्णु-मंदिर बिखरे हुए हैं । कहा जाता है कि हिमालय के परमपावन तीर्थ बदरिकाश्रम में शंकर की व्यास मुनि से भेंट हुई जिनसे उन्होंने 'सूत्रभाष्य' लिखने के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया । यहीं अपने परमगुरु गौड़पाद के उन्हें दर्शन मिले । किंवदंती यह है कि वहां की एक परवर्ती यात्रा में शंकर को भगवान नारायण ने दर्शन दिए और उन्हें आज्ञा दी कि अलकनंदा नदी की गोद में पड़ी हुई भगवान की प्रतिमा को वहां से उठा कर वह उसे नदी के तट पर एक मंदिर बना कर उसमें प्रतिष्ठित कर दें । शंकर ने वैसा ही किया, और बदरीश के मंदिर के प्रधान पुजारी आज तक नम्बूदिरि लोग ही होते आ रहे हैं । शंकर ने तिरुपति के मंदिर में जाकर श्री वेंकटेश्वर के दर्शन किए, और कहा जाता है कि वहां उन्होंने मंदिर में धनाकर्षण यंत्र रख दिया । श्रीरंगम के श्रीरंगनाथ मंदिर में उन्होंने जनाकर्षण यंत्र बिठाया—ऐसा यंत्र जो लोगों को आकर्षित करे ।

शंकर जिन शिव-मंदिरों में गए उनमें से रामेश्वरम, तिरुविडै-मरुदुर (मध्यार्जुन), चिदम्बरम, श्रीशैलम, उज्जयिनी, नीलकंठ क्षेत्र (नेपाल) और केदार के मंदिरों के उल्लेख पहले ही हो चुके हैं । इनके अतिरिक्त शंकर जिन मंदिरों के दर्शन के लिए गए उनमें सौराष्ट्र का सोमनाथ का मंदिर, नासिक के निकट का त्र्यंबकेश्वर का मंदिर, जहां गोदावरी का स्रोत है, और पश्चिमी तट का गोकर्ण मंदिर प्रमुख हैं ।

मैसूर राज्य में शंकर की हरिहर की तीर्थयात्रा के बारे में एक रोचक किंवदंती है । उन दिनों वह वैष्णवों का एक बहुत बड़ा केंद्र था । शंकर ने जब मंदिर में जा कर भगवान के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की तब मंदिर के अधिकारियों ने, यह देखकर कि शंकर संन्यासी हैं और उनके शरीर पर विभूति और रुद्राक्ष जैसे शैव चिह्न मौजूद हैं, उन्हें रोक दिया । शंकर ने विस्तार से उन्हें समझाया कि विष्णु और शिव

में कोई अंतर नहीं है, और यह भी कि मंदिर के अंदर की प्रतिमा परम ब्रह्म की ही प्रतिमा है। यह बात उन लोगों की समझ में आ गई। मंदिर के द्वार खोल दिए गए और शंकर को अंदर प्रवेश करने दिया गया। कहा जाता है कि उन वैष्णव पुजारियों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने देखा कि देवता की प्रतिमा आधी विष्णु की थी और आधी शिव की—अर्थात हरि-हर की।

शांक्तों की उपासना-पद्धति बड़ी भ्रष्ट हो चुकी थी और कितने ही मंदिरों में मां दुर्गा को रक्त की प्यासी देवी का रूप दे दिया गया था। शंकर ने उपासना की पद्धति में परिवर्तन कराया और देवी के रौद्र रूप को बदलकर उन्हें फिर से दयामयी जगत-जननी का रूप दिया, जो उनका सच्चा रूप है। उन्होंने कई मंदिरों में श्रीचक्र की स्थापना कर जगत का मंगल करने की उनकी शक्ति में वृद्धि कर दी। इलाहाबाद के देवी-मंदिर में, कहा जाता है, शंकर ने श्रीचक्र की स्थापना की। पश्चिमी तट स्थित मुकांबी में देवी उन दिनों अपना भीषण रूप ही धारण किए हुए थीं और उनके मंदिर पर शाक्त मत के उपासकों का ही अधिकार था। शंकर ने वहां देवी की प्रतिमा के सामने श्रीचक्र की स्थापना की व्यवस्था करा दी, और इस प्रकार देवी से दयामयी मुद्रा ग्रहण कराई। इसी प्रकार का पावन कार्य उन्होंने मद्रास में तिरुवोर्रियुर के मंदिर में कराया। त्रिपुरसुंदरी के मंदिर के प्रधान पुजारी आज तक नम्बूदिरि लोग ही होते आ रहे हैं। त्यागराज मंदिर के अंतः-प्राकार में शंकर की भी प्रतिमा है। शंकर जिन अन्य मंदिरों में गए उनमें मदुरा का मीनाक्षी मंदिर और तिरुचि का शैल मंदिर प्रमुख हैं। शैल मंदिर के सुगंधिकुंतलाम्बिका देवी के मंडप की दीवालों पर "सौन्दर्य-लहरी" के छंद लिखे हुए हैं। कांची के कामाक्षी देवी के मंदिर में तो शंकर का आगमन बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। हिंदू धार्मिक मान्यता के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति को सुलभ बनाने वाले सात स्थान माने जाते हैं जिन्हें मोक्षपुरी कहा जाता है। इनमें से एक कांची है, जो सब से अधिक पावन दैवी-क्षेत्र माना जाता है। यहां जगज्जननी आकाश के समान अदृश्य और सूक्ष्म रूप में सर्वत्र व्याप्त हैं। कांची पहुंचने पर शंकर ने कामाक्षी मंदिर में जा कर 'बिल' (गुफा) में देवी के दर्शन किए, और उनके दयामयी रूप का आविर्भाव कराने के निमित्त उन्होंने उनकी प्रतिमा के सामने श्रीचक्र की प्रतिष्ठा कर दी। 'चिद्विलास शंकर विजय' के अनुसार, आचार्य ने स्वयं ही श्री कामाक्षी के सम्मुख श्रीचक्र बनाया। श्री कामाक्षी के मंदिर में श्रीचक्र की स्थापना और उसके महात्म्य का वर्णन आनन्दगिरि ने किया है।

प्रमुख धार्मिक संप्रदायों के मंदिरों में जाने के अलावा शंकर ने, उपासकों की सुविधा के लिए, ईश्वर के विभिन्न स्वरूपों के गुणगान में सुंदर स्तोत्रों की रचना भी की थी। इस प्रकार के स्तोत्रों में 'शिवानन्द-लहरी', सौन्दर्य-लहरी', 'हरिस्तुति' और 'दक्षिणामूर्ति-स्तोत्र' विशेष रूप से विख्यात हुए। शंकर द्वारा रचित स्तोत्रों की संख्या दो सौ बीस बताई

जाती है । उनमें से अनेक के बारे में संदेह भी प्रकट किया गया है और कुछ लोग उन्हें शंकर-रचित नहीं मानते । पर इस संबंध में दी जाने वाली कई युक्तियां तो बिलकुल ही लचर हैं । एक युक्ति यह दी गई है कि इन स्तोत्रों में चूंकि "संसार की यातनाओं का उल्लेख है और बड़ी भावपूर्ण वाणी में वृद्धावस्था, गार्हस्थ्य जीवन के दुखों आदि का रोना गाया है, इसलिए वे शंकराचार्य की रचना नहीं हो सकती" ।[1] इसका उत्तर तो बिलकुल स्पष्ट है कि सांसारिक दुखों का अनुभव करने के लिए संसार-चक्र में पड़ना आवश्यक नहीं है । शंकर ने उन स्तोत्रों की रचना हम सांसारिक लोगों द्वारा गाए जाने के लिए की थी, और इसलिए उन्होंने उनमें हमारे ही भावों को हमारी भाषा में प्रकट किया है । यह भी नहीं कहा जा सकता कि अद्वैतवादी शंकर के लिए ईश्वर के साकार स्वरूप को संबोधित करने वाले स्तोत्रों की रचना करना युक्तिसंगत नहीं था, क्योंकि अद्वैत का दर्शन न तो अनीश्वरवाद ही है, और न नास्तिकवाद । अगले परिच्छेद में हम यह देखेंगे ही, कि ईश्वर की उपासना अद्वैत-साधना का एक महत्वपूर्ण अंग है ।

संभव है कि शंकर के नाम से प्रचलित सभी स्तोत्रों की रचना उन्होंने न की हो । फिर भी, निर्विवाद रूप से उनके द्वारा रचित माने जाने वाले स्तोत्र स्वयं इस बात के प्रमाण हैं कि शंकर ने परमात्मा के अनेक स्वरूपों की स्तुति की, ताकि उपासकों का चित्त संकीर्णता और मदांधता से ऊपर उठ कर सामंजस्य और एकत्व की भावना से अनुप्राणित हो सके ।

यह सौभाग्य की बात है कि प्रमुख भाष्यों की प्रामाणिकता के बारे में किसी ने कोई संदेह नहीं प्रकट किया है । उपनिषद, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र—ये तीन वेदांत के मूल शास्त्र ग्रंथ हैं । लगभग दस उपनिषद प्रमुख माने जाते हैं, जिनमें 'बृहदारण्यक' और 'छान्दोग्य' का विस्तार सब से अधिक है । शंकर के इन दस उपनिषदों के अलावा संभवतः एक या दो और भी उपनिषदों पर भाष्य लिखे । भगवद्गीता के अपने भाष्य में उन्होंने दिखलाया है कि उपनिषदों की ही भांति, उसमें भी संग-त्याग (कर्त्ता का भाव कायम रखते हुए भी कर्म के फल के प्रति अनासक्ति) की ही नहीं, कर्म-संन्यास (कर्म के त्याग अर्थात, कर्म के साधनों के प्रति भी) अनासक्ति की शिक्षा दी गई है । अपने 'ब्रह्मसूत्र-भाष्य' में शंकर ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि बादरायण ने अद्वैत की ही शिक्षा दी है । इन भाष्यों के अतिरिक्त शंकर ने अद्वैत पर कई प्रकरण-ग्रंथ भी लिखे । इनमें से कुछ हैं : 'उपदेश-सहस्री', 'आत्मबोध', 'शत-श्लोक' और 'विवेक-चूड़ामणि' ।

बाद को उनके शिष्यों ने भी अपने गुरु की रचनाओं का आदर्श सामने रख, उनकी कृतियों पर टीकाएं लिखीं और अनेक स्वतंत्र ग्रंथ भी रचे; और इस प्रकार वे भी हमें अद्वैत की अपनी व्याख्याएं दे गए हैं ।

सुरेश्वर ने 'नैष्कर्म्य-सिद्धि' लिखी, जिसमें अद्वैत के इस केंद्रीय विचार की बड़ी ही विशद व्याख्या है कि मुक्ति का प्रत्यक्ष साधन कर्म नहीं ज्ञान है। सुरेश्वर कहते हैं—"यद्यपि औरों ने भी यह काम किया है, फिर भी अपने गुरु की ही आज्ञा को शिरोधार्य करके मैं भी इस काम में हाथ लगा रहा हूं और वेदांत में अंतर्निहित उस सिद्धांत की व्याख्या कर रहा हूं जो 'संसार' का नाश कर हमें सत्य की अनुभूति कराता है।"

'बृहदारण्यक' और 'तैत्तिरीय' उपनिषदों पर शंकर के भाषों और 'दक्षिणामूर्त्ति स्तोत्र' जैसे उनके प्रकरण-ग्रंथों पर सुरेश्वर ने अपने 'वार्त्तिक' भी लिखे। इन वार्त्तिकों की रचना के कारण ही सुरेश्वर 'वार्त्तिककार' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

अपने गुरु के 'सूत्र-भाष्य' पर पद्मपाद की सूक्ष्म टीका के संबंध में एक रोचक जनश्रुति है। कहा जाता है कि उसे लिखने के बाद वह दक्षिण के तीर्थस्थानों की यात्रा पर निकल पड़े। कालहस्ती ओर चिदम्बरम जैसे 'क्षेत्रों' की तीर्थयात्रा के बाद वह श्रीरंगम पहुंचे, जहां उनके पूर्वाश्रम के चाचा रहते थे। यह चाचा 'प्रभाकर-मीमांसा' मत के कट्टर अनुयायी थे। शंकर के 'सूत्र-भाष्य' पर लिखी उनकी टीका जब उन्होंने पढ़ी तो वह प्रसन्न भी हुए और दुखी भी। प्रसन्नता जहां अपने भतीजे की विद्वत्ता देख कर हुई, वहां दुख इसलिए कि वह रचना वेदांत पर थी जिसे कोई भी मीमांसक स्वीकार नहीं कर सकता था। रामेश्वर जाते समय पद्मपाद अपनी उस टीका को सुरक्षित रखने की दृष्टि से अपने चाचा के पास ही छोड़ गए। किंतु वह अपने भतीजे की वापसी से पहले ही उसे नष्ट कर देना चाहते थे। खुल्लमखुल्ला वैसा करने का साहस तो उनमें नहीं था, इसलिए उन्होंने अपने घर में, जहां वह हस्तलिपि रखी हुई थी, स्वयं ही आग लगा दी और उसे एक दुर्घटना का रूप दे दिया। श्रीरंगम लौटने पर पद्मपाद को जब इस दुर्घटना की खबर दी गई तब वह बड़े ही दुखी हुए। वह अपने गुरु के पास लौट गए और उन्हें अपनी रचना के नष्ट होने की खबर दी। शंकर ने उन्हें सांत्वना दी और कहा कि 'सूत्र-भाष्य' की उस टीका के प्रथम पांच 'पादों' (खंडों) को तो वह अपनी स्मृति से दुहरा सकते हैं, क्योंकि उसका उतना अंश ही उन्होंने पद्मपाद से सुना था। पद्मपाद ने वह अंश, इस प्रकार, फिर से लिख डाला और अपने गुरु की इस कृपा के लिए उनका बड़ा ही आभार माना। उस टीका के पांच ही पाद इस तरह बचे रह सके, जिस कारण उसका नाम 'पंचपादिका' पड़ गया। किंतु अब तो उसमें से भी केवल प्रथम चार सूत्रों की टीका ही उपलब्ध है।

शंकर के अपने ही अन्य शिष्यों ने, और उनके बाद की इस महान गुरु-परंपरा में भी कितनों ने ही, अद्वैत-साहित्य के भंडार को समृद्ध करने में अपना योगदान किया है। 'हस्तामलक' की रचना का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है, जिसके बारे में कहा जाता है कि स्वयं शंकर ने 'हस्तामलकीय भाष्य' नामक उसका भाष्य लिखा था। तोटक छंद में रचित तोटक के शंकर-स्तव का भी उल्लेख हो ही चुका है। इसके अतिरिक्त

तोटक ने वेदांत का एक प्रकरण-ग्रंथ भी लिखा, जिसमें 'वह तू ही है' (तत् त्वम् असि), इस महावाक्य में निहित और अपने आचार्य शंकर द्वारा प्रतिपादित रूप में, उपनिषदों का सार दिया गया है । इस रचना का नाम है 'श्रुतिसारसमुद्धरणम्' एक अन्य नाम—'वेदांतविद्या-पारतत्त्व-निवेदनम्' से भी इसकी प्रसिद्धि है ।

अद्वैत के आधार पर भारत की सांस्कृतिक एकता की रक्षा करने और आध्यात्मिकता के आदर्श को ऊंचा रखने की दृष्टि से शंकर ने मठों, पीठों, आदि की स्थापना की, जो शताब्दियों बाद भी अब तक कायम है । अद्वैतावलंबी संन्यासियों के दस भेद हैं । इनमें से प्रत्येक के बीच अंतर केवल उनके संन्यास वाले नाम के अंत में जोड़े जाने वाली एक एक उपाधि में ही है । संयुक्त रूप से इन दसों को 'दशनामी' कहते हैं । इनके ये भेद हैं—सरस्वती, पुरी, भारती, वन, अरण्य, तीर्थ, आश्रम, गिरि, पर्वत और सागर ।

देश के विभिन्न भागों में शंकर ने जिन मठों की स्थापना की उनमें उन्होंने अपने एक एक प्रमुख शिष्य को मठाधीश बना कर बिठाया, जिससे कि प्रत्येक केंद्र में अद्वैत का उपदेश देने वालों की एक अविच्छिन्न गुरु-परंपरा बनी रहे । इन अनेक मठों में से सब से अधिक महत्वपूर्ण हैं—बदरी-क्षेत्र, द्वारका-पुरी, जगन्नाथ-पुरी और शृंगगिरि (शृंगेरी) और कांची भी ।

बदरिकाश्रम और बदरीश के मंदिर के साथ शंकर के घनिष्ठ संपर्क की बात पहले ही कही जा चुकी है । भारत के चार प्रमुख स्थलों पर चार पवित्र धाम हैं; उत्तर में हिमालय पर बदरी, पश्चिम में द्वारका, पूर्व में जगन्नाथपुरी और दक्षिण में रामेश्वरम । तपस्या और ज्ञान-साधना के लिए सब से अधिक माहात्म्य बदरी-क्षेत्र का है; इसीलिए उसे 'तपोभूमि' कहा जाता है । उद्धव को अपना अंतिम उपदेश दे चुकने के बाद श्रीकृष्ण ने उन्हें बदरी जाने के लिए कहा था, और उसे अपना आश्रम बताया था (बदर्याख्य ममाश्रमम्) । बदरीनाथ के मंदिर के दोनों ओर नर और नारायण पर्वत हैं जो विष्णु के युगल अवतार के रूप में विश्व के कल्याण के लिए शाश्वत तपस्या में लीन हैं । और पीछे कुछ दूरी पर खड़ा हुआ है गौरवशाली नीलकंठ शृंग । बदरी की प्राकृतिक शोभा और आध्यात्मिक वातावरण के कारण शंकर ने अपना एक मठ वहां स्थापित किया । ठीक जिस स्थान पर यह मठ स्थापित है, वह मंदिर से 18 मील दूर दक्षिण में है । वह स्थान स्वयं भी मठ के ही नाम से प्रसिद्ध हो गया है—ज्योतिर्मठ (जोशी मठ) । बदरी का नगर दीर्घकाल-व्यापी शीत ऋतु में हर साल इसी स्थान पर आ बसता है, और उस बीच मंदिर समेत बदरी पूरी तरह बर्फ से ढका रहता है । जोशीमठ में ज्योतिर्लिंग महादेव, वासुदेव और अष्टकाली, आदि के कई मंदिर हैं शीतकाल में जोशीमठ के मंदिर में ही बदरीश की पूजा की जाती है जहां पर, कहा जाता है, शंकर ने नृसिंह शालिग्राम की प्रतिष्ठा की थी । नगर के सामने की एक पहाड़ी के शिखर

पर, मनोरम दृश्यों के बीच, ज्योतिर्मठ है । एक विशाल वृक्ष के नीचे एक गुफा है जिसमें, कहा जाता है, शंकर ने कुछ काल तक रह कर तपस्या की थी । सच पूछा जाए तो पूरा-का-पूरा उत्तराखंड ही शंकर के स्मृतिचिह्नों से भरा पड़ा है ।

द्वारका या द्वारावती—चारों धामों में से एक तो है ही, साथ ही वह सात में से एक मोक्षपुरी भी है । यह वही नगर है जहां श्रीकृष्ण राज्य करते थे । प्रायद्वीपीय भारत के पश्चिमतम छोर पर यह अवस्थित है । द्वारकाधीश (श्रीकृष्ण) का मंदिर ही नगर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है । शंकर ने द्वारका को भी एक मठ की स्थापना के लिए चुना । यहां पर स्थापित पीठ का नाम कालिका है ।

इसी प्रकार, पूर्वी तट पर स्थित एक दूसरे धाम जगन्नाथ-पुरी में, शंकर ने एक और मठ स्थापित किया । इस पीठ का नाम गोवर्धन है ।

शृंगगिरि (शृंगेरी) का संबंध ऋष्य शृंग मुनि के साथ है जिनके पौरोहित्य में ही राजा दशरथ ने 'पुत्रकामेष्टि यज्ञ' कर के रामचन्द्र और अन्य तीन पुत्रों को प्राप्त किया था । तुंगभद्रा और उसके आसपास के शांत वातारण के कारण यह स्थान बड़ा ही रमणीक है । शंकर ने एक मठ यहां स्थापित किया । इस मठ की स्थापना के संबंध में एक किंवदंती है । मण्डन मिश्र जब 'सुरेश्वर' के नए नाम से शंकर के शिष्य हो गए थे तब सरस्वती भी, जैसा कि हम देख चुके हैं, शंकर की मंडली में सम्मिलित हो गई थीं । पर वह इसी शर्त पर शामिल हुई थीं कि शंकर कभी पीछे फिर कर यह नहीं देखेंगे कि वह उनका अनुसरण कर रही हैं या नहीं । किंतु शंकर की मंडली जब तुंगभद्रा के तट पर पहुंची तब सरस्वती के पांव जमीन में धंस गए और वह वहीं अटकी रह गईं । उनके पायलों के बजने की आवाज न सुनकर शंकर ने पीछे फिर कर देखा । वह समझ गए कि देवी शारदा ने, जिनकी अवतार यह देवी सरस्वती थीं, अपने निवास के लिए शृंगेरी को ही चुना है । इस प्रकार शारदा-पीठ की स्थापना हुई और वहां भी एक मठ बना दिया गया ।

कांची के साथ शंकर के संबंध की बात पहले ही बताई जा चुकी है । आनन्दगिरि के अनुसार कांची में (जहां कहा जाता है, उन्होंने श्री कामाक्षी कामकोटि के नाम पर एक पीठ की स्थापना की),[2] शंकर के कुछ शिष्य, जो पहले दूसरे संप्रदायों में थे, अपने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर, अद्वैत द्वारा निर्मलीभूत अपने अपने धार्मिक मत का प्रचार करने के लिए देश का भ्रमण करने निकल पड़े । उनमें से सभी की अद्वैत में दृढ़ आस्था थी और वे सभी परमहंस संन्यासी हो चुके थे, पर जहां तक सगुण उपासना की बात है, उनमें से सभी के अपने अपने अलग इष्ट देवता थे—विष्णु, शिव, शक्ति, आदि । ब्रह्म की अद्वैत सत्ता को स्वीकार करते हुए भी साकार परमात्मा के संबंध में उन सबकी अपनी अलग अलग आस्थाएं थीं । उन सभी ने अपनी अलग अलग आस्था के अनुसार धार्मिक प्रचार करने की अपने गुरु से अनुमति मांगी, जो उन्हें अविलंब

दे दी गई । आम लोगों के अंदर धर्मिक भावना को जगाने के उद्देश्य से जो शिष्य देशभ्रमण के लिए निकले थे उनमें से, परमतकालानल शैव थे, लक्ष्मण और हस्तामलक वेष्णव थे, दिवाकर सौर (सूर मत के अनुयायी) थे, त्रिपुरकुमार शाक्त थे, गिरिजाकुमार गाणपत्य थे, और वटुकनाथ कापालिक थे । सारे देश का भ्रमण और अद्वैतवाद के आधार पर अपने अपने मतों का प्रचार करने के बाद वे सभी फिर कांची लौट आए, और अपने गुरु के ही पास रहने लगे ।

आनन्दगिरि के अनुसार, शंकर ने अपने अंतिम दिन कांची में ही बिताए, और वहीं उन्होंने अपना चोला छोड़ा । आनन्दगिरि के 'शंकर-विजय' के अलावा, 'शिव-रहस्य', 'पातंजलि-चरित', और 'शंकराभ्युदय' के प्रामाणिक रचयिताओं ने भी यही लिखा है कि शंकर ने अपने अंतिम दिन कांची में बिताए । श्री कामाक्षी के मंदिर में, उसके परमपावन मंदिरगर्भ के बहुत निकट ही, शंकर की पूरे आकार वाली एक प्रस्तर प्रतिमा प्रतिष्ठित है । इसी मंदिर में शंकर की एक कांस्य उत्सव-मूर्ति है जो हर साल व्यास-पूजा के दिन सर्व-तीर्थ के तट पर स्थित मुक्ति-मंडप तक ले जाई जाती है और वहां उसकी पूजा की जाती है । कांची के सभी देवी-देवताओं के मंदिरों में, विविध मुद्राओं में, शंकराचार्य की प्रस्तर मूर्तियां मिलती हैं । इन प्रस्तर मूर्तियों से यही संकेत मिलता है कि शंकर के कांची-अवस्थान की उस क्षेत्र पर एक अमिट छाप पड़ी जो समय बीतने के साथ साथ और भी गहरी होती गई ।

फिर भी, कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, अपनी जीवन-लीला समाप्त करने के पहले शंकर जिस स्थान पर (सिद्धि-क्षेत्र) रहे वह कांची से भिन्न था । (1) केदार—'माधवीय शंकर विजय' में कहा गया है कि अंतिम काल में शंकर अपने शिष्यों के साथ बदरी और केदार-क्षेत्र पहुंचे, और वहीं से कैलास को लौट गए ; (2) बदरी—'चिद्विलासीय शंकर-विजय' में बताया गया है कि शंकर अपने अंत समय में बदरिकाश्रम की दत्तात्रेय गुफा में जा घुसे थे ; (3) महुरीपुरी—शृंगेरी गुरु-परंपरा के संबंध में विवरण प्रस्तुत करने वाले 'गुरु-वंश-काव्य' के अनुसार, शंकर अपने जीवन के अंतिम काल में नेपाल स्थित सिद्धेश्वर से दत्तात्रेय आश्रम गए, अपना दंड और कमंडल वहीं छोड़ दिया जो क्रमशः एक वृक्ष और एक कुंड के रूप में परिणत हो गए, और मराठवाड़ा के महुरीपुरी में स्थित दत्तात्रेय आश्रम में रहे, जहां श्री दत्तात्रेय के साथ उनका वार्तालाप हुआ । (4) त्रिचुर—गोविन्दनाथ के 'केरलीय शंकर-विजय' के अनुसार, शंकर त्रिचुर (वृषाचल) के मंदिर के अंदर जाकर वहां से सूर्य-मंडल में जा पहुंचे ; (5) कश्मीर—किन्हीं श्रीनिवास अलय द्वारा संस्कृत पद्य में हाल ही में लिखे गए शंकर के एक जीवन–चरित के अनुसार वह अंतिम बार कश्मीर में ही दिखाई पड़े थे ।

जो भी हो, लौकिक दृष्टि से भी देखा जाए, तो उनका अंत नहीं हुआ है । वह अभी भी जीवित हैं, और मनुष्य की स्मृति में निरंतर विद्यमान हैं । चरम दृष्टि से

देखने पर तो, वह सर्वव्यापी और नित्यस्वरूप अद्वैत सत्ता ही हैं। आनन्दगिरि के शब्दों में, सर्वव्यापी चैतन्य के रूप में तो वह आज भी विद्यमान हैं ही। सभी धर्मात्मा मनुष्यों के मुक्तिदाता वस्तुतः गुरु शंकराचार्य ही तो हैं।

---

1. एस. के. बेलवलकर
2. शंकर द्वारा स्थापित मठों या पीठों के बारे में कुछ विवाद है। उनके कितने ही अनुयायी यह मानते हैं कि शंकर ने पीठों और मठों की विधिवत स्थापना केवल बदरीनाथ, द्वारका, पुरी और शृंगेरी में ही की। किंतु, कुछ अन्य अनुयायियों की मान्यता है कि उन्होंने एक मठ, और पांचवां पीठ, कांची में स्थापित किया। कुछ अनुयायियों के अनुसार वे यहीं सर्वज्ञ-पीठ पर आसीन हुए।

— संपादक

5. शंकर का दर्शन

शाश्वत सत्य का मार्ग खोज निकालने वालों में शंकर का स्थान बहुत ही ऊंचा है। उन्होंने अपना सारा ही जीवन—जो यों थोड़ा ही रहा —इस भूमंडल के अपने मानव संगियों को यही उपदेश देने में बिता दिया कि जो नश्वर है उसे छोड़ वे उसे प्राप्त करें जो चिरस्थायी है, और लौकिक जीवन की क्षणभंगुर मनोहरता के पीछे न दौड़ अमर जीवन की आध्यात्मिक सुख-शांति की ओर उन्मुख हों। राग-द्वेष की प्रवृत्तियां ही जब तक प्रेरक शक्तियां हैं, और बाह्य इंद्रिय-विषयों की ओर आकृष्ट होकर ही जब तक सारी क्रिया होती है तब तक मनुष्य के और पशु के आचरण में कोई अंतर नहीं है। किंतु मनुष्य एक प्रकार की विशिष्टता से संपन्न हुआ है जिसका संवर्द्धन किए जाने से उसमें एक उत्कर्षता आ जाएगी। इस विशिष्टता की व्याख्या शंकर ने कर्म (संकल्पपूर्वक किया गया कार्य) और ज्ञान[1] की उसकी पात्रता के रूप में की है, और इस प्रसंग में एक श्रुति-वाक्य का हवाला दिया है—"आत्मा का विस्तार केवल मनुष्य में होता है। बुद्धि की विभूति वस्तुतः उसे ही सबसे अधिक मात्रा में प्राप्त हुई है। उसे जो ज्ञान होता है उसका वह प्रकाश करता है। वह जो जानता है उसे देख लेता है। वह जानता है कि क्या आने वाला है। वह दृश्य और अदृश्य दोनों ही जगत को जानता है। वह मर्त्य के माध्यम से अमर्त्य का अनुभव करता है। उसे इतना कुछ प्राप्त है। किंतु अन्य पशुओं का ज्ञान खाने और पीने मात्र तक सीमित रह जाता है।" विवेक द्वारा सत्य को देख और पहचान सकने की इस विशिष्ट सामर्थ्य के कारण ही मनुष्य शाश्वत सत्य की खोज करता है और अंत में उसे प्राप्त करने में समर्थ होता है। शाश्वत सत्य के इसी मार्ग को शंकर ने न केवल अपनी शिक्षा द्वारा बल्कि अपने ज्वलंत उदाहरण द्वारा सिखाया।

भारतीय दर्शन के इतिहास में शंकर का स्थान स्थायी भी है और उच्च भी। यद्यपि उन्होंने मौलिकता का कोई दावा अपने लिए नहीं स्वीकार किया, फिर भी मनुष्यों के चित्त में उन्होंने एक क्रांति उत्पन्न कर दी, जिसके हितकारी परिणाम आज तक दिखाई पड़ रहे हैं। चिंतन-पद्धति और भाष्य लिखने में उन्होंने एक आदर्श स्थापित कर दिया जिसका अनुसरण करने की चेष्टा भारत के परवर्ती दार्शनिकों ने भी की है। एक महान

तत्वमीमांसक ने शंकर की लेखन-शैली का वर्णन 'प्रसन्न-गंभीर' (प्रसादगुण युक्त और गंभीरतापूर्ण) कह कर किया है। उनकी रचनाओं की विशिष्टता है मर्मभेदी अंतर्दृष्टि और विश्लेषणात्मक नैपुण्य। उन्होंने ब्रह्म का जो तत्वज्ञान दिया उसे समझ सकना कठिन अवश्य है। ब्रह्म की व्याख्या करने के किसी भी प्रकार के प्रयत्न के दुर्बोध की अभिव्यक्ति संबंधी कठिनाई का तो सामना करना ही पड़ता। किंतु व्याख्या करने की शंकर की पद्धति ऐसी है जिसमें हमें उस प्रचलित, किंतु परिहारणीय, अतिरिक्त कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता जिसे अभिव्यक्ति की दुर्बोधता कहते हैं। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में ही बड़ी भव्य रचनाएं कीं, और उन सभी में जहां एक ओर चिंतन की गहराई परिलक्षित होती है वहां साथ ही भाषा की सुबोधता भी। उपनिषद्, भगवद्गीता और ब्रह्म-सूत्र—ये तीनों ही वेदांत के प्रामाणिक आधार माने जाते हैं। इनके भाष्य और 'उपदेशलहरी' तथा 'विवेक चूड़ामणि' जैसे वेदांत के प्रकरण ग्रंथ शंकर की प्रमुख रचनाएं हैं।

शंकर के दर्शन का निचोड़ निम्नलिखित शब्दों में दिया जा रहा है जो संस्कृत के एक श्लोक का अर्ध-भाग है : "ब्रह्म ही सत्य है, दृश्य जगत माया है, तथाकथित जीवात्मा ही ब्रह्म है, दूसरा कुछ नहीं।"

उपनिषदीय शब्द 'ब्रह्मन्' और 'आत्मन्' उस परम सत्य का निर्देश करते हैं जो अद्वेत है। ब्रह्म के स्वरूप की परिगणना पदार्थों की किसी कोटि में न हो सकने के कारण उपनिषदों में उसका उल्लेख 'यह नहीं, यह नहीं' (नेति नेति) के रूप में किया गया है। किंतु इसका मतलब यह नहीं है कि ब्रह्म शून्यत्व की गहन रात्रि है, अथवा सर्वाभावमय शून्य। वही संपूर्ण सत्ता है; वही अनन्य सत्य है। उपनिषदों के कुछ वाक्यों में ब्रह्म के लिए 'सत्य', 'ज्ञान', और 'आनन्द' जैसे निश्चयात्मक भाव व्यक्त करने वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। किंतु इन शब्दों से भी ब्रह्म संबंधी हमारी जो धारणा बनती है वह इसी रूप में, कि वह क्या नहीं है—जैसे कि, वह असत् नहीं है, जड़ नहीं है, और निरानंद नहीं है। किसी वस्तु की परिभाषा करना ही उसको सीमित कर देना, उसे सांत बना डालना है। अनंत और असीम को सांत या ससीम पदार्थों की कोटि में नहीं रखा जा सकता। ब्रह्म 'निगुण' है। यह कहना भी पूरी तरह सही नहीं है कि वह एक है, क्योंकि जो पूर्ण है उसे संख्या की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। यही कारण है कि शंकर अपने दर्शन को 'अद्वैत' कहते हैं—दो नहीं, या द्वैत के न होने का सिद्धांत।

उपनिषदों में ऐसी उक्तियां मोजूद हैं जिनमें ब्रह्म को जगत के कारण और सभी मांगलिक गुणों के धाम के रूप में निरूपित किया गया है। इन दोनों मतों के बीच किस प्रकार सामंजस्य बिठाया जाय—इस मत में, कि ब्रह्म पूर्ण और निर्गुण है, और उस मत में, जिसके अनुसार वह जगत का आधार है ? इस समस्या के समाधान के

लिए शंकर ने दो दृष्टिकोणों से काम लिया है : पारमार्थिक और व्यावहारिक। पारमार्थिक सत्य यह है कि ब्रह्म अद्वैत और संग रहित है। एकमात्र वही है; उसके अतिरिक्त और कुछ भी सत्य नहीं। किंतु हमारे दृष्टिकोण से, जो लौकिक, सापेक्ष दृष्टिकोण है, ब्रह्म ईश्वर के रूप में दिखलाई देता है, जो जगत का कारण है। कारणत्व वस्तुतः है ही नहीं। ब्रह्म में ही भ्रमवश संसार भासने लगता है, जिस प्रकार रज्जु में सर्प भासने लगता है। यह मत 'विवर्त्त-वाद' के नाम से प्रसिद्ध है (दृश्य जगत के माया होने का मत), जिससे उलटा, और इसका विरोधी मत है, 'परिणाम-वाद'।

परम सत्य स्वरूप ब्रह्म, जो निर्विशिष्ट, निरुपाधि और निर्गुण है, जब लौकिक जगत और लौकिक जीवों के संपर्क में दिखाई देता है तब वही ईश्वर कहलाता है। ब्रह्म दोनों में वही है—निर्गुण या सगुण। दो ब्रह्म नहीं हैं, जैसा कि कुछ छिद्रान्वेषियों ने कटाक्ष किया है। यहां तक कि जब ईश्वर को अपर (निम्नस्तर) बताया गया है तब भी आशय यह नहीं है कि ईश्वर का पद निम्न हो गया है, बल्कि यह, कि अनुभूति के निम्नस्तर लौकिक-स्तर से देखे जाने पर ब्रह्म ही ईश्वर जान पड़ता है। ये दो पृथक ब्रह्म नहीं हैं; उसके दो रूप (द्विरूप) है : स्वरूप-स्थित ब्रह्म और लोकरूप ब्रह्म। इनमें से पहला निरुपाधि ब्रह्म है; दूसरा नाम, रूप और विकार की उपाधियोंवाला।

इस प्रकार, ईश्वर सगुण ब्रह्म है, जिसका कारण माया है। चूंकि माया की ब्रह्म के साथ या उससे अलग कोई सत्ता नहीं है, इसलिए यह यथार्थ नहीं है। ईश्वरत्व के लिए, कल्पित द्वैत-भाव मात्र की आवश्यकता पड़ती है, वास्तविक द्वैत-भाव की नहीं। घटाकाश की तुलना में आकाश को पूर्णाकाश कहा जाता है, किंतु स्वतः उसमें, और उसके अपने लिए, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। ठीक इसी प्रकार, सीमित ज्ञान, सीमित शक्ति, आदि से युक्त जीव की तुलना में ईश्वर भी सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान आदि माना जाता है। स्वतः तो ईश्वर-तत्व-भेद रहित है और उसे रूप आदि की किसी कोटि में नहीं रखा जा सकता। हां, यह स्वीकार करना ही होगा कि प्रतिबिंबवाद की एक व्याख्या के अनुसार, ईश्वर का वर्णन माया में ही ब्रह्म के प्रतिबिंब के रूप में किया गया है। पर यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि, इस मत के अनुसार, प्रतिबिंब और बिंब में कोई अंतर नहीं है। प्रतिबिंबवाद की दूसरी व्याख्या में, जो अधिक प्रचलित और स्वीकृत है, ईश्वर की तुलना बिंब के साथ की जाती है, और केवल जीवों की तुलना दर्पणों में, प्रतिबिंबित होने वाली मुखाकृति के साथ होती है। जो भी हो, अद्वैत में, ईश्वर व्यक्ति के चित्त की कल्पना-प्रसूत सत्ता या मानसिक रचना मात्र नहीं है। ईश्वर की भावना को एक असंबद्ध अभिधारणा अथवा एक असंभव और असंगत विचार कह कर उड़ा नहीं दिया जा सकता। ईश्वर की धारणा अद्वैत को न तो कोई क्षति ही पहुंचाती है और न उसकी स्थिति को संदिग्ध बनाने वाली है। उलटे, उसकी धारणा अद्वैत-अनुभूति के लिए सर्वथा संगत और मूल्यवान है।

जीव और ईश्वर यदि एक ही हैं, तो यह प्रश्न उठ सकता है, कि फिर अद्वैत में ईश्वर का स्थान कहां है ? इसका उत्तर सीधा-सादा है । 'वही तू है,' 'मैं ही ब्रह्म हूं' आदि तादात्म्य संबंधी उक्तियों तक में जो शिक्षा दी गई है वह यह नहीं है कि ईश्वर के साथ जीव की एकरूपता है । दोनों उक्तियों में आए इन दो शब्दों, 'जीव' और 'ईश्वर', के मुख्य अर्थों के बीच किसी समानता का न रह सकना ही यथार्थ में वह कारण था जिससे उनके गौण अर्थों को लेने की आवश्यकता आ पड़ी । इन उक्तियों द्वारा यह शिक्षा नहीं दी गई है कि जीव और ईश्वर एक ही हैं, बल्कि यह कि दोनों शब्दों का गौण अर्थ एक ही है, अर्थात, निगुर्ण आत्मा । अद्वैत हमें यही बताता है कि आत्मा ही ब्रह्म है, यह नहीं कि जीव ही ईश्वर है । माण्डूक्य उपनिषद् में सुषुप्ति अवस्था की आत्म-स्थिति के संदर्भ में कहा गया है—"यही सर्वेश्वर है, यही सवर्ज्ञ है, यही सर्वनियंता है । यही सबका मूल कारण है, वस्तुतः प्राणिमात्र का आरंभ और अंत ।" इस उक्ति का तात्पर्य यह नहीं है कि लौकिक जीव और ईश्वर एक ही हैं; इस उक्ति को तो प्रज्ञा की प्रशस्ति के रूप में ही लेना चाहिए, जो सुषुप्ति अवस्था (घोरनिद्रा) वाली उस आत्मा का नाम है जो द्वैतभाव से सर्वथा रहित है । इस उक्ति को आत्मा के जीव-रूप और ब्रह्मांड-रूप दोनों के अन्योन्याश्रय संबंध का निर्देश करने वाला भी समझा जा सकता है । ईश्वर-ध्यान के कुछ प्रकार ऐसे भी हैं जिनमें ध्यान करने वाले भक्त को अपने इष्टदेव के साथ अपनी एकरूपता स्थापित करने के लिए कहा जाता है; ध्यान की चरम स्थिति वह है जिसमें 'मैं ब्रह्म हूं' की अवस्था प्राप्त होती है । किंतु यहां भी एकरूपता की भावना या अध्यारोपण मात्र आवश्यक है, यथार्थ एकरूपता नहीं । जीवात्मा और ईश्वर की चर्चा के समय, अथवा उनके प्रसंग में, इन दोनों के बीच के अंतर पर दृष्टि रखनी होगी । अद्वैत इस अंतर को मिटा नहीं देना चाहता । ईश्वर की यदि समुद्र से तुलना की जाय और जीव की तरंग से, तब यह कहना सही होगा कि जीव ईश्वर का अंश है, यह नहीं कि ईश्वर ही जीव का अंश है—ठीक जिस प्रकार यह कहना सही होगा कि तरंग सागर की है, यह नहीं कि सागर तरंग का है । कहा गया है कि भक्ति के लिए कल्पित द्वैत तो अद्वैत से भी अधिक सुंदर है (भक्तयार्थं कल्पितं द्वैतं अद्वैताद् अपि सुँदरम्) ।

अद्वैत में ईश्वर का क्या स्थान है, यह बात तत्व-मीमांसा और मूल्य-मीमांसा दोनों के ही दृष्टिकोणों से समझी जा सकती है । ईश्वर को सृष्टि का मूल भी माना जा सकता है और ध्यान का केंद्रस्वरूप लक्ष्य भी । ईश्वर ही जगत की मूल सत्ता है, तथा जीव का परम (वास्तविक) रूप ।

ईश्वर जगत की उत्पत्ति के कारणों में से एक कारण नहीं है; वही उसका संपूर्ण और अनन्य कारण है । ईश्वर जगत का उपादान कारण भी है और निमित्त कारण भी । कारण और काल के प्रत्यय (भावना) की परस्पर संबद्धता के कारण, संभवतः

अधिक अच्छा यह होगा कि ईश्वर को सभी वस्तुओं के मूल रूप में देखा जाए। ईश्वर अथवा ब्रह्म वह है जिससे प्राणियों की उत्पत्ति होती है, जिसमें उत्पत्ति के बाद उनकी स्थिति रहती है, और जिसमें ही अंत में वे विलीन हो जाते हैं। नाम-रूप भेदयुक्त इस सृष्टि में अनेक कर्त्ता व भोक्ता हैं; इससे देश, काल, कारण व फल पूर्व-निश्चित हैं, तथा इसकी रचना का प्रकार अचिन्त्य है। चरम रूप से उत्कृष्ट व्यवस्था और वैचित्र्य वाली इस सृष्टि के कारणभूत और आधारभूत रूप में सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान ईश्वर से भिन्न और किसी भी प्रकार की अभिधारणा नहीं की जा सकती। किंतु इसके, और इसी प्रकार के दूसरे तर्कों को, ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाणरूप में कदापि नही मानना चाहिए। ईश्वर निगमन तर्को द्वारा प्राप्त कोई फल या परिणति नही है। इन तर्कों का महत्व तो इतना ही है कि अंतःप्रज्ञा द्वारा जिसका साक्षात्कार किया गया है और श्रुतियों में जिसे सत्य घोषित किया गया है उसे बुद्धिगम्य बनाने में सहायता मिले।

ईश्वर न केवल जगत का मूल है, बल्कि वह नैतिक नियामक भी है। धार्मिक अथवा नैतिक क्षेत्र में कर्म का जो विधान काम करता है, उसका विधायक ईश्वर ही है। जीवों को यदि अपने कर्मों के फल भोगने पड़ते हैं—अच्छे कर्मों के लिए अच्छे फल, और बुरे कर्मों के लिए बुरे—तो इसका कारण यह है कि कर्म के विधान के रूप में ईश्वर का ही विधान चल रहा है। मीमांसकों के इस तर्क के उत्तर में, कि कर्म का विधान स्वतः-चालित है, वेदांत का कहना है कि कर्म का विधान जड़ है और इसलिए उसके संचालन के लिए एक बुद्धियुक्त संचालक की आवश्यकता है ही। सीमित बुद्धिवाली कोई सत्ता कर्म के विधान का संचालन करने में समर्थ नहीं हो सकती। कर्म के विधान से पीड़ित तो वस्तुतः कर्ता-रूप में जीव ही होते हैं, हालांकि इस कथन से यह तात्पर्य नहीं निकाला जाना चाहिए कि जीव भाग्य के हाथ के खिलौने भर हैं। प्रत्येक जीव को अपने किए हुए कर्मों का फल तो मिलना ही चाहिए। कर्म-विधान का आधार न्याय का सिद्धांत है जो कर्मों के अनुरूप ही पुरस्कार या दंड देने वाला है। और इस न्याय का विधाता, अंतःस्थित और अविनाशी नियामक, ईश्वर है। वही न्याय का विधायक है और वही उसका विधान। जीवों के अंदर ही वह रहता है और उनका नियमन करता है। उसकी नियामक-शक्ति का चरम लक्ष्य है जीवों की मुक्ति। जिस जगत का उसने अपने ही अंदर से बाहर विक्षेप किया है वही जीवों की रचना-भूमि है।

मनुष्य दो बातें चाहता है—अभ्युदय और निःश्रेयस। अभ्युदय, चाहे इस लोक में हो या परलोक में, सांसारिक कोटि का साध्य है; निःश्रेयस (परम कल्याण) की कामना, जो सांसारिक बंधन से मुक्ति के लिए है, नित्य है। इन दोनों ही साध्यों की प्राप्ति के लिए ईश्वर की कृपा की आकांक्षा आवश्यक है। भगवद्गीता में भक्तों की चार

कोटियां बताई गई हैं—आत्त (दुखी), अर्थार्थी (जो भौतिक संपत्ति चाहते हैं), जिज्ञासु (जो तत्वज्ञान के अन्वेषक हैं), और ज्ञानी (आत्मज्ञानी) । इनमें से प्रथम दो सांसारिक अभ्युदय को ही अपना साध्य मानने वाले हैं । यह ठीक है कि दुख का अंत करने और संपत्ति-संचय करने के प्रयत्न ईश्वर की ओर निहारे बिना भी किए जा सकते हैं । पर अगर इन सीमित ध्येयों की प्राप्ति के लिए भी कोई ईश्वर की शरण जाता है तो इनमें मिलने वाली सफलताएं भी स्वयं ही उसे और भी ऊंचे उस मार्ग की ओर ले जाएंगी जिसका लक्ष्य आत्मज्ञान है । और ईश्वर की कृपा से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसी के बल पर मनुष्य मुक्ति पाता है (शंकर : सूत्र-भाष्य 2-3-41; तदनुग्रहहेतुकेनेव विज्ञानेन मोक्षसिद्धिः भवितुम् अर्हति) ।

भक्त ईश्वर की उपासना उसके विविध रूपों में और विभिन्न नामों से करता है । यह वही ईश्वर है जो अपनी माया-शक्ति से अनेक प्रकार के रूप और नाम ग्रहण करता है । वह भक्त की ही पसंद का रूप धारण कर लेता है और जिस नाम से उसका स्मरण किया जाता है उसे ही अपना मान उसकी पुकार सुन लेता है । जब जब धर्म पर संकट आता है, संसार के हित के लिए उसकी रक्षा करने के निमित्त ईश्वर अवतार ग्रहण करता है । जन्म न लेते हुए और शरीर रहित होते हुए भी वह जन्मा हुआ और सदेह जैसा प्रतीत होता है । अधिक-से-अधिक मूर्त्तरूप में भक्त पर अपनी कृपावृष्टि करने के उद्देश्य से वह अपने लिए बनाई गई मूर्तियों को ईश्वरत्व से अनुप्राणित कर देता है । उपासना का सर्वोत्कृष्ट रूप अवश्य यही है कि ईश्वर को सर्वत्र देखा जाए और उसे अपना सर्वस्व समझा जाए । पर अधिकांश लोगों के लिए, अपनी सीमाओं में बंधे रहने और अविकसित अवस्था में होने के कारण, ऐसा करना यदि सर्वथा असंभव नहीं तो कठिन जरूर ही होता है । उनकी खातिर ईश्वर सीमाबद्ध रूपों और विशिष्ट नामों को ग्रहण करता है । उपासना की अधिक-से-अधिक अपरिष्कृत और संकीर्ण विधि से शुरू करके भक्त को अधिक भव्य ओर व्यापक विधियों की ओर बढ़ते रहना चाहिए । इन विधियों अथवा श्रेणियों को निम्नलिखित श्लोक में निर्दिष्ट किया गया है :

प्रथमा प्रतिमा पूजा जपस्तोत्राणि मध्यमा,
उत्तमा मानसी पूजा, सोऽहं पूजोत्तमोत्तमा ।

'पहली श्रेणी प्रतिमा-पूजन की है; दूसरी जप-स्तोत्र की; मानस पूजा उससे भी उत्तम है; और सर्वोत्तम है 'सोऽहं' (मैं वही हूं) की पूजा ।' 'सोऽहं' वाली पूजा (ध्यान) से यदि इसी जीवन में ज्ञानोदय नहीं हो जाता तो वह भक्त को 'क्रम-मुक्ति' (क्रम से होने वाली मुक्ति) की ओर ले जाती है । मान्यता यह है कि अपने इस शरीर को छोड़ने पर उस भक्त का सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा के साथ तादात्म्य स्थापित हो जाता है और वर्तमान कल्प के अंत में ब्रह्मा के साथ साथ उसकी भी मुक्ति हो जाती है ।

यह ठीक है कि अद्वैत की भावना ईश्वरवाद से परे चली जाती है, पर नास्तिकवाद या निरीश्वरवाद से उसका कोई नाता नहीं है। परम सत्ता सर्वथा निरुपाधि है, वह अव्यक्त (व्यक्ति-भेदहीन) है। किंतु सृष्टि के मूल और मनुष्य के आराध्य के रूप में वह पुरुष-सत्ता जैसी दिखाई पड़ती है। यह नहीं कि ब्रह्म की ईश्वर के रूप में पदच्युति हुई है, बल्कि पूर्णानुभूति हो जाने पर ईश्वर का ही ब्रह्म के रूप में अनुभव होता है। ईश्वर के ही रूप में ब्रह्म सृष्टि का केंदबिंदु और जीव के लिए पूर्णता का प्रतिमान बनता है। जिस मूल-तत्व के कारण ईश्वर से दृश्य-जगत के प्रपंच की सृष्टि होती है उसका नाम माया है। माया का महत्व लौकिक दृष्टि से ही है, पारमार्थिक दृष्टि से नहीं। परम सत्य यही है कि माया है वह जो (या) नहीं है (मा)। किंतु हमारी दृष्टि से, माया ईश्वर की एक ऐसी गूढ़ शक्ति जान पड़ती है जो सत्य पर आवरण डाल कर मिथ्या का विक्षेप (प्रक्षेप) करती है। उसकी ढकने वाली शक्ति को 'आवरण' कहते है और प्रक्षेपक-शक्ति को 'विक्षेप'। यदि कोई पूछे, कि माया सत्य है या नहीं ? तो एकमात्र उत्तर यही होगा : यह न सत्य है, न मिथ्या। जगत अनेकत्वमय दिखाई देता है, अतः माया मिथ्या नहीं है; किंतु अद्वैत आत्मा के ज्ञान से माया का विलय हो जाता है, इसलिए वह मिथ्या है भी। पर सत्य और मिथ्या दोनों तो वह हो नही सकती। इसलिए वह अनिर्वचनीय है। माया के संबंध में विचार करने का उद्देश्य यह नहीं है कि उसके संबंध में हम अधिक स्पष्ट धारणा बना सकें, बल्कि इतना भर कि हम उससे परे जा सकें। जब हम उससे परे जा पाते हैं तब कोई समस्या रह ही नहीं जाती।

माया के परे जाने का यत्न कौन करता है ? जीव। तत्वतः जीव भी ब्रह्म ही है। अविद्या के कारण, जो कि माया का ही व्यक्तिपरक रूप है, वह किसी देह को ही अपनी सत्ता मान संसार के चक्र में पड़ कर भटकता रहता है। अन्नमय, प्राणमय और मनोमय कोशों के जो आवरण जीव पर चढ़े रहते हैं, माया के द्वारा ही प्रसूत होते हैं। फलस्वरूप, उन्हें ही भूल से आत्मा मान लिया जाता है; अविनाशी आत्मा पर उन्हीं के धर्मों का आरोप हो जाता है। इन्हीं के, और जगत की रचना करने वाली अन्य वस्तुओं के परिणामस्वरूप, एकमात्र सत्ता के रूप में जो परमात्मा है वही सांत और अनेक जैसा दिखाई देने लगता है; उसी की जन्म-मृत्यु होती जान पड़ती है; और वही कर्त्ता और भोक्ता बना प्रतीत होता है। इन सभी प्रकार की प्रतीतियों का कारण अज्ञान है। हम भ्रमवश यह मान बैठते हैं कि आत्मा का ही इस संसार में आवागमन होता है, और जिस जगत में ऐसा होता है वह यथार्थ है। इस रोग का एकमात्र उपचार सच्चा ज्ञान ही है। वस्तुतः आत्मा का न उदय होता है न अस्त, वही एक आत्म-दीप्ति नित्य-चेतन सत्ता है। जिन मिथ्या उपाधियों के कारण आत्मा को अनुभव की संज्ञा दी जाती है, उनके हटा दिए जाने पर (सत्य ज्ञान-द्वारा) आत्मा का उसके सच्चे स्वरूप में, अर्थात आत्मा के रूप में बोध हो जाता है।[2] अद्वैत और

नित्य स्वरूप आत्मा ही अनेकत्वमय सृष्टि का, जो कि माया का ही एक रूप है, मूल है । माया पर सूक्ष्म विचार (परिचिंतन) करने से ही भ्रम का नाश और आत्मा का अनुभव होता है । आत्मानुभूति ही मोक्ष है ।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि अद्वैत के अनुसार जीव की उत्पत्ति नहीं होती, केवल देह और चित्त युक्त उसकी लौकिक सत्ता की उत्पत्ति होती है । देह-चित्त समष्टि और उसका कारण-रूप अविद्या ही जीव का संसार (जन्म-मरण के चक्रवाला) है अविद्या ही जीव का कारण-शरीर है । कारण-शरीर को आनंदमय कोश भी कहते हैं । सूक्ष्म शरीर की रचना तीन कोशों से हुई है : विज्ञानमय कोश, मनोमय कोश, और प्राणमय कोश । स्थूल शरीर अन्नमय कोश है । मृत्यु के समय केवल स्थूल शरीर बदल जाता है । भगवद्‌गीता में इसकी तुलना वस्त्रों के परिवर्तन से की गई है । जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने पुराने वस्त्रों को छोड़ देता है और नए वस्त्र पहन लेता है उसी प्रकार जीव पुराने शरीर को छोड़ एक नया शरीर धारण कर लेता है । किंतु सूक्ष्म शरीर फिर भी, आनुषंगिक हेर-फेर के साथ, तब तक कायम रहता है—और साथ ही साथ कारण-शरीर भी—जब तक कि मोक्ष नहीं प्राप्त होता ।

मनुष्य के अनुभव की तीन भिन्न भिन्न अवस्थाएं हैं : जाग्रत, स्वप्न, और सुषुप्ति (गहरी निद्रा) । जाग्रत अवस्था में मनुष्य बाह्य पदार्थ-जगत का अनुभव करता है । स्वप्नावस्था में वह एक कल्पित अंतर्जगत की सृष्टि करता है और मान लेता है कि वह उसी का निवासी है । सुषुप्ति की अवस्था में अनेकत्व का बोध लुप्त हो जाता है और किसी भी वस्तु की अभिज्ञा (बोध) के बिना ही अभिज्ञा रहती है । इन तीनों अवस्थाओं में जाग्रत अवस्था इस दृष्टि से अद्वितीय है कि केवल इसी स्थिति में मनुष्य यह जान सकता है कि वह अविद्या से बंधा हुआ है, और मोक्ष के लिए प्रयत्न करके अंत में उसे प्राप्त भी कर सकता है । मनुष्य-जन्म की महिमा पर हम पहले ही प्रकाश डाल चुके हैं । ठीक उसी प्रकार जाग्रत अवस्था की भी महत्ता स्वीकार की गई है । ज्ञान-दीप को प्रज्जवलित करने के लिए आवश्यक सच्ची आध्यात्मिक जिज्ञासा इसी अवस्था में संभव है । किंतु यह जिज्ञासा जाग्रत अवस्था के विषयों तक ही सीमित नहीं रखी जानी चाहिए, क्योंकि जाग्रत अवस्था तो अनुभव का एक खंड मात्र है और जिज्ञासा का लाभ तभी मिल सकता है जब संपूर्ण अनुभव उसका विषय हो । यही कारण है कि अद्वैत वेदांत की दृष्टि से इन तीनों ही अवस्थाओं के अनुभवों का विचार परम महत्वपूर्ण हो उठता है । इस जिज्ञासा के परिणामस्वरूप यह अनुभव होता है कि आत्मा शुद्ध-चित्त स्वरूप है जो देह, चित्त और संसार जैसी परिवर्तनमय उपाधियों से प्रभावित नहीं होती । माण्डूक्योपनिषद और गौड़पाद की कारिका के शब्दों में, विशुद्ध आत्मा चतुर्थ, या तुरीय अवस्था, अर्थात अतीन्द्रिय सत्ता है । जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति की अवस्थाओं में इसकी जो प्रतीति मिलती है उसके अतिरिक्त, अथवा उससे भिन्न, यह चतुर्थ अवस्था नहीं

है । यह तो व्यष्टि और समष्टि रूप जगत की प्रतीति की मूल सत्ता ही है ।

अद्वैत के सत्य का प्रतिपादन करने या बुद्धि द्वारा उसे समझने में अधिक समय नहीं लगता । पर साधारण मनुष्य उसके सत्य का अनुभव तभी कर पाता है जब उसने उसके लिए दीर्घकाल तक साधना की हो और विधिवत उसकी शिक्षा प्राप्त की हो ।

मनुष्य का सर्वोपरि लक्ष्य है आवागमन के संसार-चक्र से मुक्ति पाना । यह ठीक है कि सभी मनुष्य विचारपूर्वक न यह समझते हैं और न इसके लिए प्रयत्न करते हैं । उसके स्थान पर धन और सुख जैसे ससीम साध्यों की प्राप्ति के लिए ही प्रयत्न किए जाते हैं, जिसके फलस्वरूप दुख बढ़ता ही जाता है । किंतु इनके लिए भी यदि धर्म के नियमों की सीमाओं के अंदर रहते हुए प्रयत्न किया जाए तो भी मनुष्य के आध्यात्मिक-मार्ग की यात्रा शुरू होने में मदद मिल जाए । इस पथ के पथिक की सच्ची प्रगति तभी शुरू होती है जब इस सत्य का बोध हो जाता है कि मनुष्य के लिए एकमात्र साध्य तो अनंत और असीम ब्रह्म ही है ।

अद्वैत के अनुसार, मोक्ष का प्रत्यक्ष साधन ज्ञान-योग है । ज्ञान को अद्वैत में मोक्ष का प्रत्यक्ष साधन इसलिए बताया गया है कि मोक्ष कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे नए ढंग से प्राप्त किया जाए । मोक्ष आत्मा का नित्य स्वरूप है । वह स्वयं आत्मा है, उसका सच्चा रूप, और इस प्रकार वह नित्य और अनारंभ (जिसका आरंभ नहीं हुआ है,) है । शंकर ने मोक्ष को नित्योपलब्धि स्वरूप माना है, अतः उन्होंने कर्मकांडियों के विपरीत, यह प्रतिपादन किया है कि कर्म उसका साधन नहीं है । क्रिया के परिणामस्वरूप होने वाले किसी भी कर्म का विनाश अवश्यम्भावी है । क्रिया द्वारा चार में से एक फल की प्राप्ति हो सकती है : उत्पत्ति, आप्ति, संस्कार और विकार । मोक्ष इन सभी से भिन्न है । मोक्ष-स्वरूप आत्मा वह नहीं है जिसकी उत्पत्ति होती है, जिसे प्राप्त किया जाता है, जिसका संस्कार होता है या जो विकार को प्राप्त होती है । आत्मा के यथार्थ स्वरूप के बोध में जो बाधा डालती है वही अविद्या है । अविद्या का निराकरण ही करणीय है । और अविद्या ज्ञान द्वारा ही दूर की जा सकती है । ज्ञान और कर्म के बीच जो विरोध है वह शंकर के अनुसार पर्वत की तरह अटल है । ब्रह्म-स्वरूप आत्मा का दर्शन उसी को होता है जो कर्म और फल के प्रति-आसक्ति न रखते हुए ज्ञान-मार्ग का अनुसरण करता है । श्रवण, मनन और निदिध्यासन ही इस मार्ग के अंग हैं । जो बात विशेष रूप से ध्यान में रखने की है वह यह कि इस प्रक्रिया द्वारा जिस ज्ञान की प्राप्ति लक्ष्य है वह केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं बल्कि अंतःप्रज्ञा प्रसूत प्रत्यक्ष अनुभव है ।

ज्ञान-मार्ग पर चलने की सामर्थ्य तभी प्राप्त होती है जब फल की आसक्ति के बिना कर्म किया जाता है (कर्म-योग) ; अपने इष्टदेव की नित्य और अनन्य उपासना की जाती है (भक्ति-योग) ; और एकाग्र चित्त से ध्यान किया जाता है (ध्यान-योग) ।

ज्ञान-मार्ग की पात्रता प्राप्त करने के लिए जो गुण आवश्यक हैं उन्हें उत्पन्न करने की दृष्टि से ही यह विधान रचा गया है । ब्रह्म-सूत्र के प्रथम सूत्र का प्रारंभ करने वाले 'अथ' (तो) शब्द का स्पष्टीकरण करते हुए शंकर ने पात्रता संबंधी जिन गुणों की चर्चा की है, वे हैं : नित्य-अनित्य वस्तुओं के बीच विवेक, इहलोक और परलोक में भोगे जाने वाले नाशवान विषयों के प्रति वैराग्य, शम और धृति जैसे सद्गुणों की संपन्नता, और मुमुक्षा (मोक्ष की इच्छा) । वेदांत पर विचार आरंभ करने के लिए इनमें से पहला गुण प्रारंभिक है । इस प्रारंभिक अवस्था में विवेक का तात्पर्य चरम ज्ञान नहीं है । इसका अभिप्राय केवल एक ऐसे तात्विक दृष्टिकोण से है जिसमें वस्तुओं का प्रथम रूप भ्रमित नहीं कर देता । दृष्टि का नाश तो स्वार्थपूर्ण भोगवृत्ति के प्रति संकीर्ण आसक्ति से होता है । ये भोगवृत्तियां इस लोक के विषयों के लिए भी हो सकती हैं और स्वर्ग आदि के विषयों के प्रति भी । चित्त उनकी कामना कर व्याकुल हो उठता है, और इस प्रकार उसमें सत्य को देखने की क्षमता नहीं रह जाती । जब वह राग-द्वेष जैसे मनोविकारों के जाल में फंस जाता है तब वह लौकिक सत्य तक को नहीं समझ सकता; और इसलिए, शंकर कहते हैं, यह बताने की तो आवश्यकता ही नहीं कि प्रत्यगात्मा विषयक सत्य की अनुभूति चित्त की संपूर्ण शुद्धि के बिना असंभव है ।

मनोविकारों से मुक्ति पाकर चित्त के शुद्ध हो जाने पर मुख्यतः धर्माचरण के द्वारा उसमें दृढ़ता लानी चाहिए । दुर्गुणों का स्थान सद्गुणों को लेना चाहिए । दोष-रहित चित्त को उत्कृष्ट गुणों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए । ऐसा होने पर ही चित्त के अंदर मोक्ष की वासना दृढ़ता ग्रहण करेगी । यह वासना किसी अन्य प्रकार की वासना से सर्वथा भिन्न है । इस बात की विशद व्याख्या करते हुए शंकर के शिष्य सुरेश्वर का कहना है कि परम सुख अर्थात मोक्ष की प्राप्ति की वासना राग नहीं है; यदि यह राग है तब तो एकांत आदि की कामना पर भी यही बात लागू होनी चाहिए जबकि वस्तुतः ऐसा है नहीं ।

कर्म-योग, भक्ति-योग और ध्यान-योग के द्वारा जब ज्ञान के मार्ग की सारी बाधाएं दूर कर दी जाती हैं, और आत्म-जिज्ञासा के मार्ग पर चलने में सफलता प्राप्त होती है तब अद्वैत आत्मतत्त्व के ज्ञान का उसी प्रकार उदय होता है जिस प्रकार रात के बीतने पर सूर्य का । सूर्योदय की यह तुलना विशेष रूप से उपयुक्त है, क्योंकि यथार्थ में तो सूर्य का उदय होता नहीं, बल्कि सूर्य के दिखाई देने में जो बाधा रहती है वही दूर हो जाती है । ठीक इसी भांति जिस क्षण ज्ञान द्वारा अज्ञान का नाश होता है उसी क्षण आत्मा स्वतः प्रकाशित हो उठती है । इसी को मोक्ष कहा जाता है । जिस क्षण अज्ञान का नाश होता है, उसी क्षण ज्ञान के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है ।

मोक्ष ही चूंकि आत्मा का नित्य-स्वरूप है, इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि भौतिक

शरीर की मृत्यु तक उसकी प्रतीक्षा करनी पड़े। शरीर में अवस्थिति रहते हुए भी, ज्ञान की प्राप्ति होते ही, मोक्ष मिल जाता है। इस तरह का मोक्ष पाने वाले को जीवन्मुक्त कहा जाता है। उसकी दृष्टि से तो शरीर है ही नहीं। किसी शरीर में अवस्थित तो वह उन्हें ही दिखाई देता है जिन्हें मोक्ष नहीं प्राप्त हुआ है। कुछ समय बाद जब शरीर की मृत्यु हो जाती है तब हम कहते हैं–'वह विदेह-मुक्त हुआ'। किंतु यथार्थता यह है कि मुक्ति अभिन्न है। मोक्ष प्राप्त हो जाने पर जीव को पुनर्जन्म की यातना से छुटकारा मिल जाता है। ब्रह्म के साथ उसकी अभेदता स्थापित हो जाती है, जिसे अद्वैत-अनुभव कहा जाता है। उपनिषद् में कहा गया है कि 'जब हृदय से सारी वासनाएं निकल जाती हैं तब मर्त्य अमर हो जाता है, और इसी लोक में ब्रह्मत्व को प्राप्त होता है।'

मोक्ष-प्राप्ति के लिए मनुष्य के प्रयत्न को स्वार्थपूर्ण तो कदापि नहीं कहा जा सकता। अद्वैत वेदांत के अनुसार, मोक्ष का अर्थ है देह-बोध से और अहंकार की संकीर्णता से मुक्ति पाना। वही मनुष्य, सच्चे अर्थ में, लोक-कल्याण कर सकता है जिसने पूर्णत्व प्राप्त कर लिया हो। स्वार्थपरता के लिए न तो वेदांत-साधना में ही कोई स्थान है और न उस परम ध्येय की प्राप्ति में ही, जिसकी वेदांत में परिकल्पना की गई है। वेदांत के मार्ग पर चलने वाले साधक को इस परम नियम का तो पालन करना ही होगा। आत्मज्ञानी अपने क्षुद्र 'अहम्' में नहीं बंधा रह सकता। उसका अस्तित्व मात्र संसार के लिए एक भारी वरदान है।

शंकर को ही इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने अद्वैत के दर्शन को दृढ़ता प्रदान की और असंदिग्ध रूप में यह सिद्ध कर दिया कि निराश होने का कोई कारण नहीं है, और न किसी प्रकार की शंका के लिए ही कोई आधार है। अद्वैत में जिस अनन्य सत्य की शिक्षा दी गई है उसका निराकरण कभी किया ही नहीं जा सकता, क्योंकि वही तो स्वयं निराकरण करने वाले का 'स्व' है। 'उपदेशसहस्री' में शंकर कहते हैं : 'आत्मा कोई विषय-सत्ता नहीं है। उसमें न कोई परिवर्तन होता है, और न ही उसमें अनेकत्व की गुंजाइश है।' उसे न स्वीकार किया जा सकता है, न अस्वीकार—न स्वयं द्वारा, और न किसी अन्य के ही द्वारा। जो यह जानता है कि वह स्वयं ही आत्मा है, जो अंदर भी है और बाहर भी, जो जन्म और मृत्यु तथा क्षय और ज़रा से परे है—उसे रंच मात्र भी भय क्यों होना चाहिए ? भय का कारण है अनेकता का भ्रांतिपूर्ण बोध। अद्वैत ब्रह्म की अनुभूति हो जाने पर अभय की अवस्था प्राप्त हो जाती है। अद्वैत और अभय तो एक ही और एक प्रकार के ही अनुभव के दो पृथक नाम मात्र हैं। इस अनुभव से किसी को भी वंचित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह तो, समान रूप से, सभी का जन्म-सिद्ध अधिकार है। धार्मिक अनुष्ठानों जैसी अन्य साधनाओं और अभ्यासों की दृष्टि से भले ही भेदभाव की बात अर्थपूर्ण

मानी जा सके, किंतु ब्रह्म और ब्रह्म-विद्या के संदर्भ में तो काल, स्थान और अवस्था के आधार पर किसी प्रकार की भी भेदबुद्धि नहीं रखी जा सकती। शंकर कहते हैं कि प्राचीन काल के महामुनि वामदेव की ही भांति हम अर्वाचीन लोग, अति दुर्बल प्राणी होते हुए भी, ब्रह्म ज्ञान के न केवल अधिकारी हैं बल्कि हम उसे प्राप्त भी कर सकते हैं। इस सत्य का अनुभव करने के लिए संपूर्ण मानव जाति का आह्वान करके और उस अनुभव का मार्ग दिखला कर शंकर, अपने नाम के अनुरूप ही, समस्त विश्व के कल्याणसाधक बन गए।

इसी अर्थ में यह श्लोक है :

श्रुति-स्मृति-पुराणानाम् आलयम् करुणालयम्
नमामि भगवद्पादम् शंकरम् लोकशंकरम्।

"भगवत्-पाद शंकर को मैं प्रणाम करता हूं, जो लोक-कल्याणकारी हैं, जो श्रुति-स्मृति-पुराण, आदि में दिए गए ज्ञान और करुणा के आलय हैं।"

---

1. ऐतरेय आरण्यक, 3-2-3
2. आत्मैव विषयोपाधिकोनुभव इतीव यापदिश्यते, अविवक्षितोपाधिश्च आत्मेति।

शंकर की रचनाओं के कुछ चुने हुए अंश

संकेत-चिह्न

आ. बो.	:	आत्मबोधः
भ. गी. भा.	:	भगवद्गीताभाष्यम्
ब्र. सू. भा.	:	ब्रह्मसूत्रभाष्यम्
ई. उ. भा.	:	ईशोवास्योपनिषद्भाष्यम्
के. उ. प. भा.	:	केनोपनिषद्पदभाष्यम्
के. उ. वा. भा.	:	केनोपनिषद्वाक्यभाष्यम्
मा. उ. भा.	:	माण्डूक्योपनिषद्भाष्यम्
मा. का. भा.	:	माण्डूक्यकारिकाभाष्यम्

1. हिंदी अनुवाद मूल संस्कृत और अंग्रेजी अनुवाद दोनों को सामने रख कर किया गया है।

-- अनुवादक

श्रीमद्‌भगवत्पूज्यपादसूक्तिमंजरी

1. शास्त्र, तर्क और अनुभव

(1) वेदांत-शिक्षा, ब्रह्म-ज्ञान का स्रोत

ब्रह्म सर्वज्ञं सर्वशक्ति जगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणं वेदांतशास्त्रा देवावगम्यते । कथम्? समन्वयात् । सर्वेषु हि वेदान्तेषु वाक्यानि तात्पर्येण एतस्यार्थस्य प्रतिपादकत्वेन समनुगतानि ।

ब्र. सू. भा. 1-1-4

ब्रह्म, जो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, और जगत की उत्पत्ति, स्थिति और विलय का कारण है, वेदांत की शिक्षा से ही जाना जा सकता है। केसे ? समन्वय से। सभी वेदांत-प्रतिपादनों में इसी अर्थ को तात्पर्य रूप में ग्रहण किया गया है, और इसी को लेने से विभिन्न वाक्यों में संगति बैठती है ।

(2) वेदांत-शिक्षा भेद को मिटाती है

अविद्याकल्पितभेदनिवृत्तिपरत्वात् शास्त्रस्य । न हि शास्त्रं इदंतया विषयभूतं ब्रह्म प्रतिपिपादयिषति । किं तर्हि ? प्रत्यागात्मत्वेन अविषयतया प्रतिपादयदविद्याकल्पितं वेद्य-वेदितृ-वेदनादिभेदमपनयति । ब्र. सू. भा. 1-1-4

वेदांत शास्त्र अविद्या-कल्पित भेद को दूर करता है। यह शास्त्र ब्रह्म को, 'यह' कह कर, किसी विषय के रूप में प्रतिपादित नहीं करना चाहता। तब क्या करता है? यह (ब्रह्म को) अंतर्निहित आत्मा, अ-विषय, के रूप में प्रतिपादित करता है, और इस प्रकार वेद्य (जानने के विषय), जानने वाले (वेदितृ) और जानने की प्रक्रिया (वेदना, आदि) के बीच के अविद्या-कल्पित भेद को दूर कर देता है।

(3) शास्त्र ही प्रामाणिक ज्ञान के साधन

यत्तु उक्तम्-परिनिष्पन्नत्वात् ब्रह्मणि प्रमाणान्तराणि संभवेयुरिति, तदपि मनोरथमात्रम् । रूपाद्यभावाद्धि नायमर्थः प्रत्यक्षस्य गोचरः । लिंगाद्यभावाच्च नानुमानादीनाम् । आगममात्रसमधिगम्य एव त्वयमर्थो धर्मवत् । ब्र. सू. भा. 2-1-6

तब, जो यह कहा जाता है—कि ब्रह्म के संवंध में, जो पूर्ण सत्य है, प्रामाणिक ज्ञान का कोई साधन नहीं है, केवल कपोल-कल्पना है। रूप आदि के अभाव में इसे (ब्रह्म

को) किसी इंद्रिय-ज्ञान द्वारा प्रत्यक्ष नहीं किया जा सकता । न ही इसका अनुमान किया जा सकता है, क्योंकि इसकी कोई पहचान नहीं है । इसे तो धर्म के रूप में आगमों (शास्त्रों) से ही जाना जा सकता है ।

(4) शास्त्र ही अंतिम प्रमाण

शास्त्रं त्वन्तयं प्रमाणं अतद्धर्माध्यारोपणम अनिवर्तकत्वेन प्रामाण्यमात्मनः प्रतिपद्यते, न तु अज्ञातार्थज्ञापकत्वेन । भ. गी. भा. 2-18

शास्त्र ही अंतिम प्रमाण है, आत्मा पर (भ्रमवश) जो दूसरा धर्म आरोपित कर दिया गया है उसे हटा देने से ही इसकी प्रामाणिकता प्रतिपादित होती है, न कि जो अज्ञात है उसे ज्ञात बनाने से ।

(5) जिज्ञासा और तर्क का स्थान

तत्राविचार्य यत्किंचित्प्रतिपद्यमानो निःश्रेयसात् प्रतिहन्येत, अनर्थं च ईयात् । तस्मात् ब्रह्मजिज्ञासोपन्यासमुखेन वेदान्तवाक्यमीमांसा तदविरोधितर्कोपकरणा निःश्रेयसप्रयोजना प्रस्तूयते । ब्र. सू. भा. 1-1-1

यहां, जो बिना विचारे कुछ भी मान लेता है वह परम कल्याण से वंचित होता है; उसका अनर्थ ही होता है । इसलिए ब्रह्म को जानने की इच्छा—ब्रह्म जिज्ञासा—की बात कह कर, वेदांत की शास्त्रीय मीमांसा की उत्तमता बताई गई है, जिसमें तर्क को उसका विरोधी नहीं, सहायक और परम कल्याणकारी माना गया है ।

(6) तर्क सहायक मात्र

श्रुत्यैव च सहायत्वेन तर्कस्याप्यभ्युपेतत्वात् । ब्र. सू. भा. 1-1-2

श्रुति अथवा शास्त्र के सहायक के रूप में तर्क का स्थान है ही ।

(7) अनुभव ही कसौटी

न धर्मजिज्ञासायामिव श्रुत्यादय एव प्रमाणं ब्रह्मजिज्ञासायाम् । किन्तु श्रुत्यादयोऽनुभवादयश्च यथासंभवमिह प्रमाणम्, अनुभवावसानत्वात् भूतवस्तुविषयत्वाच्च ब्रह्मज्ञानस्य ।

ब्र. सू. भा. 1-1-2

धर्म की जिज्ञासा में श्रुतियां (शास्त्र) ही प्रमाण हैं, ब्रह्म-जिज्ञासा में नहीं । किंतु यहां श्रुति आदि (शास्त्र) के साथ साथ अनुभव आदि भी यथासंभव प्रमाण है, क्योंकि ब्रह्म-ज्ञान

की अनुभव में परिणति होती है और उसका विषय भौतिक वस्तु होता है ।

(8) ब्रह्म-ज्ञान का फल

अनुभवावसानं च ब्रह्मविज्ञानं अविद्याया निवर्तकम्, मोक्षसाधनं च दृष्टफलतया इष्यते ।
ब्र. सू. भा. 2-1-4

अनुभव में परिणत होने वाला ब्रह्म-ज्ञान अविद्या को दूर करता है, वह मोक्ष का साधन है, और उसका फल देखा जा सकता है ।

2. ब्रह्म आत्मा

(9) ज्ञात से भिन्न और अज्ञात से परे

क्वचित्किंचत्कस्यचिद्विदितं स्यादिति सर्वमेव व्याकृतं विदितमेव । तस्मादन्यदेवेत्यर्थः । अविदितमज्ञातं तर्हीति प्राप्ते आह—अथोअविदिता द्विदितविपरीतादव्याकृतादविद्यालक्षणाद्व्याकृतबीजात्........ यद्विदितं तदल्पं मर्त्यं दुःखात्मकं चेति हेयम् । तस्माद्विदितादन्यद्ब्रह्म इत्युक्ते तु अहेयत्वमुक्तम् स्यात्। तथा अविदितादधीत्युक्ते अनुपादेयत्वमुक्तं स्यात् ।..... न ह्यन्यस्य स्वात्मनो विदिताविदिताभ्यामन्यत्वं वस्तुनः संभवतीत्यात्मा ब्रह्म .....। के. उ. प. भा. 1-4

जो कुछ भी व्यक्त है वह विदित है, क्योंकि (व्यक्त) कहीं पर, कुछ, और किसी के द्वारा विदित है । अतः (ब्रह्म) इससे (विदित से) अन्य (भिन्न) है । तब क्या वह वही है जो अविदित है, अज्ञात है ? इसके उत्तर में कहा है—यह उससे ऊपर (परे) भी है, अर्थात, अविदित से अन्य है; विदित से विपरीत जो है उससे भी, अर्थात व्यक्त का बीज जो अविद्या रूप अव्यक्त है, उससे भी भिन्न है....जो भी विदित है वह अल्प है, मर्त्य (मरणशील) है, और दुखजनक है, अतः हेय (त्याज्य) है । और इसलिए जब कहा गया कि ब्रह्म विदित से अन्य (भिन्न) है, तब यही कहा गया कि जो हेय (त्याज्य) है वह यह नहीं है । इसी भांति, यह कहने से कि यह अविदित से परे है, उसकी अनुपादेयता (स्वीकरणीयता) ही बताई जाती है ।........अपने से (अपनी आत्मा से) अन्य (भिन्न), कुछ भी नहीं है जो विदित और अविदित से पृथक है; अतः आत्मा ब्रह्म है.....।

(10) आत्मा ही ज्ञान है

न तु निरुपाधिकस्यात्मन एकत्वे स्वसंवेद्यता परसंवेद्यता वा संभवति । संवेदनस्वरूपत्वात् संविदनान्तरापेक्षा च न संभवति । यथा प्रकाशस्य प्रकाशान्तरापेक्षाया न संभवः तद्वत् ।

के. उ. प. भा. 1-4

उपाधियों से रहित आत्मा जब एक है तब उसकी संवेद्यता (जाना जा सकना) न स्वयं उसके अपने द्वारा ही संभव है और न दूसरे के द्वारा । संवेदना (ज्ञान) उसका स्वरूप ही है, अतः यह संभव नहीं है कि वह किसी अन्य संवेदन (ज्ञान) की अपेक्षा करे । जिस प्रकार प्रकाश के लिए दूसरे प्रकाश की अपेक्षा करना संभव नहीं ।

(11) ब्रह्म सहज बोधगम्य नहीं है

यत्तु विध्वस्तसर्वोपाधिविशेषं शान्तमनन्तमेकमद्वैतं भूमारण्यं नित्यं ब्रह्म, न तत् सुवेद्यम् ।

के. उ. प. भा. 2-1

ब्रह्म, जो नित्य है, जो सभी विशिष्ट उपाधियों से रहित है, जो शांत, अनंत, एक और अद्वैत है, और जिसे भूमा (विराट) कहा गया है, वह सुवेद्य (सहज बोधगम्य) नहीं है ।

(12) बोध का ज्ञाता

न्यायश्च—गुणवद्गुणवता संसृज्यते, ननातुल्यजातीयम्, अतः निर्गुणं निर्विशेषं केनचिदप्यतुल्यजातीयेन संसृज्यत इत्येतत् न्यायविरुद्धं भवेत् । तस्मात् नित्यालप्तज्ञानस्वरूपज्योतिरात्मा ब्रह्म इत्ययमर्थः बोधबोद्धृत्वे आत्मनः सिध्यति, नान्यथा । के. उ. प. भा. 2-4

नियम यह है—कि जिसमें कोई गुण है उसका किसी गुण वाले के साथ संपर्क हो जाता है, उसके साथ नहीं जिसकी जाति भिन्न है । अतः यह कहना अनियमित होगा, कि जो निर्गुण, निर्विशेष, और सभी से विलक्षण है उसका भिन्न जाति के किसी से भी संपर्क हो सकता है । अतः आत्मा ही ब्रह्म है जो ज्ञान की, कभी लुप्त न होने वाली, नित्य ज्योति है । यह तभी ज्ञात होता है जब आत्मा ही सभी बोधों की ज्ञाता होती है, अन्यथा नहीं । के. उ. प. भा. 2-4

(13) न हेय, न उपादेय

आत्मत्वान्न हेयो उपादेयो वा । अन्यत् हि अन्येन हेयमुपादेयं वा; न तेनैव तद्यस्य कस्यचिद्धेयं उपादेयं वा भवति । आत्मा च ब्रह्म सर्वान्तरत्वादविषयः अतोऽन्यस्यापि न हेयं उपादेयं वा । अन्याभावाच्च । के. उ. वा. भा. 1-4

यही आत्मा है, इसलिए यह न हेय (त्याज्य) है, न उपादेय (स्वीकरणीय) । कुछ दूसरा

ही किसी दूसरे के लिए हेय या उपादेय हो सकता है। किंतु उसी के द्वारा वह न हेय हो सकता है न उपादेय। और आत्मा ही ब्रह्म है; वह चूंकि सभी के अंदर है, इसलिए वह अविषय (बोध का विषय नहीं) है। न ही वह अन्य के द्वारा हेय या उपादेय है, क्योंकि अन्य (सत्ता) है ही नहीं।

(14) आत्मा नित्य है

सर्वव्यापि तदात्मतत्त्वं सर्वसंसारधर्मवर्जितं स्वेन निरुपाधिकेन स्वरूपेणाविक्रियमेव सत्, उपाधिकृताः सर्वाः संसारविक्रिया अनुभवतीवाविवेकिनां मूढानामनेकमिव च प्रतिदेहं प्रत्यवभासते। ई. उ. भा. 4

सर्वव्यापी आत्मा, जो सभी संसार-धर्मों (आवागमन) से रहित है, अपने उपाधिरहित स्वरूप के कारण अविकृत (अपरिवर्तनशील) रहती है, किंतु अविवेकी मूढ़ों को उपाधियों द्वारा रचे गए संसार (आवागमन) के सभी विकार (परिवर्तन) मानों अनुभव होते हैं, और अनेक दिखाई देते हैं—प्रत्येक शरीर में अलग अलग।

(15) आत्मा का निराकरण संभव नहीं

आत्मनश्च प्रत्याख्यातुमशक्यत्वात्, य एव निराकर्ता तस्यैवात्मस्वात्।

ब्र. सू. भा. 1-1-4

आत्मा का निराकरण संभव नही है ; क्योंकि वह अपनी ही आत्मा को अस्वीकार करेगा।

3. ब्रह्म और ईश्वर

(16) ब्रह्म के दो रूप

द्विरूपं हि ब्रह्म अवगम्यते, नामरूपविकारभेदोपाधिविशिष्टं, तद्विपरीतं च सर्वोपाधिविवर्जितम्. ....एकमपि ब्रह्म अपेक्षितोपाधिसंबंधं निरस्तोपाधिसंबंधं च उपास्यत्वेन ज्ञेयत्वेन च वेदान्तेषूतदिश्यते। ब्र. सू. भा. 1-1-11

ब्रह्म को दो रूपों में जाना जाता है : एक वह जो नाम और रूप जनित विकारों (परिवर्तन) के भेद से उपाधिविशिष्ट है, और, इससे विपरीत, दूसरा वह जो सब उपाधियों से रहित है।......यद्यपि ब्रह्म एक ही है किंतु वेदांत शास्त्रों के अनुसार, उपास्य का (जिसकी उपासना करनी है उसका) अपेक्षित उपाधियों के साथ, संबंध रहता है,

और ज्ञेय का (जिसे जानना है उसका) उपाधियों से कोई संबंध नही रहता ।

(17) ब्रह्म जो उपाधि रहित है

न तु ब्रह्म जातिमत्, अतो न सदादिशब्दवाच्यम्, नापि गणवत्, येन गुणशब्देनोच्येत, निर्गुणत्वात्, नापि क्रियाशब्दवाच्यम, निष्क्रियत्वात् । भ. गी. भा. 13-12

ब्रह्म किसी जाति (सत्ता) में नही आता, अतः इसे सत् आदि किसी शब्द से अभिहित नहीं किया जा सकता; निर्गुण होने के कारण यह गणवान भी नही, कि 'गुण' शब्द से इसे अभिहित किया जाय; और निष्क्रिय होने के कारण क्रिया शब्द से भी इसे अभिहित नहीं किया जा सकता ।

(18) नाम के कारण ही भेद

एकोह्ययमात्मा नाममात्रभेदेन बहुधाभिधीयत इति । ब्र. सू. भा. 1-4-12

केवल नाम के ही भेद के कारण, एक ही यह आत्मा, भिन्न भिन्न अभिहित होती है ।

(19) सगुण ब्रह्म

अस्य जगतो नामरूपाभ्यां व्याकृतस्य अनेककर्तभोक्तृसंयुक्तस्य प्रतिनियतदेशकालक्रियाफलाश्रयस्य मनसाप्यचिन्त्यरचानरूपस्य जन्मस्थितिभंग यतः सर्वज्ञात् सर्वशक्तेः कारणाद्भवति त द्ब्रह्म । ब्र. सू. भा. 1-1-2

जिस सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान कारण से इस जगत का, जो नाम और रूप से व्यक्त (व्याकृत) है, जो अनेक कर्ता-भोक्ताओं से संयुक्त है, जो देश (स्थान), काल और क्रिया के अनुसार नियत फलों का आश्रय है, और जिसकी रचना का रूप मन द्वारा भी अचिंत्य (अविचारणीय) हे जन्म, स्थिति और भंग होता है, वही ब्रह्म है ।

(20) ईश्वर की सत्ता का प्रमाण

यदिदं जगत् देव-गन्धर्व-यक्ष-रक्षः-पितृ-पिशाचादिलक्षणं द्यु-वियत् पृथिवी-आदित्य-चन्द्र-गृह-नक्षत्रविचित्रं विविधप्राण्युपभोगयोगस्थानसाधनसंबन्धि, तदत्यन्तकुशलशिल्पिभिरपि दुर्निर्माणं देशकालनिमित्तानुरूपनियतप्रवृत्तिनिवृत्तिक्रमं एतद्भोक्तृकर्मविभागज्ञप्रयत्नपूर्वकं भवितुमर्हति, कार्यत्वे सति यथोक्तलक्षणत्वात् गृहप्रासादरथशयनासनादिवत्, विपक्षे आत्मादिवत् ।
के. उ. वा. भा. 3

यह जगत, जो देव-गंधर्व-यक्ष-राक्षस-पिशचादि लक्षण युक्त है, जो स्वर्ग-आकाश-पृथ्वी-सूर्य-चंद्रमा-ग्रह-नक्षत्र से विचित्रित है, जो विविध प्राणियों के उपभोग के योग्य स्थानों और साधनों का संबंध बिठाने वाला है, अत्यंत कुशल शिल्पी भी जिसका निर्माण नहीं कर सकते, जिसका प्रवृत्ति-क्रम और निवृत्ति-क्रम देश-काल-निमित्त के अनुरूप नियत है, इसे किसी ऐसे ने प्रयत्न करके ही बनाया होगा जो भोक्ता ओर कर्म के बीच विभाग करना जानता है; क्योंकि कार्य (कारण का फल) रूप होने से इसके उक्त लक्षण हैं; जिस प्रकार गृह-प्रासाद-रथ-शय्या-आसन, आदि हैं; अथवा विपरीत स्थिति में, जिस प्रकार आत्मा, आदि नहीं हैं ।

(21) ईश्वर की सर्वज्ञता

यत्प्रसादाद्धि योगिनामप्यतीतानागतविषयं प्रत्यक्षं ज्ञानमिच्छन्ति योगशास्त्रविदः, किमु वक्तव्यं तस्य नित्यसिद्धस्येश्वरस्य सृष्टिस्थितिसंहृतिविषयं नित्यज्ञानं भवतीति ।

ब्र. सू. भा. 1-1-5

योगशास्त्र-वेत्ताओं के अनुसार, जिनके (ईश्वर के) प्रसाद से योगियों को भी अतीत और भविष्य की बात का प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाता है, उस नित्यसिद्ध ईश्वर के संबंध में तब क्या यह कहने की आवश्यकता है कि उसे (जगत के) सृष्टि-स्थिति-संहार के विषय का नित्य-ज्ञान है ।

(22) ब्रह्म, जगत का कारण

........सर्वज्ञः सर्वेश्वरो जगत उत्पत्तिकारणं, मृत्सुवर्णादय इव घटरुचकादीनाम् । उत्पन्नस्य जगतः नियन्तृत्वेन स्थितिकारणं, मायावीव मायायाः । प्रसारितस्य जगतः पुनः स्वात्मन्येवोपसंहारकारणम्, अवनिरिव चतुर्विधस्य भूतग्रामस्य । स एव च सर्वेषां न आत्मा।

ब्र. सू. भा. 2-1-1

सर्वज्ञ सर्वेश्वर ही जगत की उत्पत्ति का कारण है, जिस प्रकार मिट्टी, सोना, आदि घड़े, हार, आदि के कारण हैं । उत्पन्न हुए जगत की स्थिति का वही कारण है क्योंकि वह उनका नियन्ता है, जिस प्रकार मायावी (जादूगर) माया (जादू) का कारण है । फिर, इस प्रसारित (फैले हुए) जगत को अपने में उपसंहृत कर लेने (समेट लेने) वाला (कारण) भी वही है, जिस प्रकार चतुर्विध-भूतों (चारों प्रकार के प्राणियों) के लिए पृथ्वी । हम सब की वही आत्मा है ।

(23) ईश्वर साधारण कारण है

ईश्वरस्तु पर्जन्यवत् द्रष्टव्यः । यथा हि पर्जन्यो व्रीहियवादिसृष्टौ साधारणं कारणं भवति, व्रीहियवादिवैषम्ये तु तत्तद्बीजगतान्येव असाधारणानि सामर्थ्यानि कारणानि भवन्ति, एवमीश्वरो

देवमनुष्यादिसृष्टौ साधारणं कारणं भवति । देवमनुष्यादिवैषम्ये तु तत्तज्जीवगतान्येवासाधारणानि कर्माणि कारणानि भवन्ति । ब्र. सू. भा. 2-1-34

ईश्वर को वर्षा के समान देखना चाहिए । ठीक जिस प्रकार वर्षा धान, जौ, आदि की सृष्टि का साधारण कारण होती है, और धान, जौ, आदि की विषमता (भिन्नता) का असाधारण कारण उनके अलग-अलग प्रकार के बीजों की सामर्थ्य का होना है, उसी प्रकार ईश्वर भी देव, मनुष्य आदि की सृष्टि का साधारण कारण होता है, किंतु देव, मनुष्य आदि के बीच में जो वैषम्य पाया जाता है उसका कारण उन भिन्न भिन्न जीवों के असाधारण कर्म ही होते हैं ।

(24) ईश्वर का अवतार

स च भगवान् ज्ञानैश्वर्यशक्तिबलवीर्यतेजोभिः सदा संपन्नः त्रिगुणात्मिकां वैष्णवीं स्वां मायां मूलप्रकृतिं वशीकृत्य अजोऽव्ययो भूतानामीश्वरः नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावोऽपि सन् स्वमायया देहवानिव जात इव लोकानुग्रहं कुर्वन् लक्ष्यते, स्वप्रयोजनाभावेऽपि भूतानुजिघृक्षया । भ. गी. भा. भूमिका

ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीर्य और तेज से सदा संपन्न वह भगवान अपनी त्रिगुणात्मिका मूल प्रकृति वाली वैष्णवी माया को अपने वशीभूत किए हुए है; और यद्यपि वह अज (अजन्मा), अव्यय (जो घटता नहीं), सभी भूतों (प्राणियों) का स्वामी है, और स्वभाव से नित्य, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त है, वह लोक-कल्याण के लिए अपनी माया से देह धारण करता हुआ दिखाई देता है; अपना कोई प्रयोजन न रहने पर भी प्राणियों की भलाई करने के लिए ।

(25) परमात्मा संसार से अछूता

यथा स्वयं प्रसारितया मायया मायावी त्रिष्वपि कालेषु न संस्पृश्यते, अवस्तुत्वात्, एवं परमात्मापि संसारमायया न संस्पृश्यत इति । यथा च स्वप्नदृगेकः स्वप्नदर्शनमायया न संस्पृश्यते, प्रबोधसंप्रसादयोरनन्वागतत्वात् । एवं अवस्थात्रयसाक्ष्येकोऽव्यभिचार्यवस्थात्रयेण व्यभिचारिणा न संस्पृश्यते । मायामात्रं ह्येतत् यत्परमात्मनोऽवस्थात्रयात्मनावभासनं रज्जवा इव सर्पादिभावेनति । ब्र. सू. भा. 2-1-9

जिस प्रकार कोई मायावी (जादूगर) अपनी फैलाई हुई माया से तीनों कालों में (भूत, वर्तमान, भविष्य) अछूता ही रहता है, क्योंकि वह अयथार्थ है, उसी प्रकार परमात्मा भी संसार की माया से अछूता रह जाता है । और जिस प्रकार स्वप्न देखने वाला स्वप्न-दर्शन की माया से, जाग्रत अवस्था और घोर निद्रा में उसके न रह जाने (लुप्त हो जाने)

के कारण, अछूता रहता है, उसी प्रकार (अनुभव की) तीनों अवस्थाओं का एक अव्यभिचारी (स्थिर) साक्षी उन तीनों व्यभिचारी (बदलती रहने वाली) अवस्थाओं से अछूता ही रह जाता है। इन तीनों अवस्थाओं में परमात्मा आत्मा-स्वरूप ही जो दिखाई देता है, यह ठीक वैसी ही माया है जैसी कि रस्सी से सांप का भ्रम देने वाली माया।

4. माया और जगत

(26) द्वैत की माया

यत्परमार्थसदद्वैतम्, मायया भिद्यते ह्येतत् तैमिरिकानेकचन्द्रवत् रज्जुः सर्पधारादिभिर्भेदैरिव, न परमार्थतः, निरवयवत्वादात्मनः। सावयवं हि अवयवान्यथात्वेन भिद्यते, यथा मृद्घटादिभेदैः। तस्मान्निरवयवमजं नान्यथा कथंचन केनचिदपि प्रकारेण न भिद्यत इत्यभिप्रायः। तत्त्वतो भिद्यमानं हि अमृतमजमद्वयं स्वभावतः सत् मर्त्यतां व्रजेत्, यथा अग्निः शीतताम्। तच्चानिष्टं स्वभाववैपरीत्यगमनम्, सर्वप्रमाणविरोधात्। अजमद्वयमात्मतत्त्वं माययैव भिद्यते, न परमार्थतः। तस्मान्न परमार्थसद् द्वैतम्॥ मा. का. भा. 3-19

जो पारमार्थिक रूप में सत् है वह अद्वैत है, माया के कारण वह विभक्त दिखाई देता है, जिस प्रकार आंखों में दोष रहने पर चंद्रमा अनेक दिखाई देते हैं, अथवा रस्सी में सांप या पानी की धारा, आदि दिखाई देने लगती है, किंतु यथार्थ में वैसा नहीं है, क्योंकि आत्मा निरवयव (अंग रहित) है। सच तो यह है कि जो सावयव (अंगों से युक्त) है वह अवयवों (अंगों) के बदलने से बदल जाता है, जिस प्रकार मिट्टी घड़े, आदि के नाना रूपों में बदल जाती है। अतः जो निरवयव और अज (जन्महीन) है वह किसी प्रकार भी भिन्न नहीं हो सकता यही आशय है। जो अमर, अज और अद्वय (जिसका दूसरा नहीं) है वह यदि तत्वतः (सचमुच ही) भिन्नता प्राप्त कर ले तब तो वह मर्त्य (मृत्युशील) ही हो गया, जिस प्रकार अग्नि, शीतल हो जाने पर। किंतु यह मानने की बात नहीं है, क्योंकि जो स्वभाव है उससे विपरीत होना सभी प्रमाणों के विरुद्ध है। अज, अद्वय, आत्मतत्व माया के कारण ही भिन्न दिखाई देता है, वस्तुतः भिन्न नहीं होता। अतः द्वैत पारमार्थिक सत् नहीं है।

(27) भ्रम की शक्ति, माया

यदि आत्मैक एवेति निश्चयः, कथं प्राणादिभिरनन्तैर्भावैः एतैः संसारलक्षणैर्विकल्पित इति? उच्यते, शृणु--मायैष तस्यात्मनो देवस्य। यथा मायाविना विहिता माया गगनमतिविमलं

कुसुमितैः सपलाशैः तरुभिराकीर्णमिव करोति, तथा इयमपि देवस्य माया अयं स्वयमपि मोहित इव मोहितो भवति । भा. का. भा. 2-19

यदि यह निश्चित है कि आत्मा एक ही है, तब सांसारिक लक्षणों वाले प्राण, आदि अनंत भावों के रूप में उसकी कल्पना कैसे हुई ? इसका उत्तर सुनें । उस दिव्य आत्मा की यह माया है । जिस प्रकार किसी मायावी (जादूगर) की रचित माया से अति निर्मल आकाश पुष्पित और पल्लवित वृक्षों से भरा हुआ दिखाई देता है, उसी प्रकार यह भी देव की माया ही है जिससे मानो यह स्वयं भी मोहग्रस्त हो उठता है ।

(28) माया की शक्ति

अविद्यात्मिका बीजशक्तिः अव्यक्तशब्दनिर्देश्या परमेश्वराश्रया मायामयी महासुषुप्तिः, यस्यां स्वरूपप्रतिबोधरहिताः शेरते संसारिणो जीवाः ....अव्यक्ता हि सा माया, तत्त्वान्यत्वनिरूपणस्याथाशक्यत्वात् । ब्र. सू. भा. 1-4-3

बीज-शक्ति (सृष्टि करने वाली) अविद्या स्वरूपिणी है, 'अव्यक्त' शब्द से उसका निर्देश (वर्णन) होता है, वह परमेश्वर पर आश्रित है, वह मायामयी है, वह महासुषुप्ति (निद्रा) है । अपने स्वरूप के प्रतिबोध (ज्ञान) से रहित संसार (आवागमन करने वाले) जीव उसमें सोए रहते हैं ।

अव्यक्त ही माया है, क्योंकि उसका निरूपण न तो (वास्तविक) 'यह है' कह कर किया जा सकता है, न (अवास्तविक) 'यह अन्य है' कह कर ।

(29) जो नहीं है

सा च माया न विद्यते । मायेत्यविद्यमानस्याख्या । भा. का. भा. 4-58

माया वह है जो विद्यमान नहीं है । माया अविद्यमान का नाम है ।

(30) भिन्नता परम सत्य नहीं

भेदस्तु उपाधिनिमित्तो मिथ्याज्ञानकल्पितो न पारमार्थिकः । ब्र. सू. भा. 1-4-10

भेद उपाधियों के कारण है, मिथ्या ज्ञान से कल्पित है, और वह पारमार्थिक (सत्य) नहीं है ।

(31) सृष्टि की तुलना रस्सी के जादू से

विभूतिर्विस्तार ईश्वरस्य सृष्टिरिति सृष्टिचिन्तका मन्यन्ते, न तु परमार्थचिन्तकानां सृष्टावादरः ।........न हि मायाविनं सूत्रमाकाशे निक्षिप्य तेन सायधमारुह्य चक्षुर्गोचरतामतीत्य युद्धेन खण्डशः छिन्नं पतितं पुनरुत्थितं च पश्यतां तत्कृतमायादिसतत्त्वचिन्तायामादरो भवति। तथैवायं मायाविनः सूत्रप्रसारणसमः सुषुप्तस्वप्नादिविकासः तदारूढ़मायाविसमश्च तत्स्थः प्राज्ञतैजसादिः, सूत्रतदारूढ़ाभ्यामन्यः परमार्थमायावी । स एव भूमिष्ठा मायाच्छन्नोऽदृष्यमान एव स्थितो यथा तथा तुरीयाख्यं परमार्थतत्त्वम् । अतस्तच्चिन्तायामेवादरो मुमुक्षूणामार्याणां, न निष्प्रयोजनायां सृष्टावादर इति । भा. का. भा. 1-7

सृष्टि पर विचार करने वाले चिंतक मानते हैं कि वह ईश्वर का विस्तार है । किंतु परमार्थ-चिंतक सृष्टि के संबंध में कुछ नहीं मानते......मायावी (जादूगर) जब आकाश में रस्सी फेंक कर, अपने हथियार सहित उस पर चढ़ जाता है, फिर आंखों से ओझल हो जाता है, युद्ध में खंड खंड होकर जब गिर पड़ता है, और फिर उठ खड़ा होता है तब दर्शक उसकी उस माया (जादू) को सच समझने की भूल नहीं करते । उस मायावी के रस्सी फेंकने के ठीक समान ही निद्रा, स्वप्न आदि का विकास है; उस रस्सी पर चढ़ने वाले मायावी के समान ही प्राज्ञ, तेजस, आदि हैं जो उसमें (अनुभव की अवस्थाओं में) स्थित हैं; रस्सी और उस पर चढ़ने वाले से भिन्न है परमार्थ (वास्तविक) मायावी; वह भूमि पर रहते हुए, अपनी ही माया से आच्छन्न (छिपा) रहने के कारण, अदृश्य रहता है । परमार्थ तत्व (वास्तविक सत्य) जिसे 'तुरीय' कहते हैं, ठीक वेसा ही है । अतः मोक्ष की इच्छा रखने वाले आर्यों की आकांक्षा उसी के चिंतन में रहती है, निष्प्रयोजन रूप में सृष्टि के संबंध में वे चिंता नहीं करते ।

(32) संसार 'माया' है

न हि रज्ज्वां भ्रान्तिबुद्ध्या कल्पितः सर्पो विद्यमानः सन्विवेकतो निवृत्तः, न च माया मायाविना प्रयुक्ता तद्दर्शिनां चक्षुर्बन्धापगमे विद्यमाना सती निवृत्ता, तथेदं प्रपञ्चाख्यं मायामात्रं द्वैतम्, रज्जुवन्मायाविवच्च अद्वैतं परमार्थतः, तस्मान्न कश्चिन्प्रपंचः प्रवृत्ता निवृत्तो वाऽस्ति । भा. का. भा. 1-17

यह बात नहीं है कि रस्सी में भ्रम-बुद्धि से जिस सांप की कल्पना कर ली गई वह विद्यमान तो था, पर विवेक द्वारा उसका लोप किया गया । यह भी नहीं, कि मायावी ने जिस माया का प्रयोग किया वह वस्तुतः विद्यमान थी और दर्शकों की आंखें (जो माया से बंद हो गई थीं) खुल जाने पर वह निवृत्त हो गई । ठीक उसी भांति यहां भी प्रपंच (संसार) कहलाने वाला द्वेत भी माया मात्र है । और अद्वेत, जो रस्सी और मायावी के समान है, परमार्थ (परम सत्य) है । अतः कोई भी प्रपंच (संसार) न प्रवृत्त हुआ है, न निवृत्त ।

(33) संसार असत् है

यथा च प्रसारित पण्यापणगृहप्रसादश्रीपुंजनपदव्यवहाराकीर्णमिव गन्धर्वनगरं दृश्यमानमेव सत् अकस्मादभावतां गतं दृष्टम्, यथा च स्वप्नमाये दृष्टे असद्रूपे, तथा विश्वमिदं द्वैतमसद् दृष्टम्।

मा. का. भा. 2-31

जिस प्रकार आकाश में कल्पना-प्रसूत कोई गंधर्व नगर, बिक्री की तरह तरह की सामग्री से भरी दुकानों, घरों, महलों, ग्रामों और नर-नारियों की चहलपहल से पूरा का पूरा सच्चा ही दिखाई देता है, किंतु अचानक ही तिरोहित हो जाता है, और जिस प्रकार स्वप्न और माया (जादू) के चित्र अवास्तविक ही सिद्ध होते हे, उसी प्रकार यह सारा द्वैत विश्व भी असत् (अवास्तविक) है ।

(34) द्वैत असत् है

उपालभ्यते हि मायाहस्ती हस्तीव, हस्तिनमिवमात्र समाचरन्ति बन्धनारोहणादि हस्तिसंबन्धिभिर्धर्मैः, हस्तीति चोच्यते असन्नपि यथा, तथैवोपलम्भात्समाचारात् द्वैतं भेदरूपमस्ति वस्तु इति उच्यते । तस्मान्नोपालम्भासमाचारौ द्वैतवस्तुसद्‌भावे हेतू भवत इत्यभिप्रायः ।।

मा. का. भा. 4-44

माया-हस्ती (जादू के कारण दिखाई देने वाला हाथी) सच्चा हाथी ही जान पड़ता है, और हाथी संबंधी सभी कार्य, जैसे, बांधा जाना, सवारी के काम आना—उसके द्वारा संपन्न होते हैं, ओर उसे हाथी ही कहा जाता हे, जब कि वह वस्तुतः कुछ हे ही नहीं । उसी प्रकार द्वैत भी, जो भेद-रूप हे, प्रत्यक्ष होने के कारण, और 'उपयोग के नाते भी, 'है' की भांति ही जान पड़ता हे । अतः प्रत्यक्ष होना ओर उपयोग,' द्वैत वस्तु की सत्ता के कारण नहीं हो सकते—यही अभिप्राय है ।

(35) जगत की ब्रह्म से भिन्न सत्ता नहीं

यथा घटकरकाद्याकाशानां महाकाशादनन्यत्वं, यथा च मृगतृष्णिकोदकादीनां ऊषरादिभ्योऽनन्यत्वं, दृष्टनष्टस्वरूपत्वात् स्वरूपेणानुपारव्यत्वात् एवमस्य भोग्यभोक्त्रादि प्रपञ्चजातस्य ब्रह्मव्यतिरेकेणाभावः।

ब्र. सू. भा. 2-1-14

जिस प्रकार घड़े के अंदर व्याप्त और कमंडल के अंदर व्याप्त आकाशों की महा-आकाश से भिन्नता नहीं है, और जिस प्रकार मृग-तृष्णा के पानी, आदि ओर मरुभूमि की रेती, आदि के बीच कोई भिन्नता नहीं है, क्योंकि उनका स्वरूप ही दृष्ट-नष्ट (दिखाई देने पर नष्ट हो जाने वाला) है, और इसलिए भी कि उनके स्वरूप की परिभाषा नहीं हो सकती, उसी प्रकार भोग्य, आदि प्रपंच से युक्त इस जगत की ब्रह्म से भिन्न कोई सत्ता नहीं है ।

(36) जगत की भ्रामकता की पुष्टि

जाग्रद्दश्यानां भावानां वैतथ्यमिति, प्रतिज्ञा। दृश्यत्वादिति हेतुः। स्वप्नदृश्यभाववदिति दृष्टान्तः। यथा तत्र स्वप्ने दृश्यानां भावनां वेतथ्यं, तथा जागरितेऽपि दृश्यत्वमविशिष्टमिति हेतूपनयः। तस्माज्जागरितेऽपि वैतथ्यं स्मृतिमिति निगमनम्। अन्तःस्थानात्संवृतत्वेनच स्वप्नदृश्यानां भावानां जाग्रद्दृश्येभ्यो भेदः। दृश्यत्वमसत्यत्वं चाविशिष्टमुभयत्र।

मा. का. भा. 2-4

जाग्रत अवस्था में देखी जाने वाली वस्तु भ्रामक है—यह है प्रतिज्ञा (आधार-वाक्य)। हेतु है—उनका दिखाई पड़ना। दृष्टांत है—जिस तरह स्वप्न में भी दिखाई पड़ती है। तो जिस प्रकार स्वप्न में दिखाई देने वाली वस्तु भ्रम रूप है, उसी प्रकार जाग्रत अवस्था में भी। उपनय (अन्योन्य अंतःसंबंध) यह हुआ कि 'दिखाई पड़ना' दोनों अवस्थाओं में समान है। अतः निगमन (निष्कर्ष) यह दिया गया कि जाग्रत अवस्था भी अवास्तव (भ्रम) है। स्वप्न में देखी गई वस्तु अंतःस्थानीय (अंदर) और बंद रहने के कारण जाग्रत अवस्था में देखी गई वस्तु से भिन्न होती है। किंतु स्वप्न और जाग्रत दोनों ही अवस्थाओं में दृश्यत्व (दिखा जाना) ओर असत्यत्व तो समान ही हैं।

(37) जगत की भ्रामकता का प्रमाण

इतश्च वेतथ्यं जाग्रद्दृश्यानां भेदानाम्, आद्यन्तयोरभावात्, यदादावन्ते च नास्ति वस्तु मृगतृष्णिकादि, तन्मध्येऽपि नास्तीति निश्चितं लोके। तथेमे जाग्रद्दृश्या भेदाः आद्यन्तयोरभावात् वितथैरेव मृगतृष्णिकादिभिः सदृशत्वाद्वितथा एव, तथापि अवितथा इव लक्षिता मूढैरनात्मविद्भिः। मा. का. भा. 2-6

इसलिए जाग्रत अवस्था में देखे गए दृश्य भी मिथ्या हैं; उनके आदि और अंत का अभाव होने के कारण, मृगतष्णा आदि की ही भांति जो वस्तु आदि और अंत में नहीं है उसका मघवर्त्ती भी कुछ नहीं है—यह लोक-प्रचलित निश्चित मान्यता है। इसी भांति जाग्रत अवस्था के ये विभिन्न दृश्य भी अयथार्थ हैं क्योंकि मृगतृष्णा आदि की ही भांति इनका भी आदि-अंत नहीं है। किंतु फिर भी आत्मा को न जानने वाले मूढ़ लोगों को वे यथार्थ की भांति दिखाई पड़ते हैं।

(38) सृष्टि संबंधी श्रुति

मृल्लोहविस्फुलिंगादिदृष्टान्तोपन्यासैः सृष्टिः या च उदिता प्रकाशिता कल्पिता अन्यथान्यथा च, ससर्वः सृष्टिप्रकारो जीवपरमात्मैकत्वबुद्ध्यवतारायोपायोऽस्माकम्, यथा प्राणसंवादे वागाद्यासुरपाप्मवेधाद्याख्यायिका कल्पिता प्राणवैशिष्ट्यवोधावताराय....शाखा भेदेषु अन्यथान्यथा च प्राणादिसंवादश्रवणात्। यदि हि वादः परमार्थ एवाभूत्, एकरूप एव संवादः सर्वशाखास्वश्रोष्यत

विरुद्धानेकप्रकारेण नाश्रोष्यत, श्रूयते तु, तस्मान्न तादार्थ्यं संवादश्रुतीनाम् ।......तस्मादुत्पत्त्यादि श्रुतय आत्मैकत्वबुद्ध्यवतारायैव ।। मा. का. भा. 3-15

मिट्टी, लोहा, चिनगारी, आदि के दृष्टांतों द्वारा अथवा अन्य प्रकारों से जिस सृष्टि को प्रकाशित या कल्पित बताया गया है (शास्त्रों में)—सृष्टि का यह समस्त प्रकार हमारे अंदर जीव और परमात्मा के एकत्व की भावना उत्पन्न करने का उपाय है । साधन जिस प्रकार प्राण-संवाद (शास्त्रीय विवेचना का एक प्रसंग) में यह कथा है कि वाक् आदि को असुरों ने पाप से विद्ध किया, जिसका उद्देश्य प्राण की विशिष्टता का बोध कराना है........भिन्न भिन्न शाखाओं में प्राण-संवाद की कथा भिन्न भिन्न प्रकारों से कही गई है । यदि यह संवाद सचमुच घटित हुआ होता तो उसकी सभी शाखाओं में उसका संवाद एक ही रहता, अनेक प्रकारों में परस्पर-विरोधी न होता, जैसा कि उन शाखाओं में है । अतः इन संवादों की शिक्षा यह नहीं है कि ये सचमुच ही घटित हुए ।.. इस प्रकार, सृष्टि, आदि संबंधी श्रुतियां आत्मा के एकत्वबोध की ही अवतारणा (भूमिका) है ।

(39) व्यवहार जगत, चरम सत्य नहीं

सर्वव्यवहाराणामेव प्राग्ब्रह्मात्मताविज्ञानात् सत्यत्वोपपत्तेः । स्वप्नव्यवहारस्येव प्राक्प्रबोधात् । यावद्धि न सत्यात्मैकत्वप्रतिपत्तिः तावत्प्रमाणप्रमेयफललक्षणेषु विकारेषु अनृतत्वबुद्धिर्न कस्यचित् उत्पद्यते । विकारानेव तु 'अहं', 'मम' इत्यविद्यया आत्मात्मीयेन भावेन सर्वो जन्तुः प्रतिपद्यते स्वाभाविकीं ब्रह्मात्मतां हित्वा । ब्र. सू. भा. 2-1-14

ब्रह्म ही आत्मा है, यह ज्ञान होने से पूर्व सभी व्यवहार सत्य है, जिस प्रकार स्वप्न में हुए व्यवहार जागने से पहले तक सत्य रहते हैं । जब तक एक ही सत्य-स्वरूप आत्मा की प्रतिपत्ति (पूर्ण ज्ञान) नहीं होती तब तक किसी को भी यह बोध नही होता कि प्रमाण, प्रमेय और फल जिनका लक्षण है, वे विकार मिथ्या है । इन विकारों की ही अविद्या के फलस्वरूप सब प्राणी मैं, 'मेरा', आदि के रूप में आत्मीय (अपना) मान लेते हैं, और ब्रह्म ही आत्मा है, इस स्वाभाविक सत्य को छोड़ बैठते है ।

5. जीव

(40) जीव

जीवो हि नाम चेतनः शरीराध्यक्षः प्राणानां धारयिता ब्र. सू. भा. 1-1-6

जिसे कवि कहा जाता है वह शरीर का अध्यक्ष चेतन है, जो प्राणों को धारण करता है ।

(41) जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं

न हि जीवो नाम अत्यन्तभिन्नो ब्राह्मणः ।.......बुद्धयाद्युपाधिकृत तु विशेषमाश्रित्य ब्रह्मेव सन् जीवः कर्त्ता भोक्ता चेत्युच्यते । ब्र. सू. भा. 1-1-31

वस्तुतः जिसे जीव कहते हैं वह ब्रह्म से अत्यंत (संपूर्ण रूप से) भिन्न नहीं है ।... ब्रह्म होने पर भी जीव बुद्धि, आदि उपाधियों का आश्रय लेने के कारण कर्त्ता ओर भोक्ता कहलाने लगता है ।

(42) भेद का कारण अविद्या

विज्ञानात्मपरमात्मनोः अविद्याप्रत्युपस्थापितनामरूपरचितदेहाद्युपाधिनिमित्तो भेदो न पारमार्थिकः ब्र. सू. भा. 1-4-22

आत्मा ओर परमात्मा के बीच का भेद पारमार्थिक भेद नही है; वह तो अविद्या के कारण जान पड़ता है जो नाम-रूप से रचित देहादि उपाधियों के फलस्वरूप है ।

(43) उपाधियों का अध्यारोप

आज्ञानान्मानसोपाधेः
कर्तुत्वादीनि चात्मनि ।
कल्प्यन्तेऽम्बुगते चन्द्रे
चलनादि यथाम्भसः ।। आ. बो. 22

अज्ञान के कारण ही आत्मा पर कर्तव्य, आदि मानसिक उपाधियों का अध्यारोप होता है, जिस प्रकार पानी में (प्रतिविंबित) चंद्रमा पर जल की गति का अध्यारोप हो जाता है ।

(44) आकाश से तुलना

आत्मा परः हि यस्मात् आकाशवत् सूक्ष्मो निरवयवः सर्वगतः आकाशवदुक्तः जीवैः क्षेत्रज्ञैः घटाकाशैरिव घटाकाशतुल्यैः उदितः उक्तः, स एव आकाशसमः पर आत्मा । अथवा घटाकाशैर्यथा आकाश उदितः उत्पन्नः, तथा परो जीवात्मभिरुत्पन्नः, जीवात्मनां परस्मादात्मन उत्पत्तिर्या श्रूयते वेदान्तेषु, सा महाकाशाद्घटाकाशोत्पत्तिसमा, न परमार्थत इत्यभिप्रायः । तस्मादेवाकाशाद्घटादयः संघाता यथा उत्पद्यन्ते, एवमाकाशस्थानीयात्परमात्मनः पृथ्व्यादिभूत संघाताः आध्यात्मिकाश्च कार्यकरणलक्षणा रज्जुसर्परज्जसंर्पवद्विकल्पा जायन्ते ।

मा. का. भा. 3-3

परमात्मा चूंकि आकाश की ही भांति सूक्ष्म, निरवयव और सर्वगत है, इसलिए उसकी तुलना आकाश के साथ की गई है । और कहा गया हे कि यह जीवों के रूप में व्यक्त होता है, जो घटों (घड़ों) में सीमित आकाश के रूप में है। वह परमात्मा आकाश के सदृश ही है । अथवा ठीक जिस भांति आकाश की उत्पत्ति घटाकाशों (की सीमितता) के कारण ही बताई जाती है, उसी प्रकार परमात्मा की भी उत्पत्ति क्षेत्रज्ञ जीवों के कारण बताई जाती हे । वेदांत शास्त्रों में जीवात्मा की जो उत्पत्ति परमात्मा से बताई गई है वह महाकाश से घटाकाश की उत्पत्ति के ही समान है, अर्थात वह पारमार्थिक सत्य नहीं है । इस प्रकार, जैसे आकाश से घट, आदि की उत्पत्ति होती हे, उसी प्रकार आकाश रूप परमात्मा से पृथ्वी आदि भूतसंघात और कार्य-कारण रूप आध्यात्मिक भाव उत्पन्न होते हैं; अर्थात रस्सी में सांप की कल्पना की भांति जान पड़ते हैं ।

6. ज्ञान और कर्म

(45) ज्ञान द्वारा द्वैत का नाश

रोगार्तस्येव रोगनिवृत्तौ स्वस्थता, तथा दुःखात्मकस्यात्मनो द्वैतप्रपञ्चोपशमे, स्वस्थता, अद्वैतभावः प्रयोजनम् । द्वैतप्रपञ्चस्य च अविद्याकृतत्वात् विद्यया तदुपशमः स्तात ।

मा. का. भा. भूमिका

रोगी के रोग की निवृत्ति होने पर जिस प्रकार उसे स्वस्थ अवस्था प्राप्त होती है, उसी प्रकार जो दुखी है उसके द्वैत-प्रपंच का शमन (निराकरण) हो जाने पर स्वस्थता प्राप्त होती है, जिसका लक्ष्य अद्वैतभाव है । और चूंकि द्वैत-प्रपंच का कारण अविद्या है, इसलिए उसका उपशम विद्या द्वारा होता है ।

(46) कर्म और ज्ञान : दोनों में भेद

अविरोधिताकर्म
नाविद्यां विनिवर्तयेत् ।
विद्याऽविद्यां निहन्त्येव
तेजस्तिमिरसंघवत् ।। आ. बो. 3

कर्म से अविद्या का नाश नहीं होता, क्योंकि वह उसका विरोधी नहीं है; अविद्या का नाश विद्या करती है, जिस प्रकार घोर अंधकार का नाश प्रकाश करता है ।

(47) अज्ञान का नाश

परिच्छिन्न इवाज्ञानात्
तन्नाशे सति केवलः ।
स्वयं प्रकाशते ह्यात्मा
मेघापाये अंशुमानिव ।। आ. बो. 4

अज्ञान के कारण आत्मा परिच्छिन्न (सीमित) जैसी जान पड़ती है; जब उसका नाश हो जाता है तब केवल (शुद्ध) आत्मा स्वयं ही प्रकाशित हो उठती है, जिस प्रकार मेघ के हट जाने पर सूर्य ।

(48) कर्म और ज्ञान

ज्ञानकर्मणोर्विरोधं पर्वतवदकम्प्यम् ।
"द्वाविमावथ पन्थानौ यत्र वेदाः प्रतिष्ठिताः ।
प्रवृत्तिलक्षणों धर्मो निवृत्तिश्च विभावितः ।।" इत्यादि पुत्राय विचार्य निश्चितमुक्तं व्यासेन वेदाचार्येण भगवता ।। ई. उ. भा. 2

ज्ञान और कर्म के बीच पर्वत जैसा अटल विरोध है ।.....वेदाचार्य भगवान् व्यास ने निश्चित विचार करने के बाद अपने पुत्र से कहा था : "वेदों में ये ही दो मार्ग बताए गए हैं; एक प्रवृत्ति-धर्म कहलाता है, और दूसरा निवृत्ति धर्म ।"

(49) ज्ञान कर्म-विरोधी है

कर्मविषये चानुक्तिः, तद्विरोधित्वात् । अस्य विजिज्ञासितव्यस्य आत्मतत्त्वस्य कर्मविषयेऽवचनम्। कस्मादिति चेत्, आत्मनो हि यथावद्विज्ञानं कर्मणाविरुध्यते । निरतिशयब्रह्मस्वरूपो ह्यात्मा विजियज्ञापयिषितः ।...न हि स्वाराज्येऽभिषिक्तो ब्रह्मत्वं गमितः कंचन नमितुमिच्छति । अतो

ब्रह्मास्मीति संबुद्धो न कर्म कारयितुं शक्यते । न ह्यात्मानमवाप्तार्थं ब्रह्म मन्यमानः प्रवृत्ति प्रयोजनवतीं पश्यति । न च निष्प्रयोजना प्रवृत्तिः । अतो विरुध्यत एष कर्मणा ज्ञानम् । अतः कर्मविषयेऽनुक्तिः । के. उ. वा. भा. भूमिका

कर्मकांड के संदर्भ में कुछ भी नहीं कहा गया है (आत्मा के संबंध में), क्योंकि उसका उसके साथ विरोध है । इसलिए जो आत्मतत्व यहां (उपनिषद् में) बताए जाने योग्य हैं उसका कर्म के संदर्भ में उल्लेख नहीं किया गया है । ऐसा क्यों है ? उत्तर यह है कि आत्मा के यथावत् (यथार्थ) ज्ञान का कर्मकांड के साथ विरोध है । सर्वोत्कृष्ट ब्रह्म-स्वरूप आत्मा ही जानने योग्य है ।....जो स्व-राज्य में अभिषिक्त है (जो आत्मनिर्भर है) और जिसने ब्रह्मत्व प्राप्त कर लिया है वह कदापि किसी के सम्मुख नमित होना नहीं चाहता; अतः जिसे 'मैं ब्रह्म हूं' यह बोध हो गया है वह किसी से कर्म नहीं करा सकता । जो आत्मा को ही परम लक्ष्य स्वरूप ब्रह्म मानता है वह प्रवृत्ति (कर्म) मे ई प्रयोजन (लाभ) नहीं देखता । और जो कर्म निष्प्रयोजन है उसमें किसी की प्रवृत्ति नहीं होती । अतः ज्ञान निश्चय ही कर्म का विरोधी है । इसलिए यह स्पष्ट हो जाता है कि कर्मकांड के संदर्भ में आत्मज्ञान का कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया ।

(50) ज्ञान, कर्म-निर्भर नहीं

न हि सर्वक्रियाकारकफलभेदबुद्धितिरस्कारिण्या ब्रह्मविद्यायाः शेषापेक्षा सहकारिसाधनसंबन्धो वा युज्यते । सर्व विषयव्यावृत्तप्रत्यगात्मविषयनिष्ठत्वाच्च ब्रह्मविद्यायाः तत्फलस्य च निश्रेयसस्य 'मोक्षमिच्छन्सदा कर्म त्येजेदेव ससाधनम् । त्यजतैव हि तज्ज्ञेयं त्यक्तुः प्रत्यक्परं पदम् ।' तस्मात कर्मणां सहकारित्वं कर्मशेषापेक्षा वा न ज्ञानस्योपपद्यते ।

के. उ. प. भा. 4-7

क्रिया, कारक और उसके फल के बीच सभी प्रकार की भेद-बुद्धि का तिरस्कार करने वाली ब्रह्मविद्या में न तो किसी शेष की ही अपेक्षा करना उचित है और न किसी सहकारी साधन-संबंध की; क्योंकि ब्रह्मविद्या सभी विषयों से निवृत्त जो प्रत्यगात्मा रूप विषय है उसमें, और उसके फल-रूप मोक्ष में ही स्थित है । कहा गया है "मोक्ष चाहने वाले को सदा कर्म और उसके साधनों का त्याग करना चाहिए । जो इस प्रकार का त्याग करता है उसी को प्रत्यगात्मा रूप परम-पद प्राप्त होता है ।" अतः, ज्ञान को कर्म की सहायता की या कर्म का शेष होने की आवश्यकता पड़े, यह कैसे संभव है ?

(51) कर्म द्वारा चित्त-शुद्धि

सर्वमितद्यथोक्तं कर्म च ज्ञानं च सम्यगनुष्ठितं निष्कामस्य मुमुक्षोः सत्त्वशुद्ध्यर्थं भवति । सकामस्य तु ज्ञानरहितस्य केवलानि श्रौतानि स्मार्तानि च कर्माणि दक्षिणमार्गप्रतिपत्तये

पुनरावृत्तये च भवन्ति । स्वाभाविक्या त्वशास्त्रीयया प्रवृत्त्या पश्वादिस्थावरान्ताधोगतिः स्यात् । ....विशुद्धसत्त्वस्य तु निष्कामस्यैव बाह्यादनित्यात् साध्यसाधनसंबन्धादिह कृतात् पूर्वकृताद्वा संस्कारविशेषोद्भवाद्विरक्तस्य प्रत्यगात्मविषया जिज्ञासा प्रवर्तते ।

के. उ. प. भा. भूमिका

यह सभी कर्म और ज्ञान (कर्मकांड से संबद्ध) जब किसी निष्काम मुमुक्षू (मोक्ष चाहने वाले) द्वारा सम्यक् रूप में अनुष्ठित होता है, तब यह चित्त-शुद्धि करता है । किंतु जो सकाम और ज्ञानरहित है उसके द्वारा किए गए श्रुति-स्मृति विहित कार्य भी उसे दक्षिण मार्ग पर ले जाते हैं और (अंत में) संसार में फिर से आने (पुनर्जन्म) के कारण बनते हैं । किंतु स्वाभाविक होते हुए भी कर्मों की जो प्रवृत्ति अशास्त्रीय है वह पशु आदि की योनि से शुरू होने वाली ओर स्थावर (अचल) वस्तुओं में अंत होने वाली अधो-गति की ओर ले जाती है ।....जिसका चित्त शुद्ध हो चुका है, जो निष्काम हो चुका है, ओर जो साध्य-साधन रूप अनित्य बाह्य संबंधों से ओर इस जन्म में या पूर्व जन्म में किए गए (कर्मों के) संस्कार विशेष के, परिणाम से विरक्त हो चुका है उसमें प्रत्यगात्मा के स्वरूप की जिज्ञासा उत्पन्न होती है ।

(52) इच्छाओं का त्याग

प्रजाकर्मतत्संयुक्तविद्याभिर्मनुष्यपितृदेवलोकत्रयसाधनैः अनात्मलोक प्रतिपत्तिकारणैः किं करिष्यामः । न चास्माकं लोकत्रयमनित्यं साधनसाध्यमिष्टम्, येषामस्माकं स्वाभाविक्कोऽजोऽजरोऽमृतोभयो न वर्धते कर्मणा नो कनीयान् नित्यश्च लोक इष्टः । स च नित्यत्वान्नाविद्या–निवृत्तिव्यतिरेकेणान्यसाधननिष्पाद्यः । तस्मात् प्रत्यगात्मब्रह्मविज्ञानपूर्वकः सर्वैषणासंन्यास एव कर्त्तव्य इति ।

कर्म सहभावित्वविरोधाच्च प्रत्यगात्म्ब्रह्मविज्ञानस्य । न हि उपात्तकारकफलभेदविज्ञानेन कर्मणा प्रत्यस्तमितसर्वभेददर्शनस्य प्रत्यगात्मब्रह्मविषयस्य सहभावित्वमुपपद्यते । वस्तुप्राधान्ये सत्यपुरुषतन्त्रत्वादुब्रह्मज्ञानस्य । तस्मात् दृष्टादृष्टेभ्यः बाह्यसाध्यसाधनेभ्यो विरक्तस्य प्रत्यगात्मविषया ब्रह्मजिज्ञासा ।

के. उ. प. भा. भूमिका

संतान, कर्म, और उससे संयुक्त ज्ञान को लेकर हम क्या करें, जो क्रमशः मनुष्य, पितृ और देव लोगों (की प्राप्ति) के साधन हैं किंतु आत्म-लोक की प्राप्ति के साधन नहीं हैं ? हमें तो ऐसे तीनों लोक भी इष्ट (काम्य) नहीं हैं जो अनित्य हैं और जो इन साधनों से साध्य हैं । हमें तो ऐसा लोक इष्ट है जो स्वाभाविक, अजन्मा, अजर, अमर और अभय है, जो कर्म से न बढ़ता है, न घटता है, और जो नित्य है । ओर नित्यस्वरूप होने के कारण वह अविद्या की निवृत्ति के अतिरिक्त किसी अन्य साधन से प्राप्त नहीं हो सकता । अतः प्रत्यगात्मा-स्वरूप ब्रह्म के ज्ञान के साथ साथ सभी वासनाओं का परित्याग

(संन्यास) ही हमारा कर्तव्य है ।

इसलिए भी कि प्रत्यगात्मा-स्वरूप ब्रह्म-ज्ञान का कर्म से संबद्ध रहने का विरोध है । जिसकी दृष्टि में सभी भेद-भाव नष्ट हो चुके हैं और जिसका विषय ही प्रत्यगात्मा-स्वरूप ब्रह्म है, उसका भला ऐसे कर्म के साथ सह-अस्तित्व कैसे संभव है जो कारक संबंधों और फल के बीच भेद का बोध देने वाला है ? क्योंकि ब्रह्मज्ञान, जिसके लिए वस्तु (सत्य) ही प्रधान है, किसी पुरुषतंत्र (कर्त्ता) पर निर्भर नहीं कर सकता । इसलिए ब्रह्मजिज्ञासा, जिसका विषय प्रत्यक्-आत्मा है, उसी के लिए है जो दृष्ट और अदृष्ट दोनों ही प्रकार के साध्य और साधनों से, जो कि बाह्य है, विरक्त है ।

(53) ज्ञान की आवश्यकता

कष्टा खलु सुरनरतिर्यक्प्रेतादिषु संसारदुःखबहुलेषु प्राणिनिकायेष जन्म-जरामरणरोगादिसंप्राप्तिरज्ञानात् । अत इहेव चेन्मनुष्योऽधिकृतःसमर्थः सन् यद्यवेदीदात्मानं यथोक्तलक्षणं विदितवान् यथोक्तेन प्रकारेण, अथ तदास्ति सत्यं मनुष्यजन्मन्यस्मिन् अविनाशोऽर्थवत्ता वा सद्भावो वा परमार्थता वा सत्यं विद्यते ।....न चेहिद जीवन् चेदधिकृतः अवेदीत्, न बिदितवान् तदा महती दीर्घानन्ता विनष्टिः विनाशनं जन्मजरामरणादिप्रबन्धाविच्छेदलक्षणा संसारगतिः ।। के. उ. प. भा. 2-5

(आवागमन के) संसार-चक्र में फंस कर अनेक दुख पाने वाले देव, मनुष्य, पशु, प्रेत आदि प्राणियों के समूह को जन्म, जरा, मरण, रोग, आदि के रूप में अज्ञान के कारण जो फल भोगना पड़ता है वह बड़ा ही कष्टकर है । अतः कोई मनुष्य अधिकारी और समर्थ होते हुए यदि यहीं पर पूर्वोक्त लक्षण वाली आत्मा को उक्त प्रकार से जानता है तब तो सत्य है, अर्थात, इसी मनुष्य जन्म में अविनाशिता या अर्थवत्ता (सार्थकता) या सत् का भाव, अथवा परमार्थता या सत्य विद्यमान है । किंतु यहीं जीवित और अधिकारी रहते हुए भी यदि कोई (आत्मा को) नहीं जानता तब तो महान, दीर्घ और अनंत विनाश ही विनाश है जिसका लक्षण है जन्म, जरा, मरण, आदि के अविच्छिन्न रूप वाली संसार-गति ।

(54) आत्मा स्वभाव-सिद्ध है

न हि स्वभावसिद्धं वस्तु सिषाधयिषति साधनैः, स्वभावसिद्धश्च आत्मा । तथा नापिपयिषितः, आत्मत्वे सति नित्याप्तत्वात् । नापि विचिकारयिषितः, आत्मत्वे सति नित्यत्वादविकारित्वादविषयत्वादमूर्तत्वाच्च ।....न च संचिस्कीर्षितः...अनन्यत्वाच्च । अन्येनान्यत् संस्क्रियते । न चात्मनोऽन्यभूता क्रिया अस्ति, न च स्वेनैवात्मना स्वात्मानं संचिस्कीर्षेत् । न च वस्त्वन्तराधानं नित्यप्राप्तिर्वा वस्त्वन्तरस्य नित्या । नित्यत्वं

चेष्टं मोक्षस्य । अतः उत्पन्नविद्यस्य कर्मारंभोऽनुपपन्नः ।।

के. उ. वा. भा. भूमिका

स्वभावसिद्ध वस्तु को कोई साधनों द्वारा सिद्ध करने का यत्न नहीं करता । और आत्म स्वभावसिद्ध ही है । फिर, यह प्राप्त नहीं की जाती, क्योंकि स्वयं आत्मा ही होने से यह नित्य ही प्राप्त है । और यह ऐसी भी नहीं है जिसमें विकार (परिवर्तन) हो सके, क्योंकि यही स्वयं आत्मा न होने से, नित्य, अविकारी, विषयरहित ओर अमूर्त है।...न इसका संस्कार ही हो सकता है...क्योंकि यह अनन्य है । संस्कार अन्य वस्तु के द्वारा अन्य का ही किया जाता है । किंतु, आत्मा से भिन्न कोई क्रिया नहीं है । न ही आत्मा अपने द्वारा अपना ही संस्कार करने का यत्न कर सकती है । ओर एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर आधान अथवा एक के द्वारा दूसरे की प्राप्ति नित्य (शाश्वत) भी नहीं हो सकती । किन्तु मोक्ष की नित्यता ही इष्ट है । अतः जिसमें ज्ञान उत्पन्न हो गया है उसके लिए कर्म का आरंभ संभव नहीं ।

(55) कर्म और ज्ञान में संबंध

कर्मनिष्ठाया ज्ञाननिष्ठाप्राप्तिहेतुत्वेन पुरुषार्थहेतुत्वं, न स्वातन्त्र्येण, ज्ञाननिष्ठा तु कर्मनिष्ठोपायलब्धात्मिका सती स्वातन्त्र्येण पुरुषार्थहेतुः, अन्यानपेक्षा ।

भ. गी. भा. 3-4

कर्म-निष्टा ही ज्ञान-निष्ठा की प्राप्ति की हेतु होकर पुरुषार्थ का हेतु बनती है, स्वतंत्र रूप से नहीं, किंतु ज्ञान-निष्ठा भी कर्म-निष्ठा के मार्ग से उपलब्ध हो जाने पर, स्वतंत्र रूप से पुरुषार्थ की हेतु बन जाती है—किसी अन्य (हेतु) की अपेक्षा किए बिना ।

(56) ज्ञान होने पर कर्म नहीं

न्यायाच्च—उपायभूतानि हि कर्माणि संस्कारद्वारेण ज्ञानस्य । ज्ञानेन तु अमृतत्वप्राप्तिः । ....न हि नद्याः पारगो नावं न मुंचति यथेष्टदेशगमनं । प्रति स्वातन्त्र्ये सति ।

के. उ. वा. भा. भूमिका

तर्क यह है : कर्म तो (चित्त के) संस्कार द्वारा ज्ञान की प्राप्ति के उपाय मात्र हैं । किंतु ज्ञान से अमृतत्व की प्राप्ति होती है ।.....नदी को पार करने वाला, यथेच्छ स्थान को जाने की स्वतंत्रता पा जाने पर, नाव का परित्याग न करे, ऐसा कहां होता है ?

(57) ज्ञानी के लिए कर्म-योग नहीं

आत्मतत्वविदः सम्यग्दर्शनविरुद्धो मिथ्याज्ञानहेतुकः कर्मयोगः स्वप्नेऽपि संभावयितुं न शक्यः।

भ. गी. भा. 5-1

आत्मवेत्ता के लिए कर्म-योग की बात तो स्वप्न में भी संभव नहीं हो सकती, क्योंकि वह सम्यक् दर्शन के विरुद्ध है और मिथ्या ज्ञान का हेतु है ।

7. साधन और साध्य

(58) वेदांत-अध्ययन की पात्रता

नित्यानित्यवस्तुविवेकः, इमामुत्रार्थभोगविरागः, शमदमादिसाधनसंपत्, मुमुक्षुत्वं च । तेषु हि सत्सु प्रागपि धर्मजिज्ञासाया ऊर्ध्वं च शक्यते ब्रह्म जिज्ञासितुं ज्ञातुं च न विपर्यये ।

ब्र. सू. भा. 1-1-1

नित्य और अनित्य वस्तुओं के बीच विवेक, यहां और यहां से परे भी भोगों से विरक्ति, शम (शांति), दम (इंद्रिय-दमन), आदि साधनों की पूर्ति, और मुमुक्षत्व (मुक्ति की कामना)–जब इतना हो जाय, या धर्म की जिज्ञासा के भी पहले, अथवा उसके बाद, ब्रह्म-जिज्ञासा हो सकती है और ब्रह्म को जाना जा सकता है; अन्यथा नहीं ।

(59) आत्महन्ता

आत्महनः । के, ते जनाः ये अविद्वांसः । कथं ते आत्मानं नित्यं हिंसन्ति ? अविद्यादोषेण विद्यमानस्यात्मनः निरस्करणात् । विद्यमानस्यात्मनो यत्कार्यं फलं अजरामरत्वादिसंवेदनलक्षणं तद्धतस्येव तिरोभूतं भवतीति प्राकृता अविद्वांसो जना आत्महन उच्यन्ते । तेन ह्यात्महननदोषेण संसरन्ति ते ।

ई. उ. भा. 3

आत्महन्ता : कोन हैं वे ? ये वे हैं जो अज्ञानी हैं । नित्य-रूप आत्मा का हनन वे कैसे कर पाते हैं ? विद्यमान आत्मा का, अविद्या के दोष से, तिरस्कार करके । जो आत्मा विद्यमान है उसका लक्षण है उसके अजरत्व, अमरत्व आदि का बोध; वह इस प्रकार तिरोहित हो जाता है मानो आत्मा का हनन ही कर दिया गया हो, और इसलिए प्राकृत (असंस्कृत) अज्ञानी लोग आत्महन्ता कहलाते हैं । आत्महनन के इस दोष के कारण ही वे संसार के आवागमन-चक्र में पड़े रहते हैं ।

(60) वैराग्य और ज्ञान

एवं विरक्तस्य प्रत्यगात्मविषयं विज्ञानं श्रोतुं मन्तुं विज्ञातुं च सामर्थ्यमुपपद्यते, नान्यथा । एतस्माच्च प्रत्यगात्मविज्ञानात् संसारबीजमज्ञानं कामकर्मप्रवृत्तिकारणं अशेषतो निवर्तते ।

के. उ. प. भा. भूमिका

जो इस प्रकार विरक्त हो चुका है वही प्रत्यगात्मा विषयक ज्ञान के श्रवण, मनन और समझने की सामर्थ्य को प्राप्त करता है, अन्य किसी प्रकार से नहीं । प्रत्यक्-आत्मा (ब्रह्म) का इस प्रकार का ज्ञान होने पर, संसार (आवागमन) का, और काम तथा कर्म में प्रवृत्ति का, कारण रूप अज्ञान अशेष रूप से निवृत्त हो जाता है ।

(61) लोभ न करो

कस्यस्विद्धनम् ? न कस्यचिद्धनमस्ति यत् गृध्येत । आत्मेवेदं सर्वमितीश्वरभावनया सर्वं त्यक्तम्, अत आत्मन एवेदं सर्वं आत्मेव च सर्वम् । अतो मिथ्याविषयां गृधिं मा कार्षीः।

ई. उ. भा. 1

धन किसका है ? धन क्या किसी का भी है, कि उसका लोभ किया जाय ? (किंतु), 'आत्मा ही यह सब है,' इस रूप में ईश्वर की भावना होने पर सब ही तो त्यक्त है । अतः यह सब आत्मा का ही है, ओर आत्मा ही यह सब है । इसलिए, मिथ्या विषय में लोभ नहीं करना ।

(62) उपासना

उपासनं नाम यथाशास्त्रं उपास्यस्यार्थस्य विषयीकरणेन सामीप्यं उपगम्य तेलधारावत् समानप्रत्ययप्रवाहेण दीर्घकालं यत् आसनं तत् उपासनमाचक्षते । भ. गी. भा. 12-3

उपासना का अर्थ है उपास्य अर्थ (विषय) का सामीप्य पाकर, ओर दीर्घकाल तक वहीं रहते हुए, तेल की धारा की भांति समविचारों की धारा को निरंतर प्रवाहित करते रहना ।

(63) भावना की विधि

विविक्तदेश आसीनो विरागो विजितेन्द्रियः ।
भावयेदेकमात्मानं तमनन्तमनन्यधीः ।। आ. बो. 38

निर्जन स्थान में बैठ कर, वेराग्यपूर्वक इंद्रियों पर विजय पाकर, अन्य किसी ओर ध्यान ले जाए विना, उस अनंत, एक, आत्मा की भावना करे ।

(64) आत्मानुभूति : उसका स्वरूप

रूपंवर्णादिकं सर्वं विहाय परमार्थवित् ।
परिपूर्णचिदानन्दस्वरूपेणावतिष्टते ।। आ. बो. 40

रूप, वर्ण, आदि सभी का परित्याग कर, जो परमार्थवित्ता हो गया है वह परिपूर्ण चित्-आनन्द स्वरूप में ही रहता है ।

(65) तुरीय ही सत्य

आत्मत्वावगमे तुरीयस्य अनात्मतृष्णाव्यावृत्तिहेतुत्वात्, शुक्तिकावगम इव रजततृष्णायाः । न

हि तुरीयस्यात्मत्वावगमे सति अविद्यातृष्णादिदोषाणां संभवोऽस्ति । न च तुरीयस्यात्मत्वानवगमे कारणमस्ति । सर्वोपनिषदां तादर्थ्येनोपक्षयात् । मा. उ, भा. 1-7

जब तुरीय की आत्मा के रूप में अनुभूति हो जाती है तब अनात्म (जो आत्मा से भिन्न है) की तृष्णा की निवृत्ति का हेतु प्राप्त होता है, जिस प्रकार शुक्ति (सीपी) का बोध होते ही रजत (चांदी) की तृष्णा की निवृत्ति हो जाती है । तुरीय की आत्मा के रूप में अनुभूति हो जाने पर अविद्या, तृष्णा आदि दोषों की संभावना ही नहीं रहती । और तुरीय की आत्मा के रूप में अनुभूति न होने के लिए कोई कारण नहीं है, क्योंकि सभी उपनिषदों का यही एक तात्पर्य है ।

(66) ब्रह्मानुभूति

निगृहीतं चित्तं यदा सुषुप्ते न लीयते, न च पुनर्विषयेषु विक्षिप्यते, अनिंगनं अचलं निवातप्रदीपकल्पं, अनाभासं न केनचित् कल्पितेन विषयभावेनावभासते इति, यदां एवं लक्षणं चित्तं, तदा निष्पन्नं ब्रह्म, ब्रह्मस्वरूपेण निष्पन्नं चित्तं भवतीत्यर्थः ।

मा. का. भा. 3-46

निगृहीत चित्त जब सुषुप्ति (सोने की) अवस्था में लय को नहीं प्राप्त होता और न फिर विषयों में ही विक्षिप्त होता है, जब वह वायुरहित स्थान में रखे प्रदीप की लौ की तरह अचल और निष्कम्प हो जाता है, जब वह किसी भी कल्पित विषय के भाव में भासित न हो आभास-रहित हो जाता है—जब चित्त का यह लक्षण होता है तब ब्रह्म-प्राप्ति होती है, अर्थात चित्त तब ब्रह्मस्वरूप में समा जाता है ।

(67) ज्ञान से उत्पन्न शक्ति

अविद्याजं हि वीर्यं विनाशि । विद्यया अविद्याया बाध्यत्वात् । न तु विद्याया बाधकोऽस्तीति विद्याजममृतं वीर्यम् । अतो विद्या अमृतत्वे निमित्तमात्रं भवति । "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः" इति चाथर्वणे । लोकेऽपि विद्याजमेव बलमभिभवति न शरीरादिसामर्थ्यम् यथा हस्त्यादेः ।।

के. उ. वा. भा. 2-4

अविद्या से उत्पन्न शक्ति नाशवान है, क्योंकि अविद्या विद्या से बाधित होती है । किंतु विद्या (ज्ञान) को बाधित करने वाला कुछ भी नहीं है । इस प्रकार, विद्या से उत्पन्न शक्ति अमर है । अतः विद्या ही अमरत्व का निमित्त बनती है । अथर्वण श्रुति (मुंडक) में कहा गया है—"यह आत्मा बलहीन को नहीं प्राप्त हो सकती ।"

लौकिक जगत में भी विद्या से उत्पन्न बल शरीर आदि की सामर्थ्य को पराभूत कर देता है, जैसा कि हाथी आदि के प्रसंग में देखा जा सकता है (जो मनुष्य द्वारा नियंत्रित किए जाते हैं) ।

(68) अनुबोध-मुक्ति

शास्त्राचार्योपदेशमन्वबोध आत्मसत्यानुबोधः । तेन संकल्पाभावान्न संकल्पयते दाह्याभावे ज्वलनमिवाग्नेः यदा यस्मिन् काले, तदा तस्मिन् काले अमनस्तां अमनोभावं याति ।

मा. का. भा. 3-32

शास्त्र और आचार्य के उपदेश के फलस्वरूप आत्म-सत्य का अनुबोध होता है । उसके कारण (चित्त) संकल्प-वस्तु का अभाव हो जाने से संकल्प करना छोड़ देता है, अर्थात कल्पनाएं नहीं करता, ठीक जिस प्रकार दाहक वस्तु के अभाव में अग्नि नहीं जलती । जब ऐसा हो जाता है तब उस समय मन का अमनोभाव हो जाता है, अर्थात मन नहीं रह जाता ।

(69) ज्ञान-प्राप्ति

अलब्धावरणाः अलब्धमप्राप्तमावरणम् अविद्यादिबन्धनं येषां ते धर्माः अलब्धावरणाः बन्धनरहिता इत्यर्थः । प्रकृतिनिर्मलाः स्वभावशुद्धाः आदौ बुद्धाः तथा मुक्ताः, यस्मान् नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावाः । यद्येवं कथं तर्हि बुध्यन्त इत्युच्यते—नायकाः स्वामिनः समर्थाः बोद्धुं बोधशक्तिमत्स्वभावा इत्यर्थः । यथा नित्यप्रकाशस्वरूपोऽपि सन् संविता प्रकाशत इत्युच्यते, यथा वा नित्यनिवृत्तगतयोऽपि नित्यमेव शैलाः तिष्ठन्तीत्युच्यते, तद्वत् ।

मा. का. भा. 4-98

अविद्या आदि के बंधन का आवरण कभी भी आत्माओं पर नहीं छा सकता; वे सदा ही बंधन-रहित हैं । वे प्रकृति से ही निर्मल हैं, आदिकाल से ही बुद्ध और मुक्त हैं, अतः वे स्वभाव से ही शुद्ध, बुद्ध और मुक्त सत्य-स्वरूप हैं । "यदि ऐसा है, तो जानने वाले बड़ों द्वारा यह क्यों कहा जाता है कि उन्हें बोधित (जाग्रत) किया जाता है ?" इसके उत्तर में कहा गया : जिस प्रकार सूर्य को, उसके नित्य-प्रकाश स्वरूप के रहते भी, प्रकाशित होता कहा जाता है, और जिस प्रकार शैलों के संबंध में, उनके सदा गतिहीन रहने पर भी, यही कहा जाता है कि वे खड़े हैं, उसी प्रकार यहां भी है ।

(70) सम्यक् दर्शन

तदेतत्सम्यग्दर्शनं स्तूयते—विगतरागभयक्रोधादिसर्वदोषैः सर्वदा मुनिभिः मननशीलैः विवेकिभिः वेदपारगैः अवगतवेदान्तार्थतत्त्वैः ज्ञानिभिः निर्विकल्पः सर्वविकल्पशून्यः अयमात्मा दृष्ट उपलब्धो वेदान्तार्थतत्परैः......विगतदोषैरेव पण्डितैर्वेदान्तार्थतत्परैः संन्यासिभिः अयमात्मा द्रष्टुं शक्यः, नान्यैः रागादिकलुषितचेतोभिः स्वपक्षपातिदर्शनैः तार्किकादिभिः । मा. का. भा. 2-35

सम्यक् दर्शन की यों प्रशंसा की जा रही है—उन मुनियों द्वारा जो सर्वदा ही राग, भय, क्रोध आदि सभी दोषों से मुक्त रहते हैं, जो मननशील हैं, जो विवेकी हैं, जो वेदों के

पारंगत हैं, अर्थात जिन्होंने वेदांत के अर्थ और तत्व को जान लिया है और जो ज्ञानी हैं, उन्हीं के द्वारा यह निर्विकल्प अर्थात सभी विकल्पों से शून्य आत्मा देखी गई है ...उन संन्यासियों द्वारा ही, जो दोष रहित हैं, ओर वेदांत की अर्थवत्ता में जिनकी तत्परता (दृढ़ता) है, इस आत्मा का दर्शन किया जा सकता है, दूसरों के द्वारा नहीं जिनके चित्त राग, आदि से कलुषित हैं और अपने ही पक्ष की बात देख सकने वाले कोरे तार्किक हैं ।

(71) मोक्ष की प्राप्ति

विदुषः त्यक्तेषणस्य स्थितप्रज्ञस्य यतेरेव मोक्षप्राप्तिः, न तु असंन्यासिनः कामाकामिनः ।

भ. गी. भा. 2-70

मोक्ष उस विद्वान के लिए ही है जिसकी इच्छाओं का त्याग हो गया है, जो स्थितप्रज्ञ है ओर जो उसके लिए यत्न करता है; कामों की कामना करने वाले असंन्यासी के लिए वह नहीं है ।

(72) महाज्ञानी लोग

अजे साम्ये परमार्थतत्त्वे एवमेवेति ये केचित् स्त्रयादयोऽपि सुनिश्चिता भविष्यन्ति चेत्, त एव हि लोके महाज्ञानाः निरतिशयतत्त्वविषयज्ञाना इत्यर्थः । तच्च तेषां वर्त्म तेषां विदितं परमार्थतत्त्वं सामान्यबुद्धिः अन्यो लोकः न गाहते, नावतरति न विषयीकरोतीत्यर्थः ।

मा. का. भा. 4-95

उस अज और साम्य रूप परमार्थ तत्व के संबंध में जिन लोगों को भी यह निश्चय हो जाय—और इनमें स्त्रियां भी शामिल हैं—कि यह ऐसा ही है, वे लोग ही निरतिशय (जिससे ऊंचा ओर कुछ नहीं है) तत्व विषयक ज्ञान वाले महाज्ञानी हैं । उनका मार्ग और उनके द्वारा विदित पारमार्थिक तत्व सामान्य बुद्धि वाले दूसरे लोगों द्वारा नहीं समझा जा सकता ।

(73) फिर द्वैत भाव नहीं

न हि ब्रह्मैकत्वविज्ञानेनोन्मथितस्य द्वैतविज्ञानस्य पुनः संभवोऽस्ति ।

ब्र. सू. भा. 1-1-4

ब्रह्म के एकत्व का जिसे ज्ञान हो गया है उसके अंदर फिर से द्वैत-बोध की उत्पत्ति संभव नहीं है ।

(74) पूर्ण संतोष

अलंकारो ह्यस्माकं यद्ब्रह्मात्मावगते सत्यां सर्वकर्तव्यताहानिः कृतकृत्यता च ।

ब्र. सू. भा. 1-1-4

यह हमारे लिए अलंकार स्वरूप ही है कि ब्रह्म-ज्ञान हो जाने पर सभी प्रकार की कर्तव्यता का लोप हो जाता है, और कृतकृत्यता (सब कुछ कर लिया का संतोष) आ जाती है ।

(75) यहीं आत्मज्ञान

इह मनुष्यजन्मनि सति अवश्यमात्मा वेदितव्य इत्येतद्विधीयते । कथम् ? इह चेदवेदीद्विदितान्, अथ सत्यं परमार्थतत्वमस्ति अवाप्तम् । तस्य जन्म सफलमित्यभिप्रायः । न चेदिहावेदीन्न विदितवान् वृथैव जन्म । अपि च महती विनष्टिः महान् विनाशो जन्ममरणप्रबन्धा विच्छेदप्राप्तिलक्षणः स्याद्यतः तस्मादवश्यं तद्विच्छेदाय ज्ञेय आत्मा ।

के. उ. वा. भा. 2-5

यहीं, इस मनुष्य जन्म में, आत्मा का ज्ञान होना ही चहिए । यही विधान है । कैसे ? जो जानने का है वह यदि यहीं जान लिया गया तो पारमार्थिक तत्व रूप सत्य प्राप्त हो गया, अर्थात उसका जन्म सफल हो गया । यदि यहां उस आत्मा को नहीं जाना गया तो जीवन वृथा ही गया । तब तो महान विनाश ही होगा ओर जन्म-मरण के अविच्छिन्न चक्र में वह फंसा ही रहेगा । अतः उसे भंग करने के लिए आत्मा को जानना ही है ।

(76) सतत-प्राप्त की प्राप्ति

आत्मा तु सततं प्राप्तोऽप्यप्राप्तवदविद्यया ।
तन्नाशे प्राप्तवद्भाति स्वकण्टाभरण यथा ।। आ. बो. 44

सतत (सर्वदा ही) प्राप्त आत्मा भी अविद्या के कारण अप्राप्त—जेसी रह जाती है; उसका (अविद्या का) नाश हो जाने पर वह प्राप्त हुई जेसी भास उठती है, जिस प्रकार अपने ही कंट का आभरण ।

(77) जीवन्मुक्ति

जीवन्मुक्तिस्तु तद्विद्वान्पूर्वोपाधिगणांस्त्यजेत् ।
स सच्चिदादिधर्मत्व भेजे भ्रमरकीटवत् ।। आ. बो. 49

जीवन्मुक्ति वह है जिसमें विद्वान मनुष्य पूर्व उपाधियों और उनके गुणों का त्याग कर देता है और सत्, चित्, आदि के धर्म को प्राप्त होता है, जिस प्रकार भ्रमर-कीट ।

(78) विद्वान अशरीरी है

तस्मात् मिथ्याप्रत्ययनिमित्तत्वात् सशरीरत्वस्य, सिद्धं जीवतोऽपि विदुषः अशरीरत्वम् ।... न अवगतब्रह्मात्मभावस्य यथापूर्वं संसारित्वम् । ब्र. सू. भा. 1-1-4

मिथ्या प्रत्यय (भ्रम) से ही देहयुक्त का भान होता है । इसलिए यह सिद्ध है कि विद्वान जीवित रहते भी अशरीरी है ।....जिसे ब्रह्मात्मभाव का ज्ञान हो गया है वह पहले की तरह सांसारिक (आवागमन के) चक्र में नहीं पड़ता ।

(79) ब्रह्म भाव

ब्रह्मभावश्च मोक्षाः....अनाधेयातिशयस्वरूपत्वान्मोक्षस्य....नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वरूपत्वात् मोक्षस्य । ब्र. सू. भा. 1-1-4

ब्रह्म-भाव ही मोक्ष है ।...मोक्ष ब्रह्म-स्वरूप ही है जिसमें कुछ भी वढ़ाया नहीं जा सकता ।...मोक्ष ब्रह्म-स्वरूप ही है जो नित्य, शुद्ध, वुद्ध, मुक्त हे ।

(80) ज्ञान का फल

तस्यैतत्फलमाह—अपहत्य पाप्मानं अपक्षय्य धर्माधर्मावित्यर्थः अनन्ते अपारे अविद्यमानान्ते स्वर्गे लोके सुखप्राये निर्दुःखात्मनि परे ब्रह्मणि ज्येये महति सर्वमहत्तरे प्रतितिष्ठति, सर्ववेदांतवेद्यं ब्रह्म आत्मत्वेनावगम्य तदेव ब्रह्म प्रतिपद्यत इत्यर्थः । के. उ. वा. भा. 4-9

उसका (ज्ञान का) फल यह है : पापों का नाश करके, अर्थात धर्म-अधर्म का क्षय करके, उस परमब्रह्म में प्रतिष्ठित हुआ जाता है जो अनंत, अपार, अविद्यमानांत (जिसका अंत विद्यमान नहीं है) स्वर्ग लोक की भांति है, अर्थात जहां दुखहीन सुख है, और जिसकी सत्ता सभी महानों से भी महान है । सर्व वेदांत शास्त्रों द्वारा वेद्य उस ब्रह्म को आत्म-स्वरूप जानने पर भी उसी ब्रह्मत्व की प्राप्ति हो जाती है—यह भाव है ।

शिवम् ऑफसैट प्रेस, ए-12/1, नरायणा इंडिस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित

Strategy

ICDS is designed both as a preventive and developmental effort. It aims to reach its beneficiaries through active participation of the entire community.

Activities

- Non-formal pre-school education

- Immunisation

- Health checkup

- Supplementary nutrition

- Medical referral services

- Nutritional and health education for women

Integrated Child Development Services
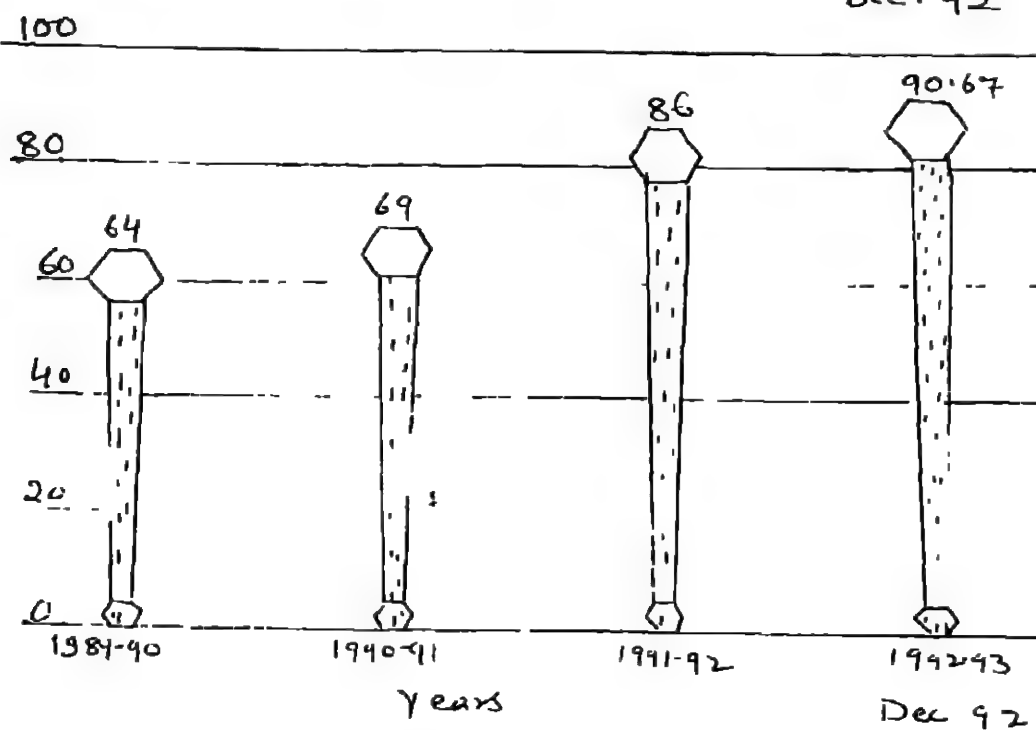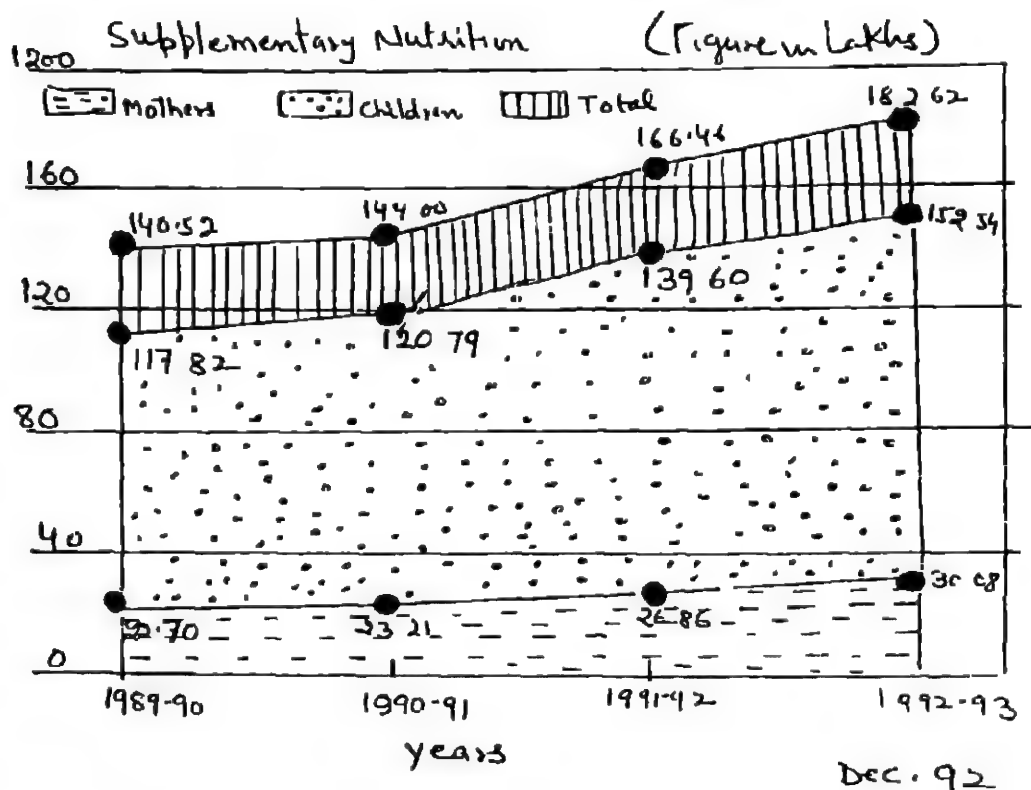
MODULE 102

Theme 102.5. Universalisation of Elementary Education (UEE)

Expected Outcomes

The Participants will

- understand the concept of Universalisa of Elementary Education (UEE) and its components

- analyse present status of UEE programmes in their respective states and at national level

- discuss reasons of slow progress of elementary education among girls and how to improve their participation at this level

Content Points

- Education as a fundamental right

- Constitutional provisions of free and compulsory education for all children upto the age of 0-14 years as stated in Article 45 of the Constitution of India

- Starting of Universalisation of Elementary Education (UEE) programme at national level to achieve the goal

- Components of UEE

  - Universal provision
  - Universal enrolment
  - Universal retention
  - Universal attainment

- Present status of the programme

- The progress differs from state to state and district to district and among different population groups of universalization of elementary education in most of the states continues to be elusive

- The progress is better in urban areas as compared to rural areas

- The progress is very slow in some states (especially in ten educationally backward states)

- Progress of boys at elementary stage is muchbetter as compared to girls

- The goal of universal access of education at primary level is to be achieved (see transparencies) and there are more than 30,000 habitations (with a population of 300 and above) which do not have a primary school within one kilometre

- At primary stage boys gross enrolment ratio is nearly 100% but in case of girls it is 88% for urban girls and 74% for rural girls (1991-92)

- At upper primary stage also girls' enrolment is much less than that of boys

- At primary and upper primary stage the dropout rate is very high for girls Among the girls it is higher for rural girls and highest for SC/ST girls

<u>Slow Progress of Elementary Education</u>

- Lack of finances, low priority to primary education in the first seven five year plans But in the eighth five year plan, the primary education has once again received list of attention

- Population growth outplays growth of educational institutions at elementary level

- Rural urban divide in terms of basic infrastructure and the extreme poverty Main reasons for slow progress of Elementary Educaation among girls (based on various studies conducted by NCERT and other agencies)

- Reasons vary from state to state and region to region

- Lack of school facilities within the walking distance especially at upper primary stage

- Lack of separate schools for girls

- Lack of separate toilets for girls

- Lack of women teachers in rural areas

- Girls are not going to school because they have to do household work, look after siblings and help their mothers

- Education is not cost free The parents have to bear the opportunity cost

- Education is not need based, curriculum is unattractive, textbooks promote gender bias and stereotypes

- Poverty

- Lack of parental motivation for girls education

- Parental illiteracy, especially of mothers

<u>Strategies to improve elementary education among girls</u>

- Make education totally cost free

- Bring school closer to home

- Provide more upper primary and secondary schoolsin rural and remote areas

- Create a demand for female education

- Decentralise educational planning Involve parents and community in the process of education right from very beginning e g DPEP

- Provide separate schools for girls

- Recruit local teachers with relaxed qualifications Post women teachers near their home town

- Strengthen pre-school education and provide creches in and around primary schools

- Strengthen non-formal system of education and open school system at elementary level

- Adopt holistic approach towards UEE Implement projects and programmes of UEE in a mission mode with the involvement of local community, leaders and NGOs as in the case of Shiksha Karmi Yojna and Lok Jumbish Project of Rajasthan

Post Jomtien Initiatives in Education for All

	Funding Agency
- The Andhra Pradesh Primary Education Project (APPEP)	- Overseas Development Administration (ODA)
- The Bihar Education Project (BEP)	- The World Bank
- Lok Jumbish	- Swedish International Development Authority (SIDA)
- The Uttar Pradesh Basic Education Project	- The World Bank
- District Primary Education Programme (DPEP)	- The World Bank and European Community
- Girl Child Education Project	- The USAID

Methodology

i After introducing the topic and giving the component of UEE, a film entitled as "Subah Ho Rahi Hai" will be shown to the participants

ii The participants will be told to analyse the status of elementary education (with respect to access, enrolment and retention) of boys and girls in their respective states and prepare a brief report

iii Transparencies showing status of UEE at national level will be shown to the participants

Transparency 102 4 (a) 1

Literacy Rates

Year	Person	Male	Females
1951	18 33	27 16	8 86
1961	28 31	40 40	5 34
1971	34 45	45 95	21 97
1981	43 67	56 50	29 85
1991	52 19	64 20	39 19

Source Census of India 1991,
Final Population Totals, 1991

Number of Literates and Illiterates (1991)

	Persons	Males	Females
Literates	352,082	224,288	127,794
Illiterates	324 030	126 694	197 336

Transparency 102 4 (a).2

Percentage Habitations Covered by Schools in India (1993)

Habitations	No	%
Total Numbers of Habitations	1059191	
Habitations Covered by Primary School	532962	50 31
Upper Primary School	145824	13 76

Source Sixth All India Educational Survey, NCERT, Provisional Statistics, 1995

Transparency 102 4 (a) 3

Percentage Villages Covered by Schools in India (1993)

Schools	Villages Covered	
	No	%
Primary	511849	87 16
Upper Primary	127863	21 77
Total Numbers of Habited villages as per 1991 Census	587247	

Source Sixth All India Educational Survey NCERT Provisional Statistics 1995

LITERACY RATES IN INDIA · 1991

No	States/UTs	General			S C			S T		
		Total	Male	Female	Total	Male	Female	Total	Male	Female
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	Andhra Pradesh	44 09	55 13	32 72	31 59	41 88	20 92	17 16	25 25	8 68
2	Arunachal Pradesh	41 59	51 42	29 69	57 27	66 25	41 42	34 45	44 01	24 94
3	Assam	52 89	61 87	43 03	53 94	63 88	42 99	49 16	58 93	38 98
4	Bihar	38 48	52 49	22 89	19 49	30 64	7 07	26 78	38 4	14 75
5	Goa	75 51	83 64	67 09	58 73	69 55	47 51	42 91	54 43	29 01
6	Gujarat	61 29	73 13	48 64	61 07	75 47	45 54	36 45	48 25	24 2
7	Haryana	55 85	69 1	40 47	39 22	52 06	24 15	-	-	-
8	Himachal Pradesh	63 86	75 36	52 17	53 2	64 98	41 02	47 09	62 74	31 18
9	Jammu&Kashmir	N A	N A	N A	N A	N A	N A	N A	N A	N A
10	Karnataka	56 04	67 26	44 34	38 06	49 69	25 95	36 01	47 95	23 57
11	Kerala	89 81	93 62	86 17	79 66	85 22	74 31	57 22	63 38	51 07
12	Madhya Pradesh	44 2	58 42	28 85	35 08	50 51	18 11	21 54	32 16	10 73
13	Maharashtra	64 87	76 56	52 32	56 46	70 45	41 59	36 79	49 09	24 03
14	Manipur	59 89	71 63	47 6	56 44	65 28	47 41	53 63	62 39	44 48
15	Meghalaya	49 1	53 12	44 85	44 27	54 56	31 19	46 71	49 78	43 63
16	Mizoram	82 27	85 61	78 6	77 92	77 54	81 25	82 71	86 66	78 7
17	Nagaland	61 65	67 62	54 75	-	-	-	60 59	66 27	54 51
18	Orissa	49 09	63 09	34 68	36 78	52 42	20 74	22 31	34 44	10 21
19	Punjab	58 51	65 66	50 41	41 09	49 82	31 03	-	-	
20	Rajasthan	38 55	54 99	20 44	26 29	42 38	8 31	19 44	33 29	4 42
21	Sikkim	56 94	65 74	46 69	51 03	58 69	42 77	59 01	66 8	50 37
22	Tamilnadu	62 66	73 75	51 33	46 74	58 36	34 89	27 89	35 25	20 23
23	Tripura	60 44	70 58	49 65	56 66	67 25	45 45	40 37	52 88	27 34
24	Uttar Pradesh	41 6	55 73	25 31	26 85	40 8	10 69	35 7	49 95	19 86
25	West Bengal	57 7	67 81	46 56	42 21	54 55	28 87	27 78	40 07	14 98
26	A&N Islands	73 02	78 99	65 46	-	-	-	56 62	64 16	48 74
27	Chandigarh	77 81	82 04	72 34	55 44	64 74	43 54		-	-
28	D&N Haveli	40 71	53 56	26 98	77 64	88 03	66 61	28 21	40 75	15 94
29	Daman & Diu	71 2	82 66	59 4	79 18	91 85	67 62	52 91	63 58	41 49
30	Delhi	75 29	82 01	66 99	57 6	68 77	43 82	-	-	-
31	Lakesdweep	81 78	90 18	72 89	-	-	-	80 58	89 5	71 72
32	Pondicherry	74 74	83 68	65 63	56 26	66 1	46 28	-	-	-
	India	52 21	64 13	39 29	37 41	49 91	23 76	29 6	40 65	18 19

Source Census of India 1991

TRANSPARENCY 102.7 (a)·5·

PERCENTAGE OF GIRLS ENROLMENT TO TOTAL BY SCHOOL LEVELS SINCE 1950-51 IN INDIA

Year	Primary			Upper Primary			High\Hr Sec		
	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls
1950-51	19 2	5 4	28%	3 1	0 5	16%	1 5	0 2	13%
1955-56	24 6	7 5	30%	4 8	1	21%	2 6	0 4	15%
1960-61	35	11 4	33%	6 7	1 6	24%	3 4	0 7	21%
1965-66	50 5	18 3	36%	10 5	2 8	27%	5 7	1 3	23%
1970-71	57	21 3	37%	13 3	3 9	29%	7 6	1 9	25%
1975-76	65 6	25	38%	16	5	31%	8 9	2 4	27%
1980-81	73 8	28 5	39%	20 7	6 8	33%	11	3 4	31%
1985-86	87 4	35 2	40%	27 3	9 6	35%	16 5	5	30%
1990 91	97 4	40 4	41%	34	12 5	37%	19 1	6 3	33%
1991-92	100 9	42 3	42%	35 6	13 6	38%	20 4	6 9	34%
1992-93	99 6	41 7	42%	34 1	12 9	38%	20 5	6 9	34%
1993-94*	108 2	46 4	43%	39 2	15 7	40%	23 7	8	34%
1994-95*	109 1	46 6	43%	40 3	15 8	39%	24 4	8 4	34%
1995-96*	109 8	47 4	43%	41	16	39%	24 9	8 8	35%

*Provisional

Percentage Girls Enrolment to Total Enrolment
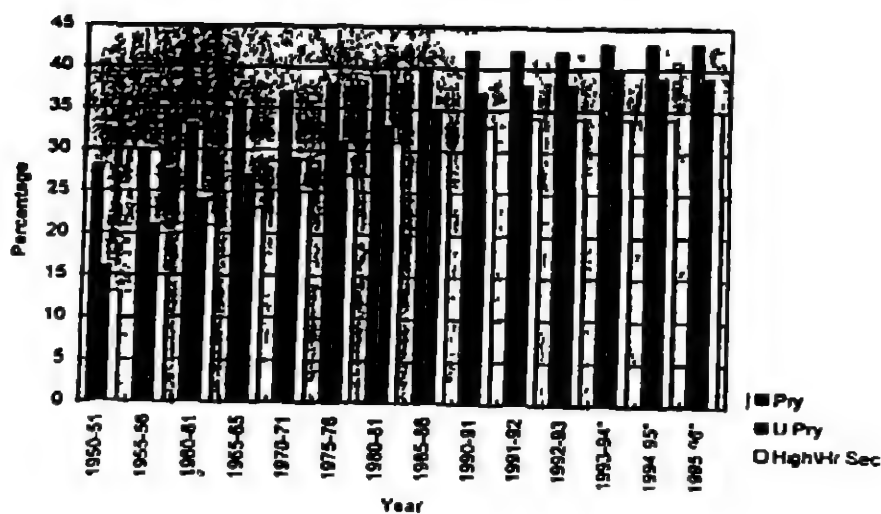
ENROLMENTS BY STAGE OF EDUCATION, 1995-96

	States/UTs	Primary			Middle			Sec./Hr Se c			Hr Education		
		Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)
1	Andhra Pradesh	7640402	3534964	46 27	2235397	920098	41 6	1698906	625116	36 8	354144	124215	35 07
2	Arunachal Pradesh	141904	63122	44 48	38189	16215	42 46	22363	8188	36 61	3703	862	23 28
3	Assam	3816603	1791822	46 95	1304504	530223	40 65	784152	323619	41 27	176945	59803	33 8
4	Bihar	9086360	3211216	35 34	2373544	708337	29 84	1040589	262815	25 26	533940	100487	18 82
5	Goa	127009	60927	47 97	77036	35666	46 3	64849	31096	47 95	16034	8895	55 48
6	Gujarat	6198730	2627671	42 39	2121042	881597	41 56	1356930	563180	41 5	397022	173857	43 79
7	Haryana	1913842	894735	46 75	802480	333565	41 57	389832	146140	37 49	109118	46667	42 77
8	Himachal Pradesh	728870	341250	46 82	400410	175630	43 86	228445	86580	37 9	53480	19310	36 11
9	Jammu&Kashmir	823253	331173	40 23	338815	126279	37 27	188980	64601	34 18	44087	16547	37 53
10	Karanataka	6508481	3058299	46.99	2180683	973798	44 66	1330312	493674	37 11	421071	139052	33 02
11	Kerala	2846728	1385666	48 68	1850431	897848	48 52	1284517	665593	51 82	165438	97932	59 2
12	Madhya Pradesh	8969761	3783534	42 18	3418357	1039703	30 41	2135149	617057	28 9	258120	75468	29 24
13	Maharashtra	11545898	5461111	47 3	4575157	2007246	43 87	3153093	1235655	39 19	963633	356856	37 04
14	Manipur	276000	129730	47 1	109880	50890	46 31	82924	37730	45 5	21893	9584	43 78
15	Meghalaya	295279	146913	49 75	76459	35636	46 61	41055	19281	46 96	11617	5638	48 53
16	Mizoram	117081	55440	47 35	41687	20330	48 77	26587	12886	48 47	5714	2358	41 27
17	Nagaland	221072	105871	47 89	56286	27051	48.06	29361	13235	45 08	5576	2165	38 83
18	Orissa	3887000	1608000	41 37	1278000	460000	35 99	1245360	397559	31 92	133562	33823	25 32
19	Punjab	2081558	984212	47 28	952953	422985	44 39	705257	307071	43 54	157126	82985	52 81
20	Rajasthan	6232000	2183000	35 03	1972000	532000	26 98	1058000	206000	19 47	135293	41436	30 63
21	Sikkim	82561	40146	48 63	21309	10482	49 19	11626	5671	48 78	1445	573	39 65
22	Tamil Nadu	8195672	3806531	46 45	3782429	1680399	44 43	2062273	842354	40 85	354745	153194	43 18
23	Tripura	426910	194740	45 62	124229	55367	44 57	81072	33017	40 73	13144	4797	36 5
24	Uttar Pradesh	16264697	6200706	38 12	5628688	1687208	29 98	3497456	839244	24	704259	223495	31 74
25	West Bengal	10117000	4815000	47 59	4603000	2122000	46 1	1881226	727100	38 65	330994	134837	40 74
	Union Territories												
26	A & N Islands	43035	20572	47 8	22047	10427	47 29	13828	6459	46 71	2014	901	44 73
27	Chandigarh	42476	19918	46 89	23701	11140	47	20354	11312	55 58	11554	8060	69 75
28	D & N Haveli	21995	9042	41 11	5524	2085	37 74	2999	1195	39 85	0	0	
29	Daman and Diu	13903	6648	47 82	6659	3051	45 82	4460	1902	42 65	671	259	38 59
30	Delhi	957092	447845	46 79	525413	233063	44 36	403456	175406	43 48	137410	58068	42 25
31	Lakshadweep	8773	4010	45 71	3673	1544	42 04	1828	745	40 75	0	0	
32	Pondicherry	102347	49726	48 59	64154	31019	48 35	41353	19872	48 05	9246	4468	48 32
	India	109734292	47373540	43 17	41014136	16042890	39 12	24888572	8781353	35 28	5532998	1986632	35 90

ENROLMENTS BY STAGE OF EDUCATION,1995-96 (SCHEDULED CASTES)

Sl No	States/UTs	Primary			Middle			Sec./Hr Sec			Hr Education		
	States	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)
1	Andhra Pradesh	1573188	711388	45.22	368181	139539	37.90	506022	149671	29.58	38174	12211	31.99
2	Arunchal Pradesh	131	55	41.98	34	13	38.24	15	6	40.00	49	11	22.45
3	Assam	448816	210617	46.92	177221	79303	44.75	106857	46087	43.13	16020	5377	33.56
4	Bihar	1365992	431483	31.59	259682	65584	25.25	96938	18964	19.56	18896	1847	9.77
5	Goa	3203	1518	47.39	1193	498	41.74	574	231	40.24	71	33	46.48
6	Gujarat	617748	273060	44.20	206315	77972	37.79	127220	44450	34.94	33779	11478	33.98
7	Haryana	458008	212953	46.70	136626	53644	39.26	46433	14030	30.22	7145	1296	18.14
8	Himachal Pradesh	186870	85540	45.78	74340	30080	40.46	35817	12078	33.72	5448	1602	29.41
9	Jammu&Kashmir	76297	31978	41.91	32706	13368	40.87	12883	3895	30.23	1375	414	30.11
10	Karanataka	1143514	514718	46.01	316729	126423	39.92	192626	60084	31.21	38410	9166	23.86
11	Kerala	309023	148962	48.20	208922	101501	48.58	141589	75192	53.11	15473	9147	59.12
12	Madhya Pradesh	1400260	560606	40.04	418845	120532	28.92	246496	57833	23.46	21397	3354	15.68
13	Maharashtra	1765180	836835	47.41	612425	255013	41.64	407558	146075	35.84	108022	32884	30.44
14	Manipur	5940	2867	48.27	1950	920	47.18	2669	1428	53.50	1564	791	50.58
15	Meghalaya	5909	2944	49.82	1546	721	46.64	1233	478	38.77	343	120	34.99
16	Mizoram	0	0		0	0		0	0		0	0	
17	Nagaland	0	0		0	0		0	0		0	0	
18	Orissa	737000	287000	38.94	191000	73000	38.22	108903	30051	27.59	9284	1662	17.90
19	Punjab	808673	378761	46.84	266814	113255	42.48	132438	52364	39.54	15785	7053	44.68
20	Rajasthan	907000	245000	27.01	307000	62000	20.20	141000	17000	12.06	14574	1158	7.95
21	Sikkim	4770	2280	47.80	1128	518	45.92	596	273	45.81	49	28	57.14
22	Tamil Nadu	1632384	738824	45.26	625353	262528	41.98	297217	104232	35.07	44836	16599	36.94
23	Tripura	76215	34160	44.82	19699	9804	49.77	11926	4505	37.77	1897	523	27.57
24	Uttar Pradesh	2580997	765518	29.66	776910	161778	20.82	479011	70630	14.74	69178	4917	7.11
25	West Bengal	2188846	1012271	46.24	734388	352211	47.96	178991	53875	30.10	25117	7753	30.87
	Union Territories												
26	A & N Islands	0	0		0	0		0	0		0	0	
27	Chandigarh	13620	6412	47.08	5936	2656	44.74	2566	1233	48.05	308	154	50.00
28	D & N Haveli	398	174	43.72	192	93	48.44	176	65	36.93	0	0	
29	Daman and Diu	602	308	51.16	305	137	44.92	278	119	42.81	35	8	22.86
30	Delhi	208279	95154	45.69	96681	42841	44.31	62566	27354	43.72	8298	3012	36.30
31	Lakshadweep	0	0		0	0		0	0			0	
32	Pondicherry	20384	10211	50.09	13895	6969	50.15	6414	3021	47.10	1245	492	39.52
	India	18537423	7601593	41.01	5853823	2152901	36.78	3346909	995226	29.74	496872	[illegible]089	26.[illegible]

Sorce Annual Report MHRD Department of Education 1996 97

ENROLMENTS BY STAGE OF EDUCATION, 1995-96 (SCHEDULED TRIBES)

Sl No	States/UTs	Primary			Middle			Sec /Hr Sec			Hr Education		
	States	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls	Total	Girls	%Girls
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)	(12)	(13)	(14)
1	Andhra Pradesh	587034	235022	40.04	92252	26489	28.71	83682	20755	24.80	7076	1512	21.37
2	Arunchal Pradesh	104638	46968	44.89	24473	10324	42.19	14249	4733	33.22	2838	627	22.09
3	Assam	698214	316382	45.31	221104	95388	43.14	142281	57693	40.55	23024	7919	34.39
4	Bihar	778225	302363	38.85	159080	55685	35.00	65136	21980	33.74	11349	3395	29.91
5	Goa	161	70	43.48	129	55	42.64	61	19	31.15	2	0	0.00
6	Gujarat	945959	393530	41.60	233226	86198	36.96	135410	50960	37.63	33282	12946	38.90
7	Haryana	0	0		0	0		0	0		0	0	
8	Himachal Pradesh	305530	13250	4.34	12030	4240	35.25	7524	2474	32.88	1978	644	32.56
9	Jammu&Kashmir	0	0		0	0		0	0		0	0	
10	Karanataka	375004	165192	44.05	95851	37923	39.56	43287	13939	32.20	10393	2351	22.62
11	Kerala	36638	17588	48.00	18484	9013	48.76	8589	4467	52.01	354	233	65.82
12	Madhya Pradesh	1568275	577163	36.80	360450	115983	32.18	237344	53890	22.71	14275	2357	16.51
13	Maharashtra	1119243	505528	45.17	279423	108184	38.72	153683	54092	35.20	21203	5736	27.05
14	Manipur	97670	44930	46.00	30560	13740	44.96	16672	7227	43.35	3013	1158	38.43
15	Meghalaya	232660	116248	49.96	59873	28370	47.38	32541	15288	46.98	7568	3372	44.56
16	Mizoram	115894	54975	47.44	41426	20245	48.87	26421	12820	48.52	5675	2340	41.23
17	Nagaland	221072	105871	47.89	56286	27051	48.06	28957	13004	44.91	5055	1973	39.03
18	Orissa	817000	268000	32.80	168000	50000	29.76	88801	34075	38.35	6665	1306	19.59
19	Punjab	0	0		0	0		0	0		10	2	20.00
20	Rajasthan	639000	174000	27.23	219000	41000	18.72	98000	9000	9.18	9677	427	4.41
21	Sikkim	17360	8310	47.87	4260	2070	48.59	2861	1177	41.14	275	126	45.82
22	Tamil Nadu	75987	32550	42.84	24673	9792	39.69	12686	4696	37.02	1755	513	29.23
23	Tripura	141363	60215	42.60	29018	12698	43.76	15216	4907	32.25	860	228	26.51
24	Uttar Pradesh	31694	11573	36.51	8822	2331	26.42	5138	1419	27.62	1882	541	28.75
25	West Bengal	558479	271767	48.66	204845	92730	45.27	34447	12163	35.31	1059	284	26.82
26	A & N Islands	3490	1638	46.93	1566	777	49.62	913	453	49.62	64	30	46.88
27	Chandigarh	0	0		0	0		0	0		113	40	35.40
28	D & N Haveli	17751	7080	39.89	3823	1318	34.48	1656	614	37.08	0	0	
29	Daman and Diu	2000	924	46.20	787	345	43.84	313	122	38.98	121	16	13.72
30	Delhi	686	315	45.92	422	160	37.91	430	158	36.74	673	252	37.44
31	Lakshadweep	8577	3912	45.61	3536	1472	41.63	1693	687	40.58	0	0	
32	Pondicherry	0	0		0	0		0	0		0	0	
	India	9224604	3735364	40.49	2353397	853581	36.27	1255801	402812	32.08	170239	50178	29.56

Sorce Annual Report MHRD Deparment of Education 1996 97

TRANSPARENCY 102 4 (a) 7

Drop out rates at school stage in India by sex in 1996-97 (Provisional)
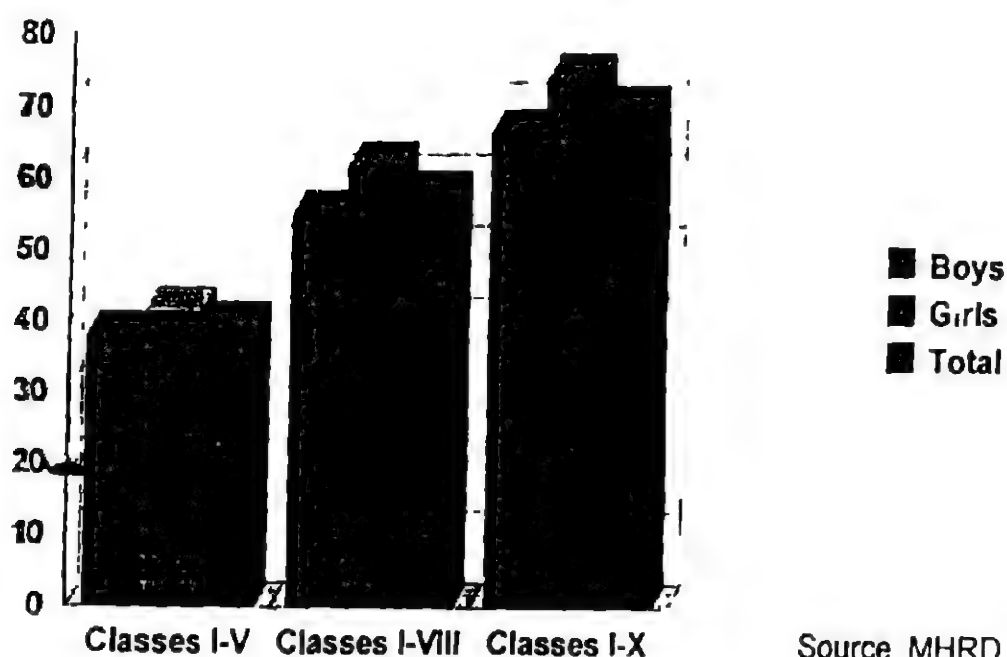
Source, MHRD 1997

MODULE 102

Theme 102.4 (b) Non-formal Education (NFE) as an effective alternative for UEE

Expected Outcomes

The participants will

- will understand the role of NFE for achieving the goal of UEE
- discuss strategies to improve girls/women's enrolment in NFE Centres

Content Points

- NFE is a parallel programme to achieve the goal of UPE and UEE especially among girls

- It is basically a programme to encourage those children who can not attend full time schools (they are non-enrolled or are dropout of the formal system) Most of these children are girls (there are seven crore out of school children in 6-14 years age group, out of which 70 75% are girls)

Features of NFE Programmes

- The system has built in flexibility curriculum is flexible, local specific and need based, time schedule is flexible and timings are also as per the convenience of the children of the community

- This is a learner centred programme The child continues with her/his wage/household activities and also attends the NFE Centre

- Education is activity based, integrated and learning is participatory

- Female instructors are there for girls

- A variety of learning material is used in NFE Centres

- The children have to acquire minimum levels of learning

Coverage

Although its focus is on the ten educationally backwardstates namely Andhra Pradesh, Arunachal Pradesh, Assam, Bihar, Jammu and Kashmir, Madhya Pradesh, Orissa, Rajasthan, uttar Pradesh and West Bengal, it has been extended to cover urban slums, hilly, tribal and desert areas with concentration of working children in other states as well

- Role of NGOs (Non-Government Organisations) in promoting non formal education

- There are several hundred NGOs working exceedingly well in this field Some of the outstanding amongst are 'field stations' alternative schools of M P and Sahaj Shiksha of Lok Jumbish, Rajasthan

Strategies to increase girls enrolment in NFE Centres

- NFE should be planned as an integrated part of UEE

- NFE Centres should cater to the needs of girls who are not able to or who cannot attend the formal schools

- The community should be involved in the setting up and supervision of NFE Centres Parents should be motivated to send their daughters to NFE Centres

- Special efforts should be made to appoint women instructors wherever possible

- NFE instructors must be sensitized towards gender issues

- NFE must be linked with basic issues of health, nutrition and income generation

Methodology

The lecture will be developed with the help of transparencies

Non-Formal Education Centres

1979 80 to 1992 93

Year	Number of Centres for Which Grants Were Released*		Grants Released (Rs in millions)
	Total Centres	Girls Centres	
1979 80	28730	-	19 97
1980 81	22186	-	6 15
1981 82	32585	-	36 00
1982 83	56161	-	47 20
1983 84	114408	10100	80 50
1984 85	163570	20880	121 29
1985 86	167199	20730	140 75
1986 87	156106	20590	142 91
1987 88	193463	56830	380 38
1988 89	241059	70960	367 94
1989 90	257432	77832	329 62
1990 91	270217	81282	467 52
1991 92	272322	81607	507 72
1992 93	237911	79071	553 63

* Includes the Voluntary Agencies

Source Ministry of Human Resource Development, Deptt of Education Govt of India New Delhi
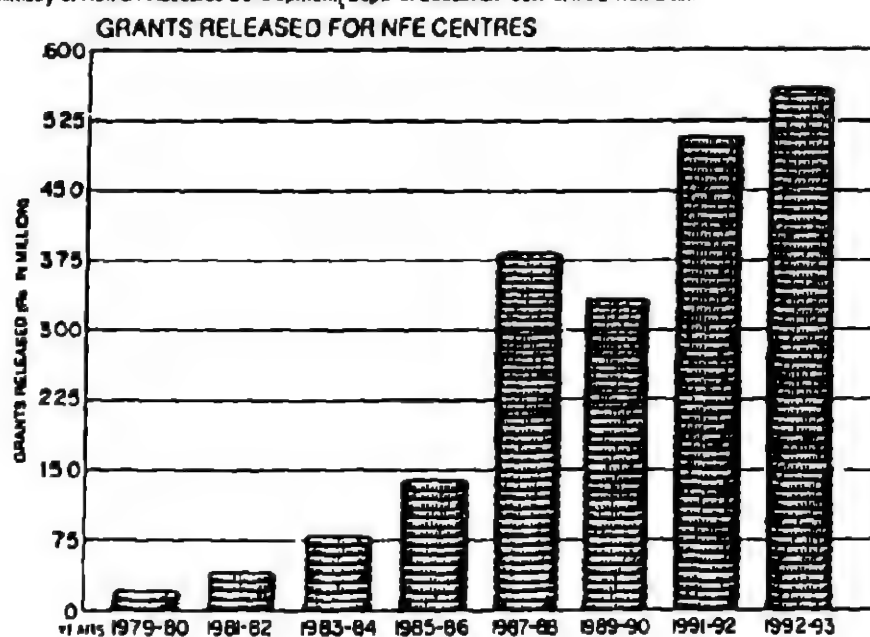
Transparency 102.4(b).2
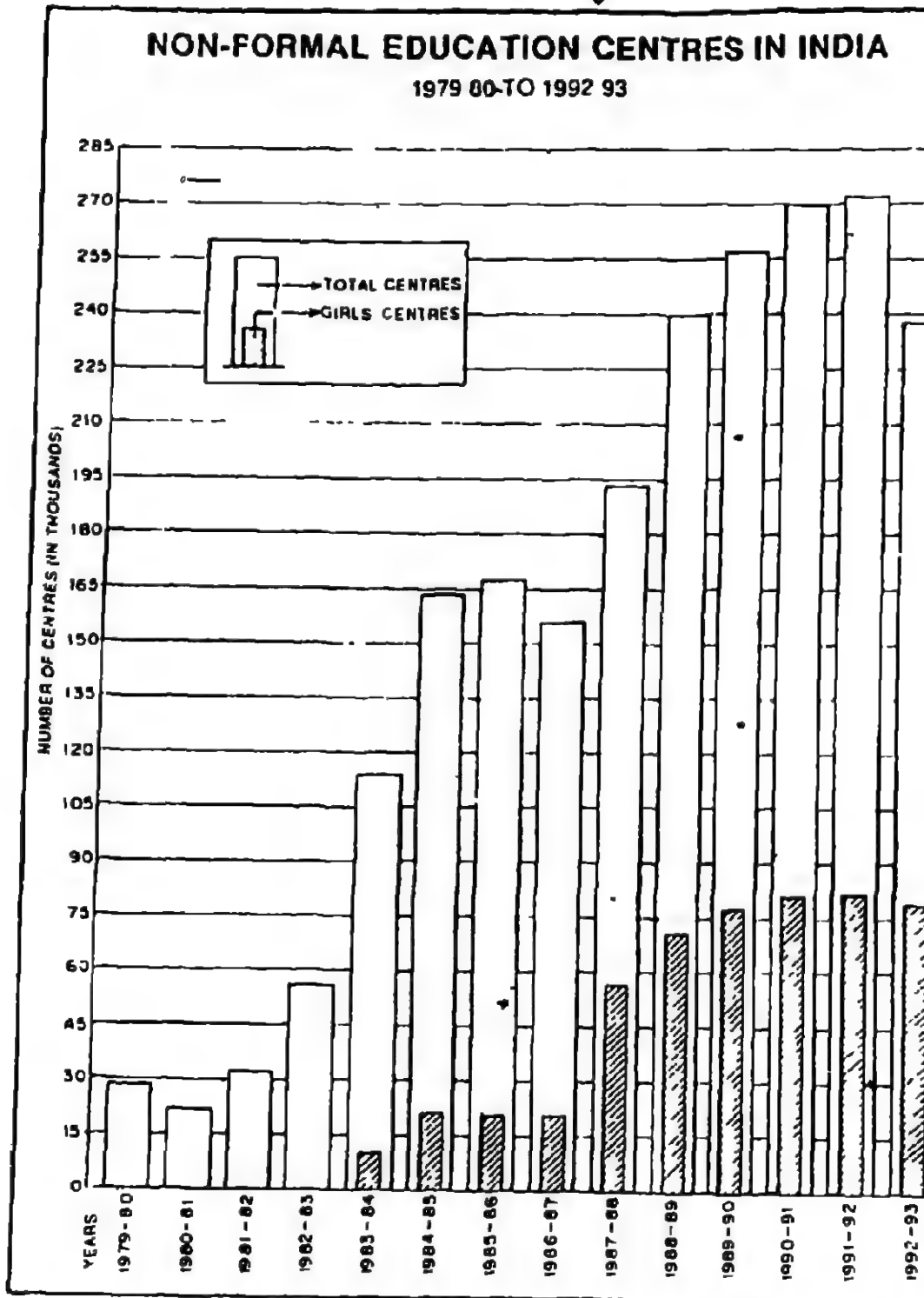
MODULE 102

Theme 102.5 (a): Access of Girls and Women to Secondary And Higher Education in India

Expected Outcomes

The Participants will

- acquire knowledge about the participation of girls at secondary, higher secondary stage and in technical and professional education

- discuss strategies to improve girls participation at secondary, higher secondary stage and in technical professional education especially as non-traditional areas and emerging technologies

Content Points

- Secondary and higher education is largely an urban middle class phenomenon Rural and poor population group has lower access to and participation in it Only 5 05% habitations are covered by secondary and 1 13% habitations are covered by higher secondary schools 91993) Lack of schooling facilities are affecting girls participation in education at secondary level and at higher education level

- Girls are lagging behind boys in secondary and higher education Rural and Scheduled Castes/Scheduled Tribe girls are the worst off

- At this stage girls are lagging behind not only in numbers but the type of courses they receive and opt for e g. girls are concentrated in Arts and Humanities courses (female sex stereotyped courses) and fewer girls opt for Science, Mathematics and Technology related courses (Lack of poor self concept and parental motivation, poor physical facilities for science subjects in girls schools and lack of good foundation of science and mathematics at lower level may be some of the reasons)

- Girls participation is less than boys in vocational, technical and professional courses The main reason for this is that nearly all of the vocational, technical and professional education institutions are located in urban areas for which most of rural girls do not have access Secondly despite the national policy of undifferentiated curricula, states adopt a restrictive attitude in providing vocational courses to girls

- The existing vocational training facilities for out of school girls and women are inadequate considering the massive requirement (There are 27 schemes of Government of India for out of school girls and women)

Transparency 102.5 (a).1

PERCENTAGE GIRLS ENROLMENT TO TOTAL 1995-96

Stage	Total Enrolment	Girls Enrolment	%Girls to Total
Pre Primary\Pre Basic Stage	2139200	98127900%	46%
Primary\Jr Basic	109734292	47373540	43%
Middle\ Sr Basic	41014136	16042890	39%
High\ Post Basic	16779905	6068840	36%
Hr. Sec (10+2 Pattern)	5727596	1924284	34%
Intermediate\Jr College	2381071	788229	33%
Polytechnic Institutes	320466	55266	17%
Tec Indus Arts & Crafts School	410546	57929	14%
B Ed \ B T	122065	50252	41%
B Com	1122473	330017	29%
B E \B Sc (Engg)\B Arch	317134	45180	14%
B A	2435984	1017784	42%
B Sc	977513	346683	35%
M B B S	110450	38111	35%
M Sc	99024	35789	36%
M Com	79012	18377	23%
M A	269323	104439	39%
Ph D \D Sc \D Phil	41342	11466	28%

Source Selected Educational Statistics,MHRD Dept of Education 1995-96
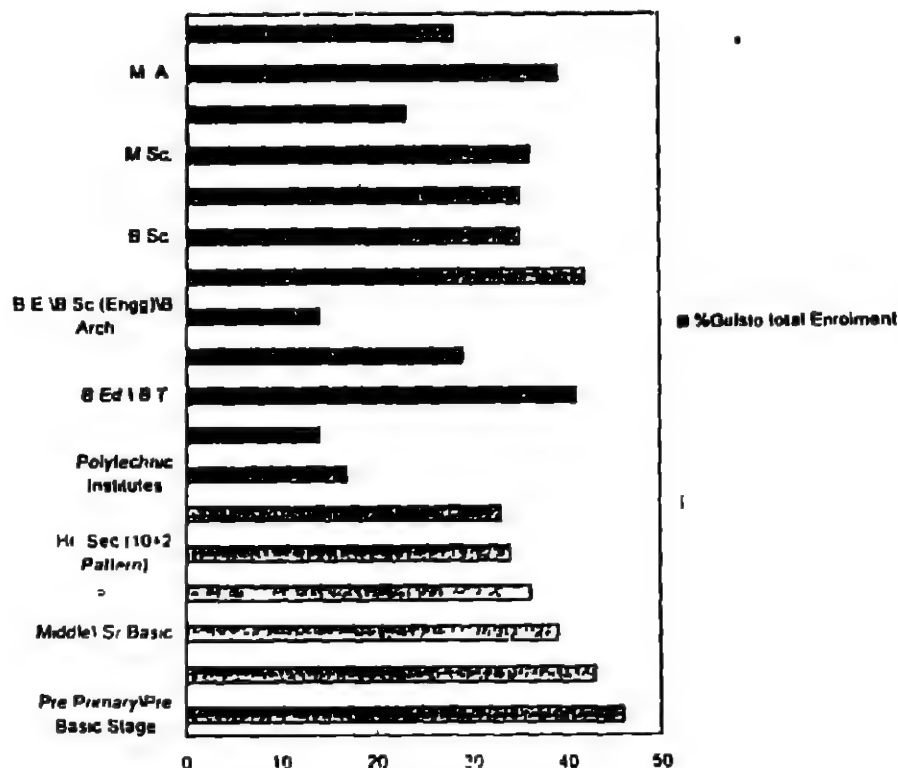
Transparency 102.5 (a).2

TABLE 4.23

Total and Women Enrolment in Higher Education, States/Union Territories - 1994-95

Sl No	State/ Union territory	Total* Enrolment	Women* Enrolment	Percentage of women
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1	Andhra Pradesh	4 27 652	1 33 907	31 3
2	Arunachal Pradesh	3 240	737	22 7
3	Assam	1 48 170	47 725	32 2
4	Bihar	4 75 230	87 672	18 4
5	Goa	16 977	8 634	50 9
6	Gujrat	4 16 458	1 61,984	38 9
7	Haryana	1 42,320	54 072	38 0
8	Himachal Pradesh	35 354	13 503	38 2
9	Jammu & Kashmir	44 752	17 583	39 3
10	Karnataka	4 87 582	1 66 766	34 2
11	Kerala	1 80 053	93 545	52 0
12	Madhya Pradesh	3 75 216	1 11 127	29 6
13	Maharashtra	9 50 946	3 41 384	35 9
14	Manipur	28 254	11 974	42 4
15	Meghalaya/Nagaland	19 455	7 682	39 5
16	Orissa	2 05 105	65 859	32 1
17	Punjab	1 86 797	95 000	50 9
18	Rajasthan	2 05 215	67 124	32 7
19	Tamilnadu	4 16 654	1 65 364	39 7
20	Uttar Pradesh	8 47,263	2 24 741	20 5
21	West Bengal/Tripura/Sikkim	3 54 808	1,23 835	34 9
22	Delhi	1 30 538	60 318	44 2
23	Pondicherry	9 910	4 405	45 1
	Total	61 13 929	20 64 982	33 8

* Estimated

Source: Annual Report for the year 1994 95 University Grants Commission New Delhi

MODULE 102

Theme 102.5B: Vocational and Technical Education for Senior Secondary Schools Girls

Expected Outcomes

The participants will

- understand the implications of socio-economic, academic and institutional factors on vocationalization of education

- learn the reasons for the failure of vocationalization of education to pull more girls within its folds

- discuss measures to be adopted to make vocationalization of education, a successful venture

- acquire information about variety of courses offered under vocationalization of education

Content Points

- The Education Commission (1964-66) stated that in the modern world, the role of women goes much beyond the home and rearing children "As she is now adopting a career of her own and sharing equally with men, the responsibility for development of society in all its aspects, therefore education of women too has to more in that direction"

- The NPE (1986) on imparting vocational education states, 'The policy of non-discrimination will be pursued vigorously to eliminate sex-stereotyping in vocational and professional courses and to promote women's participation in non-traditional occupations, as well as in existing and emergent technologies"

- Inspite of this provision, enrolment of girls in vocational stream is just 27 44 percent of the total

- The reasons for this are many The primary being

  - parental apathy towards higher education and vocational education of girls

  - general absence of adequate educational and vocational guidance services in girls institutes

  - the basic fact that the percentage of girls crossing grade X is comparatively low compared to boys at each level of education

  - a weak link between training and employment puts a negative picture in eyes of parents who do not visualise the use of such an education

  - range of vocational courses generally offered to women is relatively limited

  - non-availability of adequate instructional material

  - lack of trained regular teaching staff

Transparency 102.5 (b).1

List of Courses Suitable for Girls

- Computer techniques
- Repair and maintenance of Radio and TV receiver
- Audio-visual Technician
- Electronics Technology
- Clock and Watch Repair
- Repair and Maintenance of Domestic Appliances
- Draftswomen (Civil and Architectural)
- Electric Motor Winding

Commerce Based Courses

- Office Assistantship/Management
- Accountancy and Taxation/Auditing
- Marketing and Salesmanship

- Insurance
- Banking Assistantship
- Purchasing and Storekeeping

Paramedical Courses

- X-Ray Technician
- Medical Laboratory Technician
- Dental Hygienist
- Pharamacist
- Hospital Housekeeping
- Medical Record Documentation
- Sanitary/Health Inspector
- Opthalmic Technical
- Physiotherapist or Occupational Therapist
- Female Multi purpose health worker (Auxillary Nurse and Midwife)

Agriculture Based Courses

- Dairying
- Paultry Farming
- Sericulture
- Inland Fisheries
- Fish Processing Technology
- Nursery and Vegetable Growing

Home Science Based Courses

- Food preservation and processing
- Bakery and confectionery
- Textile designing
- Commercial nd pre-school management
- Child and Family Welfare
- Institutional Housekeeping

- Catering and Restaurant Management

- Interior Decoration

- Dietetics and Meal Preparation

Humanities and Others

- Tourism and Travel Techniques

- Health Care and Beauty Culture

- Printing Technology

- Hoisery

- Photography

- Commercial Artist

- Library and Information Service

- Law Assistant

This is an extensive, but by no means complete list which includes courses suitable for rural/urban/semi-urban areas. Since the selection of the vocational courses has to be locale specific and need based, on the basis of the location of the institution appropriate courses may be selected from this list or new courses may be designed.

MODULE 102

Theme 102 5 D. Development of Guidance Programme to Inculcate Career Potential of Senior Secondary School Girls

Expected Outcome

The participants would be able to

- understand the need of developing the self image of girls and their self confidence,

- learn about workable androgyny

- impart to their students career orientation

- motivate their students to follow career of their choice (traditional or non-traditional)

Content Points

- Enable girl students to make informed choices by

- having discussion on careers and courses for further study in subject ares pursued by the girls at the senior secondary school

- Introducing career literature and information brochures

- Counselling to bring about changes in girls attitude and perceptions about themselves and about work

- Presentation of women role models in science and technology to science students in arts and commerce to art and commerce students

- Through curricular, extra-curricular activity and counselling sessions, girls to be made aware of their inherent potential and to generate in them the confidence to make career choices

- Interactive sessions with students where the teacher counsellor can help the girls 'open up' and discuss their aspirations ambitions perceived hurdles and facilitating factors These group discussions have a cumulative effect on the students where they learn through interactions

- Engendering in the girls through role play and stimulation, the confidence to break barrier of sex role stereotypes and the ability to enter into careers in non traditional areas A counsellor plays a pivotal role in concretising a girls' diffused identity

- Counselling to make girls less 'feminine' and more androgynous so that they think decide and act more as persons and not as girls This brings about a flexibility in approach to vocations and careers

Methodology

Lecturer-cum-discussion method

Source UGC Annual Reports

MODULE 102

Theme 102.6: Development of Positive Self Concept in Girls

Expected Outcomes

The participants will

- understand the processes that lead to formation of the sex role identity and self concept in children and adults

- appreciate how discrimination (in family, school and community) based on sex results in the formation of a negative self concept in girls and a positive self concept in boys

- evolve strategies to develop positive self concept and image among girls

Content Points

- Self Concept - It is how an individual views

- Positive and negative self concept.

- Self Image - refers to the impression we think we make on others

- Self esteem is the dynamic aspect of self concept through which an individual constantly evaluates one's self in relation to society, the amount of values we ascribe to ourselves

- Factors affecting development of self concept.

- Child rearing practices have a marked effect on the development of self concept among children. School peer group, community, media and other influences in society also contribute towards development of self concept among children.

- It is often observed that girls and women have a low self image and negative self concept

- Factors for development of low self concept among girls

- Unwelcomed at birth and uncared for throughout her life leads to the development of low self concept and negative self image of a girl child

- different pattern of socialisation for boys and girls, (special value accorded to male children) emotional rejection and social deprivation of a girl child

- Sex typed development - sex affects cognitive, social, emotional and physical development of girls It affects their social interaction, social expectation from them, the opportunities made available to them and their ability to make use of the opportunities if they do exist.

- Early life experience e g differential play materials or equipment for self expression, self development to boys and girls, difference in learning experiences of boys and girls

- Effect of sex stereotyped roles played by the parents of the girl child If the mother or the women in the family are enjoying an inferior status than men, the girl child, will develop negative self image

- Effect of rituals, festivals and songs all are male centred

- School based factors - discriminatory attitude of teachers, dominance of boys in classroom and outside activities, gender bias in text books and curriculum transaction etc

- Mass media - depicting men in authoritative and domınent roles and women in passive and domestic roles

- Strategies to improve and development positive self image among girls

- Proper socialisation of girl child, sensitizing parents (especially mother), having healthier relationship with girl child, helping girls to grow and develop normally and they should not be forced into adult patterns from early childhood

- See girls as girls and women as women not just as mothers, potential mothers and wives

- Believe in individual differences than in sex differences

- Provide a positive and self enhancing learning environment in and outside the classroom

- Remove sex bias and stereotypes from curriculum and textbooks

- Present women role models in non traditional occupations to girls

- Give greater freedom of choice and opportunity to girls to express themselves

- Emphasize skill learning among girls

- Give career guidance and counselling to girls

Methodology

The lecture will be introduced by showing a film 'Nakusha' showing low self concept of a poor girl

MODULE 102

Theme 102.7: Leadership and Decision Making Qualities Among Girls

Expected Outcomes:

- Understanding the factors responsible for lack of leadership and decision making qualities among girls

- Identifying various strategies to develop these qualities among girls

Content Points

Leadership Qualities - Why is it necessary to develop ledership qualities

i to grow and develop one's capacities and skills

ii to carry out tasks and activities efficiently as they have become complex and group work is becoming more and more necessary

iii for a person to be a leader, his/her qualities must make him/her stand out in a crowd It is equally important to have those followers who will be able to listen, follow and implement the ideas of their leader

Other Qualities of a Leader

- a person with vision
- an individual ready to take risks
- inspiring the followers to do what he/she aims to achieve
- working with rules and regulations
- has good communication skills
- a facilitator in a group
- confident, decisive and goal oriented person
- efficient as well as effective
- well informed on important issues

Generally girls/women are lagging behind in most of theabove mentioned qualities due to several reasons e g. timeconstraints, double responsibilities of household and occupational work and attitude of family and society They donot even read news papers Most women avoid holding positions of responsibility, position of being a leader becausethey find it difficult to cope with the tasks the positionentails

To change this situation it is important to see thatleadership qualities are developed among girls

- both schools and home will have to play an equally important role in a change of parents and teachers attitude towards girls children

- positive qualities to be inculcated among girls In school through role play, games and assignment of duties and responsibilities to be developed among girls

Methodology

- Lecture-cum-discussion method

MODULE 102

Theme 102 8. Communication Skills

Expected Outcomes

The participants will

- be sensitized towards a two way process of communication
- develop skill to establish a two way communication process and handle a group discussion
- understand need for improving communication skills among girls for women's empowerment

Content Points

- Interpersonal communication
- Process of communication -
- One way and two way communication
- Major Functions of Communication Process
    - The information function to give essential and additional information

ii The command or instruction function

iii The influence function - for encouraging, convincing and motivating others

iv The integrative function - coordinating and disseminating ideas and messages that will increase cooperativeness of the group

v The feedback function - communication about monitoring, evaluation completion reports impact of new policies, programmes and procedures

Barriers in successful communication

- The noise factor creeps into communication and distorts the message or the communicators' physical environment around them can be a distraction

- The listener hears what he/she expects to hear

- When communication is badly expressed, badly worded translation is faulty there is poor retention

- When the message passes through many hands there is loss in transmission

- The speaker and listeners have different ways of looking at things

- If the message is badly timed
- The same words mean different things to the speaker and the listener
- The listener judges from who is saying rather than what is being said
- The communicators ignore the gestures and expressions used for conveying something.
- The listener rejects the information which is contrary to his/her previous knowledge and information
- The communicators allow their emotions to come in the way

Communications skills required for working with people

- Listening
- Speaking
- Reading
- Writing

How to make communication effective

- A communication must be understood believed and accepted
- Keep the message short and simple
- Be accurate and direct, repeat the message if not understood

- Before communicating see that your message fills a need and serves a purpose

- *Context* is very important, keep in view the total personality of the sender or receiver

- Listen carefully

- Various methods of communication i e lecture, discussion, demonstration, written matter and mass media method

- Improving Communication skills in girls

  - In our society girls generally do not communicate and express their ideas, thoughts, desires, opinions or knowledge Thus hampers their ability to perceive, analyse and deliberate upon important matters and issues Communication skills should be developed and improved in girls The family, school and media can play a positive role in improving communication skills in girls

  - Communication as a major tool of women's empowerment - creation of a network for solving womens issues

Methodology

1 Ask the participants what they mean by the term communication and its relevance to their work. After an initial discussion, invite the participants to play a game

2 a Ask one half of participants to leave the room, and the other half to quickly make up a message of about 100-150 words The message should contain some details and specific instructions Ask them to select one member who will repeat the message

b Let one of the participants from outside come in and listen to the message so that he/she will be able to repeat it This participant can not ask questions

c Then ask one more participant to come in while the first participant repeats the message to him/her

d Continue this process till the last one from outside comes in listens and repeat the message as heard The last person should write it down on the board

e Ask the participants to compare this version with the original message

f Discuss the experience in terms of

- What did the participants feel while repeating the message?

- Why did the message get distorted?

- What would have helped to repeat the message without changing the context?

3 Show the transparencies and drawing from the experiences of the participants explain the other concepts

Transparency 102.9 1

Process of Communication

Communication is a process of transferring information from one person to another

One-way Communication

Sender (of information) → Process - - - → Receiver (of information)

Two-way Communication

Sender ← → Receiver
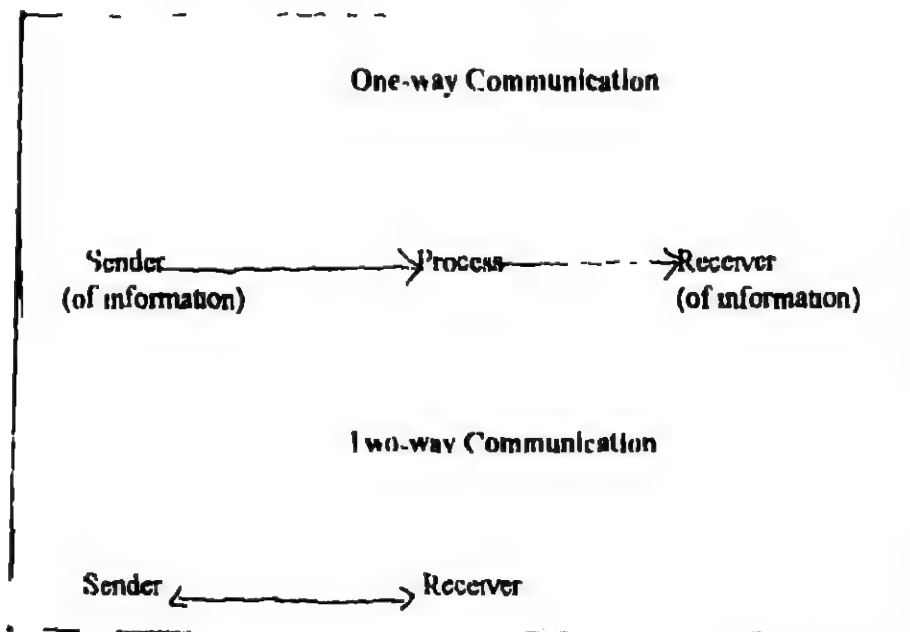
Transparency 102.9 2

Barriers in Communication

There are several barriers to successful communication, some of them are

- The listener hears what he/she expects to hear
- The speaker and listener have different ways of looking at things
- The same words mean different things to the speaker and the listener
- The listener judges from 'who' is saying rather than 'what' is being said
- The communicators ignore the gesture and expressions used for conveying something.
- The listener rejects the information which is contrary to his/her previous knowledge and information
- The communicators allow their emotions to come in the way
- The communicator's physical environment around them can be a distraction

Transparency 102.9 3

Communication Skills

Communication is looked upon as the basic method of effecting behaviour change, and it involves psychological processes (perception, learning and motivation) on the one hand, and language on the other Listening sensitivity and non-verbal communication are also closely associated with this approach

Some communication skills are

- Listening
- Talking
- Writing
- Reading

Selected Bibliography

102

Ahmed, Karuna, Social Background of Women Undergraduate of Delhi University, Ph D Thesis, Delhi University 1968

Ashish, Sinha, Maitra Anjana Women in a Changing Society, Publishing House, 1994

Byrne E , "The Place of Women in the Changing Pattern of Higher Education" Women in Higher Education London London University 1975

Commonwealth Sponsored Stues on Measures to Promote Vocational Technical and Professional Education Among Girls and Women in India. Department of Women's Studies NCERT 1990

Education of Girl Child in India - A Fact Sheet Department of Women's Studies, NCERT 1991

Gore M S Indian Youth Process of Socialisation New Delhi, Vishwa Yuvak Kendra 1977

Gupta, Anil Kumar Women and Society Criterion Publications New Delhi 1986

Haffman, L W , "Early Childhood Experience and Women's Advancement Motives, Journal of Social Issue, 28, 1972

Haffman, L W and Lipit, Ronald, The Measurement of Family Life Variables In P H Mussen (ed) Handbook of Research Methods in Child Development New York, Wiley and Sons 1960

Kakkar Sudhir, The Inner-World - A Psychological Study of Childhood and Society in India Delhi Oxford University

Leghern and Parker Women's Worth *Routledgte and Regal Regan Paul* Boston, London and Hamley, 1981

Liddle Joanna and Rama Joshi (1986) Daughters of Independence - Gender Caste and Class in India. Kali for Women A-36 Gulmohar Park, New Delhi

Mathur, Y B , Women's Education in India, New Delhi, Asia Publishing House, 1973

Mead, M Childhood in Contemporary Culture, Chicago University of Chicago Press, 1955

Mehta, Vimla Attitudes of Educated Women Towards Social Issues, Delhi, National Publishing House, 1979

Nayar, Usha, From Girl Child to Person Resource Material for Teachers and Head Teachers of Primary Schools in India, New Delhi, 1995

Report of Consultative Meeting on SAARC Decade of Girl Child - 1991-2000, Department of Women's Studies, NCERT, New Delhi

Sinha, Durganand (ed) Socialisation of the Indian Child, Concept Publishing Company, New Delhi, 1981

Singh, Yogesore, Modernization of Indian Tradition, Faridabad Thomson Press (India) Ltd 1977

Sood, Neelam, Pre-school Education in ICDS An Appraisal, Technical Bulletin No 5, NIPCCD, March, 1992

Study on Factors of Continuance and Discontinuance of Girls in Elementary Schooling, Department of Women's Studies, NCERT, 1990-92

Whiting, B V (ed) *Sex Culture Study of Child Rearing*

UNESCO Sponsored Innovative Pilot Project on Universalisation of Primary Education Among Girls and Disadvantaged Groups in Rural Areas of Haryana, Department of Women's Studies, NCERT, 1992-95

MODULE 103

Elimination of Gender Bias from and Educational Programme
Duration: 12 hrs.

Rationale

Education plays a powerful role in perpetuating the gender bias if no planned intervention is mode to negate this and turn it into a vehicle of positive reinforcement of equality between sexes An analysis of curriculum and educational programme shows the existence of gender bias and sex stereotyping to some extent

The present course analyses the National Curricular Framework in relation to all its elements, more particularly to the core value of equality between sexes which is a constitutional right and has received major attention in the National Policy on Education, 1986 (revised 1992)

All major education commissions and committees advocate implementation of an undifferentiated curricula Elimination of gender bias and stereotyping from the curriculum, textbooks and educaational programmes is the central theme of the Department of Women's Studies (DWS), NCERT The DWS makes a strong case for sensitization of policy makers, planners, administrators, teachers, curriculum developers, textbook writers and the larger community on the need and importance of equality between sexes An attempt is made to propose a positive interventionist strategy in the form of eliminating sex biases and stereotypes from the textbooks A strong school based programme for promoting equality between sexes and eliminating sex biases operating in the community at large is also discussed

Purpose. The purpose of this module is to

i generate awareness about how gender bias operates at different levels in the educational system including curriculum development, textbooks curriculum transaction and educational programmes

ii suggest strategies for removal of gender bias from curriculum, textbooks, curriculum transaction, teacher education and educational programmes

iii propose an institution (school) based intervention programmes for promoting equality between sexes

Themes

1	Curriculum and the Gender Question	1 30 hrs
2	Elimination of Gender Bias from Textbooks	1 30 hrs
	Theory —	1 30 hrs
	Practical	1 30 hrs
3	Gender Equality Through Curriculum Transaction	3 00 hrs
4	Inputs Into Teacher Education	1 30 hrs
5	School as an Institution for Promoting Gender Equality	1 30 hrs

MODULE 103

Session 103.1: Curriculum and Gender Question

Expected Outcomes:

- analysing different committee, commission and policy documents to identify differentiation of curriculum for boys and girls

- suggesting strategies to eliminate curriculum differentiation

Content Points:

- The concept of curriculum

- Aims/purposes of curriculum - all round development or fulfilment of society's needs, subject/stage/area specific aims

- Historical antecedents of the development of the present curriculum pattern Curriculum of a country at a particular period of time is influenced by the philosophical and political ideologies and socio-cultural milieu

i British legacy - a selective differentiated curriculum leading to segmentation of the society Girls were expected to learn domestic science, music, arts and crafts

ii. The post independence period began with no visible discrimination or differentiation in the curriculum. Various committees and commissions recommended the same curriculum for both boys and girls e g. The National Committee on Women's Education 1959 (Durgabai Deshmukh Committee) recommend common curriculum for both boys and girls

The Hansa Mehta Committee (1962-64) recommended commoncurricula for boys and girls at elementary stage with homescience as a common core subject for both boys recommended acommon school system with common curricula for both boys and girls

National Policy on Education (1968) emphasised equality of educational opportunities and adopted the recommendationsmade by Kothari Commission regarding the undifferentiatedcurriculum

The Committee on Status of Women in India (1974) alsorecommended common course of education for both boys andgirls till the end of class X, all courses being open toboys and girls National Policy on Education 1986 and its POA also emphasised equal educational opportunities and common curriculum for all It says

"Non discrimination willbe pursued vigourously to eliminate sex stereotyping in vocational and professional courses and to promote women's participation in non-traditional occupations, as well as existing and emergent technologies"

iii. At present there is no visible curriculum differentiation on the basis of gender except that the home science syndrome still persists in most states Sometimes, curriculum transaction becomes gender biased Sex bias has been observed in some +2 level vocational courses

- Strategies to eliminate curriculum differentiation

- Orientation of curriculum framers and developers, teacher educators and teachers on gender issues

- Provide guidelines to textbook writers and illustrators to write gender bias free textbooks

- Re-orient teachers at all stages of Education (through pre-service and in-service training) for transacting curriculum in a gender bias free manner

- Open all type of vocational courses for boys and girls

- Sensitize parents and community regarding undifferentiated curriculum for boys and girls so that they can help girls to choose courses according to their abilities School can take the initiative for such sensitization

Methodology

Ask the participants to enlist various courses open for boys and girls in their state/organisation/institution on the basis of experiences of participants develop the lecture

MODULE 103

Theme 103.2· Elimination of Gender Bias from Textbooks

Expected Outcomes

- Understanding the probable areas of sex bias and stereotyping in textbooks

- Evaluating textbooks (Classes I to V) prepared by NCERT from gender bias point of view

Content Points

- Concept of gender bias and gender stereotyping

- Operation of sex bias in textbooks and how these reflect and perpetuate the biases in society - sex bias and stereotyping is result of the undervaluation of the girl child in our society What we observe in our society gets reflected through the textbooks and other reading materials

- Areas of Sex Bias in Textbooks

    i Content

        1 Thematic content - content may carry imbalances in themes relating to women in lessons or there can be complete ommission

        2 Content may be stereotyped - The image of women is often distorted, simplistic, limited or even degrading with clear distinction made between the roles of men and women, both of whom are shown engaged in stereotyped activities

    ii Linguistic bias - curricular material often reflects sex bias inherent in the vocabulary, grammer and usage of a language

    iii Bias in the presentation of textual material especially in illustrations and visuals

- **Evaluation of Textbooks to locate**

    - the matter prejudiced to the sexes and

- the matter promoting equality between sexes (locating positive aspects)

- **How to Evaluate Text Books (Tool) (See the Handout)**

- A brief evaluation report of NCERT primary text books 25 text books prepared by NCERT were evaluated by DWS faculty The text books were of Hindi, English, Environmental Studies Social Studies, Science and Mathematics It was found that there was male domination in content illustrations and exercises in most of the text books However girls women were shown in some positive, new roles also

- Elimination through a conscious approach on the part of a textbook writers teachers students and authors through developing alternative in textual material The textbook writers and illustrators should work in coordination to write such material

Methodology

i Show transparency showing examples from textbooks of different subjects dipicting male dominance Ask the participants to react

ii Then introduce the term gender bias and stereotyping

iii With the help of examples given by the participants and examples taken from textbooks explain how gender bias and stereotyping opeates in different areas i e in content, illustrations, pictures etc

iv Show a transparency dipicting a simple evaluation tool to evaluate textbooks from gender bias point of view and explain how to evaluate a textbook

v a Divide the participants into groups on the basis of subjects

b Ask each group to evaluate NCERT textbooks of a particular subject & prepare a report for the same

c Ask one member from each group to present the report and discuss the evaluation report

Handout

Elimination of Sex Bias from Textbooks

Evaluation Tool

1 Identification Data

2 a Author(s)
  b Editor(s)

3 Publisher's (Full Address)

4 Year of Publication

5 Total No of Pages

Lessonwise Evaluation

Lesson No and Title

Sl No	Page & Line(s)	Observation & Comments	Suggestions for Modifications

Overall Evaluation

1 No of Chapters/Lessons

No of Authors
- a Male
- b Female

2 No of Themes relating to
- a Males
- b Females

3 No of Characters
- a Males
- b Females

4 No of Visuals
- a Male
- b Female
- c Both

5 Major Roles/Activities
- a Male
- b Female

6 Suggestions for Eliminating Biases

Signature of the Evaluator
Address

MODULE 103

Theme: 103.3· Gender Equality Through Curriculum Transaction

Expected Outcomes

- Equipping the participants with knowledge required to provide gender equality through transaction of different subjects

- Developing skills in transacting curriculum of different subject in gender bias free manner

Content Points

Social Sciences - During the transaction of social sciences

- The status and the role of women in the development of society must be highlighted

- Women's Contribution towards the growth of civilization or culture must be highlighted

- History must have women's perspective

- Give knowledge about legal rights of women

- Highlight the role of women in the family alongwith other members of the family

- Involve both boys and girls in co-curricular activities

- Highlight the relationship of geography of a place and the status of women

Science and Mathematics

- Biases regarding the abilities of girls in coping with Science and Mathematics subjects must be eliminated with the help of scientific evidences and reasons

- Correct knowledge of the human physiology must be provided

- In the classroom and laboratories equal opportunities should be given to both boys and girls

- Biographies of women Scientists and Mathematicians must be highlighted

- Demystify science through positive images and women role models

- Efforts should be made to negate all those values and situations in mathematics and science which depict women as a weaker sex, undervalue their intellectual activity, featuring men doing important work and women in supportive roles

- Provide remedial teaching to girls having low achievement in science/maths

Language

- Avoid use of sexist language

- Textbooks and supplementary readers at the school stage should not contain any references to women which degenerate their status The existing books should be evaluated and scrutinized from this point of view so as to delete all such references , as long as teachers have to use the existing books they should take care to play down all such references, and endeavour to put things in the correct perspective

- The contribution of women writers poets and novelists should be given their due place

Work Experience

- No gender based discrimination in assigning activities to students

Health and Physical Education

- Girls should be encouraged to participate in physical activities, games and sports

Methodology

i After the mutual discussion divide the participants into different groups according to subjects

ii Ask the group members to discuss how to make curriculum transaction of a particular subjects gender inclusive Ask them to note down the points

iii Supplement these points by giving more examples

iv Give demonstration for transacting curriculum of a particular subject in gender bias free manner

MODULE 103

103.4: Inputs Into Teacher Education (Pre-service and In-service) for Promoting Women's Equality

Expected Outcomes

- Analysing National Curriculum of Teacher Education (for elementary and secondary teachers) to make it gender inclusive

- Suggesting some women's specific themes/topics/projects to be incorporated in teacher education curriculum

Content Points

Structure of Teacher Education

Teacher Training at

Nursery Stage

Elementary Stage (Primary, Upper Primary)

Secondary Stage

Higher Education Stage

National Curriculum of Teacher Education

a Foundation Courses
(Philosophical, Socio-cultural and Psychological foundation of education)

b Stage relevant specialisation

c Additional specialization

d Practical/Field Work

Restructuring Teacher Education Programme with a Gender Focus

i Identifying plus point in the existing curriculum of teacher education for incorporation of women's issues

ii. Re-designing the courses keeping in view the equality between sexes.

iii. Introducing special/elective papers on women's education and to incorporate gender dimension into general topics during curriculum transaction

iv Encouraging researches in women's studies or on contemporary women's issues at M Ed , M Phil or Ph D level

Methodology

i Discuss National Curriculum of Teacher Education (for elementary and secondary teachers)

ii Show transparency and ask participants to identify plus points in different papers of teachers education of different states for incorporating gender issues

iii Show transparency and discuss suggested projects/topics for practical work and dissertation Supplement the list with topics/themes by the participants

Transparency 103.4.1

Some Suggested themes to be incorporated into Teacher Education Curriculum

Paper - Education in the emerging Indian society

- Education of women in different periods of history
- Impact of girls education on population, IMR, Child Health
- Role of women in developing culture, agriculture economy, technology
- Elimination of sex stereotyping from curriculum and educational programmes
- Barriers to the development of women and strategies to overcome the same

Paper - Psychology

- Individual differences verses gender based differences
- Mental hygiene of boys and girls Special problems of boys and girls Behavioural problems of boys and girls
- Development - growth and development of Intelligence and Personality is same for boys and girls under similar conditions

Transparency 103.4.2

Proposed Projects and Topics for Elementary Teacher Training, B.Ed., Practical Work and M.Ed. Dissertation

1 To educate illiterate women adults
2 To study organization and functioning of agencies working on women upliftment.
3 To study problems of rural women.
4 To study the problems of women prisoners in jails
5 Awareness of women against social pre-judices
6 Problems of working women
7 Organisational problems of adult education for rural women
8 To make women aware of their abilities
9 Role of women in media
10 Women exposure in TV, Cinema Advertisement
11 Problems of tribal women
12 Study of tribal women, rural women
13 Schemes for making women self employed
14 Attitude of educated women towards marriage, men, modernization etc
15 Time budget studies on women
16 Personality profiles of illiterate women
17 Personality profiles of five persistent and five dropout girls
18 Preparation of a project report for an adult literacy centre for women

MODULE 103

Theme 103.5: School as an Institution for Promoting Gender Equality

Expected Outcome

- Developing skills in planning and implementing an institutional (school) plan for promoting gender equality

Content Points

i Planning and Developing an Institutional Plan

- Carry out situational analysis of the school to know the reality and to identify the plug points
- Select issues according to the maturity of children
- Identify resources (human and other resources) in and outside the school
- Involve parents, community, teachers and senior students in making institutional plan

ii How a school can become an agent of change (Implementation of Institutional Plan)

- Following participatory approach
- Redefining values, roles and duties of boys and girls and male and female teachers
- Organising activities (academic and co curricular) for children according to their abilities and interests not according to their sex
- Reviewing existing textbooks and other reading materials with regard to sex bias and stereotyping
- Reviewing all activities of schools from gender point of view (e g application forms, annual functions, calling of chief guest, staff meetings and activities for children etc)
- By role play and reversal
- By reversal of duties considered as traditionally female or male oriented

- Organising camps, picnics, visits, project work etc which offer excellent opportunities for inculcation of attitudes of parity and imparting skills and

competencies which equip the girls with positive self concept and confidence

- Involving girls and boys in preparing charts models, wall magazines, catchy slogans

Methodology

After initial discussion explain institutional plan and its implementation for promoting gender equality on the basis of experiences of the participants

Field Visit take the participants to a nearby school or non-formal centre working to promote gender equality Discuss the function of school

LIST OF READINGS

103

1 Bernstein B, 'On the Classification and Framing of Educational Knowledge' in M Young (ed Knowledge and Control London. Collier-Macmillan, 1971

2 Bleier, Ruth, Science and Gender, Penguin Press in 1984

3 Jones, M.G and Wheatley, J 1988 Factors influencing the entry of women into Science and related fields, Science Education, 72 (2) 127-142

4 Kalia, N N from Sexism in Education The Lies We Tell Our Children

5 Kalia, N N from Sexism to Equality

6 Keller, Evelyn fox 1985, Reflections on Gender and Science, yale University Press, New Haven and London

7 Kelly, A, 1978, Girls and Science, Stockholm Almqvist and Wilksell

8 Kelly, A 1981, The missing half Girls and Science Education, Manchester University Press

9 Kelly, A, 1985, Science for Girls Open University Press, Milton Keynes, Philadelphia

10 Kulshreshtha I and Surja Kumari (ed) Women through Curriculum Secondary and Senior Secondary Stages, NCERT, 1984

11 Kulshreshtha, I, (ed) Image of Women and Curriculum in English New Delhi, NCERT, 1986

12 Kulshreshtha I, Undoing the Damage - NCERT, 1989

13 Kulshreshtha I, Women's Studies in School Education New Delhi, Sterling Publishers Pvt Ltd., 1989

14 National Curriculum for Elementary and Secondary Education A Framework, NCERT Publication

15 Status of Women Through Curriculum. Elementary Teachers Handbook. NCERT Publication. 1982 NCERT

16 Status of Women Through Curriculum, Secondary Teachers Handbook, NCERT, 1982

17 Women's Equality and Empowerment Through Curriculum Handbook for Teachers at Primary Stage, Department of Women's Studies, NCERT

18 Women's Equality and Empowerment Through Curriculum Handbook for Teachers at Upper Primary Stage, Department of Women's Studies, NCERT

MODULE 104

Quantitative and Qualitative Methods in Women's Studies

Duration. 30 Hrs

Theory	- 12 hrs
Practical Exercises	- 18 hrs

Rationale

Women's Studies is a new field with a very special goal of promoting gender equality The emergence of this discipline is a manifestation of concern towards increasing inequalities discrimination inhuman exploitation and marginalisation of women in all walks of life Recent years have witnessed some marked changes in the methodology of women's studies Thrust of studies descriptive macro-level studies to the micro-level in-depth action oriented research In this context the importance of quantitative and qualitative methods in women's studies for generating necessary data and information on the gender dimensions based on a scientific basis can hardly be over emphasised It is well accepted that information is needed for making an assessment of the present situations, gaps and the magnitude of the task with reference to well stated policy goals, for diagnosing the problems by undertaking bench mark surveys for making projections and policy formulation planning, implementation monitoring and evaluation of specific programmes etc The methodological thrusts in women's studies are essentially oriented towards participatory action research The researches are focussed on generating awareness against sexist approach and behaviour of the society for devising effective reformative actions for the betterment of women ensuring them quality and dignity in all spheres of life

Purpose

The purpose of this module is to

i Understand the emergence of women's studies as a discipline

ii Delineate the role of women's studies as a possible social critique and for action in promoting equality

iii Explain various methods being used in women's studies

iv Identify and interrelate basic indicators having bearing upon women's education and development

v Develop skills to analyse and interpret quantitative and qualitative data

Themes

1	Role of women's studies	-	1 30 hrs
2	Quantitative and qualitative Methods	-	1 30 hrs
3	Participatory Research	-	1 30 hrs
4	Nature and sources of data	-	1 30 hrs
5	Researches on women's education in 19th and 20th Century	-	1 30 hrs
6	Basic indicators of women's education and development (demographic, social educational, economic and political)	-	1 30 hrs
7	Tabulation, presentation and analysis of data (State and District Profile)	-	1 30 hrs
8	Monitoring and Evaluation of Education Programmes for Equal Opportunities and Women's Empowerment	-	1 30 hrs

MODULE 104

Theme 104 1: Role of Women's Studies

Expected Outcome

The participants

- will acquire knowledge about the emergence of women's studies as a discipline

- will understand the role of women's studies for promoting gender equality

Content Points

- Emergence of women's studies as a legitimate field of enquiry - an academic discipline and as a strategy for change

- Significance of Report of Committee on Status of Women (1974) International Women's Year and the Women's Decade (1975-85) for giving birth to women's studies in India

- Distinguishing studies and writings on women from the area of women's studies, while the former uses women as objects of study and enquiry, the latter employed theoretical framework and methodologies of existing social sciences for understanding, explicating the women's question with a view to intervention

- Conscious attempt at the growth of new concepts, theoretical constructs and methods of women's studies both qualitative and quantitative, with emphasis on participatory research and micro planning

- Data and information networks of researches in the area of women's education and development with reference to the Revised Programme of Action (POA) 1992 as reproduced below

Research in Women's Studies

"Women's Studies is a critical input to promote better understanding of women's contribution to social processes within social, technological and environmental change, their struggles and aspirations, conceptual obstacles that make them 'invisible' in many areas of scientific enquiry The programme aims to investigate and remove structural, cultural or attitudinal causes of gender discrimination, and *thus empower women to achieve effective participation in all areas of national or international development*"

The Four Dimensions to be supported are

i Research to advance the frontiers of knowledge, develop human resources and produce teaching/learning material in pursuit of the above aims

ii *Teaching to change present attitudes and values of men and women to one* of concern for gender equality Existing biases and deficiencies in curriculum will be addressed

iii Training of teachers, administrators and planners to enable them to play a positive interventionist role for gender equality

iv Extension of direct involvement of institutions in women's empowerment activities among the community " 'POA 1992'

- The need to focus on critical analysis of gender relations - social, economic, political and legal roles of men and women within societies to be placed within the temporal and the special group specific variations in a comparative frame

- Utilizing women's studies for the process of women's empowerment through education, intervention in policy planning, curriculum development, teacher training and curriculum transaction community involvement and public cooperation

Methodology

Lecture and Participatory discussion of role of women's studies with the help of examples

MODULE 104

Theme 104.2: Research Methods in Women's Studies

Expected Outcome

The participants will

- understand quantitative, qualitative, and other research methods used in women's studies

- acquire knowledge about different tools used in carrying out research in the field of women's studies

Content Points

- The various research methods include (i) Quantitative (ii) Qualitative (iii) Action (iv) Evaluation

Exploring the meaning and characteristics of quantitative research methods

- tools and techniques used in quantitative research methods

- various types of methods e g surveys, interview schedules, questionnaires and experimental methods

-

Discussing the meaning and characteristics of *qualitative* research methods

- various types of qualitative research methods e g historical approach, through observation, participatory approach, focussed group discussions etc

Other Methods

- Besides quantitative and qualitative research methods and techniques used in the field of women's studies, other methods applied including action research and evaluative studies

- Illustrating action research and evaluative tools with examples from women's studies

Methodology

1 Lecture cum participatory discussion

2 Participants to formulate a small action research proposal in women's studies/girls education and discuss it with the trainer/facilitator

Transparency 104.2.1

Characteristics of Quantitative Research

- Qualitative approach is knowing what social reality is or probing into reality
- It starts with no hypothesis
- Complete analysis of situation is very important
- Always demands the natural situation
- Always stand for direct observation
- Demands open ended questions
- Always deals with holistic approach
- Non probability, small samples
- Ultimate purpose is to explain social phenomena or to develop micro theory
- Participants observation is best for qualitative research

MODULE 104

Theme 104.3: Participatory Research

Expected Outcomes:

The participants will be able to

- understand the processes that can enable them to analyse some aspects of their situation/problems in detail

- make a collective effort to plan and take some concrete action

- make connections between their personal reality and the larger social reality

- develop self confidence and self reliance to an extent

Content Points

- Participatory Research is a systematic process which involves people in the analysis of their own situation Every individual carries out some research every day

- Participatory Research gives participants the skills and confidence to understand their own situation. Surveys made by experts make the population studies dependent and prevent them from improving their present condition

- Most developmental programmes are based on the analysis made by outside experts who have a different perception of poor women Frequently, they create programmes on the basis of their analysis, which do not fulfil women's real needs

- The main limitation of this type of programme is that once it fails, the experts blame the people instead of their wrong perceptions

- What is the problem? Participants should have clear and concrete understanding of the problem by making rapport with other members of the group/community

- Do the participants need a solution? It is necessary to ensure that there is a willingness to understand the problem, to plan and take action

- Do the participants have some knowledge about the problem? It is necessary to know the type and intensity of the problem

- Identify the roles of the participants

- Delimitation of the problem to sharpen the focus

- The possible solutions and action approach

Methodology

- Self survey technique can be used to carry out participatory research in which a group of women can investigate a particular problem by using a questionnaire to know the opinions of a large number of women

- Group Discussions - In a group discussion, contradictory opinions and points of view of different women can be openly discussed and analysed

- Shivir - In there, women come together in an informal and free atmosphere to share problems

- Research Team - formulation of research team helps in providing technical expertise to study the problem and finding the appropriate solutions

- Fact finding visits help a group to find out the reality and develop confidence

- Audio-visual production - use of audio-visual aids help to facilitate analysis and reflection for illiterate masses

- Theatre can also be used to generate awareness about the problems among common people to stimulate further analysis reflection and action

MODULE 104

Theme 104.4: Nature and Sources of Data

Expected Outcome

The participants will

- understand the need of data required for girls' education and development

- know primary and secondary sources of data for women's education and development

- will analyse data gaps.

Content Points

- Data provides the basic inputs for the analysis of situation It provides diagnostic and forecasting indicators of women's education and status

- It helps in developing programmes, formulation of policy, planning and implementation strategies

- Data is needed for girls' education and development (demographic, educational, social, economic, political etc)

    - Main sources of Data

        (a) Primary Sources (Here the invistigator collects data personally or through local agents He or she has to be on the sport for conducting the enquiry and he/she has to meet people from whom data has to be collected)

Example

Data collected through Field Surveys Sample Surveys, Case Studies Participant Observations

(b) Secondary Sources of Data - the data is collected through printed material reported by other sources

There are several agencies at district, state, National and International levels collecting and processing data on several socio-economic, educational and demographic indica tors These agencies publish data through various publications

Data Gaps

- Net enrolment ratio is not available Therefore, progress towards UPE and UEE can not be judged and monotired

- Number of repeators is not available, flow rates between the grades cannot be obtained and hence, exercise of internal efficiency of education system cannot be undertaken

- Rural urban yearly data is not available

- There is a lack of time series data at the district level

- Work done by many voluntary organisations does not get documented

- Storage of data is not properly done

- Data is not uptodate and there is a wide gap between the collection and dissemination of data

Methodology

Discuss various content points with the help of transparencies and examples

Hand Out

MODULE 104

Selected Publications Published by Central and State Governments

Department of Education, MHRD

- Education in India
- Volume - I Numerical Data
- Volume - II Expenditure and Income Data
- Volume - III Examination Results
- Selected Educational Statistics
- Education in Universities in India
- Expenditure as shown in the Annual Budget in the States
- Progress of Education of SC and ST2
- Districtwise Statistics (quenquinnial)
- Directory of Institutions of Higher Education (biannual)
- Selected Information on School Education in India
  - Handbook of Education and Allied Statistics in India

ii Registrar General of India

- Different Census of India. Publications relating to information at All India. State and District levels

iii Central Stastical Organisaation

- National Accounts Statistics
- Monthly Abstract of Stastics
- Quarterly Bulletins of Economics and Statistics

iv Planning Commission

- Education and Allied Statistics
- Annual and Five Years Plan Documents
- Mid term Appraisals (in between Annual and Five Year Plans)
- Study reports of PEO (Programme Education Organisation)

v *Ministry of Health and Family Welfare*

- Family Welfare Programme in India - Year Book

vi Union Public Service Commission

- Annual Reports

vii University Grants Commission

- Annual Reports
- University Development in India

viii N C E R T

- Annual Reports
- National Talent Search Examination Results

ix N I E P A

- Annual Reports
- Educational Administration Survey Reoports (Occassional)
- Basic Educational Data A Compilation (Occassional)

x Reserve Bank of India

- R B I Bulletin

xi Directorate of Adult Education

- Literacy Digest (Occassional)

xii State Government

- Statistical Abstracts of different states and union territory governments published by the State/Directorate/Bureau of Economic and Statistics
- State Annual Educational Plans
- State Annual Reports
- State Survey Reports
- Year Books of State
- District Developmental and Educational Plans
- District Statistical Handbooks
- NIC-NET
- Regional and local news papers publications of universities, professional journals International Organisations like World Bank, UNICEF UNESCO UNDP WHO, ILO, UNFPA etc also publish statistical documents

MODULE 104

Theme 104.5· Reseaches on Women's Education in 19th and 20th Century

Expected Outcome

The participants will

- understand trends in researches on women's education

- acquire knowlede about types and mode of researches being carried out in women's education

Content Points

- Review of literature and studies carried out in women's education in 19th and 20th century

- Research trends in women's education in 19th and 20th century

- Shift from descriptive macro studies to micro studies from general to particular, from un-disciplinary to inter-disciplinary and multi-disciplinary approach, from documentary analysis to participatory observation using indepth interviews and questionnaire techniques

- Needed types of researches in the field of women's education - Informative, Analytical, ameliorative, reformative, application oriented

- The need to focus on critical analysis of gender relations social, economic, political and legal roles of men and women within societies

- Utilizing women's education for process of women's empowerment through education, intervention in policy planning, curriculum development teacher training and curriculum transaction, community involvement and public cooperation

- Mode of researches mainly, action and participatory

MODULE 104

Theme 104 6: Basic Indicators of Women's Education and Development

Expected Outcome

The participants will

- acquire knowledge about characteristics, uses and classification of indicators of women's education and development

- understand choice of indicators for women's education and development

Content Points

Indicators

- The definition - An indicator is a statistical number which indicates certain aspects of reality

- Characteristics of an indicator

    - It is quantifiable
    - Indicators make general comment
    - They indicate something beyond their own properties
    - They are temporal (keep changing)
    - They are context specific

- Indicators are used for
- Evaluation
- Diagnosis
- Research
- Comparison of the system

- **Different types of indicators**
  - Demographic
  - Social
  - Economic
  - Political
  - Educational

- Classification of Educational Indicators

  i. Commonly used educational indicators e.g. literacy rate, enrolment ratio etc.

  ii. Indicators used in educational researches e.g.

  - Input indicators
  - Process indicators
  - Output indicators
  - Outcome indicators

  System approach

  iii. Indicators to evaluate the educational system

  - Indicators of growth
  - Indicators of equality
  - Indicators of quality
  - Indicators of efficiency
  - Indicators relevance

  iv. Equal opportunity indicators

  v. Women Empowerment Indicators

  vi. Basis of interpretation of indicators

  - Self reference
  - Norm reference
  - Criterion reference

- Choice of indicators for women's education and development

  - Indicators to show progress of women over a period of time in different sectors

  - Indicators to show progress of women as compared to men.

  - To show intra group differences (general, SC/ST, rural/urban) among women

- Relationship between different indicators of women's education and development

Methodology

- After giving a brief introduction about the indicators explain choice of indicators for women's education and development

- Show transparency and explain the indicators given in it

- Ask the participants to collect atleast 15 indicators of women's education and development of their state/district from secondary sources

Handout

MODULE 104

DEMOGRAPHY	List of Indicators
Density of population (excludes	Number of persons per sq km of land are under water i e $\frac{\text{Population}}{\text{Total Land area in km}}$
Sex Ratio	i e $\frac{\text{Total Males}}{\text{Total Females}} \times 1000$
Crude Birth Rate (CBR)	Number of live births per 1000 persons in a given year i e $\frac{\text{Total live births in a year}}{\text{Total mid year population of the year}} \times 1000$
Crude Death Rate (CDR)	Number of deaths per 1000 population in a given year i e $\frac{\text{Total deaths in a year}}{\text{Total mid year population of the year}} \times 1000$
Expectation of life at Birth	Average number of additional years a person would live if current mortality trends were to continue
Total Fertility Rate (TFR)	Average number of children that will be born alive to a woman during her reproductive span (15-49 years) of life

Total Marital Fertility Rate (TMFR)	Average number of children born alive to a married woman during her reproductive span (15-49 years) of life conforming to the age specific marital fertility rate in a given year
Infant Mortality Rate (IMR)	Number of deaths of infants under one year of age in a given year per 1000 live births in that year
Child Mortality Rate (CMR)	Number of deaths to children in age group 0-4 years per 1000 child population (0-4 years) in a given year
Age Specific Death Rate	Number of deaths in specific (ASDR) age group per 1000 population in the same age group in a given year
Child Women Ratio	Number of children in age group 0-4 years per 1000 women in the age group 15-49 years i e $\frac{\text{No of children aged 0-4}}{\text{Females aged 15-44}} \times 1000$
Child Dependency Ratio	Number of children in age group 0-14 years per 1000 persons in the age group 15-49 years
Educational Literate	One who can read and write any language with understanding (census) The main source of data on literacy is Census Publications
Liteacy Rate	Number of literate persons per100 persons i e $\frac{\text{Total literates}}{\text{Total population}} \times 100$

Age Specific Literacy Rate — Number of literates per 100 persons of a particular age group

$$\text{i.e.} \quad \frac{\text{Total literates in a particular age group}}{\text{Total population in that age group}} \times 100$$

Enrolment Ratio — These ratios indicate that proportion of children of a certain age who are enrolled. These are specifically useful because they give a direct and a quick idea of enrolment as a measure of participation of population zones and regions and make comparisons easy.

G.E.R

$$\text{i.e.} \quad \frac{\text{Total enrolment in a particular stage of education}}{\text{Total population in the relevant age group}} \times 100$$

(a) Gross Enrolment Ratio — These ratios are calculated by dividing total enrolment in a given educational level (whatever may be the pupil's age) by the age group corresponding to the official age for the level. For example primary education lasts for 6 years and if the official entry age is 6 years, the official age group corresponding to the primary education in the 6-11 years group e.g.

Gross Enrolment Ratio at Primary Level

$$\frac{\text{Total Primary Enrolment (6-11)}}{\text{6-11 age group population}} \times 100$$

(b) Net Enrolment Ratio — In G.E.R, we have taken total at Primary Level enrolment irrespective of age, to get the net enrolment ratio, we have to take only pupils of the official age

for the level of education concerned e.g. for primary level official age group is 6-11 years e.g.

$$\frac{\text{Enrolment aged 6-11}}{\text{6-11 Age Group Population}} \times 100$$

(c) Age Specific Enrolment Ratio (ASER)	Enrolment of a given age group population in a year irrespective of grades or levels of education e g. enrolment ratio for 10 years old.
	Enrolment of 10 years old ——————————x 100 Population of 10 years age group
Drop Outs	Leaving school/class without completing the course or required stage of education
Stagnation	Repeat the same class/course
Wastage	Includes both stagnation and dropouts
	Transition Rate It shows students flow from one level of education to the other e g transition rate from primary to secondary education shows the percentage of pupils in the final class of primary education who are admitted to control their studies in secondary education during the following year
Transition Rate from Primary to Secondary Education	New entrants to 1st year secondary in year t+1 ——————————x 100 Enrolment in final year of Primary Education in year t
Repitition Rate	Repitition rate is the percentage ratio for a grade 'g' in year 't' between t-1 and enrolment in the year 't' in the same grade
Repetition Rate for Grade 'g' in year 't'	Number of pupils repeating grade 'g' in year t+1 ——————————x 100 Total number of pupils in grade 'g' in year 't'
Dropout Ratio	Number of pupils dropping out from grade 'g' in year 't' —————————— x 100 Total number of pupils in grade g' in year 't
Pupil Teacher Ratio	Average number of pupil per teacher
	Total pupils in a particular stage/class i e —————————— Total teachers in particular stage/class

ECONOMIC

Work Participation Rate	Number of worker persons per 100 persons (Percentage of workers among population)
Number of Main Workers	Number of main workers (who are engaged in any economically productive activity for 183 days or more) per 100 workers
Percentage of Marginal Workers	Number of marginal workers (who are engaged in any economically productive activity for less than 183 days) per 100 workers
Percentage of Main Workers by Occupational Categories	
(a) Cultivators	Number of persons working as cultivators per 100 main workers
(b) Agricultural Labourers	Number of persons working as Agricultural labourers per 100 main workers
(c) Household Industry Workers	Number of persons working as household industry workers per 100 main workers
(d) Other Workers	Number of persons engaged in activities other than the three categories of main workers per 100 main workers

SOCIAL

Incidence of child marriage

Incidence of Rape

Incidence of Dowry Deaths

Incidence of Cruelty

Incidence of Eve Teasing

Incidence of All Crime Against Women

POLITICAL

Percentage of Women Voters

Percentage of Women in Panchayats, Zila Parishad and Public Bodies

Percentage of women MLAs/MPs to the total MLAs/MPs

Percentage of Women Judges to the total Judges

MODULE 104

Theme 104.7: Tabulation, Presentation and Analysis of Data

Expected Outcome

The participants will

- develop skills in presenting data through tables, diagrams and graphs
- be able to calculate simple stastics
- will develop skills in analysing data on the basis of gender

Content Points

- Data, types of data Discrete and Continuous series of data, Frequency, tables
- Presentation of Data
- textual form
- tabular form
- diagrammatic and graphic representation - line graph, bar graph, pictograms, pie diagrams, circular diagrams, cartograms, histograms frequency polygon etc
- Charts and maps
- Calculating simple statistics eg

  i ratios, rate and percentage

  ii computing mean median, mode (measures of central tendency)

iii calculating range, quartiles, percentiles, mean deviation and standard deviation (measures of dispersion)

iv Normal Probability Curve (NPC)

- Simple trend analysis

- Comparing, analysing and interpreting data on the basis of gender

- Data has to be segregated on the basis of gender

- In the presentation and analysis of data (e g tables, graphs etc) girls'/women's position on various indicators has to be highlighted

- Disparities (male/female, within female groups e g rural/urban, SC/ST etc) have to be highlighted

Methodology

- After initial discussion draw diagrams and graphs on blackboard or show the transparency

- Calculate ratios, rates and percentage, mean, range with the help of participants

- Explain analysis of data on the basis of gender

v **Practical Exercise**

- The participants have to compute and analyse the following indicators and statistics for a district of their respective state

- Population Density (R/U)

- Sex Ratio (R/U)

- Literacy Rate Male - R U
  Female - R U

- Gross Enrolment Ratio at Primary Level (I-V)	Male - R/U	Female - R/U
- At Upper Primary Level (VI-VIII)	Male - R/U	Female - R/U
- Work Participation Rate	Male - R/U	Female - R/U
- Percentage of Main Workers	Male - R/U	Female - R/U
- Percentage of Main Workers by Category of Occupations - Cultivators	Male - R/U	Female - R/U
- Agricultural Labourers	Male - R/U	Female - R/U
- Household Industry Workers	Male - R/U	Female - R/U
- Other Workers	Male - R/U	Female - R/U
- Percentage of Marginal Workers	Male - R/U	Female - R/U

TRANSPARENCY 104.71

PIA DIAGRAM

Percentage of Girls in School Enrolment by Stages, India - 1950-51 and 1995-96

Source Ministry of Human Resourse Development India
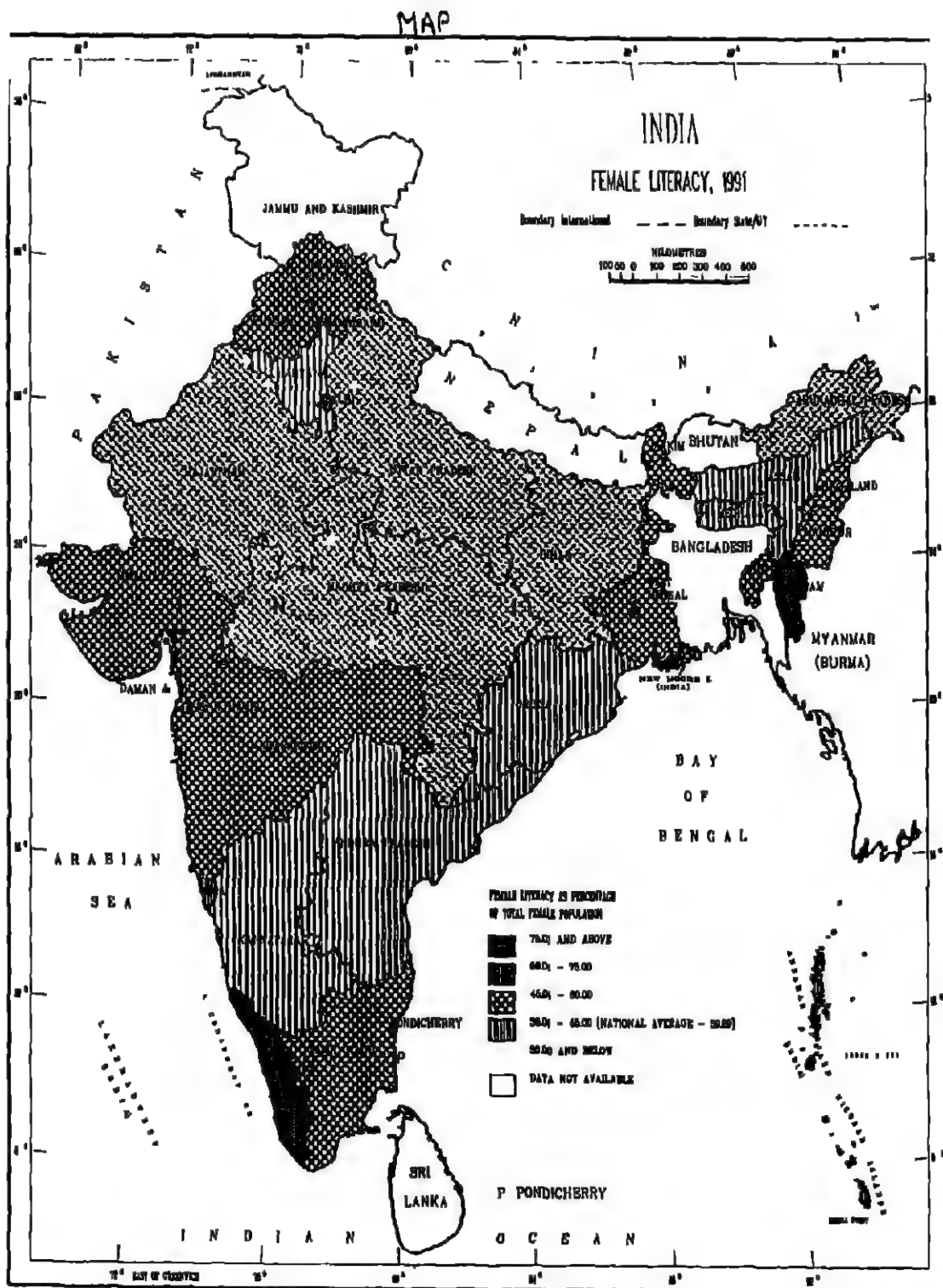
MAP

INDIA
FEMALE LITERACY, 1991
JAMMU AND KASHMIR
BANGLADESH
BHUTAN
MYANMAR
(BURMA)
BAY
OF
BENGAL
ARABIAN
SEA
INDIAN OCEAN
SRI
LANKA
P PONDICHERRY
PONDICHERRY
DATA NOT AVAILABLE

TRANSPARENCY 10473

BAR GRAPH
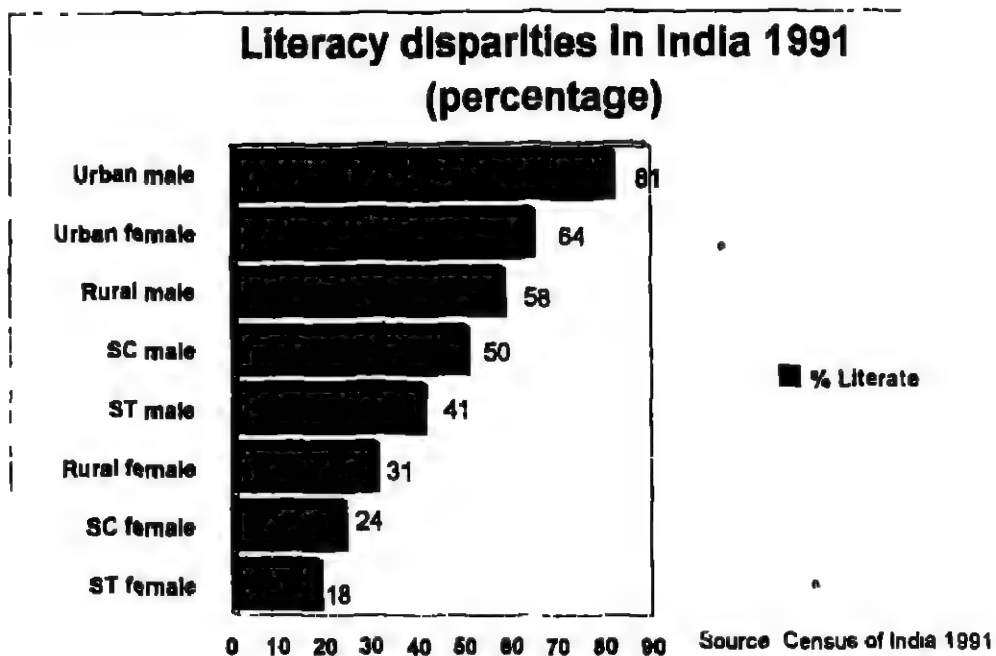
Gender and caste disparities are large Urban females are ahead of rural males and SC and ST females are at the lowest levels

MODULE 104

Theme 104.8 Monitoring and Evaluation of EducationalProgrammes for Equal Opportunities and Women's Empowerment.

Expected Outcome

The participants will

- acquire knowledge why monitoring and evaluation of educational programmes is needed

- understand how monitoring and evaluation of educational programmes can be carried out

- understand the need for MIS

Content Points

Need

Need of Data for Monitoring and Evaluation of Educational Programmes of Equal Opportunities and Women's Empowerment - Information or data is power and it is needed for making an assessment of the present situation, gaps and the magnitude of the task with reference to policy goals, for diagnosing the problems, for making projections and policy formulation, planning, implementation, monitoring and evaluation of specific programmes

Process

- For Monitoring and Evaluation of Educational Programmes, the data should be programme specific

- The issue of women's equality cuts across all levels and types of education Therefore, the monitoring and evaluation of

educational programmes should be done right from pre-primary level onwards, i e

- at pre-primary level
- at primary level
- at secondary level
- at higher secondary level etc

- Monitoring and evaluation has to be done of (a) inputs (b) process and (c) outputs at all the levels The inputs may include the infrastructure and physical facilities available for the girls'/women's education The process may include evaluation of gender bias in textbooks, curriculum and its transaction and attitude/role of teachers/parents towards girls/women Output may include educational achievement of girls/women, employment opportunities for girls/women

Methodology

Lecture cum discussion method will be followed

MODULE 105

Mobilisation of Women and Community

Duration: 10 hrs

Rationale

It has been repeatedly emphasised in the NPE and its POA (revised) that women should be empowered for raising their social status The National Perspective Plan (1988-2000) also perceives women as an important force process Hence it is necessary that they should be mobilised and motivated for action so that their potentialities are fully and properly utilized

For women's empowerment, it is very important to mobilise community so that it accepts women not in developing their total personality by putting least resistance in way of their self expression and motivation for action To obtain the maximum output in this process it is important to address women and local community simultaneously

The results can be encouraging if the participatory approach for mobilising women and community is followed The ultimate objective is that women and the community should grow together through self efforts and mutual support

Keeping the above points in view, the module 'mobilisation of women and the community' has been included in this training manual

Objectives:

The participants will be able to

i Understand the history of women's movement in India and the world

ii Explore the strategies to involve community for women's empowerment

iii Analyse role and functions of some organisations working at grass root level e g Mahila Mandal, Mahila Samakhya etc

iv. Develop skills to mobilise women for social, economic and political action

Themes

1	History of Women's Movement in India	-	1 5 hrs
2	Women's Movement in the World From Mexico to Beijing 1975-95	-	2 hrs
3	Empowerment of Women at the Grass Root Level: Mahila Samakhya, Mahila Mandal, Mahila Samooh	-	2 hrs
4	Preparing women for Action Educational Economic, Social and Political	-	2 hrs
5	Agencies Working for Women's Development	-	2.5 hrs

MODULE 105

Theme: 105.1 History of Women's Movement in India

Expected Outcome

The participants will be able to

- Understand the rise and growth of Women's Movement in India
  - Rise of Women's Movement in India
  - Formation of women's associations
  - All India Women's Conference Its Role
  - Congress has a women's wing in 1942
  - Demand of women's delegation for women's education and franchise
  - Contribution of women's movement to India's freedom struggle
  - Growth of women's movement after independence
  - India and the International Women's year
  - How is Indian women's movement different from the West

Methodology

Lecture-cum-discussion method will be followed

MODULE 105

105.2: Women's Movement in the World

Expected Outcome

The participants will

- become familiar with women's movement in the world
- be able to compare these Indian women's movement

Content Points

- 1975 declared as International Women's year. The conference was held in Mexico Indian delegation had Indian women dignitaries like Margaret Alva and Shyamala Pappu

- International Women's Decade 1975-1985 declared its goal as achieving quality between men and women

- Improvement noticed in women's access to education, health care, participation in paid labour force Almost every country worked through its Policies and Programmes to work for improved status of women

- Since the Nairobi Conference in 1985, profound changes have been experienced A worldwide movement towards democratisation has opened its political process

- Growing strength of women's organisations/groups is being realised

- Thrust during the decade has been on empowerment of women

- Beijing conference held in September, 1995 is a new International Commitment to the goals of equality, development and peace

- The Platform divided into sex chapters identified 12 critical areas of concern which come in way of women's advancement

- The Platform affirmed the Commitment of Governments to eliminate discrimination against women and remove obstacles to equality

Methodology

Lecture followed by discussion

MODULE 105

Theme 105.3: Empowerment of Women at the Grass Root Level: Through Mahila Mandals, Mahila Samakhya and Mahila Samoohs

Expected Outcome

The participants will become familiar with with the significance of Mahila Mandals, Mahila Samakhya and Women's Samoohs for Empowerment of Women

Content Points

- Role of Mahila Mandals in empowering women

- Role of Mahila Samakhya in bring about equality of women

- Role of Mahila Samoohs in bring women together, planning programmes for women and working for their implementation and providing educational inputs for women

- tackling of socio-cultural problems

- organizing income generation programmes

- creating an environment in the villages for the social acceptance of Mahila mandal, Mahila Samakhya and Mahila Samoohs

Methodology

Lecture and discussion

A film on Mahila Samakhya.

MODULE 105

Theme 105.3

(Recommendations of National Commission on Self Employed Women and Women in the Informal Sector, June, 1988)

Mahila Mandals

In many States, Mahila Mandals exist historically e g in the North East, they are playing a significant role in the community In other States, village level mahila mandals have come up after Independence their role has not been effective, nor have they been able to involve a majority of the poor women in the village

With the increase in development and poverty alleviation programmes, reaching the interior parts of the country, women in the villages have become aware and are in a position to do something to improve their situation Many mahila mandals, so far dormant are today eager for action

The Commission also observed that the mahila mandals have tremendous potential in actively involving village women in changing the rural scene But this potential is still not utilised

The Commission perceives the villages mahila mandal as a suitable vehicle for change Therefore, it strongly recommends the following

1 The village mahila mandal should be vigorously utilised in the implementation of the poverty alleviation programmes of the Government The village mahila mandal should be entrusted with the responsibility of identifying IRDP beneficiaries The list submitted by the village mahila mandal should carry enough weightage at the decision making level The village mahila mandal may

also be entrusted to prepare a list of work site and proposed programmes under NREP, TRYSEM, RLEGP, Social Forestry and the like

2 The mahila mandal should be encouraged to initiate innovative programmes like smokeless chullah, sulabh latrines, income generating skill trainings, water management and biogas plants

3 The Government should provide adequate support for the mahila mandal in the form of resources like funds, a pucca house, a battery transistor and a tape recorder, electronically recorded songs, dramas, which carry effective messages, information

4 The mahila mandal should be provided with guidance from the earlier proposed District Women's Development Officer, who under the proposed Development Officers will be in-charge of monitoring and laising areas.

The Government must give recognition to the mahila mandals There will be resistance from the local officials and vested interest group against the mahila mandal getting active, so a strong sustained support will be absolutely necessary from the Government The mahila mandals may make mistake They will take time to prepare themselves for this role, but once they become active, they will be in a position to energise the mass of women workers The commission recognizes that this is the only way to involve village women actively in the development process

MODULE 105

Theme 105.4: Preparing Women for Action: Educational, Social, Economic and Political

Expected Outcome

i. The participants will develop skills for preparing women educational, social, economic and political action

ii The participants will become familiar with the process of organising women in groups

Content Points

- Need to prepare women for individual and collective action in the area of social, political and economic issues - despite the fact that government has passed so many laws to help women and more and more women are working in different fields, problems of girls and women are there

<u>How to Prepare Women for Action</u>

- Prepare women according to their needs - problems of girls/women differ from region to region and in different age groups Therefore, action required will be of different nature

<u>For Educational Action - Develop Skills in Women</u>

i for organising awareness campaigns

ii for effective group functioning and group leadership

iii efficient communication skills in relation to illiterate and deprived groups

iv of collecting data and household information

v to identify ends of community

<u>Generate Awareness Among Women About</u>

i Socio-cultural impediments to literacy

ii Forces in society and causes of oppression and marginalisation in case of women

iii National Literacy Mission

iv Non-formal Education and UEE

v Incentives for SC and ST girls and girls of other background communities and women

vi Pre-school education

viii Adult education and income generating scheme

<u>For Social Action</u>

- Identification of issues for women

- Mobilizing women

- What strategies should be chosen for changing values, attitudes and behaviour

- Awareness about government schemes/programmes and other organisations for upliftment of women and helping women in distress

- Awareness of mass media as a tool for spreading messages

- Influencing of society and family as tools for improving position of women

<u>Preparing Women for Political Action</u>

- They should know about governmental structure at village level

- Make them aware about elected bodies e g gram panchayat and they must participate in these bodies

- Women should have knowledge about political processes

- They should know the advantage of electoral process and they should exercise their franchise

<u>For Economic Action</u>

- Awareness about land, water, forest, distribution patterns and issues of injustice for women

- *Identification of raw materials which can be exploited for employment*

- Information about employment opportunity existing government schemes/programmes for helping women economically

- Opportunities for income generation - technical information and feasibility, government's income generating schemes

- Knowledge of marketing

- Awareness of local economic institution, banks and cooperatives

Methodology

The content points will be covered with the help of transparencies

Field Visit

Take the participants to an organisation which prepares women for different actions Ask the participants to prepare a report and discuss it

Transparency 105.4.1

Status of Women

* Status of women at Home in Village and Wider Society.

* Denial of participation in decision making in social, economic and Political processes

* Unequal access to distribution of resources - health, food, education, technology and political resources

* Burden of household work reproductive responsibilities/work outside home

* Violence against women - domestic and others

* Participation in political processes

* Discrimination against women in respect of property rights/wages employment

Transparency 105.4.2

Women and Social Action

* Identification of Issues for Action
* Mobilizing Women
* Strategies for changing values attitudes and behaviour
* Un-registered Groups.
* Forms of action available to women mass media publicity
* Influencing movement/society and family
* Planning social action
* Forms of communication street play, jatha etc

Transparency 105.4.3

Women and the State/Government

* Governmental structure at village and block level and women's role in the same

* Women and local power structure why women are not represented in Panchayat Gram Sabha etc

* Women as beneficiaries of government schemes and programmes delivery system and its access to women

* Women and Electoral processes

Transparency 105.4.4

Women and Economy

* Land water and forest distribution pattern and issues of injustice

* Women and Occupation - Identification of raw materials which can be explored for employment

* Poultry, piggery, sheep rearing, dairy sericulture etc

* Opportunities for income generation, technical information and feasibility

* Unpaid labour inputs by women

* Women and Marketing. Lack of access and cheating by middle men

* Local Economic Institutions and women's Role in Cooperative Banks Cooperative Laws

* Local crops and improved methods of storage

* Family budget and income management and women's role in it

MODULE 105

Theme 105.5. Agencies Working for Women's Development and Empowerment

- There are many structures instituted at the governmental and non-governmental level for the advancement of women

National Machinery

- For women's development and empowerment, the Government of India revitalised the governmental machinery at the national level by setting up a separate Department of Women and Child Development under the Ministry of Human Resource and Development

- The Women's Bureau in the Department of Women and Child Development is made responsible for main streaming women into national development by raising their overall status The Bureau, in its nodal capacity formulates policies and programmes, inacts/amends legislations affecting women and coordinates the efforts of both governmental and non-governmental organisations working for women The programmes of the Bureau include employment and income generation, welfare and support services and gender sensitization and awareness generation

- **The Central Social Welfare Board (CSWB).** At national level, it acts as an umbrella organisation networking through State Welfare Boards and through them thousands of voluntary organisations working for the welfare and development of women and children Its important programmes includes socio-economic programmes, Mahila mandals and Training of Rural Women in Public Corporation

CSWB is involved in women's development at three levels - policy at the central level through its linkages with voluntary women's organisations, formulates its own development programmes for women on the basis of funds given by government, implement programmes through its welfare extension projects which reach renote areas of the country

- NIPCCD - New Delhi The Women's Development Division of National Institute of Public Cooperation and Child Development was set up in 1986 to raise the issues on women and to provide technical support and guidance to government in the of research and training relating to women and children.

- **The Women's Cell** - set up in the Central Ministeries/Departments of Labour, Industry, Rural Development Science and Technology are expected to develop strong linkages between the national machinery and the women related Ministeries/Departments

- **National Commission for Women** - It was set up in 1992 as the highest statutory body to over see the safeguarding and protection of women's rights and privileges. Similar Commissions, are being set up at the state level

Some Non-Government Organisations

	Name of Organisation	Year of Establishment	Activities
1	All India Women's Confernece, 6, Bhagwandas Rd New Delhi 110001	Established in 1929 with the objectives of emancipation of women and upliftment of women and chidren	Research, Training Conscientisation, Counselling, Action Projects, Conferences, Workshop
2	Centre for Women's Development Studies (CWDS), 25, Bhai Vir Singh Marg, New Delhi-1	The Centre was established in 1980 as a result of the investigations of the committee on the status of women in India (1971-74) and the United Nations Decade for Women's Equality, Development and Peace	Research,consultancy, Counselling Action Projects, Conference, Workshop, Documentation
3	Karmika, B-201, Gautam Nagar, New Delhi-110049	A Delhi based women's organisation started in 1979 under the leadership of Ms S Butalia	- Conducting income generating project - Provide legal aid and advice through a panel of lawyers as well as family counselling services - Health care & awareness generation on gender issue - Extension work by organising seminars workshops, area camps, film shows to educate and generate amongst women
4	National Federation of Indian Women, Ansal Bhawan, New Delhi	Founded in 1954 It has branches all over the country with many people working on a voluntary basis	- Fighting for the causes of women - Joining hands with other smaller organisations in their welfare activities - Training of women in income generating activities - Working to eradicate illiteracy amongst women

NATIONAL MACHINERY
WITH ITS
INSTITUTIONAL SUPPORT
Plg
Comm.
M/
R D
M/
Labour
State
Commissions
for Women
State S W
Advisory
Boards
CSWB
NCW
NATIONAL
MACHINERY
(Dept of WCD)
M/
Agr &
Co op
M/
H & F W
D/
S & T
D/EDN
NIPCCD
State
Depts/DTES
of WCD
M/
Welfare
M/
U D
Regional
Offices of
NIPCCD
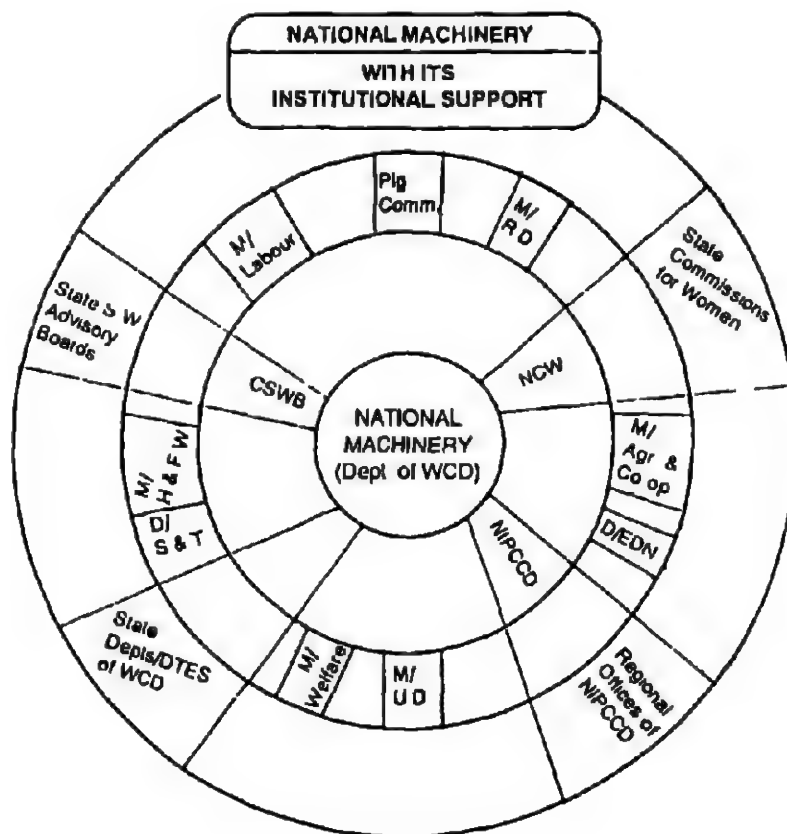
Module 105

Bibliography

1 Deckard, Barbara Sinclair, The Women's Movement Political, Socio-Econbomic and Psychological Issues

2 Duggal, Janak, Haryana Women on the Move, (Part1) A report, Department of Women's Studies, NCERT, 1989

- Haryana Women on the Move (Part II) A Report, Department of Women's Studies, NCERT, 1989

3 Kumar, Radha, The History of Doing An illustrated Account of Women's Right and Feminism in India, 1800-1990, London, 1993

4 Mukherjee, Subrata and Ramaswamy, Sushila, August Bebel Women in the Past, Present and Future, New Delhi, 27

5 Rani, Raj, "Mahila Samakhya show the Way", article published in Social Welfare, New Delhi, June, 1996

6 Raj, Marthreyi Krishna (ed), Women's Studies in India, Some Perspectives, Bombay, 1986

MODULE 106

Gender Sensitive Project Planning
Duration - 16 hrs. (Theory 6 hrs. + Practical 6 hrs.)

Rationale

Due to increasing resource constraints and the need to accelerate the pace of development through the optimum utilization of all resources both human and material, it is increasingly being realized that well planned and formulated projects can be an effective means of implementing policiesand plans In the area of women's education, there could be no better tool for effective resource mobilization and itsutilization than the gender based educational programmes and projects planning

Objectives

The participants will be able to

i. *acquaint themselves with the concepts of educational programme* and project planning

ii develop skills in project planning for women's education and development

iii get sensitized to the need of monitoring and evaluation of educational programmes and projects

iv. bring a strong awareness about gender perspective in educational project planning.

Themes

1	Project Formulation and Implementation	-	2 hrs
2	Project Monitoring and Evaluation	-	2 hrs
3	Project Illustrations	-	2 hrs
4.	Practical Exercise	-	10 hrs

MODULE 106

Theme 106.1: Project Formulation and Implementation

Expected Outcomes:

The Participants will

i acquire knowledge about meaning and characteristics of project and phases of project planning

ii discuss project formulation and implementation in detail

Content Points

- Definition and relationships of terms like -
  - Policy
  - Plan
  - Programme and
  - Project

  - **Project** - *A project is a set of planned activities which are interrelated* It clearly specified what is to be accomplished, over what period of time and at what cost

  - **Characteristic of a project**

  - It should have a start and a finish
  - It is time bound
  - All the activities are interrelated
  - Every activity has a specific target
  - There is sequence of activities in a project.
  - Flexibility is there in a project
  - People are involved on ad-hoc basis in projects
  - Project has to be funded

- It is meant for a clientele group

- <u>Phases of a Project</u>

- Project Indentification

- Project Formulation

- Project Appraisal (efficient screening)

- Project Authorization (approval of a project)

- Project Implementation

- Project Monitoring

- Project Evaluation

- <u>Project Identification and Formulation</u> - Project is identified by the study of environment (Analysis of current situation)

- Project objectives are formulated

- Project elaborating specific details of activities which are designed to achieve a particular objective or target

- <u>Project Implementation</u>

Control

Environmental	Inputs	Process	Outcome	Long term
setting Analysis of Current situation (Action Planning)	Material Non-Material	management pedagogical	(Intermediate)	affects

- Problems in Project Implementation

- Financial

- Equipment related

- Educational Material related

- Technical

- Natural phenomena (Floods, fires, earth quakes etc)

- Monitoring and evaluation of the project is necessary during the entire implementation

Methodology

Discuss content points with the help of transparencies

Transparency 106.1.1

MODEL OF IMPLEMENTATION OF EDUCATIONAL PROGRAMMES AND PROJECT
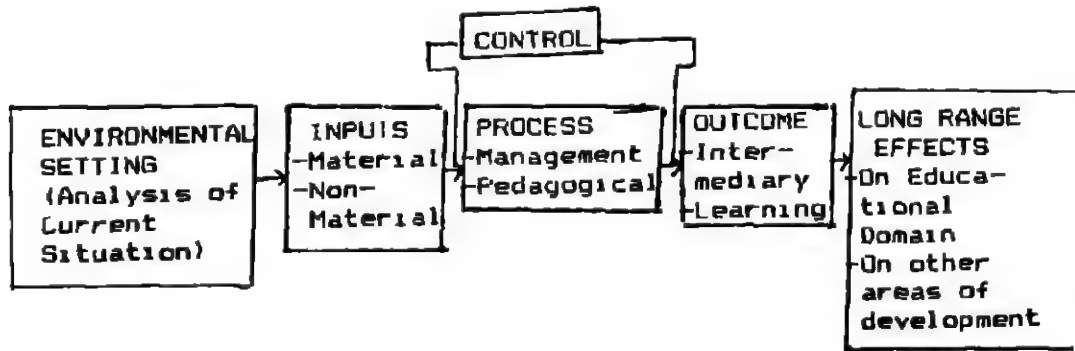
MODULE 106

Theme: 106.2: Project Monitoring and Evaluation

Expected Outcomes:

i. Understanding the concept of project monitoring, its ojbectives and process

ii. Understanding project evaluation and its main features

Content Points

Definition of Monitoring - Monitoring means to

See that a programme/project is running as was planned, monitoring is for taking action

- Objectives of monitoring - main objectives is to develop an effective means of reporting the progress of implementation and the status of finances of a project. It is done to control (Optimise) cost and time

- Process of monitoring

- Methods of monitoring

Project Evaluation - Evaluation means making judgement i e value judgement

- Main features of project evaluation

- Types of evaluation

Methodology

Explain project monitoring and evaluation with the help of transparencies

Transparency 106.2.1

Definition of Monitoring

* It is a system of control
* Of watching the progress of implementation of the programme
* With a view to make corrective action
* In order to optimise the effectiveness of the programme

Objectives of Monitoring

1. Economize on inputs
2. Optimize the outcomes
3. Check resources drain and wastage
4. Render targets realizable
5. Minimize the risk of failures
6. Introduce timely remedial measures
7. Offer prompt modification in certain decisions, if needed, etc

Transparency 106.2.2

Process of Monitoring

1. Select the programme
2. Select activities which are critical
3. Select Areas
4. Organizational Structure Requirements
5. Develop Information System
6. Develop Performance Standards and Indicators
7. Measure and Analyse Results
8. Suggest/Take Corrective Action

Transparency 106.2.3

Methods of Monitoring

1. Review Meeting
2. Field Visits
3. Task Forces, Committees, Stearing Groups
4. Work Schedules (PERT/CPM)
5. Progress Reports
6. Performance Budgeting

Transparency 106.2.4

Definition of Evaluation

It is a process of measuring the extent, efficiency and effectiveness with which a given organisation or programme has achieved or is in the process of achieving the objectives it purports to achieve

Main Features

1 It is systematic and continuous process

2 It is process of making assessment in terms of their objectives

3 It is emperical in process

4 It is judgemental in approach

5 It is a tool for decision making

Transparency 106.2.5

Types of Evaluation

According to Programme Implementation Stages	According to Approaches to Evaluation	According to Organisational View Point
1 Context Evaluation (feasibility analysis front end analysis, pre-sage, appraisal, pre installation)	1 System Analysis Model	1 Internal Evaluation
2 Impact Evaluation (Summative, terminal, final, effectiveness, product)	2 Goal oriented Model	2 External Evaluation
3 Formative Evaluation (developmental process)	3 Decision Oriented Model	
4 Evaluation of Evaluation (meta-evaluation, evalu-audit)	4 Goal Free Model	
5 Evaluability Assessment (feasibility of undertaking evaluation)		

Transparency 106.6

FRAMEWORK FOR MONITORING AND EVALUATION

WHAT WAS INTENDED		WHAT HAPPENED
What we needed - People - Money - Equipment etc	RESOURCES	What we had - People - Money - Equipment etc.
What we Intended to do	PROCESSES	What we did
What we Intended to Happen	RESULTS	What actually Happened

Transparency 106.2.7

MONITORING AND EVALUATION IN RELATION TO THE PROGRAMME PROCESS
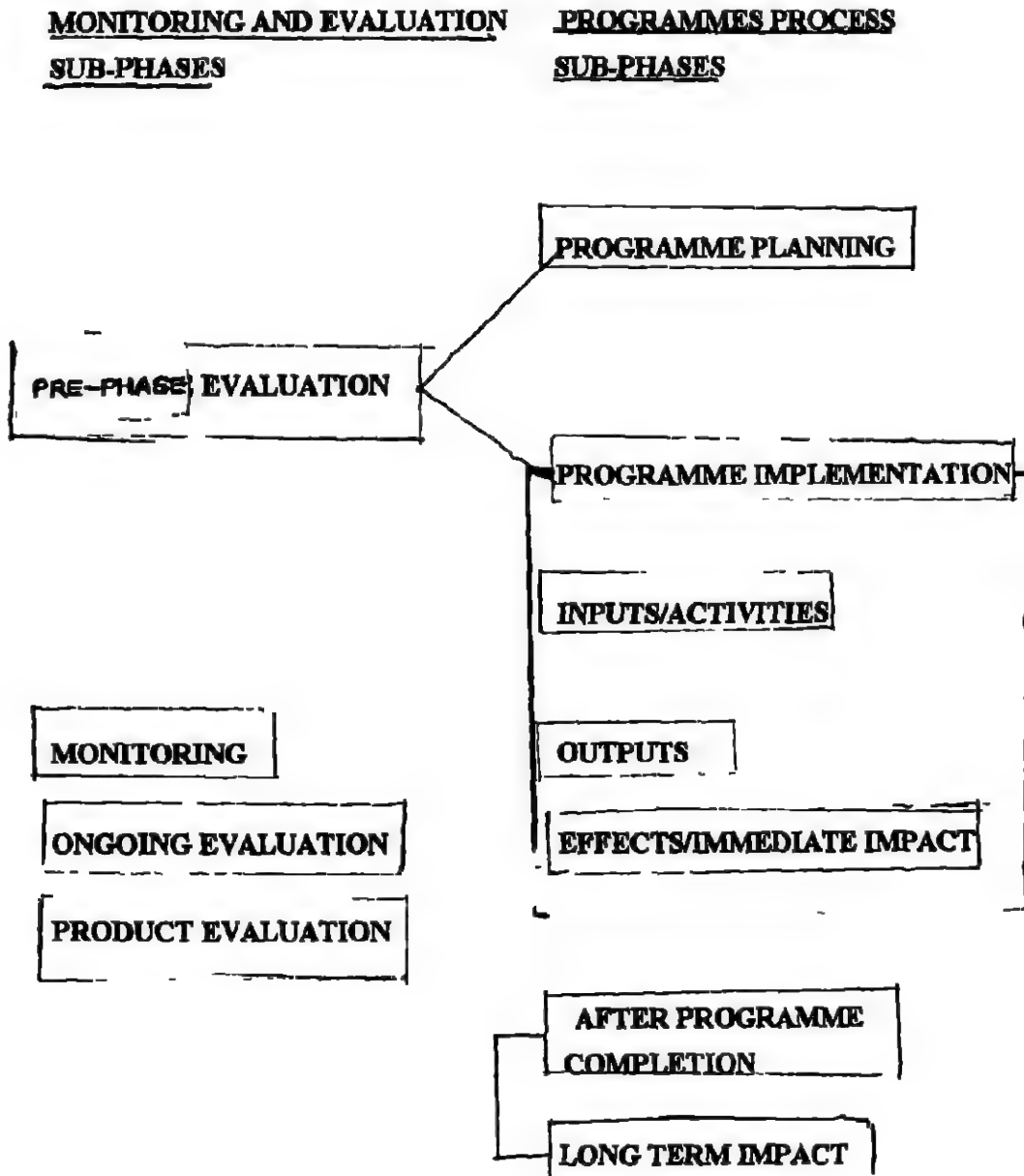
MODULE 106

Theme 106.3: Gender Sensitive Project Planning: An Illustration

District Primary Education Programme (DPEP)

Expected Outcomes

Understanding planning, formulation, implementation and evaluation of DPEP

Content Points:

- Basics of DPEP - DPEP seeks to operationalise para 7 4 6 of the POA 1992
- Purpose of DPEP - to reconstruct primary education as a whole in select districts

Objectives

- Targets - 44 districts in eight states namely Madhya Pradesh, Orissa, Assam, Haryana, Maharashtra, Karnataka, Tamil Nadu and Kerala.
- Implementation - launched in 1993 with external assistance (World Bank and UNICEF)
- Main focus of DPEP
- Project formulation
- Project Implementation
- Monitoring and Appraisal

Methodology

Lecture with the help of transparencies

Transparency 106.3.1

Objectives of DPEP

I To reduce differences in enrolment, dropout and learning achievement among gender and social groups to less than five percent

ii To reduce overall primary dropout rates for all students to less than 10 percent

iii To increase average primary learning achievement by 25 percent over measured baseline levels

iv To provide according to national norms, access for all children, to primary education classes (I-V) i e primary schooling wherever possible, or its equivalent non-formal education

Main Focus

* District level planning

* District chosen represent those where female literacy is below the national average or where the total literacy campaigns (TLCs) have generated a demand for elementary education

* Focus on education for girls, Scheduled Castes and Scheduled Tribes

* Improving effectiveness of education through training of teachers, improvement of learning materials and upgrading of infrastructure facilities

* Involvement of communities in programme planning.

Transparency 106.3.2

Major Studies

- Base line beneficiary studies
- Study on Gender Issues
- Training Needs and Motivation of Primary School Teachers
- Textbook Designing, Production and Distribution
- Educational Problems of Tribal Children
- State Financing of Education

MODULE 106

Theme 106.3 (b) : Gender Sensitive Project Illustration - DPEP - Gender Studies

Expected Outcomes:

Understanding purpose, planning, formulation and implementation of DPEP Gender Studies project

Content Points:

Project Formulation

- Purpose of DPEP Gender Studies to provide input into plan formulation into the content and process of education with a view to promoting girls education and women's empowerment

Objectives

1 Analysing the situation of primary education of girls in low female literacy districts

2 To develop state/district level competencies to improve primary education among girls

Target and Coverages

Being implemented in 44 districts of eight DPEP staates are Madhya Pradesh, Maharashtra, Assam, Haryana, Karnataka, Kerala, Orissa and Tamil Nadu

Sample Design

- 46 low female literacy districts
- One block from each district
- 8 villages and 2 slum locations from each block
- 30-50 households from each village/slum
- Dropout and never-enrolled girls of sampled household
- Primary school teachers of sample villages
- Institutional heads
- Community leaders
- Educational administrators of sampled/villages/ blocks

Tools - 7 interview schedules and case studies and focussed group discussion

Implementation

Through state and district level educational personnel The study was conducted through SCERTs and DIETs National Core Group Team (Gender) provided support at every stage

Funding - UNICEF, MHRD

Monitoring and Appraisal

External - UNICEF, World Bank
Internal - MHRD

Major Findings

Access

- The problem of access was in small sized villages and scattered habitations
- Infrastructure was very poor in villages with population less than 300
- Very large village have only one school which does not fulfil their requirements
- The ratio of middle school to primary school ranges between 1 3 to 1 6 in different states/districts There was a growing demand for girls education but they demanded middle/high schools in village itself

Enrolment and Retention

i Enrolment ratios for girls at the primary level vary from 80% to 116%

ii With the exaption of Kerala, dropout rates are very high

iii. Non-enrolment of girls in very high in Madhya Pradesh

iv Dropout is high among girls above 10 years

Main Reasons of Dropout and Non-enrolment among Girls

- Reasons very from state to state, district to district but some reasons are common

Methodology

The content points will be discussed using transparencies

Transparency 106.3 (b) 1

Specific Objectives of DPEP - Gender Studies

1 Mapping out gender disparities in access, enrolment, retention (and achievement, which is being handled under base line studies)

2 Identify causes for non enrolment and dropout of girls and purpose effective districts/local specific strategies for improved enrolment, retention and achievement among girls

3 Assess the situation of women each district with regard to some social and demographic indicators and women's equality and empowerment

4 To collect information on gender bias in (a) text books, (b) teacher training, (c) teachers attitude, (d) curriculum transaction, and (e) administrator's attitudes

5 To identify supportive community structures such as women's groups, V E Cs, Panchayats, P T As, Teacher Organisations, Youth Clubs for developing effective strategies of UPE among girls

6 Identifying was to facilitate convergence of services of different departments of UPE among girls (focal areas ECCE, Health and Support Services)

7 Study the availability of educational (books, stationery, uniforms) and other incentives (noon meals, attendance prizes etc)

8 To assess participation of women in teaching, administration and other decision making bodies

9 To develop state/district level monitoring and evaluation framework

Transparency 106.3 (b).2

Sample Size

6777 Households were visited

1253 Dropout Girls were interviewed

1351 Never Enrolled girls were interviewed

311 Primary Schools were visited

311 Primary School Heads were visited

740 Primary Teachers were interviewed

470 Community Leaders were interviewed

246 Educational Administrators were interviewed

186 Group discussions were held

Transparency 106.3 (b).3

Main Reasons of Dropout and Non-Enrolment Among Girls

Domestic Work

Care of Siblings

Helping Parents in Occupation

Parental Illiteracy

Parental Lack of Motivation

Early Marriage

Inability of Parents to Provide Books and Stationery

Lack of School or School Far Away

MODUREL 106

Theme: 106.4: Practical Exercise

Expected Outcomes

Developing skill is project planning

The participants have to prepare and present a project proposal in the area of girls' education for their respective states The project proposal should cover purpose, objectives, target group, time schedule implementation strategies, monitoring and evaluation

Discuss the project proposals Ask the participants to modify and submit the proposals

BIBLIOGRAPHY

1 Bergen, S A , Project Management - Oxford, Basil Blackwell, 1986

2 Gray Clifford F , Essentials of Project Management USA, Petrocelli Books, Inc, 1981

3 Krishna, Mridula, Project Planning India, New Delhi, Indian Institute of Public Administration, 1983

4 MHRD, Department of Education, The District Planning Programme

5 Nayar, Usha, Project Formulation Management and Evaluation

6 NCERT, Department of Women's Studies - DPEP - Gender Studies, District Reports, 1995

7 NCERT, Department of Women's Studies - DPEP - Gender Studies State Reports of Eight States, 1995

8 Nayar, Usha Planning for UPE of Girls and Women's Empowerment & Gender Studies in DPEP, NCERT, 1995.

MODULE 107
Methodology of Training

Duration - 11 1/2 hrs

Rationale

Training of educational personnel is essential to promote equality between sexes and women's empowerment in consonance with our constitutional rights, NPE and POA (revised in 1992) There are wide inter-state disparities therefore, the personnel should be trained to handle local specific situations in the field of women's education and development

Purpose.

The purpose of this module is (i) To acquaint the participants with the concept, techniques and methods of training (ii) To enable the participants to formulate and implement gender sensitive training programme

Themes

1	Professional Preparation for Women's Education and Development Training Needs Assessment	1 30 hrs
2	Training of Trainers	1 30 hrs
3 a	Training Process Strategies	1 30 hrs
b	Participatory Training Process	1 30 hrs
4	Evaluation of Training Programme	1 30 hrs

5 How to put a Training Programme on the Ground 1 30 hrs

MODULE 107

Theme 107.1: Professional Preparation for Women's Education and Development: Training Needs Assessment

Expected Outcomes

The participants will

- understand the need for training of educational personnel in the area of women's education and development

- acquire skills in different methods for training needs assessment

Content Points

- Concept of training (pre-service and in-service)

- To update knowledge and information in the area of women's education and development, impart required skills, enhance certain identified abilities and to bring about attitudinal changes

- NCERT, SCERTs, SIEs, DIETs, Teacher Training Institutions, Directorates of School Education, Department of Women's Studies of different Universities, State

Pedagogical Institution, Management of Private Educational Institutions etc are the institutions involved in providing inputs for research and training.

- The target group to be trained has to be kept in mind

- Methods for training needs assessment

  - Assessment of the training needs of the participants can be done by various methods e g.

    - Observation

    - Interview

  - Job analysis

    - Performance appraisal

Methodology

After initial discussion divide the participants into groups and ask them to assess training needs for a particular programme

MODULE 107

Theme 107.2: Training of Trainers

Expected Outcome

The participants will be able to

- acquire knowledge, awareness and skills of imparting training to trainers
- understand the multiple roles the trainer has to play
- learn the various stages in trainer preparation
- understand the local specific and need targeted trainer development

Content Points

- Training is viewed as an educational process which involves growth of knowledge, awareness and skills Focus is not only on information raising but on consciousness raising

- An important aspect of training is participatory training which is participant oriented and not trainer oriented The trainer is just a facilitator

- Participatory training facilitates adult learning, as they themselves monitor the control process.

A trainer while imparting training, needs to focus on following points -

- experiential approach which relies heavily on part experiences of trainees
- creation of suitable learning environment, this requires special skills of trainer to build an atmosphere of mutual support
- the learning environment should be stimulating, it should motivate trainees to learn
- group building processes are essential
- trainer's behaviour is important Trainer needs to be aware of his/her own self and sensitive to others

The trainer can use different training methods such as

- lecture method in which the learners are more or less passive
- small group discussion method which stimulates thinking and actively involves all members
- structured experiences which involves (i) case study method, using other persons' experience for learning (ii) role play using learners' past experience for learning (iii) 'here and now' experiences which are simulatory and create an experience during training itself This creates a shared basis for learning and becomes common learning material

Important Focal Points for Trainer Preparation

- A trainer should be competent as far as knowledge, awareness and skills are concerned

- Capable of planning and coordinating staff and logistics

- Sensitive to understanding specific requirements of learners during training, understanding requirements of learning environment and physical facilities needed to support the environment

- Aware of group dynamics, different levels of learners, trainer-trainee relationship

- Possess skills of communication, listening, motivating, facilitating, summarising, energising learners, role versatility, relationship building.

- Monitoring and evaluation

- The trainer plays multiple roles in all the three phases of a training programme - pre training, during training and post training

Methodology

Lecture cum discussion method involving participants in simulation exercises as potential trainees

MODULE 107

Theme 107.3 (a): Training Process Strategies

Expected Outcomes

The participants will

- acquire skills to understand different techniques used in training processes
- practice some techniques

Content Points

- Training process strategies depend upon the aim of the training programme and the typology of target group
- Different techniques include
    - Conversation
    - Demonstration
    - Lecture cum discussion
    - Use of audio visual aids
    - Computer assisted training
    - Streetplay
    - Role play
    - Field Visits
    - Practical exercises (individual and group work)

An individual approach has a lasting impact in any training programme for women's education and development

Methodology

After discussing different techniques, demonstration will be given in some techniques and the participants would be asked to practice them

MODULE 107

Theme 107.3 (b)· Participatory Training Process

Expected Outcome

The participants will be able to

- analyse limitations of conventional ways of training
- understand significance of participatory approach of training.
- develop skills to impart training through participatory approach

Content Points

- Traditional meaning of training
- drawback of traditional training and conventional lecture
- traditional training limited to trainer's approach only
- In traditional training learner's active participation inhibited and limited to lecture mode
- New technique of training is a non-formal, on-going process involving trainer and the trainee learning from each other

- Learning revolves around needs and progresses from feedback, reflection and analysis

- Training for change approach emphasises on learning encouraging learning to explore their ideas

- Learner centred, experience based and open ended methodology involving fuller active participation of trainees along with the trainers is actually the participatory training

- Participatory training is an approach for transforming the learners controlled by them with a supportive and cooperative approach

- Trainer is a facilitator who co-ordinates and helps the group to work together and find answers

Methodology

Illustrating participatory approach along with demonstration for imparting skills to the group

MODULE 107

Theme 107.4. Evaluation of Training Programme

Expected Outcome

The participants will

- understand the need and process of evaluation of training programme
- develop skills in evaluating the training programmes

Content Points

Need

It is crucial to assess the success of any training programme and its effectiveness

- It helps to assess whether the goal of the training programme has been achieved and if so to what extent
- It helps in the development of future programmes through the feedback received

Process

- The training programme can be evaluated

- In terms of convergence and divergence of participants' and organizers' perception

    i reaction of trainees

    ii organizers' observations

    - At organisational level - change in job behaviour of trainee

    - Extent of achievement of ultimate objectives (long term) to see the performance of individual and improvement at organisational level

Steps

Evaluation needs to be carried out in a scientific manner Generally it involves the following steps

Step - I (i) Preparing the proforma through discussion in cluding aims, objectives, clientele, inputs, outputs and other factors

(ii) filling up of proformas by the trainees

(iii) discussion of the responses

Methodology

Lecture-cum-discussion along with demonstration of using the evaluatin proforma

MODULE 107

Theme 107.5: How to put a Training Programme on the Ground

Expected Outcome

The participants will

- develop skills in planning and conducting training programmes for girls' education and development.

Content Points

- Identification of training needs
- Objectives
- Target group
- Content
- Selection of resource persons
- Planning and sequencing of resources, time and other factors (e g. duration of the programme, venue etc)

- Preparing training material (modular and non-modular)

- Feedback and evaluation of training programme

Methodology

Explain the steps of putting a training programme on the ground with the help of transparencies

Practical Exercise

i Each participant has to prepare an outline of a proposed training/orientation programme to be organised in their respective state/district in the area of women's education and *development*

ii The trainees are expected to write the training module for their training programme planned to be organised in their state/district

Transparency 107.5.1

COMPONENTS OF A TRAINING MODULE

1 Module Statement

2 Prospectus

3 Pretext

4 Contents

5 Pre-requisites

6 Resources

7 Objectives

8 Learning Experience

9 Self checks and assignments

10 Post Test

11 Model Answers

Transparency ICT 52

HOW TO DEVELOP A TRAINING MODULE

MODULE - FLOW DIAGRAM
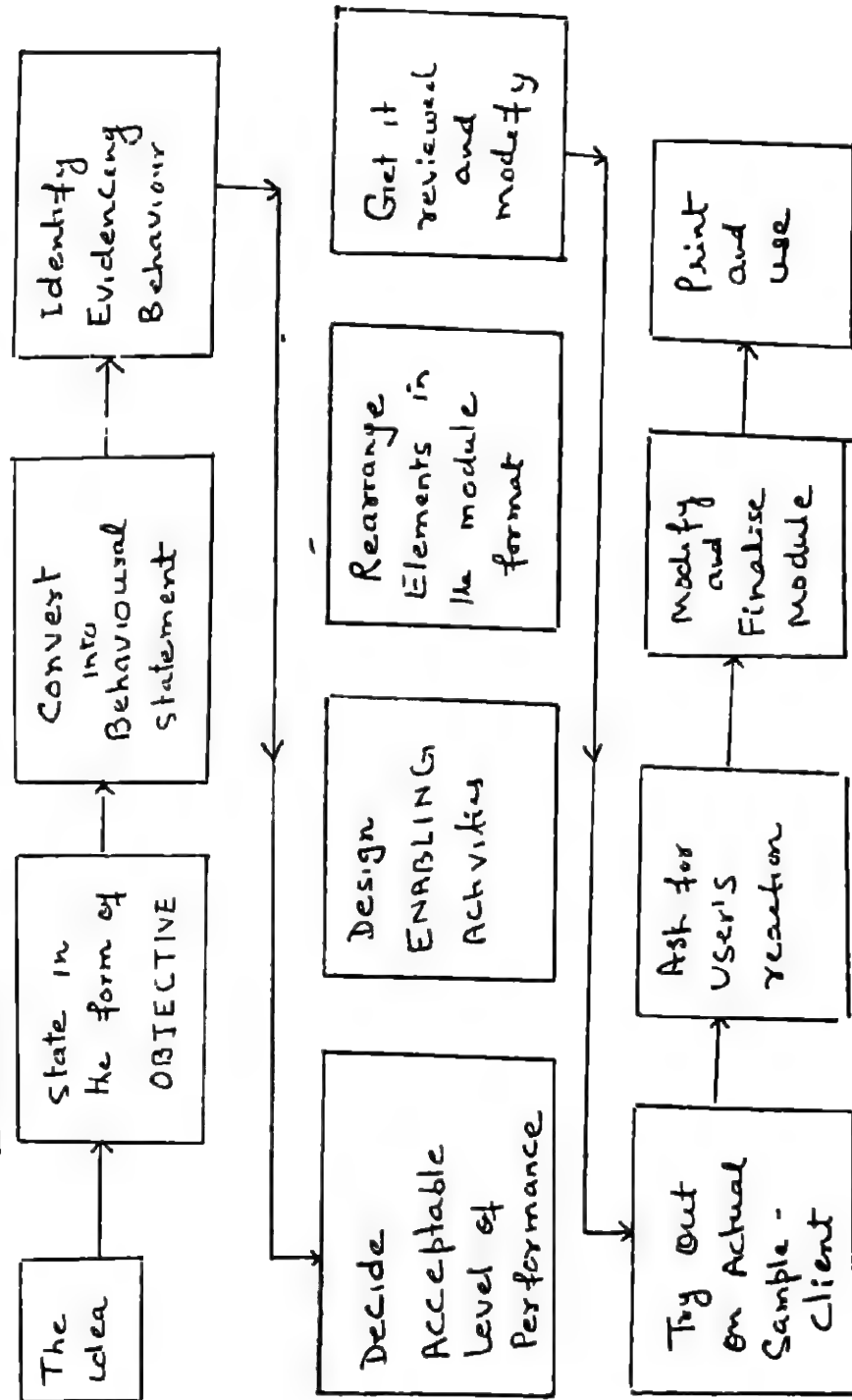
REFERENCES

107

1 IIPA, Training in Government, Objectives and Opportunities, New Delhi, 1985

2 Mukhopadhyaya, M How to Prepare a Training Module

3 Udai Pareek and T V , Radio Handbook for Trainees in Educational Management, 1989, Bangkok, Thailand

4 Virmani, K G and Juneja, N , Impact Evaluation

MODULE 108

Legal Literacy

Expected Outcomes

- To create awareness among the participants about laws on women and girls

- To enable the participants to promote legal literacy through their institutional programmes

Content Points

- Information on our legal system and the constitution

- Various laws passed from to time to bring women at their due rights and guarantee their personal safety, dignity

- International conventions and the Indian law pertaining to the rights of women and girls

Themes:

Introduction We and the Law	1 hr
Women and the Constitution	1 hr

Personal Laws and Women	2 hrs
Laws on Personal Safety and Dignity of Women	2 hrs
Labour Laws and Women	2 hrs
International Conventions and the Indian Law	2 hrs

Methodology

1 Transaction of six units of the Manual on Legal Literacy

2 Workshop mode

Teaching Points

108 1 - Introduction

An attempt will be made to demystify the concept of law through an experiemental mode

- Definition of law
- 5 episodes to illustrate the concepts of law
- Basic facts about laws
- Group Exercises
- Activities

108.2 - Women and the Constitution of India

- Authority of Indian Constitution
- Fundamental Rights
- Article 14 Right to Equality
- Article 15 Prohibition of discrimination on grounds of religion, race, caste, sex or place of birth
- Article 16 Equality of Opportunity in Matter of Public Employment
- Articles 19,21,23,24,32
- Directive Principles of State Policy (Articles 39,40,41, 42, 43, 44, 45, 47, 48)
- Fundamental Duties
- Group Exercises
- Activities in School

108.3: Personal Laws and Women

- Different laws for different communities
- Marriage laws
- Widowhood
- Divorce
- Remarriage
- Maintainance
- Adoption
- Guardianship
- Guardians of property of minors
- Right to property - Succession
- Succession in the female live
- Why no common code?
- Special Marriage Act
- Group Exercises
- Activities in School

108.4: Laws for Personal Safety and Dignity of Women

- Crime Against Women and the Law
- Cognizable and Non Cognizable Offences
- Bailable and Non Bailable Offences
- Crimes under Indian Penal Code
- Crimes Identified under IPC
- Crimes identified under Special Laws
- Incidence of Crimes Against Women
- Trends
- Disposal of Crime Cases by Courts
- Unnatural offences and their handling by law courts
- National Commission for Women's Act 1990
- Protection of Human Rights Act 1993
- Group Exercises
- Activities in School

108.5: Labour Laws and Women

- Factories Act 1948 (amended in 1949, 1950 and 1954)
- Mines Act 1952
- Plantation Labour Act 1951
- The Factories (Amendment) Act 1976
- Right of Women Working in Factories
- Employment of Children Act 1938
- Various Offences and Their Penalties
- The Children (Pledging of Labour) Act
- The Equal Remuneration Act, 1933

- The Minimum Wages Act 1948
- The Contract Labour (Regulation and Abolition) Act 1970 with Central Rules 1971
- The Maternity Benefit Act 1961, amended in 1976
- Group Exercises
- Activities in School

108.6: International Conventions and the Indian Law

- Universal Declaration of Human Rights
- Discussions on Articles
- Convention on the Elimination of All Forms of Discrimination Against Women
- A New Bill of Rights for Women
- The States Parties to the Present Convention
- National Commission for Women - its role and achievements

Background Material*

Introduction

India, we notice has one of the most impressive set of laws for women and children/girls) and yet little is knownabout them either by women themselves or by men Awareness and understanding of laws is a first step towards change All sections of population need legal awareness and legal literacy inorder to build a just, humane and harmonious society which respects rights and duties More so, the educators, educational policy planning and administration personnel who directly influence the growth and development of children into adults

The CONSTITUTION OF INDIA, as the fountainhead for all laws, rules and regulations, and confers equal rights on both women and men but also provides for a protective discrimination in favour of women and children

PREAMBLE

We, the People of India, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens

JUSTICE, social, economic and politic,

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship,

* Taken from Usha Nayar's Manual "Legal Literacy for Education Personnel with Focus on Women and Girls"

EQUALITY of status and of opportunity,

and to promote among them all,

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the nation,

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty sixth day of November, 1949, do HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE

TO OURSELVES THIS CONSTITUTION

Unit I: We and the Law

Expected Outcomes

By the end of this unit, you will be able to

a understand how law governs interactions between dyads and among groups in a society

b comprehend that law is a set of rules which civil societies frame for peaceful existence

c comprehend some elementary facts concerning Indian law and its genesis in modern times

No aspect of our life remains untouched, unaffected, undirected by law And yet, most of the time we have a very hazy picture of law as something out there, as that which can be understood only by law givers and dispensers of justice - completely outside the understanding of common people It is amazing how lawpervades every living moment of our day to day lives It is important for us to know our laws understand them and empower ourselves for their observance and enforcement

Let us first be clear as to what we mean by the term "Law" "Law" includes any ordinance, order, bye-law, rule, regulation, notification, custom or usage having the force of law in the territory of India Laws in force "include laws passed or made by a legislature or other competent authority in the territory of India before the commencement of this Constitution and not previously repealed, notwith standing that any such law and any part thereof may not be then in operation either at all or in particular areas" Any law that contravenes the fundamental rights is held null and void (The Constitution of India p5)

Basic Facts About Laws

Law may be divided into public and private law

Public Law deals with relationship between one citizen and the state It consists of the constitutional and the criminal law

Private Law deals with relations between one citizen and another like the law of property, status of person in marriage, adoption These are within the purview of civil laws

Legal Proceedings

The objectives of civil proceedings is to ascertain the legal rights of parties and to get relief to the injured by way of damages, specific performances, injunctions, repayment or restitution

The Courts

India has a single united judicial system The judiciary is independent and is a custodian of the law of the and the personal rights of the people The courts handle mainly two type of cases They are criminal cases and civil cases Cases dealing with robbery, theft and murder or physical injury are called criminal cases Those dealing with damage to goods and property, marriage, divorce, inheritance, adoption etc are called civil cases Labour disputes are settled by their own appellate bodies.

The Supreme Court

The Supreme Court of India is the highest court of justice in India It is situated in the capital, New Delhi Below the Supreme Court there are a number of High Courts The lowest in the hierarchy are the District and Sessions Courts and other lower courts

High Courts

The High Courts are in the States They are directly under the Supreme Court under the single judicial system Since they are free from the administrative control of the Supreme Court they can enjoy free and independent working They are also free from the State Executive and Legislature so that they remain independent and impartial

There are about eighteen High Courts in India Some States share a High Court like Punjab and Haryana There is one Chief Justice and as many judges as considered necessary by the President from time to time The Chief Justice and the other judges of the High Court are appointed by the President in consultation with the Chief Justice of India and the Governor of the State In the appointment of the judges of the High Court, the Chief Justice of the High Court is also consulted The qualifications of a judge of a High Court are the same as that of a judge of the Supreme Court

The High Court has original and appellate jurisdiction It is the highest court of justice in a State Appeals against the decisions of the District Courts and other lower courts are heard by the District Courts and appeal against the decisions taken by the District Court can be made to the State High Court

In addition to the three types of Courts mentioned above, there are the Panchayati Adalats or Nyaya Panchayats which are also under the District Judge in some States Four or five Gram Sabhas have one such Panchayati Court They are established to try small cases of all kinds They are empowered to try cases up to the value of Rs 100 and impose a fine up to the same amount Under this system, the cases can be decided fast and need not involve much expenditure

The Nyaya Panchayats function in the he rural areas A similar concept was introduced in some urban areas This is called the 'Lok Adalat' The first Lok Adalat was held in Delhi in 1985, in which one hundred and fifty cases were decided in a single day To settle labour disputes in the area of employment as labour, there are labour tribunals and courts which have their own jurisdictions in relation to original appellate and advisory functions

The Constitution of India not only grants equality between sexes but also empowers the state to take protective discrimination measures for redressal of the

cumulative disadvantages on account of the stranglehold of obsolete traditions myths and beliefs

Unit II: Women and The Constitution

EXPECTED OUTCOMES

The unit will help you to

1 understand the specific constitutional clauses where equality of all is indicated and others which clearly spell out gender equality in terms of phrases like "equality between sexes", regardless of caste, creed, sex, race or religion,

2 analyse to the extent these clauses are operationalized (a) in terms of fundamental rights which by themselves have the force of law and (b) Directive Principles and the Fundamental Duties as they impinge on thelives of women and girls in reality or become the source of special and local legislations passed from time to time for safeguarding theinterests of women and girls

Fundamental Rights

The Constitution of India Part III, guarantees Fundamental Rights to the Citizen These rights represent the values cherished by the people of this country and are meant to (a) protect the dignity of the individual (b) create conditions in which human beings can develop their personality to the fullest extent

- The rights are wide ranging and comprehensive

- These are not privileges or favours but basic rights towhich every citizen is entitled

- Since these are not absolute, their exercise can be reasonably restricted by the state on various grounds

Article 15 Prohibition of discrimination on grounds of religion, race, caste, sex or place of birth - (1) The State shall not discriminate against any citizen on grounds only of religion, race, caste, sex, place of birth or any of them (2) No citizen shall, on grounds only of religion, race, caste, sex, place of birth or any of them, be subject to any disability, liability, restriction or condition with regard to -

(a) access to shops, public restaurants, hotels andplaces of public entertainment, or

(b) the use of wells, tanks, bathing ghats, roads and places of public resort maintained wholly or partly out of State funds or dedicated to the use of general public

3 Nothing in this article shall prevent the State from making any special provision for women and children

[(4) Nothing in this article or in clause (2) of article 29 shall prevent the State from making any special provision for the advancement of any socially and educationally backward classes of citizens or for the Scheduled Castes and Scheduled Tribes]

Article 16 Equality of Opportunity in matter of public employment (1) There shall be equality of opportunity for all citizens in matters relating to employment or appointment to any office under the State

(2) No citizen shall, on grounds only of religion, race, caste, sex, descent, place of birth, residence, or any of them be ineligible for, or discriminated against in respect of any employment or office under the State

(3) Nothing in this article shall prevent the State from making any provision for the reservation of appointments or posts in favour of any backward class of citizens which in the opinion of the State is not adequately represented in the services under the State

Right to Freedom

Article 19 Protection of Certain Rights regarding Freedom of Speech etc All citizens shall have the right (a) to freedom of speech and expression, (b) to assemble peacably and without arms, (c) to form associations or unions, (d) to move freely throughout the territory of India, (e) to reside and settle in any part of the territory of India, (f) to practise any profession or to carry on any occupation, trade or business

Article 21 Protection of Life and Personal Liberty No person shall be deprived of his life or personal liberty except according to procedure established by law

Article 23 *Right Against Exploitation Prohibition of traffic in human beings* and forced labour - (1) Traffic in human beings and begar and other similar forms of forced labour are prohibited and any contravention of this provision shall be an offence punishable in accordance with law

(2) Nothing in this article shall prevent the State from imposing compulsory service for public purposes, and in imposing such service the State shall not make any discrimination on grounds only of religion, race, caste or class any of them

Article 24 Prohibition of employment of children in factories, etc - No child below the age of fourteen years shall be employed to work in any factory or mine or engaged in any other hazardous employment

Article 32 Right to Constitutional Remedies

Remedies for enforcement of rights conferred by this Part - (1) The right to move the Supreme Court by appropriate proceedings for the enforcement of the rights conferred by this Part is guaranteed

(2) The Supreme Court shall have power to issue directions or orders or writs, including writs in the nature of habeaus corpus, mandamus, prohibitio, quo warranto and certiorari*, whichever may be appropriate, for the enforcement of any of the rights conferred by this Part

(3) Without prejudice to the powers conferred on the Supreme Court by clauses (1) and (2), Parliament may by law empower any other court to exercise within the local limits of its jurisdiction all or any of the powers exercisable by the Supreme Court under clause (2).

(4) The right guaranteed by this article shall not be suspended except as otherwise provided for by this Constitution

Directive Principles of State Policy

Definition - *In this Part, unless the context otherwiserequires,* "the State" has the same meaning as in Part III

Application of the principles contained in the Part IV - The provisions contained in this Part shall not be enforceable by any court, but the principles therein laid down arenevertheless fundamental in the governance of the countryand it shall be the duty of the State to apply these principles in making laws

Article 38 State to secure a social order for the promotion of welfare of the people

(1) The State shall strive to promote the welfare of the people by securing and protecting as effectively as it may a social order in which justice, social, economic and political, shall inform all the institutions of the national life

[(2) The State shall, in particular, strive to minimise the inequalities in income, and endeavour to eliminate inequalities in status, facilities and opportunities, not only amongst individuals but also amongst groups of people residing in different areas or engaged in different vocations]

Article 39 Certain principles of policy to be followed by the State - The State shall, in particular, direct its policy towards securing -

(a) that the citizen, men and women equally, have the right to an adequate means of livelihood;

(b) that the ownership and control of the material resources of the community are so distributed as best to subserve the common good,

(c) that the operation of the economic system does not result in the concentration of wealth and means of production to the common detriment,

(d) that there is equal pay for equal work for both men and women,

(e) that the health and strength of workers, men and women, and the tender age of children are not abused and that citizens are not forced by economic necessity to enter vocations unsuited to their age or strength,

[(f) that children given opportunities and facilities to develop in a healthy manner and in conditions of freedom and dignity and that childhood and youth are protected against exploitation and against moral and material abandonment]

Article 39 (a) [Equal justice and free legal aid - The State shall secure that the operation of the legal system promotes justice, on a basis of equal opportunity and shall, in particular, provide free legal aid, by suitable legislation or schemes or in any other way, to ensure that opportunities for securing justice are not denied to any citizen by reason of economic or other disabilities]

Article 40 Organization of village panchayats - The State shall take steps to organise village panchayats and endow them with such powers and authority as may be necessary to enable them to function as units of self government

Article 41 Right to work, to education and to public assistance in certain cases - The State shall, within the limits of its economic capacity and development, make effective provision for securing the right to work, to education and to public assistance in cases of unemployment, old age, sickness and disablement, and in other cases of underserved want

Article 42 Provision for just and humane conditions of work and maternity relief - The State shall make provision for securing just and humane conditions of work and for maternity relief

Article 43 Living wage, etc, for workers - The State shall endeavour to secure, by suitable legislation or economic organisation or in any other way, to all workers agricultural, industrial or otherwise work, a living wage, conditions of work ensuring a decent standard of life and full enjoyment of leisure and social and cultural opportunities and, in particular, the State shall endeavour to promote cottage industries on an individual or co-operative basis in rural areas

Article 44 Uniform civil code for the citizens - The State shall endeavour to secure for the citizens a uniform civil code throughout the territory of India

Article 45 Provision for free and compulsory education for children - The State shall endeavour to provide, within a period of ten years from the commencement of this Constitution, for free and compulsory education for all children until they attain the age of fourteen years

Article 47 Duty of the State to raise the level of nutrition and the standard of living and to improve public health - The State shall regard the raising of the level of nutrition and the standard of living of its people and the improvement of public health as among its primary duties and, in particular, the State shall endeavour to bring about prohibition of the consumption except for medicinal purposes of intoxicating drinks and of drugs which are injurious to health

Article 48 (a) Protection and improvement of environment and safeguarding of forests and wild life - The State shall endeavour to protect and improve the environment and to safeguard the forests and wild life of the country

Fundamental Duties

Article 51 (a) Fundamental Duties - It shall be the duty of every citizen of India - (a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and National Anthem,

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom,

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India,

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so,

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities, to renounce practices derogatory to the dignity of women,

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture,

(g) to protect and improve the natural environment icluding forests, lakes, rivers and wild life, and to have compassion for living creatures,

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform,

(i) to safeguard public property and to abjure violence,

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement

Unit III: Personal Laws and Women

Expected Outcomes

After going through unit you will be able to

i understand different customs and laws that govern the various aspects of marriage, its break down, maintenance, adoption, property and inheritence of major religious groups of the country viz., the Hindu (include Sikhs, Jains and Buddhists) The Muslims, the Christians and the Parsis

ii analyze the unequal rights as between men and women in different religious groups and the degree of difference impinging on gender equality

iii gange the distance between the existing laws of different groups and proposed uniform civil code Which contravene the constitutional mendate of equality between the sexes

The authority of the personal laws, the commands of the Prophets, force of customs and the values of the male dominated society, all constitute the background of our understanding of women and law Different cultural/religiousgroups lay down different personal laws The position of our women more than men in our country is largely governed by the tenets of religion The Indian citizens follow several religions, the most prominent in our country being the Hindu, Muslim, Christian and Zorestrian following

Marriage

The following aspects of marriage may be discussed

(i) Monogamy/Polygamy (ii) Age of marriage (iii) Registration of marriage (iv) Widowhood (v) Divorce and Maintenance (vi) Adoption (vii) Guardianship

(I) Monogamy/Polygamy

Under the Hindu Marriage Act 1955, only monogamy wasgiven legal status

Islam

A Muslim can have at one and the same time four wives

Christianity

The Christian marriage is necessarily monogamous

Parsis

As per the 1936 Act bigamous marriage is void

Age of Marriage

Hinduism.- According to Hindu Marriage Act of 1955 the bridegroom should have completed the age of 21 years,

Islam

The Child Marriage Restraint Act as amended in 1978 is applicable to Muslims also As per the provisions of that Act the bridegroom who has not completed 21 years of age and the bride who has not completed the age of 18 years shall not marry

Christianity

The ages prescribed for the Indian Christian bridegroom and bride are 21 and 18 years

Parsi Marriage

Both the parties should be aged not below 21 years, otherwise the father's or guardian's consent is absolutely necessary

Registration of Marriage

Hinduism Marriages coming within the purview of the Hindu Marriage Act need not necessarily be registered There is provision for optional registration (Section 8)

Islam

The marriage is noted in the marriage register "Nikah"

Christianity

The Christian Marriage can be conducted by a priest with a licence

Parsis

The Parsi Marriage has to be necessarily registered

Widowhood

Hinduism

Till the nineteenth century, the widows were burnt on the pyres of their husbands This rite was known as Sati The strong initiative of social reformers like Raja Rammohan Roy, the father of Indian Renaissance, the British Government passed a law in 1829 prohibiting Sati and later on account of the relentless struggle by Ishwarchandra Vidya sagar, the Hindu Widow Remarriage Act was passed in 1856 Since then a lot of water has flown under the bridge andwidow remarriage is gaining acceptance In several communities this practise already existed

Islam

A Muslim widow can remarry after the period of 'Iddat' (three menstrual cycles)

Christianity

A married woman is bound to her husband by the sacred law In the event of his death, she is relieved from that commitment If she enjoys the company of another man during the life of her husband, then she is said to have committed debauchery If she remarries after her husband's demise, she can never be considered as debaucherous (Roma 7 1-4)

The Parsi Society

The widow has a right to remarry

Divorce

Hinduism

The wife alone can file a petition for divorce on the following grounds another living wife before the commencement of the Hindu Marriage Act 1955, rape, sodomy and bestiality by the husband, no cohabitation often court order for maintenance,

The parties to the marriage can get divorce by mutual consent on the ground

Islam

The Muslim wife can pray for divorce as per the provisions of The Dissolution of Muslim Marriages Act, 1939

The husband has the unilateral right to divorce his wife either by pronouncing 'Talaq' thrice or pronouncing it during three periods ('Tuhrs') on his wife The Dissolution of Muslim Marriages Act of 1939 no doubt has contributed to the betterment of the position of Muslim women

Christianity

The Indian Divorce Act of 1869 governs the case ofpersons professing the Christian religion This Act smacks of discrimination The husband may pray for divorce

on the ground of adultery on the part of the wife But the wife labours under several difficulties in order to obtain divorce from her husband A wife has to prove two sets of grounds She can get divorce only if she proves that -

The husband is bigamous or adulterous, cruelty and desertion without reason for 2 years or more

A Christian wife can also obtain divorce on the groundsof husband becoming a non-christian, or husband going through a form of marriage with another woman, or being guilty of incestous adultery, rape, sodomy, or bestiality

The Parsis

The Parsi Marriage and Divorce Act of 1936 (Section 30 of the Act) lays down that either party to the marriage can file a suit for getting the mariage delcared as null and void in the case of consummation becoming impossible due to natural causes

Remarriage

Either the widow or the divorced wife can remarry in all religions according to the law prevalent now

Maintenance

Hinduism

The Hindu Adoption and Maintenance Act 1956 providesfor the separated or the divorced wife to claim maintenance Likewise, there are provisions for the unmarried daughter and the mother, for the widowed daughter and widowed daughter in law The wife forgoes the right to maintenance on remarriage

Islam

A Muslim wife can get maintenance according to Muslim law as per the terms of the marriage contract

Christians

The Christian wife gets maintenance on separation or divorce as per Sections 37 and 38 of the Indian Divorce Act of 1869

Parsis

Section 40 of Parsi Marriage and Divorce Act of 1936 provides for maintenance even during the continuance of the divorce suit and on divorce

Islam

The Muslim wife can get maintenance

Adoption

Hinduism

Adoption is not prevalent in the Muslim society now

Christianity and Parsi Religion

There is no provision for adoption in these religions

Guardianship

In 1980, The Guardians and Wards Act came into force The mother and father are natural guardians The husband is the natural guardian of the minor wife

If the mother remarries she loses her right to act as the natural guardian of her minor children

Hindu Law as per 1956 Act

The father is the natural guardian of the minor son or minor daughter The minor can stay with the mother till she attains the age of 5 years The mother is the natural guardian of an illegitimate child

Islam

Hizanat

(1) The minor boy has to be in the custody of the mother or near relatives till he attains the age of 7 years Similarly the minor girl has to stay with the mother or other near relatives till she is married

Guardians of property of minors

The guardians are of 3 kinds (i) Legal guardians, (ii) Guardians appointed by the court, (iii) De facto guardians

Christians and Parsis

The Guardians and Wards Act of 1890 covers the cases of Christians and Parsis

Islam

Prophet Mohammed contributed a lot towards the improvement of the status of women These were the days when female children were killed by parents He got the obnoxious practice stopped He provided for some improvement in women's shares in respect of succession and inheritence He laid down specific rules to govern the mode of succession The heirs are divided into (i) sharers (ii) residuaries, and (iii) distance kindred

The law relating to succession is different so far as Sunnies and Shias are concerned As the Sunnies are in a great majority in the Indian sub continent, Sunni law or Hanafi law as it is also called is discussed in detail

Shares The widow of a Muslim inherits 1/8th of his property

The share of the husband in the estate of his wife, is double that of the share of the wife in the estate of her husband The principle that one man is equal to two women, is prevalent throughout in the Muslim law

Succession

A woman can inherit property in many ways She may get property from the mother, father, husband, son, daughter, brother, and the father-in-law (under certain circumstances) Whatever may be the principles of Hindu law, after 1956 it is the Hindu Succession Act that determines the rules of succession relating to women

Christianity

The Indian Succession Act 1925 is applicable to the Indian Christians

Parsi Society

The rules regarding succession to the estate of a Parsi dying intestate are explained in Chapter 3 of Part 5 of Indian Succession Act 1925

Pertaining to All Religions

1 The woman who has safeguarded and promoted her husband's income and property, the woman but for whom progeny could not have come into existence, that very same woman who served her husband like a colleague, comrade, is superseded by all religious laws in favour of the children This by itself is preposterous The Hindu society deemed the Hindu male to have become divided on the date of his death with his sons or father, (this is a legal fiction) divided his estate (his interest in Hindu coparcenary property) among his sons, daughters, widow and mother equally (ofcourse after according shares to sons on account of right by birth) The sons of the deceased are put on a high pedestal to the determent of the interests of the widow In Andhra Pradesh right by birth in the Hindu coparcenary property has been given to daughters also As a result the share of the widow has become dwindled much further Politicians and leaders of public opinion look after the equality of sons and daughters with fairplay and justice but choose to ignore the widow Islam has given a definite share 1/8th or 1/4th (according to circumstances) Christianity has conferred 1/3rd share to the widow when children are existent and 1/2 when they are no longer there In the Parsi law the widow gets equal to the share of the son and double the share of the daughter The widow should have got more than the share of the son

Succession in the Female Line

It would of interest to note that whereas patriliny is the norm is India, there are some groups in the population which are matrilineal, the Garos, Khasis and Jaintias in the north east of India (in Meghalaya), and the Muslim inhabitants of the Islands of Lakshadweep and Minicoy, off the south eastern coast, even to day Among the Khasis, the youngest daughter inherits property but among the Garos theparents can nominate any daughter The Nairs of Kerala who were matrilineal till very recently, but

have given up some of their customs like Visiting Husbands of Namoodri (Brahmin) caste and succession in female line

In Minicoy, the house belongs to women (Gopinath, 1996)

The Special Marriage Act 1954

The Special Marriage Act of 1954 applies to all those who marry under the provisions of the same Any man and woman belonging even to any religion - can marry under this Act before the Marriage Registrar appointedby the Government in this behalf

The Indian Succession Act 1923 (Intestate Succession)

This Act is applicable to civil marriages only

LAWS FOR PERSONAL SAFETY AND DIGNITY OF WOMEN

We may note that there are legal safeguards and provisions for controlling the crimes against women, and other laws for personal safety and dignity of women These can be put under three categories

1 **Indian Penal Code** (IPC) and Criminal Procedure Code (Cr P C), covering rape, kidnapping and abduction, homicide for dowry, torture, mental and physical molestation and eve teasing.

2 Special Laws aim at ending reprehensible, social practices like Sati, demand for dowry, trafficking of women for immoral purposes, indecent representation of women

3 Others like Medical termination of pregnancy, Regulation of Pre-natal Diagnostic Techniques, Young Persons Harmful Publications Act, Child Marriage Restraint Act, National Commission of Women Act, Family Courts, Legal Aid Cell etc

Unit IV: Laws on Personal Safety and Dignity of Women

Expected Outcomes

By the end of this unit, you will

i become familier with a range of legal provisions for checking the phenomenon of crimes against women and those hurting her personal dignity and safety in any manner of speeking.

ii be introduced to several acts and provisions of new structures that have been created for ensuring justice and fair play to women

Crimes Against Women and the Law

It is important for educators to get familiar with the language of law in relation to crimes in order that (a) redressal of the wrong can be facilitated and the wrongdoer punished, (b) a climate of prevention can be created through formal and informal instruction

Let us understand a few terms before we proceed on to the details of incidence of different crimes and laws deal ing with the same

A **Crime** is an act of commission or omission contrary to law It is programmed to be an act against the community and society at large The state has the power to punish a person if she or he is found guilty In India various acts of crime are defined in the Indian Penal Code (IPC) sections 109 to 511 and other Central and State laws

It is generally presumed that an accused is innocent unless it is proved to the contrary through a judicial process
The Code of Criminal Procedure (Cr P C) 1973 is referred to as the new code which lays down the judicial procedure in bringing an accused to justice It also provides for a machinery for the punishment of offenders and a procedure for preventing crimes

Cognizable and Non Cognizable Offences

Cognizable offences are offences for which a police officer can arrest a person without a warrant In non-cognizable offences, the police cannot arrest the offender without a warrant from the court

Bailable and non Bailable Offences

Bailable crimes are less serious and the accused has a right to get bail Whereas in non-bailable offences granting of bail is left to the discretion of the court

Family Courts Act

The bill connected with this Act was passed by the Parliament in 1984

Crime under IPC

The Indian Penal Code (IPC) defines in precise terms various acts and omissions constituting an offence against the State, public tranquility, religion, human body, property and so on These are covered under 511 Sections of law broadly classified as violent crimes, property crimes and white collar crimes The 'violent crimes' include crimes like murder, attempt to murder, culpable homicide (C H) not amounting to murder, rape, kidnapping and abduction, dacoity and its preparation, robbery and riots

The "property crimes include burglary, theft, while the "white collar crimes" consist of criminal breach of trust, cheating and counterfeiting

(1) The Crimes Identified Under the Indian Penal Code (IPC)

(i) Rape (Sec 376 IPC)

(ii) Kidnapping and Abduction for different purposes (Sec 363-373 IPC)

(iii) Homicide for Dowry, Dowry Deaths or their attempts (Sec 302/304-B IPC)

(iv) Torture, both mental and physical (Sec 498-A IPC)

(v) Molestation (Sec 354 IPC)

(vi) Eve-teasing (Sec 509 IPC)

(2) The Crimes Identified under the Special Laws (SL)

Reprehensible social practices such as commission of sati, demand for dowry, trafficking of women for immoral purposes etc are identified as offences punishable under the following social enactments to safeguard women and their interests, specifically There are

(i) Commission of Sati (Prevention)Act, 1987

(ii) Dowry Prohibition Act, 1961

(iii) Immoral Traffic (Prevention) Act, 1978

(iv) Indecent Representation of Women (Prohibition) Act, 1986

Disposal of Crime Cases by Courts

Rape

Out of the total cases in which were completed, 41 5 percent ended in conviction during 1990, 34 2 percent in 1991 and 33 8 percent in 1992 and 30 3 percent in 1993 Thus the acquittal percentage is showing an upward trend over the years The rate of disposal of cases in courts was 23 9 percent in 1990, 18 6 percent in 1991, 18 1 percent in 1992 and 16 8 percent in 1993 On an average, 80 percent of the cases remained pending for trial This is a disquieting state

Rape

What is rape

According to Section 375 of the Indian Penal Code rape is committed when a man has sexual intercourse with a woman

- against her will, or
- without her consent, or
- with her consent, when her consent has been obtained by putting her or any person in whom she is interested in fear of death, or of hurt (duress), or
- with her consent, given on account of her unsoundness of mind, or intoxication, when she is incapable of understanding the consequence of her consent, or
- with or without her consent, when she is under 16 years of age

IPC amendment 1983 Section 376 adds two more types of rape

1 **Custodial Rape**

- If a public servant, or the superintendent or manager of a jail, remand home, or women's orchildren's institutions, takes advantage of their positions and induces or seduces any female person and has sexual intercourse with her may be punished with imprisonment of upto 5 years and with fine

- Similarly, if a member of the management or the staff of a hospital, takes advantage of his official position, and has sexual intercourse with any woman of that hospital, such sexual intercourse though not considered as rape is punishable with imprisonment of upto 5 years and fine

2 **Gang Rape**

When one woman is repeatedly raped by a gang/group of men

Note Violence against women in situations of armed conflict rape is used as a weapon of retribution when women and girl children are frequently victims of gang rape committed by soldiers from all sides of the conflict

Kidnapping and Abduction

Under Section 363-375 IPC, the crime of kidnapping and abduction are some of the crimes which women fall prey to According to the IPC whoever takes or entices a minor boy under 16 and girl under 18 or a person out of his consent is said to kidnap the minor. So a girls' father must consent before a boy can take her away Thus run away lovers can be hauled up by the police and the boy can be charged with kidnapping if the girl is below 18 Kidnapping can invite imprisonment upto seven years

Unnatural Offences

The IPC also mentions an 'unnatural offence', section 377 and defines it vaguely Carnal intercourse against the order of nature with any man, women or animal

Dowry Deaths

Since 1986 the law provides for a punishment of not less than seven years and upto life imprisonment for the husband and possibly his family if a woman's death occurs in suspicious circumstances such as burns, injuries or other unnatural circumstances, and she was subjected to cruelty or harassment in connection with dowry by her husband or his relatives (Sec 304B, IPC)

Sec 304-B IPC Dowry Death - (1) Where the death of a woman is caused by any burns or bodily injury or occurs otherwise than under normal circumstances within seven years of her marriage and it is shown that soon before her death she was subjected to cruelty or harassment by her husband or any relative of her husband for, or in connection with, any demand for dowry, such death shall be called "dowry death", and such husband or relative shall be deemed to have caused her death

Section 498A Husband or relative of husband of a woman subjecting her to cruelty - Whoever, being the husband or the relative of the husband of a woman subjects such a woman to cruelty shall be punished with imprisonment for a term which may extend to three years and shall also be liable to fine

Dowry Prohibition Act No 28 of 1961, Section 4 as amended by the Dowry Prohibition (Amendment Act of 1984)

Definition of "dowry"

In the Act "dowry" means any property or valuable security given or agreed to be given either directly or indirectly

(a) by one party to marriage to the other party to the marriage, or

(b) by the parents of either party to a marriage or by any other person to either party to the marriage or to any other person, at or before or any time after the marriage [in connection with the marriage of the said parties, but does not include] dower or mehr in the case of persons to whom the Muslim Personal Law (Shariat) applies

The expression "valuable security" has the same meaning as in Section 30 of the Indian Penal Code, 1860 (45 of 1860)

The giving and taking of dowry are both crimes Commission of Sati (Prevention) Act 1987

This Act empowers the state to take more preventive measures in this regard If there is a possibility of such a happening, the law and order authorities can take preventive measures The Immoral Traffic (Prevention) Act, 1956 Article 23 of the constitution prohibits traffic in human beings On May 9, 1950, India ratified the International Convention for Suppression of Immoral Traffic in women and girls This is an act to give effect to the same The Suppression of Immoral Trafficking in Women Act (SITA) deals with sex as business activity A prostitute is defined as a woman who offers her body for promiscuous sexual intercourse for hire, whether in money or in kind

The Indecent Representation of Women (Prohibition) Act of 1986 prohibits sale, distribution, circulation of any books, pamphlets etc depicting indecent por trayal of women

The Medical Termination of Pregnancy Act 1971

Pregnancy can be terminated on the advice of a doctor if

- continuing the pregnancy involves a risk of mothers' life
- continuing the pregnancy would cause grave damage to the physical or mental health of the mother
- the pregnancy has been caused by rape
- the child is born, it would be gravely deformed
- any method of family planning adopted by the couple has failed

In 1971, the Medical Termination of Pregnancy Act was passed by the Parliament In 1975, various rules and regulations regarding abortions were also passed The law regarding abortions is now very liberal in this country The law is deliberately relaxed for population control and to save poor and uneducated people from quack abortionists

The Pre-natal Diagnostic Techniques (Regulation and Prevention of Misuse) 1994

In order to check the gross misuse of the pre-natal diagnostic techniques for purposes of identifying the sex of the foetus, the above act was passed by the Parliament

in 1994, following passing of a similar bill by Maharashtra State Assembly, on 1st February, 1988

The Juvenile Justice Act, 1986

The Act provides for a differential approach towards children coming in conflict with law but also describes the whole range of conditions in which children are or are likely to be abused.

Girl children are often the worst victims of such circumstances and effective implementation of this Act can have a profound impact in ensuring their well being, welfare and developments

National Commission for Women Act 1990

This act was passed in order to constitute a National Commission for better protection of the rights of women and to perform a constant watch dog function. (See Appendix for details)

Protection of Human Rights Act 1993

The Act provides for the constitution of a National Human Rights commission, State Human Rights courts for better protection of Human Rights

Defamation

There are some other crimes affecting women Defamation is one such crime If a woman is wrongly accused of an act which will affect her reputation "woman of loose morals" or "dowry-hungry mother-in-law", she can complain to the police against her defamers, or she can file a civil case against them claiming damages

Whoever does obscene acts or sings obscene songs in any public place can be punished Similarly, sale of obscene objects to youth below 20 is also a crime

Women and Police

Section 160 of Cr PC protects woman from unnecessary harassment from the police A police officer can call a male to the police station for interrogation or to demand information during investigation But if the case is of a woman, or a male under 15 years, they are not required to go to the police station The police officer must go to the place where the woman or the boy resides

When a police officer must search a woman, the search shall be made by another female with strict regard to decency (Section 51) When an accused woman has to be examined by a doctor for evidence only a lady doctor or someone under her supervision is allowed to do so (Section 53)

Pregnancy

If a woman sentenced to death is found to be pregnant, the High Court shall order the execution to be postponed It may also commute the sentence to imprisonment for life (Section 416)

Crimes in Marriage

Section 198 deals with prosecution for offences against marriage It provides that a complaint of bigamy may be filed by any person related to the wife by blood, marriage after getting consent of the court This helps the aggrieved, when she herself cannot take action

Unit V: Labour Laws and Women

All women work, several work within the household andoutside as well The economic definition improved considerably in 1991 census lists only 22 73 percent women as work ers compared to 51 56 percent males Further, of 91 4 million women workers, only 6 percent are in the organized sector There are several labour laws applicable to both men and women workers, some exclusively to women In this Unit we look at some of these legislations

Expected Outcomes

By the end of this unit, you will be able to

(i) gain some knowledge about existing labour legislations as these effect women and

(ii) think critically about these laws vis-a-vis rights of women as workers

Some Labour Laws

The Factories Act (1948 amended in 1949, 1950, 1954), Mines Act (1952) and Plantation Labour Act (1951)

- prohibit employment of women between 7 p m and 6 p m
- regulate working hours and contain provisions for their safety

- fix the maximum load to be lifted by women

- open creches etc

The Factories (Amendment) Act 1976

- provides for the establishment of creches where 30 women are employed including casual and contract labour

Rights of Women working in Factories

The law provides some special benefits for women who work in factories These are

* Women must have separate toilets and washrooms with doors

* If a factory has more than 30 women workers, the employer must provide a creche for the workers' children

* Women cannot be made to lift more than the prescribed weight

* Women cannot be made to clean or oil any moving machine

* Women cannot be made to work more than 48 hours in a week

* Women must get one day off in a week

* Women cannot be made to work for more than 5 hours at a stretch

* Women can be made to work only between 6 in the morning and 7 in the evening

The Equal Remuneration Act, 1976

This labour law was enacted to provide payment of equal remuneration to men and women workers for the same work or work of similar nature and to prevent discrimination on the basis of sex, against women in matter of employment

This Act was enacted to give effect to Article 39 of the Constitution which envisages to give equal pay for equal work for both men and women

The Minimum Wage Act, 1948

The Act enables the State Government to fix minimum time rate of wages, a minimum piece rate of wages, a guaranteed time-rate of wages for different occupations and localities or classes of work for

- dults
- dolescents
- hildren
- pprentices

The Contract Labour (Regulation and Abolition) Act, 1970 with Central Rules 1971

This labour law was enacted to regulate the employment f contract labourers in certain types of establishments and to prohibit its practice under certain circumstances

The Maternity Benefit Act 1961 and Amended in 1976

- provides for payment of maternity benefits at the rate of average daily wage for the period of women's actual absence (normally six weeks before and six weeks after the delivery and not exceeding 90 days) Applicable to every establishment and also to women not covered by the Employees State Insurance Act (1948)

These benefits are

- 6 weeks leave with full pay before the delivery
- 6 weeks leave with full pay after the delivery

If a woman wants she can take the entire 12 weeks, leave after the delivery

Unit VI: International Conventions and the Indian Law

Expected Outcomes

By the end of the unit, you shall

(i) have become familiar with the three major internainstruments for upholding the rights of men and women, and

(ii) be able to analyze and compare the position of Indian women, with regard to formal rights and actual provisions in relation to the international standards as laid down in the conventions

Considering all this the UN Conventions on Rights of Humans on Rights of Women, on Rights of Children all signify a new hope and a new structure for a new world order based on equality dignity and freedom for all

It is perhaps in order to state that the story of the rights of women in the Indian context differs markedly from that of their western counterparts The first to take up the cause of women were the informed enlightened men who were at the vanguard of the India Social Reform Movement, also known as the Indian Renaissance, which saw the ending of barbarous practices like Sati, female infanticide, ill treatment of widows, forced ignorance and illiteracy of women etc The Indian Constitution was drawn up by the stalwarts of the mass based freedom struggle who were sensitive not only to the disabilities of caste, class and religion but of women in a traditional patriarchal society Indian women got the right to vote along with their men with the transfer of power from the British in as early as 1921 The Constitution of India however, declared all Indian citizens equal before law with equal opportunities to work, to hold public offices, freedom of speech and movement regardless of caste creed, race, religion or sex Equality between sexes is guaranteed as a Fundamental Rights with the additional provision of affirmative action by the state in favour of women, keeping their cumulative disadvantage in view

Universal Declaration of Human Rights

On 10th December 1948, the General Assembly of the United Nations adopted and proclaimed the Universal Declaration of Human Rights The list of Human Rights elaborated in the Declaration provides a common standard of 'achievement for all peoples and all nations'

Preamble

Whereas recognition of the inherent dignity and of the equal and inalienable rights of all members of the human family is the foundation of freedom, justice and peace in the world

Whereas disregard and contempt for human rights have resulted in barbarous acts which have outraged the conscience of mankind, and the advent of a world in which human beings shall enjoy freedom of speech and belief and freedom from fear and want has been proclaimed as the highest aspiration of the common people

Whereas it is essential, if man is not to be compelled to have recourse, as a last resort, to rebellion against tyranny and oppression, that human rights should be protected by the rule of law

Whereas it is essential to promote the development of friendly relations between nations

Whereas the peoples of the United Nations have in the Charter reaffirmed their faith in fundamental human rights, in the dignity and worth of the human person and in the equal rights of men and women and have determined to promote social progress and better standards of life in larger freedom

Whereas Member States have pledged themselves to achieve, in cooperation with the United Nations, the promotion of universal respect for and observance of human rights and fundamental freedoms

Whereas a common understanding of these rights and freedom is of the greatest importance for the full realization of this pledge

Human Rights

The following human rights are guaranteed by Article I to XXX

Article I	Freedom and Equality
Article II	Entitlement to Rights
Article III	Right to Life, Liberty and Security of Person
Article IV	Ag. slavery or Servitude
Article V	No one can be subjected to torture inhuman or degrading /punishment
Article VI	Right to recognition as a person before law
Article VII	All equal before law, guaranteed equal protection of law
Article VIII	Right to effective remedy by the complement national tribunals for violation of fundamental rights
Article IX	No One should be arbitrarily arrested, detained or exiled

Article X Equality to a fair and public hearing by an independent and impartial tribunal

Article XI i Everyone charged with a penal offence has the right to be presumed innocent until proved guilty be court

ii No one should be held guilty of any penal offence on account of any act or ommission which did not constitute a penal offence

Article XII No one should be subjected to arbitrary interference with his privacy, family, home, correspondance, honour, reputation

Article XIII (i) Right to freedom of movement and resident

(ii) Right to leave any country including his own to return to his country

Article XIV Right to protection from prosecution

Article XV Right to Nationality

Article XVI Right to marry and have family full consent of the sponser

Article XVII Right to property

Article XVIII Freedom of thought and religion

Article XIX Freedom of Opinion

Article XX Right of Peaceful Assembly

Article XXI Right to take part in the Government of the Country, equal access to public services of his will of the people-basis of the authority of the Government

Article XXII Right to security through national effort and international cooperation

Article XXIII Right to work choice of employment of equal pay for equal work

Right and just remuneration

Right to form and joinfor

Article XXIV Right to rest and leisure

Article XXV Right to standard of living adequacy for health and welbeing of self and family and sickness, unemployment, oldage

Motherhood and childhood are entitled to special care and assistance

Article XXVI Right to Education

Article XXVII Right to a social and International order in which rights and freedom can be realised

Article XXVIII Duties to Community

Artilce XXIX No right to engage in any activity or perform any act aimed at destruction of rights and freedom

Convention on the Elimination of All Forms of Discrimination Against Women Adopted by General Assembly of U N on 18th December, 1979

25th June, 1993 - India ratified CEDAW with a declaration in respect of Article 16 (1&2) and a reservation in respect of Article 29 (1) These pertains to India's Policy of non interference in the personal affairs of any community without its registration of marriages and non binding by arbitration or adjudicate by International Court of Justice

Convention on the Rights of the Child

Articles 1 to 42 guarantee the following to a child

Article I A child means every human being below the age of eighteen years

Article 2

Ensure the rights set forth in the present Convention to each child within their jurisdiction without discrimination of any kind

Article 3

The best interests of the child shall be a primary consideration is assumed

Article 5

Respect the responsibilities, rights and duties of parents for the child, to provide, in a manner consistent with the evolving capacities of the child

Article 6

Recognize that every child has the inherent right to life

Article 7

The child shall be registered immediately after birthand shall have the right from birth to a name, the right to acquire a nationality and, as far as possible, the right to know and be careed for by his or her parents

Article 9

Ensure that a child shall not be separated from his or her parents against their will unless separation is necessary for the best intersts of the child

Article 11

Combat the illicit transfer and non-return of children abroad

Article 12

State Parties shall assure to the child who is capable of forming his or her own views the right

Article 13

Right to freedom of expression

Article 14

respect the right of the child to freedom of throught, conscience and religion

Article 15

rights of the child to freedom of association and to freedom of peaceful assembly

Article 16

No child shall be subjected to arbitrary or unlawful interference, protection of the law

Article 17

Recognize the important function performed by the mass media, access to information

Article 18

Use their best efforts to ensure both parents have common responsibilities for the upbringing and development of the child

Article 19

Take all appropriate legislative administrative, social and educational measures to protect the child from all forms of physical or mental violence

Article 20

A child temporarily or permanently deprived of his or her family environment shall be entitled to special protection and assistance provided by the State

Article 21

Recognize and/or permit the system of adoption shall ensure that the best interests of the child

Article 23

Recognize that a mentally or physically disabled child shoud enjoy a full and decent life

Article 24

Enjoyment of the highest attainable standard of health and to facilities for the treatment of illness and rehabilitation of health

Article 27

Recognize the right of every chid to a standard of living adequate for the child's physical, mental spiritual, moral and social development

Article 28

Recognize the right of the child to education, and with a view to achieving this right progressively and on the basis of equal opportunity

Article 29

State parties agree that the education of the child shall be directed to the development of the child's personality, talents and mental and physical abilities to their fullest potential

Article 30

A child belonging to such a minority or who is indigenous shall not be denied the right, in community with other members of his or her group, own culture, to profess and practise his or her own religion, or to use his or her own language

Article 31

Recognize the right of the child to rest and leisure, to engage in play and recreational activities

Article 32

Recognize the right of the child to be protected from economic exploitation and from performing any work that is likely to be hazardous

Article 33

Take all appropriate measures, including legislative, administrative, social and educational measures, to protect children from the illicit use of narcotic drugs etc

Article 34

Undertake to protect the child from all forms of sexual exploitation and sexual abuse

Article 35

Take all appropriate national, bilateral and multilateral measures to prevent the abduction of, the sale of or traffic in children for any purpose

Article 36

Protect the child against all other forms of exploitation prejudicial to any aspects of the child's welfare

Article 37

No child shall be subjected to torture or other cruel, inhuman or degrading treatment of punishment

Article 38

Undertake to respect and to ensure respect for rules of international humanitarian law applicable to them in armed conflicts which are relevant to the child

Article 39

Take all appropriate measures to promote physical and psychological recovery and social reintegration of a child victim of any form of neglect, exploitation, or abuse, torture or any other form of cruel, inhuman or degrading treatment or punishment.

Article 42

Undertake to make the principles and provisions of the Convention widely known, by appropriate and active means, to adults and children alike

The National Policy for Children in 1974 affirmed the Constitutional provisions and declared that "it shall be the policy of the State to provide adequate services to children, both before and after birth and through the period of growth, to ensure their full physical, mental and social development The State shall progressively increase the scope of such services so that, within a reasonable time, all children in the country enjoy optimum conditions for their balanced growth"

Government of India, by ratifying the Convention on the Rights of the Child on November, 12, 1992, once again reaffirmed its commitment to children

1. Education for Women's Equality

Programme of Action - 1992

1. Preface

1.1.1 Education for Women s Equality is a vital component of the overall strategy of securing equity and social justice in education. Paras 4.2 and 4.3 of the National Policy on Education (NPE), 1986 are very strong and forthright statements on the intervening and empowering role of education. Inter alia, they emphasize the provision of special support servites and removal of factors which result in discrimination against women at all levels of education. The POA clearly spells out the actions which need to be taken to promote education for women's equality; it can hardly be improved upon. What is sought to be done is to modify the contents of the POA wherever appropriate. What comes out clearly is the need for will to implement and institutional mechanism to ensure that gender sensitivity is reflected in the implementation of educational programmes across the board. Education for Women s Equality is too important to be left to the individual commitments or proclivities of persons in charge of implementing programmes. It should be incumbent on all actors, agencies and institutions in the field of education at all levels to be gender sensitive and ensure that women have their rightful share in all educational programmes of and activities.

2. Present Situation

1.2.1 According to the 1991 census female literacy rate is 39.42% compared to 63.86% for males. The number of female illiterates at 197 million is more than male illiterates by 70 million even though the female population is less than the male population by 32 million. There are significant rural-urban disparities among women, rural female literacy is about half of urban female literacy A striking finding is that for every 100 girls in class I in rural areas, there are only 40 in class V, 18 in class VIII, 9 in class IX and only one in class XII - the corresponding figures for urban areas being 82,62,32 and 14 If ten to twelve years of general education is the basic requirement for entrance into technical and professional education, rural girls would therefore stand excluded. An overwhelming proportion of vocational, higher and technical educational facilities are located in urban or semi-urban areas Participation of girls in this sector continues to be low and gender stereotyped. Similarly, proportion of women and girls in engineering and agriculture based courses is woefully low.

1.2.2 This is compounded by the fact that the proportion of women teachers in the low literacy States is extremely poor. The percentage of women teachers at the primary and middle schools is 21% and 23% in rural areas and 56% and 57% in urban areas.

1 2.3 It is therefore imperative that the entire educational system is alive to the gender and regional dimensions of educational disparities P.1.

3. Policy Parameters and Strategies

1.3.1 In pursuance of NPE the main features of the implementation strategy will consist of the following.

i. to get the entire education system to play a positive interventionist role in the empowerment of women;

ii. to encourage educational institutions to take up active programmes to enhance women s status and further women s development in all sectors,

iii. to widen women s access to vocational, technical and professional education at all levels, breaking gender stereotypes;

iv. to create a dynamic management structure that will be able to respond to the challenge posed by this mandate

4. Plan of Action

1 4.1 Strategies outlined below deal primarily with operational details regarding implementation of the POA.

i All the Bureau of the Department of Education will prepare a concrete action plan addressing gender related concerns in their specific area of work by August, 1993 Relevant nodal institutions like the UGC, AICTE, ICSSR, ICHR, CBSE, ICAR, IAMR, State Boards, Vocational Education Bureaus, etc will also prepare similar action plans, part IV, para 4.1 to 4 3 of the NPE and Chapter XII of the POA will form the guiding principles for the action plan.

ii. A monitoring unit will be created in the Planning Division of the Department of Education to ensure integration of gender issues into policies, programmes and schemes. Thus unit will develop indicators for monitoring implementation, ensure effective dissemination of information and coordinate action. This will be done by August, 1993.

iii. Similar monitoring units/bureaus will be set up at the State level.

iv. Annual reports of all the bureaus and institutions will clearly spell out the steps they have taken to enhance women's and girls access to education, ensuring that the content and process of education is sensitive to gender concerns and equal access is assured for science and technical education at all levels. P 2.

5. Empowerment of Women

1.5 1 Education can be an effective tool for women s empowerment, the parameters of which are:

- enhance self esteem and self confidence of women;
- building a positive image of women by recognizing their contribution to the society, polity and the economy;
- developing ability to think critically;
- fostering decision making and action through collective processes;
- enable women to make informed choices in areas like education, employment and health 9especially reproductive health);
- ensuring equal participation in developmental processes;
- providing information, knowledge and skill for economic independence;
- enhancing access to legal literacy and information relating to their rights and entitlements in society with a view to enhance their participation on an equal footing in all areas;

1.5.2 The following measures will be taken for achievement of the above parameters and the concerned bureaus and institutions will report on progress as stated in para 4.1 above:

i. Every educational institution will take up active programmes of women s development;

ii. All teachers and instructors will be trained as agents of women s empowerment. Training programmes will be developed by NCERT, NIEPA, DAE, SRCs, SCERTs and the University System Innovative training programmes will be designed with the assistance of concerned organizations and women's groups;

iii. Gender poverty sensitization programmes will be developed for teacher educators and administrators. An environment will be created whereby all the sections of the education sector will become alive and sensitive to the role of education in eliminating gender disparities;

iv. In order to create a greater confidence and to motivate parents to send girls to school, preference will be given to recruitment of women teachers. p.3

v. The common core curriculum is a potentially powerful instrument to promote a positive image of women. The Department of Women's Studies, NCERT will intensify activities already initiated in the area of developing gender sensitive curriculum, removing sex bias from textbooks and training of trainers/teachers. SCERT and the concerned State level boards and institutions will initiate similar work.

vi Funds would require to be earmarked in all education budgets for such awareness and advocacy related activities.

6. Research and Women s Studies

1.6.1 Women s Studies is a critical input to promote better understanding of women's contribution to social processes within social, technological and environmental change, their struggles and aspirations, conceptual

obstacles that make them "invisible" in many areas of scientific enquiry. The programme aims to investigate and remove structural, cultural or attitudinal causes of gender discrimination, and thus empower women to achieve effective participation in all areas of national or international development The four dimensions to be supported are.

i Research to advance the frontiers of knowledge, development human resources and produce teaching/learning material in pursuit of the above him

ii Teaching to change present attitudes and values of men and women to one of concern for gender equality Existing biases and deficiencies in curriculum will be addressed

iii. Training of teachers, decision makers, administrators and planners to enable them to play a positive interventionist role for gender equality.

iv Extension or direct involvement of institutions in women s development activities among the community.

1.6 2 Special efforts will be made to make the Women s Studies Centres set up in 20 universities and 11 colleges to become more effective through intensive training of their staff. Eminent institutions and well known women s organizations will be involved in the process of revitalizing existing centres/units and helping in the establishment of new ones.

1.6.3 Networking between different institutions for research, extension and information dissemination has demonstrated high cost-effectiveness as well as potential for coordinated growth Such networks will be initiated to increase output of quality teaching materials especially in

regional languages, training and curriculum design, and decentralized area-specific models of intervention. P.4

1.6.4 Foundation course should be designed and introduced for undergraduates with a view to promote the objectives of empowerment of women. This will be done within the 8th plan period.

7. Univesalization of Elementary and Adult Education

1.7.1 It is impossible to achieve Universal Elementary Education (UEE) unless concerted efforts are made to reach out to the girl child. Girls who cannot attend formal schools or have had to dropout will be provided educational opportunities through Non-Formal Education (NFE). Efforts will be made to design special NFE programmes for out of school and adolescent girls with a view to get them back into the formal stream or qualify for technical or vocational education. The Open School, distance education systems and other innovative educational programmes will reach out to girls in rural/remote areas and urban slums Voluntary and community based efforts will be encouraged in this sector The above tasks acquire a greater significance in the SAARC decade of the girl child.

1 7.2 The rural girls are doubly disadvantaged by non availability of educational facilities and by the work they have to do related with fuel, fodder, water, sibling care and paid and unpaid work. Coordinated efforts, albeit with other Departments/Ministries, need to be made to provide the necessary support services to enhance their participation

and performance. Provision of support services and child care facilities should be seen as a necessary and integral adjunct of UEE.

1.7.3 An important constraining factor for female education is the lack of women teachers in rural areas. The Revised Policy Formulations postulate that at least 50 per cent of teachers recruited in future would be women and to augment teacher training facilities for women so that adequate number of qualified women teachers are available in different subjects, including Mathematics and Science.

1.7.4 Total Literacy Campaigns (TLCs) being taken up should pay special attention to women in the 15-35 age group as it has been done with very positive impact in many districts. NFE should be dovetailed to TLCs in order to reach out to girls in the 10-20 age group.

1.7.5 Programmes for continuing education should be designed to ensure that neo-literates and school going girls have access to reading materials. If necessary, books and magazines should be made available to women in their hamlets. The medium of radio will be utilised to sustain enthusiasm and motivation.

1.7.6 Efforts should be made to coordinate the different vocational schemes both within the formal system and those initiated by the other Departments/Ministries. P.5.

8. Women's Access to Vocational, Technical and Professional Education and Existing and Emergent Technologies.

1.8.1 Improvement of girls access to technical, vocational and professional education requires a national programme to introduce and strengthen Science and Mathematics teaching in all girls schools. A special scheme will be designed to meet the shortfall of Science and Mathematics teachers in girls schools. Serious efforts should be made by the Centre and State planners, curriculum developers and administrators to consciously encourage participation of girls in non-traditional and emergent technologies at all levels. Guidance and counselling for girls should be undertaken as a necessary precondition to encourage participation.

1 8.2 Women's access to technical education will be improved qualitatively and quantitatively especially in rural areas. Women's ITIs and Polytechnics and women s wings in general Polytechnics and ITIs will be revamped with a view to diversify disciplines, trades and courses to encourage participation in new and emerging technologies.

1.8.3 Information about credit, banking, entrepreneurial abilities will be developed in technical and vocational institutions. The apprenticeship scheme will be strengthened to increase the coverage of women.

9. Media

1.9.1 The electronic, print and traditional media will be used to create a climate for equal opportunities for

women and girls. It will thus play a complementary and supportive role in awareness generation, dissemination of information and communication. Given the fact that almost all rural areas are covered by radio, special efforts will be made to utilize this medium to reach out to women.

10. Management Structure at Centre and State Level

1.10.1 Women's cells should be set up forthwith in all Central and State agencies concerned with curriculum development, training and research.

1.10.2 A Monitoring cell will be set up within the Planning Bureau of the Department of Education, Ministry of Human Resource Development. Similar units in the states should take responsibility for monitoring and evaluating progress.

1.10.3 A high level Inter Ministerial Committee will be constituted by the Department of Education, MHRD to:

i. review implementation of POA on a continuing basis;

ii. advise the government on policies and programmes related to girls education; P.6

iii. activate planning mechanisms in consultation with each other to ensure provision of essential support services that will enhance girls and women s participation in education.

1.10.4 Similar committees will be constituted at the State level. P.7.

II. Education of Scheduled Castes and Scheduled Tribes and Other Backward Sections

2.1. A number of centrally Sponsored Schemes are being continued in the 8th Five Year Plan (1992-97) for SCs, STs and other backward sections. These are (i) Post-matric scholarships; (ii) Grant-in-aid to voluntary organisations; (iii) Pre-matric scholarships for children of those engaged in un-clean occupations; (iv) Book banks; (v) Boys and Girls Hostels (vi) coaching and allied schemes. In addition to these, two schemes in the central sector have also been approved, viz., (i) special educational development programme for girls belonging to SCs of very low literacy levels, and (ii) educational complex in low literacy pockets for development of women s literacy in tribal areas. These programmes are in addition to the special thrust given to the weaker sections in addition to the special thrust given to the weaker sections in the general programmes for educational development like opening of schools, running of Non-Formal Education (NFE) centres and adult education centres, schemes of Operation Blackboard, upgradation of merit of SC/ST students, reservation in educational institutions, etc.

2. Elementary Education

2.2.1 Taking into account the experience gained in the implementation of NPE, 1986 and POA, the following strategies are proposed:

(a) **Access and Enrolment**

2.2.2 In order to ensure universal access and enrolment of SC children in rural areas, henceforth, in opening primary and upper primary schools priority would be given to the needs of SC habitations and hamlets. As far as possible pre-primary section will be an integral part of such schools.

2.2.3 Every Scheduled Tribe habitation will be provided with a primary school or other suitable institution before the end of the 8th Five Year Plan in order to ensure universal enrolment and participation.

2.2.4 In tribal areas educational plan will be implemented in an integrated manner. Pre-school education (through Balwadis), Non-Formal Education, elementary education and adult education will be organically linked and integrated to ensure achievement of total literacy of the entire population. This integrated Educational Complex will be responsible for total education within its area serving all children in the age group 3-14 and adults in the age group 15 and above.

2.2.5 For SC children access and enrolment will be assured primarily in the formal school. Where SC children are not able to attend the formal school provision for non-formal and distance education centres will be made to ensure universal access and enrolment.

2.2.6 It will be the responsibility of the teachers to organise drives at the beginning of every academic session

to enroll all school age children specially girls belonging to SCs, STs and other backward sections. For this purpose active assistance of voluntary agencies and local communities shall be taken. Traditional and folk media can be very effective in reaching parents and children in remote ares to motivate them.

(b) Participation

2.2.7 Adequate incentives will be provided for the children of SC, ST and other backward sections in the form of Scholarships, Uniforms, textbooks, stationery and mid-day meals.

2.2.8 All schools, NFE centres and pre-school centres in SC/ST habitations will be equipped with necessary and essential infrastructural facilities in accordance with the norms laid down for Operation Blackboard and for achieving Minimum Levels of Learning (MLL).

2.2.9 Operation Blackboard shall cover within a period of two years all schools in tribal areas and Harijan Basis irrespective of the date on which the school was set up.

2.2.10 The indigent families among SC/ST will be given incentives to send their children, particularly girls, to schools.

(c) Achievement

2.2 11 Children from tribal communities will be taught through the nother-tongue in the earlier stages in primary school. Teaching/learning materials in the tribal languages

will be prepared providing for a transition to the regional language by class III.

2.2.12 The home language of children of SC/ST may be different from others. Therefore, standard teaching/learning material will be re-written to make them intelligible to the SC/ST children especially in areas where the standard language and the learners dialect are different.

2.2.13 It will be ensured that MLL already set up for primary schools will be achieved, that the necessary standards of Rs.3/- are acquired by all children in SC/ST communities. Effective methodologies for measurement of MLL will be implemented. P.9,10

3. Adult Education

2.3.1 Adult education programmes will be an integral part of educational micro-planning in all tribal areas.

2.3.2 Under the total literacy campaign SC and ST populations will be the major focus for achieving total literacy. Special attention will be paid to adult illiterate women.

2.3.3. Adult education programmes for SCs/STs will essentially be programmes of empowerment. Special and relevant curricula and materials shall be prepared for this purpose as a crash programme.

2.3.4 Post literacy centres will be set up in SC/ST areas where literacy campaigns have been carried out in order to provide facilities for continued literacy for adult

neo-literates specially women.

4. Incentives

2.4.4 Residential facilities will be provided for SC/ST students preparing for competitive examinations.

2.4.5 Additional scholarships will be provided for SC/ST girl students in the secondary and senior secondary classes. Special coaching and remedial courses will be organised for SC/ST girl students.

5. Reservations

2.5.1 Implementation of reservation will be monitored at all levels and failure to adhere to the same will be made punishable.

2.5.2 Reservation in recruitment of teachers from SC/ST communities will be ensured in all educational institutions. P.10-11.

6. Teachers and Their Training

2.6.1 Where teachers are not available in schools located in SC/ST localities, crash programmes for giving suitable training to eligible persons from SCs/STs will be started. The eligible amongst them will be appointed as teachers in the schools.

2.6.2 Specified teacher training institutions such as DIETs will be identified for training of SC/ST teachers on a large scale.

2.6.3 In order to encourage SC/ST students to become teachers special courses integrating secondary, senior secondary and professional training will be devised. This will encourage such candidates to opt for the teaching profession from an early stage and get adequate training as teacher.

2.6.4 Wherever possible husband wife teams will be posted as teachers in tribal areas. This will ensure high participation by such teachers in school education.

7. Additional Measures

2.7.2 Education in tribal areas should be linked with outdoor activities Many tribal children excel in sports, games and other outdoor activities. Such talent must be identified and nurtured. Adequate coaching will be provided at early stages so that these talented sportsmen and women can participate in sporting activities and competitions. Scholarships will be provided for such students paying special attention to their dietary requirements.

2.7.3 There is need for improvement in the standards of hostels for SC/ST students. Special attention has to be paid to the nutritional need of the students. As far as possible hostels concerned in or around the vicinity of the school/college where the girls are enrolled and adequate security measures should be provided. Hostels should preferably be run by Non-Governmental Organisations (NGOs). P.12.

8. Monitoring

2.8.1 In addition to the monitoring by the existing scheme, monitoring of education in SC/ST areas will be entrusted to the local community/village education committee with adequate representation of SC/ST members specially women. The local community will take the total responsibility of planning the educational facilities in SC/ST areas.

2.8.2 In most of the States and at the Centre the incentive programmes like scholarships, mid-day meals, free uniforms, etc. and setting up of hostels and Ashram Schools for SC/ST are being implemented by the Welfare Departments, while the Departments of Education run programmes of setting up of schools, appointment of teachers, preparation of textbooks, curriculum, etc. which cater to SC/ST students as a part of the general programmes of the Education Departments It would, therefore, be appropriate that the monitoring is done by the respective departments implementing the programmes. The Joint Monitoring System developed for this pu pose by the Ministry of Human Resource Development, Ministry of Welfare and Planning Commission will be taken up earnestly.

2.8.3 In some States, educational institutions for Scheduled Tribes are being run by agencies other than the Education Department. It is better that these are managed by Department of Education.

9. Evaluation of Schemes

2.9.1 A number of evaluation studies have been conducted on the implementation of Centrally Sponsored Schemes as well as schemes of the State Governments. For example, in the recent past, the post-matric scholarship scheme has been reviewed by the Department of Personnel and by NIEPA, Pre-matric scholarship schemes of the State Governments have been evaluated by NCERT. The Girls Hostel scheme was reviewed by three research organisations under the scheme of evaluation of the Department of Education. Many studies have also been conducted under the programmes of assistance of Ministry of Welfare, NIEPA, NCERT, Tribal Research Institutes, etc. But there does not seem to be a proper follow up of the reports.

2.9 2 What is needed is a systematic documentation and utilisation of the findings of the reports for taking corrective action. P.13-14.

3. Minorities Education

3.4.9 Studies and surveys to be commissioned on selective basis by Research Organisations, Universities and other Central and State Agencies (Action: Department of Education - Centre States/UTs, Ministry of Welfare, NCERT, UGC, Planning Commission, ICSSR).

3 5.1

i. Orientation programmes for principals/managers and training programmes for teachers of minority educational institutions taken up by NCERT/NIEPA to be intensified (Action: NCERT/NIEPA). P.23.

ii. Women s Community polytechnics should be set up in minority concentration areas on priority basis. (Action: Department of Education - Centre and States/UTs). P.24

3.5.2

i. There is a large concentration of minorities in urban slums. A Centrally sponsored/Central Scheme to be devised to cater to their educational, health and nutritional needs. Special infrastructure should be provided for implementing schemes of Operation Blackboard, Adult Education, Non-formal Education etc. (Action: Department of Education, Ministry of Human Resource Development; Ministry of Urban Development).

ii. In areas where there is concentration of the educationally backward minorities, girls hostels to be constructed in schools and colleges on a priority basis. (Department of Education Centre/States, Ministry of Welfare and UGC).

iii. Voluntary Organisations would be encouraged to set up ITIs in minority concentration areas. Where necessary, suitable funding would be provided. (Action. Ministry of Labour, States/UTs) P.27.

3.5.3 Long Term programmes include:

(a) Early Childhood Care and Education Centres

Early Childhood Education Centres will be set up in Primary Schools in areas pre-dominantly inhabited by educationally backward minorities. Socially Useful Productive Work (SUPW) should also be introduced in such schools The Department of Education, Ministry of Human Resource Development should prepare a scheme of assistance to State Governments in this regard. However the State Governments will be encouraged to start their own programmes in ECCE (Action: Department of Education, Ministry of Human Resource Development). P.27

(b) Women's Education

i. As the women literacy and the girls enrolment is lowest among educationally backward minorities, in the schemes of opening of girls schools, appointment of lady teachers, opening of girls hostels and providing of incentives in the forms of mid-day meals, uniforms etc. Minorities needs should be fully met. (Action: State Governments/UTs.).

ii. A Production-cum-Training Centre for crafts exclusively for girls preferably with women instructors to the extent possible in each of the identified minority concentration districts. (Action: (State Governments/UTs).

(c) Voluntary Effort in Adult Education and Early Childhood Education

Orientation Courses for professionals from minority communities to motivate voluntary effort; attaching one centre to all minority institutions to create awareness of these schemes and to train supervisors for multiplier effect. (Action: State Government/UTs). P.29.

5. Adult and Continuing Education

5.4.2 Media would be used in literacy promotion as a tool of dissemination of information, as a tool of mobilisation, motivation and sensitisation, as a tool of learning by sharing information, ideas and experiences and as a tool of social action for change. For this purpose, discussion on various aspects relating to literacy would be arranged on Doordarshan and Radio, spots and motivational films would be produced and show on TV and classes conducted through radio. Both print and non-print media, including the traditional folk arts, would be fully harnessed for disseminating the message of literacy and for creating a positive climate for literacy. P.44

(e) Propagation of the message of small family norm which has been yet another issue of national concern as also one of the sub-themes of all literacy campaigns would continue to be accelerated. This, alongwith other measures like importance of delayed marriage, proper spacing, changing existing social biases in favour of the male child in our society, etc. will be integrated into the content of the primer, content of materials for neo-literates, curriculum and course content of training and orientation of all functionaries, transaction of instructional lessons, evaluation, etc.

(f) Promotion of women s equality will be a major area of focus in literacy programmes. Working towards this objective will have following implications for planning and implementation of TLCs:

i Enabling the participation of women in the decision making processe of the campaign and developing organising skills.

ii. Ensuring widest possible participation of women as teachers and learners in the teaching-learning process.

iii. Organising activities specifically designed to bring about attitudinal change amongst men. Thereby developing a greater sensitivity towards the difficulties faced by women in Indian society. This should lead to collective action to remove such difficulties wherever possible.

iv. Promoting the formation of women s organisations which will take up issues relating of women s rights.

v. Providing suitable avenues of gainful employment of women and ensuring their participation in every stage of the developmental process., P.45

vi. Ensuring that society as a whole is sensitised to the need to translate assurances of equality into concrete actio such as pa ment of equal wages for equal work.

vii Designing and promoting innovative and imaginative schemes which consciously work towards women s equality and empowerme t Existing models such as a Women s Development Project (SDP), or the Mahila Samakhya concept, would be enlarged in scope and ambit, and integrated with literacy campaigns

viii. Creating structures, and facilitating mechanisms by which the concept of women s equality and gender justice is integrated at all levels with the work of the Saksharta Samitis be it in training, content or participation.

(g) An important and positive fall out of the campaigns is that parental demand for enrolment and retention of children in the formal school system has increased manifold. Endeavour would be made to positively respond to such demand by opening new schools, adding rooms to the existing school buildings, appointing additional teachers and arranging their orientation and t aining and improving the operational efficienc of the delivery system so that it can absorb the growing demand Simultaneously efforts would be made to

provide appropriate and need based non-formal education to working children in 9-14 years age group so that they do not, after reaching adulthood, add up to the ranks of illiterate adults. For this purpose, an effective linkage would be established with programmes/activities related to UEE, including NFE.

(h) Messages of basic health care and programmes formulated thereunder, both protective, curative and preventive with special emphasis on health care programmes for women and children, would be integrated into the content and process of campaign materials, training, environment building, actual teaching learning phase, etc. in the same manner as small family norm, conservation of environment and women s equality. P.46.

6 Early Childhood Care and Education

. The Present Situation

.1.1 The National Policy on Education (NPE) has given a great deal of importance to Early Childhood Care and Education (ECCE). It views ECCE as a crucial input in the strategy of Human Resource Development (HRD), as a feeder and support programme for primary education and as a support service for working women of the disadvantaged sections of the society. P.55

2. Targets and Phasing

6.2.1 The aim of ECCE is that every child should be assured access to the fulfillment of all basic needs As such efforts will be made towards universalisation of ICDS by 2000 A.D. Seven lakh Anganwadi centres Anganwadis will be gradually converted into Anganwadis-cum-creches By the end of Eighth Plan, ~5 percent of Anganwadis will be converted into Anganwadis-cum-creches Qualitative improvement of ongoing ECCE programmes would receive high attention New cost effective designs of ECCE will also be encouraged and supported P 56

6.5 1 Initiating a two year vocational course in ECCE at +2 level with the objective of creating basic skills which can later be adopted through job training for specific situations P 62

vi. Coordinating the timings of ICDS Anganwadis with the primary schools wherever possible

4. Revised Policy Formulation

7.4.1

iii. It was specifically laid down that at least 50 per cent of the teachers recruited in future should be women.

7 3.6 A positive externality, rather unanticipated, of the Total Literacy Campaigns, has been that in many districts covered by the campaign there has been an upsurge in the demands for primary education. In quite a few districts "out of school" children in the age group 9-14 was covered by the campaigns. Further, in these districts the awareness generated among parents is leading to better participation of children in primary schools. This happy experience has reconfirmed the need to pay more attention to the "demand side" in strategies for achieving UEE and highlighted the need for a disaggregate app oach to the problem of UEE whereby districts, not States, and specific disadvantaged groups - the girls of SCs and STs - should become the basis for future planning.

7 3.9 CABE considered the failure to universalise elementary education and literacy as not only of a question of lack of resources but also of systemic deficiencies The additional resources that may be available under external assistance should therefore, be used for educational reconstruction which should go beyond the conventional measures

such as opening new schools, construction of school buildings and appointing teachers. It is necessary to adopt a holistic approach, and to address.

i. the educational needs of the working children, girls and disadvantaged groups, and

ii. issues of content, process and quality.

Disaggregated Target Setting and Decentralised Planning

7.4.2 In the 8th Plan the strategy for UEE envisages adoption of disaggregated target setting and decentralised planning. An analysis of the educational indicators reveals that within each State, even in the educationally backward ones, there are areas and districts which are almost within reach of universalisation, while even in the educationally advanced States there are districts which are still quite backward. The attempt would be to prepare district-specific, population-specific plans for UEE within the broad strategy frame of Microplanning through people's participation and introduction of Minimum Levels of learning (MLL) in schools to improve learner achievement. Microplanning will provide the framework for universal access and universal participation while MLL would be the strategy frame for universal achievement.

7.4.3 In order to reduce disparities a disaggregated approach will be adopted through district planning by classifying districts into four categories.

i. High literacy districts in which access and enrolment are almost universal and community awareness for education is already high;

ii. total literacy campaign districts in which community mobilisation for educational needs has been successfully generated by the National Literacy Mission;

iii. low literacy districts in which the provision of education facilities is unsatisfactory and the delivery system functions without any community involvement; and

iv. externally assisted project districts with a different management structure and sufficient financial support.

7.4.4 The strategies with regard to access, participation, achievement, environment building, community participation, etc. will be different for the four categories of districts.

7.4.5 Under this broad strategy of district planning and based on the experience gained in implementation of NPE, and the RPF, the following strategies are proposed:

i. Adoption of alternative channels of schooling like voluntary schools and NFE centres for these who cannot avail of conventional full-time schooling

ii Microplanning through involvement of teachers and the community in order to design and implement a family-wise, child-wise plan of action for universal access/enrolment and participation

iii. Making parents aware about their responsibility for ensuring the completion of elementary education by their children and for providing at home the facilities and enco ragement needed for this purpose.

iv. Establishment of linkages between programmes of pre-school and primary education, and between programmes of literacy and UEE, in total literacy campaign districts.

v. Improvement of school facilities through revamped Operation Blackboard and connecting it to MLL strategy. It will also be extended to upper primary stage.

vi Decentralization of educational management for making the schools function so as to ensure universal enrolment, retention and achievement.

vii Introduction of MLLs at primary and upper primary stages including coverage of the non-formal education channel. P.71

viii. Revision of process and content of elementary education to make teaching-learning child centred, activity based and joyful.

ix. Introduction of continuous and comprehensive evaluation with focus on remedial measures.

x Modification of teacher training programmes in view of changed strategies and programmes.

xi. Improvement of the monitoring system for UEE.

xii. Launching a National Mission to achieve the goals envisaged in the revised policy.

7.4.6 Further efforts would be made to develop district specific projects, with specific activities, clearly defined responsibilities, definite time-schedule and specific targets. Each district project will be prepared within the major strategy framework and will be tailored to the specific needs and possibilities in the district. Apart from effective UEE, the goals of each project will include the reduction of existing disparities in educational access, the provision of alternative systems of comparable standards to

the disadvantaged groups, a substantial improvement in the quality of schooling facilities, obtaining a genuine community involvement in the running of schools, and building up local level capacity to ensure effective decentralisation of educational planning. That is the overall goal of the project would be reconstruction of primary education as a whole in selected districts instead of a piecemeal implementation of schemes. An integrated approach is more likely to achieve synergies among different programme components.

5. Provision of Universal Access

7.5.1 Existing schemes will be suitably modified and measures will be taken to incorporate the new policy formulations.

(a) Formal Schooling

7.5.2 New primary schools according to the norms, will be opened in unserved habitations. NFE centres will be opened in smaller habitations and for children who cannot benefit from the school system. In addition, a new scheme of Voluntary Schools will be launched to achieve universal access for children in different areas.

7.5.3. Primary Schools - In 1986, it was estimated that there were approximately 32,000 habitations with a population of 300 or more that required primary schools. Though many new schools have been opened, new habitations have also come into existence, and it is estimated that 35,000 new

schools will be required. These schools will be opened by the State Governments following the norms specified under Operation Blackboard. P.71,72

7.5.4 Upper Primary Schools: In order to increase enrolments at the upper primary stage, the infrastructure at this stage will be expanded The existing norm of providing an upper primary school within 3 km. walking distance is generally inconvenient for girls. This norm will be relaxed and the new ratio between primary and upper primary schools will be 2:1. Action will be taken in the next 5 years to upgrade every second primary school to the upper primary level. It will be primarily the responsibility of the State Governments to observe this norm for school-mapping.

7 5.5 In order to achieve UEE the school system will have to cater to about 18 crore children. This calls for increasing the number of teachers from the present 27 lakhs based on the teacher pupil ratio of 1:40. The increase in student population would also require an additional 11 lakh class rooms to be built in the next 7 years.

(b) Scheme of Voluntary Schools

7.5.6 A new scheme of Voluntary Schools will be launched to cater to the needs of neglected, hilly, tribal and difficult areas where there is no provision of schooling. This scheme will enable voluntary agencies to conduct schools for UPE/UEE and stimulate community participation in planning and conducting schools in a locally appropriate manner.

7.5.7 The Voluntary Schools would be organised to serve all school children in a given village/habitation. Areas would be well defined with a population of not less than 150 so that the Voluntary School has at least a minimum of 30 children. Voluntary Schools would be expected to complete primary/elementary education of the required level in a specific lev·l in a specific period adequate for the pupils to master the curriculum. Learners enrolled in the Voluntary Schools may appear as external students for entry into any class of full time formal school. Local teachers will be appointed to run the schools and adequate training will be provided to them. Supervision of the Voluntary Schools would be the responsibility of the Village Education Committee (VEC).

7.5.8 A system of monitoring and evaluation will be designed by the grant giving agency to periodically evaluate the work of the school on the basis of five main criteria - enrolment, attendance, retention, achievement of minimum levels of learning and community involvement.

7.5.9 Central assistance will be given to the eligible voluntary Agencies to run the schools.

(c) Programme of Non-Formal Education

7.5.10 In order to strengthen the NFE Scheme the following strategies will be adopted:

i. Provision of NFE centres will be based on the Microplanning exercise carried out for UEE NFE centres will invariably cater to the needs of children, especially girls, who are not able to or who cannot attend the formal school.

ii. Vocational and technical courses of wide variety will be provided for children and youth who pass out of the Non-Formal stream. Shramik 'Vidyapeeth and Voluntary agencies will be involved in this process.

iii. Voluntary agencies will be encouraged to undertake projects of NFE, especially in areas where the formal school system is not able to meet the demands of UEE.

(d) Assistance to academic institutions and voluntary agencies for taking up innovative projects and research and evaluation activities in the field of non-formal education on 100% basis. P.72, 73.

(e) Microplanning

7.5.13 Microplanning is a process of designing "a family wise and child wise plan of action" by which "every child regularly attends school or NFE centre, continues his/her education at the place suitable to him/her, and completes at least 8 years of schooling or its equivalent at the non-formal centre". A revenue village would be ideal for specific planning, however, microplanning for UEE may be carried out the Block, Talu, District levels. Within area the steps by which this micro level planning will be operationalised are:

v. Ensuring that all children, specially girls and SC/ST children, regularly and actually participate in elementary education.

7.5 16 Microplanning will be made operational in about 20 project areas on an experimental basis during 1992-93. Based on the experience gained during the course of implementation it will be expanded to cover about 100 districts

during the 8th Plan. In due course the entire country will be covered, thus ensuring universal access and enrolment, and universal retention. P.74.pa

(e) Operation Blackboard

iii. Expanding OB to upper primary schools to provide (a) at least one room for each class/section 9b0 a Headmaster-cum-office room, (c) separate toilet facilities for girls and boys, (d) essential teaching learning equipment including a library, (e) at least one teacher for each class/section and items, consumable and minor repairs, etc.

8. Secondary Education

2. Policy Change ,

8.2.1. The Revised Policy Formulations take note of the increased demand for secondary education and go beyond NPE 1986 by calling for a planned expansion of secondary education facilities all over the country. Secondly, they call for higher participation of girls, SCs and STs, particularly in science, vocational and commerce streams Thirdly, they call for reorganisation of Boards of Secondary Education and vesting them with autonomy so that their ability to improve the quality of secondary education is enhanced, fourthly, they envisage that effort will be made to provide computer literacy in as many secondary level institutions as possible so that children are equipped with necessary computer skills to be effective in the emerging technological world.

3. Broad Parameters of the Strategy Envisaged

8.3.1 They include:

- Extending access to secondary education by setting up new schools in the unserved areas and by extending and consolidating the existing facilities, with particular emphasis on ensuring substantially increased enrolment of girls, the SCs and the STs. P 84

4. Widening Acce.s to Secondary Education

ii. As a medium and long term measures, the programme of school mapping in each State for locating schools on the basis of clearly defined norms and standards will be revised. This exercise, to be carried out by NIEPA in collaboration with educational authorities in the States, will be completed by the end of 1994 and a programme to fully serve the unserved areas will be completed by 2000 A.D. In this exercise the educational needs of girls, SCs and STs would receive special consideration.

iii. The States/UTs will be urged to formulate a special enabling plan to ensure increase in enrolment of girls, the SCs, the STs and other educationally backward sections. Necessary guidelines to formulate the plan/mechanism will be developed by the NCERT in consultation with the education authorities of the States/UTs.

iv. The educational needs of those who find it difficult to attend full time school and for the working people who have missed the secondary school will be met by extending and strengthening the Open School system.

9. Navodaya Vidyalayas

1. Present Situation

9.1.3 The Navodaya schools largely are intended to cater to rural talented children (for whom 75% seats are reserved) with reservation for SCs and Sts. This social objective has been achieved to a great extent. In the Navodaya Vidyalayas, 77.45% of the students are from rural areas; 20.35% from SCs and 10.76% from STs. Girl students are 28 44% of the student population as against the target of 33/ An important feature of the scheme of the scheme is the migration of a proportion of the students from one region to another, promoting national integration by providing opportunities to talented children from different par-s of the country to live and learn together. P.95

10. Vocational Education

(iv) Vocational Educational Programmes for Special Groups and Out of School Population

10.4.9 The tribal and rural population do not have adequate access to school education, vocational courses in schools or vocational/technical training schools/institutions. There is also a paucity of vocational courses/institutions to cater to the women population whose earning power could be considerably augmented through vocational training. Handicapped and disabled persons from another significant section of the society who have at present practically no avenues to acquire suitable productive skills to make their living more meaningful and self reliant. In addition, there is a large student population which does not go beyond class VIII and who need to be provided some skill training.

10.4.10 Vocational training programmes of non-formal nature are being organised by various Departments/organisations like the Department of Rural Development, Department of Women and Child Development, Ministry of Welfare, ICAR, KVIC, Central Social Welfare Board, Community Polytechnics, Shramik Vidyapeeths, Jan Shikshan Nilayams, etc. While these organisations would continue with their effort to provide non-formal vocational training groups, the Department of Education under the Vocational Education Programme would concentrate on organising non-formal vocational educa-

tion and training programmes for school dropouts in the age group 14-18 years who had completed class VIII but had not gone beyond class X.

10 4 11 It is also felt that all polytechnics, engineering colleges and other vocational and technical training institutions should organise short duration non formal vocational training programmes. The concerned Ministry/Department/ Organisation as well as the States/UTs should earmark funds and provide financial assistance to these institutions for this purpose

10.4.12 The Ministries of Welfare and Labour are already organising some vocational training programmes for the handicapped. The would intensify their efforts. The Department of Education would also encourage voluntary organisations working in this area. The CIVE will also provide support to vocational training programmes for the handicapped through teacher training materials and other resources. P.113

10 4.13 The involvement of girls in the vocational education programmes is crucial. Under the Centrally Sponsored Programme at +2 level, girls have equal access to vocational courses as the boys. Efforts should be made by the State/UTs to consciously encourage the participation of girls in the non-traditional and emergent technologies The non-formal vocational programmes with emphasis on entrepreneurship should be specially geared to the needs of the out of school girls. Facilities for guidance should be made available.

(vi) Vocational Education for Special Areas

10.4.14 Separate vocational schools are proposed to be set up in the rural areas and in the North Eastern States where it is not viable to start vocational courses in general educational institutions. As and when these vocational schools are established they would also run short duration non-formal vocational training programmes for special groups and out of school population.

(vii) Assistance to Voluntary Organisations for Experimental/Innovative Programmes and Short Term Vocational Courses

10.4.15 The centrally sponsored scheme of Vocationalisation of secondary education envisages the role of voluntary agencies for conducting innovative programmes in the field of vocational education and provides financial assistance to selected agencies for this purpose. However, since the scheme was launched in 1987-88 only a few voluntary organisations could avail the assistance provided under the scheme. This was mainly because the scope was limited and assistance restricted to programmes of "innovative character". It was therefore felt that, to mobilise greater involvement of the voluntary organizations in the vocational education programme, the scope and objectives of the scheme should be widened and the details of the facilities offered to voluntary organisations be made available separately. Accordingly a Scheme of Assistance to Voluntary Organisations is now being formulated.

10.4.16 The overall aim of the scheme is to promote non-formal vocational education through NGOs for achieving the goals spell out in the NPE. The specific objectives of the scheme are to provide financial assistance to the voluntary organisations for:

- Innovative/experimental projects.
- short term training programme of vocational education preferably in backward/rural areas and particularly girls of the age groups of 14-18 years who have dropped out of the school before completing class X.
- Organising special vocational training centres in rural areas where no institution/organisation is available to start non-formal courses.
- training of vocational teachers/resource persons.
- other activities connected with the vocational education.

10.4.17 States/UTs would have the primary responsibility to enlist the voluntary organisations for implementing the scheme. The NCERT should prepare the syllabus, curricula instructional material for more short-term courses. P.114

14. Technical Education for Women

15.14.1 Opportunities for Technical Education for Women at all levels will be suitably increased. Additional polytechnics for women will be established under the World Bank assisted Technician Education Projects, and concerted efforts will be made to increase the proportion of girls enrolling in polytechnics and engineering courses. Adequate hostel facilities will be provided to the girl students in

technical and management institutions. Guidance seminars for girls at the 10+2 stage will be organised through the State Governments, Boards of Apprenticeship Training and other selected institutions to make them aware of opportunities in technical education and the potential for employment and self-employment. P.151

3. Teachers and Their Role

22.3.1 While some of the problems being faced by the teaching community have financial implications, many of other problems can be solved through non-monetary inputs and by a plan of systematic and sympathetic approach. Lack of clarity of purpose and interplay of various extraneous factors have often been instrumental in teachers not getting their due place and status. This has also led to lack of teacher accountability and diminished teacher effectiveness.

22.3.2 Keeping in view the financial constraints of various State Governments and their own policies, States will be encouraged to develop their own POAs especially with regard to matters like pay and allowances to teachers, other working conditions, norms for transfers and postings, removal of grievances, participation of teachers in the educational process, recruitment of teachers and the role of teachers associations.

22.3.3 The primacy of the role of teachers in the educational process, their active participation at all levels of management, special measures for the teachers from the disadvantaged sections like women, SCs/STs, etc., provision of facilities similar to other government employees and fair and transparent working conditions and justice to them will be the guiding principles of any such POA. Efforts will also be made to ensure that the benefits of the exist-

ing schemes for women and other weaker sections are passed on to the teachers from these groups to the maximum extent possible P.209

22.3 4 To help the existing weak educational administration in expeditious disposal of personnel matters of teachers, Use of computers available under other educational programmes, wherever possible, will be made.

22.3.5 Norms for accountability of teachers will be laid down with incentives for good performance and disincentive for non-performance. The NCERT will complete this task in respect of school education within one year. Assessment of teachers will be made on the basis of their comprehensive performance appraisal and their continuous education and improvement.

22.3 6 Responsible teachers associations are necessary for the protection of the dignity and rights of teachers and also for ensuring proper professional conduct of teachers Code of professional ethics should be evolved and adopted by all concerned within a year. P.120

iv. Atleast 50% of the teachers appointed will be women This will have a positive impact on girls enrolment and retention.

2. Decentralisation and Involvement of People

23 2 1 The NPE and POA have emphasised the importance of decentralising placing and management of education at all levels and involving people in the process. Decentralization implies democratic participation by elected representatives of people in decision-making at the district, sub district and Panchayat levels In pursuance of the POA provision the State government have been taking steps to set up structures for decentralised planning and management. The future course of decentralisation would be influenced to a great extent by the proposed Constitution Amendment (Seventy second) bill, 1991; they would have to be finalised after the Bill is enacted.

(a) The Constitution (Seventy-second) Amendment Bill, 1991

23.3.1 The Constitution (Seventy-second) Amendment Bill of 1991 on Panchayati Raj institutions envisages introduction of democratically elected bodies at the district, sub-district and panchayat levels These bodies will be responsible for the preparation of plans for the economic development and social justice. The Bill provides for representation of women, scheduled castes and scheduled tribes

23.3.2 The proposed Eleventh Schedule of the Constitution provides, among other things, for entrusting to Panchayati Raj bodies of:

> "Education including primary and secondary schools, technical training and vocational education, adult and non-formal education, libraries and cultural activities".

The subject closely allied too education, namely, health, welfare, women and child development are also to be entrusted to the Panchayati Raj bodies.

(b) State Legislation

23.3.3. The Panchayati Raj Bill is an enabling legislation. The states are to frame their own legislation in their turn. The states would need to draw up appropriate legislations which, among other things, must provide for Panchayati Raj Committees for Education.

(c) District Level Body

23.3.4 Within this legislation a district level body may be set up with the responsibility for implementation of all educational programmes including non formal and adult education, and school education upto the higher secondary level. The district body will provide for representation of educationists, women, youth, representatives of parents, scheduled castes/scheduled tribes, minorities and appropriate institutions in the district. Representation may also be

provided for urban bodies and cantonments which organise educational activities. The district body will also be vested with the responsibility for planning which would include, inter alia, area development, spatial planning, institutional planning, administrative and financial control and personnel management with respect to Implementation of different educational programmes at the district level will be supervised and monitored by the body. The district educational plans will also go into the levels of participation and retention of boys and girls under different age groups by socio-cultural and economic categories, particularly SC and ST, and plan for measures for ensuring physical infrastructure, equitable access as well as qualitative aspects of education.

4. Involvement of Voluntary and Non-Governmental Agencies

23.4.1 The successful implementation of programmes like elementary education including non-formal education, early childhood care and education, adult education, education of the disabled, etc. Will require people's involvement at the grassroot level and participation of voluntary agencies and social activist groups on a much larger scale. Considering the need for ensuring relationship of genuine partnership between the governmental and voluntary agencies, the government will take positive steps to promote their wider involvement. Consultations will be held with them from time to time about programmes and procedures for selection for financial assistance will be streamlined to enable them to play optimal role.

23.4.2 It would be desirable for the state governments to develop specific action plan for entrusting selected programmes of educational development to voluntary agencies and non-governmental organisations. They could be used to supplement effectively the on-going programmes to enhance their quality and impact. They should be allowed to function in a congenial and supportive atmosphere. it is expected that appropriate indices of accountability in terms of performance would be evolved in consultation with the voluntary organisations and NGOs. P.213

Part III

NATIONAL SYSTEM OF EDUCATION

3.1 The Constitution embodies the principles on which the National System of Education is conceived of.

3.2 The concept of a National System of Education implies that, upto a given level, all students, irrespective of caste, creed, location or sex, have access to education of a comparable quality. To achieve this, the Government will initiate appropriately funded programmes Effective measures will be taken in the direction of the Common School System recommended in the 1968 Policy.

3.3 The National System of Education envisages a common educational structure The 10+2+3 structure has now been accepted in all parts of the country. Regarding the further break up of the first 10 years efforts will be made to move towards an elementary system comprising 5 years of primary education and 3 years of upper primary, followed by 2 years of High School. Efforts will also be made to have the +2 stage accepted as a part of school education throughout the country.

3.4 The National System of Education will be used on a national curricular framework which contains a common core along with other components that are flexible. The common core will include the history of India s freedom movement, the constitutional obligations and other content essential

nurture national identity. These elements will cut across subject areas and will be designed to promote values such as India s common cultural heritage, egalitarianism, democracy and secularism, equality of the sexes, protection of the environment, removal of social barriers, observance of the small family norm and inculcation of the scientific temper. All educational programmes will be carried on in strict conformity with secular values.

3.5 India has always worked for peace and understanding between nations, treating the whole world as one family. True to this hoary tradition. Education has to strengthen this world view and motivate the younger generations for international cooperation and peaceful co-existence. This aspect cannot be neglected.

3.6 To promote equality, it will be necessary to provide for equal opportunity to all not only in access, but also in the conditions for success. Besides, awareness of the inherent equality of all will be created through the core curriculum. The purpose is to remove prejudices and complexes transmitted through the social environment and the accident of birth.

3.7 Minimum levels of learning will be laid down for each stage of education. Steps will also be taken to foster among students an understanding of the diverse cultural and social systems of the people living in different parts of the country Besides the promotion of the link language, programmes will also be launched to increase substantially

the translation of books from one language to another and to publish multilingual dictionaries and glossaries. The young will be encouraged to undertake the rediscovery of India, each in his own rmage and perception.

3.8 In higher education in general, and technical education in particular, steps will be taken to facilitate inter-regional mobility by providing equal access to every Indian of requisite merit, regardless of his origins. The universal character of universities of other institutions of higher education is to be underscored.

3.9 In the areas of research and development, education in science and technology, special measures will be taken to establish network arrangement between different institutions in the country to pool their resources and participate in projects of national importance

EVALUATION PROFORMA

Instructions:

Kindly give your reactions to the items listed below on a five point scale 5,4,3,2,1 5 being used for the highest positive rating and 1 for the least positive rating. Place the rating number of your choice against the lecture theme being rated. This rating is to be used for the following modules, also.

Course Numbers 06 (Non-credit)

Course Title: India and the World

A. Objectives:

i. to provide knowledge about India's History, Society, Economy, Culture and the trends of development of the nation.

ii. to acquaint the trainees with disparities existing throughout the globe and to enable them to make a comparative analysis.

B. Lecture Themes

1. 06.1
2. 06.2
3. 06.4
5. 06.5
6. 06.6
7. 06.7
8. 06.8

C. Any Other Suggestions

EVALUATION PROFORMA

Course Number: 101

Course Title: Women s Education and Development

Does the course fulfil the objectives listed below:

A. Objectives:

i. to help participants understand the inter-relationships between education, status of women and national development in a comparative perspective.

ii to delineate the role of women s studies as a possible social critique and for action in promoting equality, harmony and peace.

B. Lecture Themes	Content	Presentation	Time Allocated
101.1			
101.2			
101 3			
101 4			
101.5			
101.6			
101 7			
101 8			
101.9			
101.10			

C. i. Background Material Supplied

ii. Methodology: lectures, video tapes etc.

iii. Any other suggestions.

EVALUATION PROFORMA

Course Number 102

Course Title: Education and Socialisation of the Girl Child

Does the Course fulfil the objectives listed below:

A. Objectives

i. To assess and analyse the developmental pattern of the girl child as a product of health, nutrition, education, social and cultural factors prevalent in society.

ii. To study socialisation patterns and child rearing practices and their effect on the development of the self-concept and other personality dimensions.

iii. To identify barriers and formulate relevant positive intervention strategies and action based programmes to raise the overall status and educational level of the girl child.

B. Lecture Theme Content Presentation Time Allocated

102.1
102 2
102.3
102 4
102.5
102.6 (a)
102 6 (b)
102.6 (c)
102.7
102 8
102.9

C i. Background Material Supplied

ii Methodology Discussions, lectures, video tapes etc.

iii Any other suggestions

EVALUATION PROFORMA

Course Number • 103

Course Title: Elimination of Sex Bias from Curriculum and Educational Programmes.

Does the Course fulfil the objectives listed below:

A. Objectives

i Generate awareness about how sexist bias operates at all levels in the educational system as well as in curriculum development, textbooks, transaction and educational programmes.

ii. Removal of sexist bias from the content, process and transaction of all types of educational programmes.

iii. To propose institutional based intervention programmes.

B Lecture Themes Content Presentation Time Allocated

103.1
103.2
103.3
103.4
103.4
103.5
103 6

C. i. Background material supplied

ii Methodology. Lectures, discussion, video tapes etc.

iii Any other suggestions.

EVALUATION PROFORMA

Course Number 104

Course Title: Qualitative and Quantitative Methods in Women s Studies.

Does the Course fulfil the objectives listed below:

A. Lecture Themes Content Presentation Time Allocated

104.1
104.2
104.3
104.4
104.5
104.6
104.7
104.8

B. i. Background material supplied

ii. Methodology- Lectures, disussion, video tapes etc

iii. Any other suggestions.

EVALUATION PROFORMA

Course Number 105

Course Title: Mobilisation of Women and Community

Does the Course fulfil the objectives listed below:

A. Objectives

i. To understand the history of women s movement.

ii. To mobilise women and community at all levels.

iii. To prepare women for action to facilitate the process of universalisation of elementary education

iv Raising the status of girls and women in the community with the help of the community itself.

v. To promote interaction between and community so that the community accept the changing roles of women

B. Lecture Theme Content Presentation Time Allocated

105.1
105.2
105.3a
105.3b
105.4
105.5a
105.5b

C. i. Background material supplied

ii. Methodology: Lectures, discussions, video tapes etc.

iii. Any other suggestions

EVALUATION PROFORMA

Course Number 106

Course Title: Gender Sensitive Project Planning

Does the Course fulfil the objectives listed below.

A. Objectives

i. To acquaint the participants with the concepts and methods of programme and project planning.

ii. To develop adequate skills in project formulation for women s education and development.

iii. To sensitize the participants to the need of monitoring and evaluation.

B. Lecture Theme Content Presentation Time Allocated

106 1
106.2
106.3
106.4

C i Background material supplied

ii Methodology: Lectures, discussions, video tapes etc

iii Any other suggestions

EVALUATION PROFORMA

Course Number 107

Course Title: Methodology of Training

Does the Course fulfil the objectives listed below:

A. **Objectives**

i. To equip the participants with the knowlede and understanding of the concept, techniques, and methods of training.

ii To enable the participants to formulate and put training programmes of women s education and development on the ground

iii Emphasizing the requirements for action research.

B. Lecture Theme Content Presentation Time Allocated

107.1
107.2a
107.2b
107.3
107.4
107 5

C. i. Background material supplied

ii. Methodology. Lectures, discussions, video tapes etc.

iii. Any other suggestions

EVALUATION PROFORMA

Course Number   108

Course Title: Legal Literac

Does the Course fulfil the objectives listed below:

A. Objectives

i. To equip participants with the knowledge about laws on women and girls in India

ii. To enable the participants to promote legal literacy through their institutional programmes.

B. Lecture Theme   Content   Presentation   Time Allocated

108.1
108 2
108.3
109 1
108.5
108 6

C. i Background material supplied

ii Methodology. Transaction of Legal Literacy Mar - in a workshop mode

iii. Any other suggestions